॥ ज्ञानक्रियाभ्यां मोक्षः



श्रावकनुं कर्तव्य

तथा

विविध स्तवनादि समुच्चय ग्रंथ.

छपावी प्रसिद्ध करनार

श्रावक भीमसिंह माणेक.

जैन पुस्तक वेचनारे तथा प्रसिद्ध करनार.

द्वितियावृत्ति   रु. २-०-०

वीर संवत् २४५०   विक्रम संवत् १९८०   सने १९२४

धी न्यु लक्ष्मी प्रेस, शाकगल्ली, माडवी, मुंबइ. ३.

Printed by MANAKJI BHADJI DHARAMSEY
at The New Laxmi Printing Press
18-20 Kazi Sayed Street, Bombay
and Published by HEERJI GHELLABHAI PADAMSI
for Shravak Bhimsi Manek, 107, Dhadji Street, BOMBAY. 3.

अग्र वचन.



आ पुस्तकनी अंदर अनेक उपयोगी हकीकतोनो संग्रह करवा आवेल छे, तेमज अनेक ग्रथोनी सहाय लेवामा आवी छे आ स्तक शास्त्री तथा गुजराती अक्षरमा बहार पाडवामा आवेल छे. पुस्तक बहार पाडवानो उद्देश देरासरोमा दर्शन निमित्ते तथा पू निमित्ते थतो अनेक आशातनाओ टाळवानो छे अने तेथी करी ग्र प्रस्तावनारूपे ते संबंधी केटलीएक बाबतो चर्चवामा आवी छे ते ग्रथनी अंदर पण लखवामा आवेल छे. आ ग्रथनी अंदर ति तीर्थो विगेरेना स्तवनो, सज्झायो, लावणीओ, चैत्यवंदनो, थोय नाटकना रागना गायनो, नवस्मरण, गौतम स्वामीनो मोटो रा वृद्ध चैत्यवंदन (केवळनाणी) तथा महा पुरुषोना शलोका विगेरे संग्रह करवामा आवेल छे अने तेना माटे जे जे ग्रथानी तथा विद्वा जनोनी मदद लेवामा आवी छे तेना माटे ते ते ग्रथकारोनो त विद्वान् जनोनो उपकार मानीए छीए विशेष आ ग्रथमा नजरदोष अगर प्रमादथी जे काइ भूलचुक रहेल हो ते वाचकवर्ग सुधार वाचशे अने क्षमावृत्ति राखी क्षमा आपशे तेमज उपकारवृत्तिथी ल जणावशे तो अमो त्रीजी आवृत्तिमा सुधारवा प्रयत्न करीशुं

लीо प्रकाशक.

ચોવીશ તીર્થંકરોનાં તથા તેમનાં માતા, પિતા અને લંછનના નામનો કોઠો.

નંબર.	તીર્થંકરોનાં નામ.	માતાનાં નામ.	પિતાનાં નામ.	લંછન.
૧	ઋષભદેવ	મરુદેવી માતા	નાભિ રાજા	વૃષભ
૨	અજિતનાથ	વિજયા માતા	જિતશત્રુ રાજા	હાથી
૩	સંભવનાથ	સેના માતા	જિતારિ રાજા	ઘોડો
૪	અભિનંદન	સિદ્ધાર્થા માતા	સંવર રાજા	વાંદરો
૫	સુમતિનાથ	સુમંગલા માતા	મેઘ રાજા	ક્રૌંચ પક્ષી
૬	પદ્મપ્રભ	સુસીમા માતા	શ્રીધર રાજા	રાતું કમલ
૭	સુપાર્શ્વનાથ	પૃથ્વી માતા	પ્રતિષ્ઠ રાજા	સાથીયો
૮	ચંદ્રપ્રભ	લક્ષ્મણા માતા	મહસેન રાજા	ચંદ્રમા
૯	સુવિધિનાથ	રામા માતા	સુગ્રીવ રાજા	મગરમચ્છ
૧૦	શીતળનાથ	નંદા માતા	દઢરથ રાજા	શ્રીવત્સ
૧૧	શ્રેયાંસનાથ	વિષ્ણુ માતા	વિષ્ણુ રાજા	ખડગી
૧૨	વાસુપૂજ્ય	જયા માતા	વસુપૂજ્ય રાજા	પાડો
૧૩	વિમળનાથ	શ્યામા માતા	કૃતવર્મા રાજા	સુઅર
૧૪	અનંતનાથ	સુયશા માતા	સિંહસેન રાજા	સિંચાણો
૧૫	ધર્મનાથ	સુવ્રતા માતા	ભાનુ રાજા	વજ્ર
૧૬	શાંતિનાથ	અચિરા માતા	વિશ્વસેન રાજા	હરણ
૧૭	કુંથુનાથ	શ્રી માતા	સુર રાજા	બોકડો
૧૮	અરનાથ	દેવી માતા	સુદર્શન રાજા	નંદાવર્ત્ત
૧૯	મલ્લિનાથ	પ્રભાવતી માતા	કુંભ રાજા	કળશ
૨૦	મુનિસુવ્રત	પદ્મા માતા	સુમિત્ર રાજા	કાચવો
૨૧	નમિનાથ	વિપ્રા માતા	વિજય રાજા	નીલ કમલ
૨૨	નેમિનાથ	શિવાદેવી માતા	સમુદ્રવિજય રાજા	શંખ
૨૩	પાર્શ્વનાથ	વામા માતા	અશ્વસેન રાજા	સર્પ
૨૪	મહાવીરસ્વામી	ત્રિશલા માતા	સિદ્ધાર્થ રાજા	સિંહ



देवदर्शननो महिमा

स्वामी दरिशन समो निमित्त लही निर्मळो,
जो उपादान ए शुचि न थाशे ॥
दोष को वस्तुनो ? अहवा उद्यम तणो,
स्वामी सेवा सही निकट लाशे ॥ तार हो तार प्रभु

श्रीदेवचंद्रजी महाराज उक्त पंक्तिओमां देवदर्शननो उद्देश कि
स्पष्ट करता कहे छे के जो प्रभुना दर्शनथी तमारो आत्मा शुचि-प
न थाय तो पछी ए दोष बीजा कोइनो नहीं, पण तमारो पोता
छे. बीजा शब्दोमां कहीए तो तमारा पुरुषार्थनी खामीज त
प्रभु पासे पहोंचाडी शकती नथी दर्शननो उद्देश तथा पुरुषा
आवश्यकता समजाव्या पछी तेओश्री पोतेज देवदर्शननुं माहा
दर्शावता सुमधुर स्वरोमां उपदेशे छे के—

स्वामी गुण ओळखी स्वामीने जे भजे,
दरिशन शुद्धता तेह पामे ॥
ज्ञान चारित्र तप वीर्य उल्लासथी,
कर्म जीपी वसे मुक्ति धामे ॥ तार हो तार प्रभु०

स्वामी—प्रभु—सद्‌भूतना गुणोनो परिचय प्राप्त करी जे भव्यात्म
तेमनी अंतःकरणना उल्लासथी पूजा-भक्ति करे, तेओ दर्शननी
ता पाम्या वगर रहे नहीं एटलुंज नहीं, पण सम्यग्ज्ञान प्राप्त
चारित्र तप अने वीर्यना स्फुरण द्वारा संपूर्ण कार्योने परास्त
मुक्तिधाम हस्तगत कर्या वगर पण रहे नहीं.

तपस्वीओनो आ जन्म तपस्यानुं अंतिम फळ मुक्ति, मुनिओना विच्छिन्न संयमनुं अद्वितीय लक्ष मुक्ति, योगीओनो जन्मजन्मांतरनी धनानुं दृष्टिबिन्दु मुक्ति, जो एक मात्र देवदर्शनथीज प्राप्त थइ ुं होय, किंवा श्री वीतराग देवनां दर्शन मात्र वडे, जो मोक्ष मुपुरीनुं राज्य हस्तगत थइ जतुं होय, तो पछी एवो कयो होणभागी इ शके के तेनी देवदर्शनमां प्रवृत्ति न थाय? आपणे तो कोट ाशक्ति देवदर्शन अर्थे उद्यम सेवीए छीए, एनी कोटथी ना कहो ाय तेम नथी, परंतु श्रीदेवचंद्रजी महाराजे कह्युं तेम पुरुषार्थनी मीने लीधे, प्रभुदर्शननुं पवित्र निमित्त मळवा छतां, आत्मशुद्धिफळ ा थइ शकतुं नथी. त्यारे हवे मुख्य प्रश्न ए उद्भवे छे के आप- ामां एवी ते कइ पुरुषार्थमां खामी छे के जेने लीधे आपणने दर्श- संपूर्ण अने सुंदर फळ प्राप्त थइ शकतुं नथी? शुं आपणे स्तोत्रो कारवामां कंजुसाइ वापरीए छीए? शुं आपणे मस्तक नमाववामां ाद सेवीए छीए? केशुं पूजानां द्रव्योनो संचय करवामां चेद्र- ी राखीए छीए? आवा आवा अनेक प्रश्नोना जवाबनी मीमां- ां उतरवा करतां मात्र एटलुंज कहेवुं बस थइ पडशे के पूर्वाचार्योए ा करुणानी दृष्टिए जे दर्शनविधि अथवा पूजानी पद्धतिओ दर्शावी े नहीं समजी शकवाने लीधे किंवा तेनो आदर नहीं करवाने ी, पूजानुं अंतिम फळ आपणने प्राप्त थइ शकतुं नथी. विधिपुरःसर वर्त्तवुं, तेमज प्रभुपूजानुं यथार्थ स्वरूप न समजवुं ए पण पुरुषा- खामीज छे.

र्षो अने सैकाओ थयां आपणा पूज्यपाद परमोपकारी पूर्वाचा- ए गुणो आपणने ओळखाववाने तथा ए गुणो तरफ आपणी ळ दृष्टि आकर्षवाने प्रयत्न करता आव्या छे. एक मात्र सद्देव,

सद्धर्म अने सद्गुरुनी पीछान-ओळखाण थाय, एटला माटे भंडारोना भंड
रो भराय तेटला ग्रथो आपणा माटे म्रकता गया छे, प्रभुना प्रत्ये अ
दरबुद्धि उत्पन्न थाय अने ते द्वारा आत्माना गुणो प्रकाशित थाय,
अर्थ भाव अने रसथी परिपूर्ण एवा सेंकडो अने सहस्रो स्तवनो
वळ मात्र जनहितार्थे रचता गया छे प्रभुना दर्शन पामी दर्शक
त्मा विशुद्ध थाय ते हेतुथी गभीर रहस्यवाळी विधिओ पण ते
दर्शावता गया छे आटलु आटलु कर्या छता हजी आपणने प्रभु
खरी पीछान थइ नथी तेनुं शु कारण ? आपणा अनेक जैन बन्धु
हृदयना साचा भावथी नित्य देरासरमा जाय छे. त्या यथार्थ
विधि प्रमाणे पूजा तथा भावपूजा करे छे, स्तवनो तथा स्तुति
पण मधुर कठे आलापे छे, स्वस्तिक विगेरेनी क्रिया करी भवभय
मुक्त थवानी भावना भावे छे, छता तेनो धारेला प्रमाणमा तेमने ल
नथी मळतो तेनु शु कारण ? एज के आपणी खरी क्रियाओने
थवा विधिओने आपणे यथार्थ भावे समजवानो प्रयत्न करता न
अर्थात् प्रत्येक धर्मक्रियामा जे गभीर हेतु तथा रहस्य रहेलु होय
ते समजवानो प्रयत्न थतो नथी अने तेथी जे विधि क्रमे क्रमे मे
धाममा लइ जवाने समर्थ होय छे, ते मात्र अमुक सीमा पर्यंतज
प्रगटावी शके छे पूर्वाचार्योना रसिक स्तवनोनो सग्रह करी
स्तुत पुस्तक प्रकट करवाने अमे तैयार थया तेज क्षणे अमने
लाग्यु के जो आ स्तवनावलीना सग्रह साथे दर्शनना हेतु विगे
पण प्रसंगोपात्त स्फोटन विस्तार पूर्वक अपाय तो बहु उपग
थाय. आवा उद्देशथी अमे आ स्थळे भूमिकारूपे बे बोल लख
योग्य धार्या छे

देव दर्शननी शुद्धि, तेनी आवश्यकता अने तेनी विधी.

बाह्य शुद्धि अने निसिहिनो हेतु.

देवदर्शने जती वखते सौथी प्रथम बाह्य शुद्धिनी आवश्यकता कारवामां आवी छे' बाह्य शुद्धि घणी वार आंतर शुद्धिना निमित्त थती होवाथी प्रात:काळमां स्नान आदिथी शुद्ध थवानुं न बने ण छेवटे मलिन अंगोपांगोने स्वच्छ कर्या पछी, प्रभुनां दर्शने जवो व्यवस्था करवी. स्नान समये तथा अंगशुद्धि करती वखते कोइ —जंतुने उपद्रव न थाय एटला माटे केटलीक सावधानता श्राव- राखवानी दूरदर्शी आचार्योए भलामण करी छे. ते पण लक्ष- राखवा योग्य छे. अत्यारना प्रवृत्तिना धमालवाळा जमानामां जो तेवी यतना (जयणा) रहेवो बहु अशक्य छे एम केटलीक वार णामां आवे छे, पण ते मात्र एक प्रकारनो बचाव छे एम क- तो खोटुं नथी. जेम बने तेम शांत रीते, उतावळ कर्या विना—हेठे शुद्ध स्थाने अंगशुद्धि करी, शुद्ध वस्त्रोनुं परिधान करी जिनमं- जवानुं दरेक श्रावके लक्षमां राखवुं जोइए. जिनमंदिर तरफ दर्शनहेतुथी एक एक डगलुं भरनार विशुद्धात्मा अनेक कर्मोने तो जाय छे, ते कथन त्यारेज सार्थक थाय के ज्यारे आपणे वचन, कायाना पापमय व्यापारोनो निरोध करी बहुज निर्मळ मां आरूढ थइ जिनमंदिर तरफ गति करीए. दर्शन करवा जना-

---

वा शरीरे स्नाननी आवश्यकता जिनपूजा प्रसंगे बतावबामां आवी छे

रा भाविक श्रावकोए शास्त्रकारो जेने "नैषेधिकी" कहे छे, ते त्रा स्मरणमा राखवा योग्य छे. आ त्रिकनो संक्षिप्त सार एटलोज छे (१) घरना अथवा संसारना प्रपंचमय व्यापारोथी निवर्त्तवानो देर सरना अग्र द्वारमा प्रवेश करती वखतेज संकल्प करवो अने ते मा त्रण वार निसिहि भणवी, (२) गभारामा पेसता देरासरना व्याप रथी अर्थात् देरासर संबंधी व्यवस्थाथी निवर्त्तवा पुनः त्रण वार नि सिहि कहेवी अने (३) द्रव्यपूजाना व्यापारथी परवार्या पछी भा पूजा अर्थे त्रीजी वार त्रण वार निसिहि कहेवी आ विधि जो यथा भावे पाळवामा आवे तो जिनदेवना दर्शननो हेतु फळीभूत थ वगर नहीं. घरमाथी देवदर्शन निमित्ते नीकळ्या पछी आपणामा केटला बन्धुओ संसारनी गडमथलमा माथु न मारता होय! तेम द देरासरना ओटला सुधी पहोंचवा छता पण आपणने आपणा नित्त ना राग-द्वेषवाळा वाणी व्यापारमाथी छुटा थवानु सुजतु नथी आपणी मोटी शिथिलता छे केटलीक वार तो देरासरमा पण त्या अने पूजा निमित्ते क्लेशो थता जोवामा आवे छे. आ कइ ओ खेदकारक नथी देरासरमा पहोंच्या पछी भाविक श्रावकोए देरा रनी व्यवस्था पाळळ पानानु ल्प दोरडु जोइए, एटले के मंदिर ज्याइ अशुद्ध जेवु के अव्यवस्था जेवु जणातु होय तो स्वार्थ रहि बुद्धिए सुधारवानो प्रयत्न करवा. या कराववो, अने ए रीते दर्शन भिलापथी आगळ वधवु, पछी अनेक उत्तम उत्तम द्रव्योवडे द्रव पूजा करी द्रव्यपूजाथी मुक्त थइ शांत भावे स्तवन आदिनो पा करी प्रभुना गुणोमा नवीन थवानो अभ्यास करवो आ प्रकारे

वदना थइ शके छे, अने त्रीजा उत्कृष्ट अवग्रहमा साठ हाथ दूर रह
ने पण वदना थइ शके छे वदनना पण त्रण प्रकार वर्णववामा आव
छे. (१) नवकार तथा श्लोक आदि बोली जे प्रभुवदना कराय
जघन्य वदना कहेवाय छे, (२) चैत्यवदन करी नमुथ्थुणनो प
भण्या पछी उभा थइ अरिहतचेइयाण कही काउस्सग्ग करी-पा
स्तुति कहेवी ते मध्यम वदना कहेवाय छे, अने (३) जेमा प
दडको अने चार स्तुति कर्या पछी जावति चेइआइ जावत केवि स
अने स्तवन कही जय वीयराय पर्यंत विधिपूर्वक कहेवामा आवे ते
उत्कृष्ट वदना कहेवामा आवे छे.

सद्देवनो परिचय

देवदर्शने जता देव शब्दनो अर्थ बराबर समजी लेवो जोइए, कार
के देवनु स्वरूप यथार्थ स्वरूपे समजायु न होय तो पछी आप
कोनु अने शामाटे दर्शन करीए छीए ते तो समजायज क्याथी
देव शब्द मूळ सस्कृत दिव धातु उपरथी उत्पन्न थयो छे दिव
अर्थ प्रकाश करनार अथवा क्रीडा करनार एवो थाय छे अथ
जेओ ज्ञाननो प्रकाश करे किंवा आत्मस्वरूपमा क्रीडा करे ते दे
सदेव कहेवाय जेओ गोपीओनी साथे क्रीडा करे किंवा शृग
आदिनो प्रकाश करे तेने सर्वज्ञप्रणीत जैनशास्त्र देव तरीके ओळ
वानी भार दइने मना करे छे, ए वात लक्षमा रहेवी जोइए. आप
देरासरमा ज्यारे दर्शन करवा जइए त्यारे सम्यग्ज्ञान आदिनो
काश करनार तथा पोताना आत्मस्वरूपमा निरतर रमनार सदेव
दर्शन करवानो अने ते दर्शन द्वारा तद्रूप बनवानो आपणो उद्दे
होवो जोइए. " स्वामीगुण " ओळखीने जो देवदर्शन करवामा अ

ते अरि–दुश्मन कोने कहेवाय अने तेने केवी रीते हणी शका समजीज केवी रीते शके? वस्तुतः काम, क्रोधादि आपणा अ रिपुओ छे, अने तेने हणवाने उद्यमशील थवु एमाज अरिहंत वानने नमस्कार करवानी सार्थकता समायेली छे, एवो भाव "अरिहंताण" पदो उच्चार थताज मनमा स्फुरवो जोइए, पण ए ज्ञानपूर्वक दर्शन–क्रिया थाय तोज समजी शके

देरासरमां शांतिरक्षा

देरासर किंवा दवमदिर ए वस्तुत ध्यान करवानु, आत्मचिं णा करवानु तथा प्रभुस्वरूप चितववानु एक पवित्र स्थान छे, ए आपणे घणी वार भूली जइए छीए, अने तेवा पवित्र–शांति स्थळमा कर्म खपाववाने बदले उलटा कर्म बांधीने आवीए छ एम न थाय ए पण दर्शनपिपासुओए खास लक्षमा राखवु उचित देरासरमा जेम बने तेम शातिनो भग न थाय अने सौ कोइ पोतानी शक्ति प्रमाणे पूजा, स्तवनादि करी शके तेवी व्यवस्था रखवामा आपणे सहायभूत थवु जोइए. केटलाएको पातपोतानो स्वछदताने लइने अनर्थक प्रलापो करे छे, केटलाएको पोताना अन्यनु ध्यान आकर्षवानी अणछाजती कोशेषो करे छे, अने केट एको पोतानु सगापरिपणु दर्शाववाना अभिमानथी अन्य भवि- नोने ध्यानभग करवानो अयोग्य प्रयत्न सेवे छे ए उचित क नथी आम करवाथी आत्मानु मूळ स्वरूप प्राप्त थतु नथी एट नहीं, पण अन्यने विघ्नभूत थवाथी नवा कर्मबधन थाय छे. ए माटे देरासरमा शाति मचवाय, सर्व कोइ बन्धु यथाशक्तिमति

छे, बीजाओ दर्शन करता होय तेमने आडे आववाथी दर्शनमोह
कर्म बधाय छे, दुःस्वर काढीने आनंद मानवाथी मोहनीय कर्म
धाय छे, अने अन्यने दर्शन, स्तवनादिमा अंतराय पाडवाथी
राय कर्म बधाय छे ए बधी बाबतोनु देरासरमां जता पहेला स्म
रहेवु जोइए

मन-शुद्धि.

देवदर्शने जता जो कोइ वस्तु सर्वथी अधिक अगत्यनी होय
ते एकज छे अने ते बीजी कोइज नथी, पण मनःशुद्धि छे. मन
कर्मबधनमा तथा कर्मक्षयमा कारणभूत छे एटला माटे पापमय
पारोमाथी मनने रोकी पवित्र चिंतनमा अथवा कल्याणकर ज्या
तेने जोडवु ए अत्यावश्यक छे पवित्र मन द्वारा थयेली भा
किंवा भावना फळ आप्या वगर रहेतीज नथी भले, कदाच
पवित्र मनथी देवमंदिरमा न जवाय, कारण के मनने दृढपणे
भूत राखवु ए सहज बात नथी तोपण प्रभुना दर्शन आपणा
उपर पवित्रतानी असर करे, आपणा मनने थोडा क्षणो पर्यंत शु
तामय बनावे, एवी रीतनी मानसिक तत्परता तो अवश्य हो
जोइए शुद्ध थयेलु मन प्रभुना ध्यानमा सहेलाइथी तल्लीन थइ
छे ध्यान एवी वस्तु छे के जो तमे हृदयना उंडा-साचा भा
प्रभुनु ध्यान करता हो तो काळक्रमे प्रभुरूप बन्या वगर रहो न
दाखला तरीके एळने भ्रमरी ज्यारे प्रथम डंस मारे छे त्यारे
(इलिका) पोतानु भान भूली जइ भ्रमरीना ध्यानमा एवी त
बनी जाय छे के अंते पोते भ्रमरीरूप बन्या वगर रहेती न
एवीज रीते जे मनुष्यो जे वस्तुनु अतःकरणपूर्वक ध्यान क

छे, बीजाओ दर्शन करता होय तेमने आडे आववाथी दर्शनमोह कर्म बधाय छे, दुःस्वर काढीने आनद मानवाथी मोहनीय कर्म धाय छे, अने अन्यने दर्शन, स्तवनादिमा अतराय पाडवाथी राय कर्म बधाय छे ए बधी वातोनु देरासरमा जता पहेला रहेनु जोइए

मन-शुद्धि.

देवदर्शने जता जो कोइ वस्तु सर्वथी अधिक अगत्यनी होय ते एकज छे अने ते बीजी कोइज नथी, पण मनःशुद्धि छे. मन कर्मबधनमा तथा कर्मक्षयमा कारणभूत छे एटला माटे पापमय पारोमाथी मनने रोकी पवित्र चिंतनमा अथवा कल्याणकर व्या तेने जोडवु ए अत्यावश्यक छे पवित्र मन द्वारा थयेली भा किंवा भावना फळ आप्या वगर रहेतीज नथी भले, कदाच पवित्र मनथी देवमंदिरमा न जवाय, कारण के मनने दृढपणे भूत राखवु ए सहज वात नथी तोपण प्रभुना दर्शन आपणा उपर पवित्रतानी असर करे, आपणा मनने थोडा क्षणो पर्यंत तामय बनावे, एवी रीतनी मानसिक तत्परता तो अवश्य हो जोइए शुद्ध थयेलु मन प्रभुना ध्यानमा सहेलाइथी तल्लीन थइ छे ध्यान एवी वस्तु छे के जो तमे हृदयना उंडा-साचा भा प्रभुनु ध्यान करता हो तो कालक्रमे प्रभुरूप बन्या वगर रहो दाखला तरीके एळने भ्रमरी ज्यारे प्रथम डम मारे छे त्यारे (इलिका) पोतानु भान भूली जइ भ्रमरीना ध्यानमा एवी त पनी जाय छे के अते पोते भ्रमरीरूप बन्या वगर रहेती न एवीज रीते जे मनुष्यो जे वस्तुनु अतःकरणपूर्वक ध्यान क

ननो लहावो छे, एवा प्रकारनुं आचरण आपणे राखवुं जोइए. ...ारनी प्रवृति अने द्रव्य जोतां खरेखर आपणने खेद उपजे छे ...णके देवदर्शन करवा जवुं ए गमे तेवा कपडा पहेरी कोरपण ...तनो विनय विवेक जाळव्या सिवाय प्रतिमा सन्मुख हाथ जाडी ...द स्तुतिके स्तवन पुरुंके अधुरुं कही कपाळे तिलक करी जाणे ...न वीधी पुरी थइ होय तेम चालता थइ जवुं आजेटलुं खेदकारकाक तेटलुंज जैन नाम धरावनारने नीचे उतारो पाडनारु छे. दाखला ...के एज टाइमे जो कोइने त्यां लग्न प्रसंग के एवा कोइ मेळावडा ...रेमां जवुं होय तो तेना माटे आपणाथी बनति शुद्धि करीए छीए. ...रा साफ कपडा जाळवीने पहेरीए छीए सुगंधीनो उपयोग करी-छीए वगेरे परंतु जे देव के जेओ सर्वथी सर्वना पुजनीय छे अने ...ना पासे जवुं तो तेमना पासे केटला विवेक, विनय अने शांतिथी ...ए एक राजानी सन्मुख जवु पडे त्यारे आपणने केटलो विनय ...वेक अने शांति जाळववी पडे छे तेना उपरथी आप विचार करशो ...ले आपोआप समजाइ जशे केजे स्थळे एक टांचणी जेवी वस्तु ...तां तेनो अवाज पण समजाय छे तेटलीज के तेथी वधारे शांति मंदिरमां जाळववी अहींआ कोइ एवो प्रश्न करशे के शुं त्यारे ...मारे देरासरमां गया पछी स्तुति के नवकारमंत्रनो उच्चार सरखो ...ा न करवो ? अमे एम करवानुं कहेता नथी तेम कही पण शका-...नहीं, तोपण जो कोइ विद्वान् नर सुस्वरथी प्रभुनां स्तोत्रोनुं गान ...तो होय तो कल्याणनी इच्छावाळा दरेक मनुष्ये ते सुस्वरमय ...गीतनो लाभ लेवो अने शांतिरक्षा करवामां मददगार थवुं. ज्ञानी ...पोना स्तवनमां विघ्न उपजाववाथी ज्ञानावरणीय कर्मनो बंध थाय

छे, बीजाओ दर्शन करता होय तेमने आडे आववाथी दर्शनमोह
कर्म बधाय छे, दुःस्वर काढीने आनद मानवाथी मोहनीय कर्म
धाय छे, अने अन्यने दर्शन, स्तवनादिमा अतराय पाडवाथी
राय कर्म बधाय छे ए नभी बानोनु देरासरमा जता पहेला र
रहेनु जोइए

मन-शुद्धि.

देवदर्शने जता जो कोइ वस्तु सर्वथी अधिक अगत्यनी हो
ते एकज छे अने ते बीजी कोइज नथी, पण मनःशुद्धि छे. मन
कर्मबधनमा तथा कर्मक्षयमा कारणभूत छे एटला माटे पापमय
पारोमाथी मनने रोकी पवित्र चिंतनमा अथवा कल्याणकर व्य
तेने जोडवु ए अत्यावश्यक छे पवित्र. मन द्वारा थयेली मा
किंवा भावना फळ आप्या वगर रहेतीज नथी भले, कदाच
पवित्र मनथी देवमंदिरमा न जवाय, कारण के मनने दृढपणे
भूत राखवु ए सहज वात नथी तोपण प्रभुना दर्शन आपणा
उपर पवित्रतानी असर करे, आपणा मनने थोडा क्षणो पर्यंत
तामय बनावे, एवी रीतनी मानसिक तत्परता तो अवश्य हो
जोइए शुद्ध थयेलु मन प्रभुना ध्यानमा सहेलाइथी तल्लीन थइ
छे ध्यान एवी वस्तु छे के जो तमे हृदयना उंडा-साचा भा
प्रभुनु ध्यान करता हो तो काळक्रमे प्रभुरूप बन्या वगर रहो
दाखला तरीके एळने भ्रमरी ज्यारे प्रथम डस मारे छे त्यारे
(इलिका) पोतानु भान भूली जइ भ्रमरीना ध्यानमा एवी त
यनी जाय छे के अते पोते भ्रमरीरूप बन्या वगर रहेती न
एवीज रीते जे मनुष्यो जे वस्तुनु अन्तःकरणपूर्वक ध्यान क

ते वस्तुरूप बन्या सिवाय रहेता नथी. देवमंदिरमां आपणे प्र-
स्वरूपनुं यथार्थ चिंतन किंवा ध्यान करी शकीए. तेटला माटे
शुद्धिनी सर्वथी प्रथम आवश्यकता छे. मनने शुद्ध करवाना
मार्गो छे. पण विस्तारना भयथी ते अत्रे दर्शाव्या नथी. तो-
वृत्ति उपर संयम राखवाथी, साधु-मुनिओना समागमथी अने
वक आहार-विहारथी मनःशुद्धि थइ शके छे एम प्रसंगोपात्त
देवुं जोइए. खेडाया वगरनी भूमिमां बीज बराबर उगी नीक-
नथी, अस्वच्छ दर्पणमां जेवुं जोइए तेवुं प्रतिबिंब पडतुं नथी,
ज रीते देवदर्शने जतां पहेलां मनःक्षेत्र बराबर केळववुं जोइए,
मनरूपी अरीसो योग्य प्रकारे स्वच्छ करवो जोइए.

स्वस्तिक तथा प्रदक्षिणानो हेतु.

देरासरमां साधारण रीते आपणा जैन बन्धुओ तथा भगिनीओ
आनो साथीयो पूरे छे अने मंदिरना दक्षिण भागथी शरु करी
अने त्रण वार प्रदक्षिणा आपे छे. साथीयो करवानो हेतु जो के
ज पुस्तकमां एक स्थळे स्पष्ट कर्यो छे, तोपण आ स्थळे कंइक
तारथी स्पष्टीकरण करवानी इच्छा राखी छे राग, द्वेष आदि
रंग वैरीओनी प्रपंचजाळमां फसाइ जवाथी आ जीव नरक, ति-
, मनुष्य अने देव आ चार गतिओमांथी छुटो थइ शकतो नथी.
आ रीते भवभ्रमण करतां जीवने केटलो वखत नीकळी गयो तेनी
कल्पना थइ शकती नथी. हवे आ साथीयानी चार पांखडीरूपी
गति लक्षमां लइ ए गतिमां फरीथी न जवाय अने साथीया
करवामां आवती ज्ञान दर्शन-चारित्ररूपी त्रण ढगलीओ-रत्नो
थाय ते अर्थे भावना [illegible] नहीं. पण ए रत्न-

श्यी उपर अर्ध चन्द्राकार जेवु जे सिद्धशिलानु स्वरूप आलेखव
आवे छे, त्या पहोंचवानी उग्र भावना सेवी मनने तथा आत्म
जेम बने तेम दर्शन करती वेळा शुद्धतर बनाववानो प्रयत्न क
जोइए. प्रदक्षिणाना त्रण फेराफरती वखते पण ज्ञान-दर्शन-चारि
रूपी त्रण रत्नोनी आराधना करवानो तेमज भवभ्रमण दूर करव
भाव मनमा होवो जोइए. केटलाक उपर कही तेवी क्रियाओ क
वखते इहलौकिक स्वार्थीय आशा फलीभूत थाय एवी भावना
सेवे छे, पण ते योग्य नथी. जिनेश्वर भगवान् सरखा कल्प
मळ्या पछी रत्नोने बदले काचना कटकानी आशा राखवी अने
माटे भावना भाव्या करवी ए शिवसुखना अभिलाषीओ माटे
मात्र पण पसद करवा योग्य नथी, अस्तु

देववंदन

देववदनना मुख्यत्वे बे प्रकार पाडवामा आव्या छे (१) द्र
वदन अने (२) भाववदन. जे वदनमा मात्र मस्तक, चरण, ह
चलन थाय तेने द्रव्यवदन कहेवामा आवे छे, अने विशुद्ध मानसि
ध्यान, धारणा तथा नमस्कारने भाववदन कहेवाय छे भावव
होय त्या द्रव्यवदन न होय एम कहेवानो उद्देश नथी, तेमज द्र
वदन होय त्या भाववदन न होय एम पण कही शकाय नही. व
त' परम्परमा उपकारक भाव स्वाभाविक रीतेज रहेलो होय
तोपण स्पष्टतानी खातर अने ते विषे सरलताथी विवेचन थइ श
एटला माटे ए भेद मुमुक्षुओ लक्ष्यमा राखी प्रवृत्ति करे छे वदन
उद्देश एटलोज छे के जे प्रभुए आतरिक रिपुओने पराजित क

नंतज्ञान, अनंतदर्शन अने अनंतचारित्रनुं अव्याबाध साम्राज्य नगत कर्युं छे ते प्रभुना गुणोनुं बहु मान करी भक्तिपूर्वक ध्यान करी आपणे पण ते साम्राज्यना भागीदार बनवाने योग्य थइ कीए. अत एव आटली वात तो बहुज अवश्यनी छे के, वीतराग गवाननी पूजा करती वखते किंवा वीतराग देवने वंदन करती वेळा भुनुं यथार्थ शुद्ध स्वरूप आपणा अंतः– करणने विषे स्फुरित थवुं इए. प्रभुनां चरित्रो वांचवाथी, प्रभुना नित्य नामस्मरणथी तथा भुनुं पवित्र मने ध्यान करवाथी तेमज गुरुगम अने शास्त्रोपदेशथी ो देवस्वरूप हृदयमां प्रतिबिंबित थाय छे. जो के अमे ए विषय भूमिकामांज संक्षिप्त प्रकारे स्थानांतरे कही गया छीए तोपण स्तृत वर्णन जाणवानी जिज्ञासावाळाए तो आप्त प्रणीत प्रभाविक ो द्वाराज ते जाणी लेवुं एवी अमारी नम्र भलामण छे.

प्रतिमापूजा शासाट ?

आ स्थळे कोइ शंका करशे के भले देववंदन करवु, ध्यान करवु ो मनःशुद्धि राखवी, ए अमारे कबूल मंजुर छे, पण देववंदन ा तथा ध्यान वेळा सन्मुख जिनेश्वरनी प्रतिमा राखवानुं शुं का- ? आनो उत्तर स्पष्ट तेमज सरळ छे. अवलंबन वगर प्राथमिक क्षावाळाओ ध्यान करी शकता नथी. वळी ध्यानविधिमां पण ता, ध्येय अने ध्याननी त्रिपुटीनुं प्रतिपादन करवामां आव्युं छे. ने हशे ? किंवा प्रतिमाजीनां दर्शन मात्रथी आ कोनी मूर्त्ति हशे ? ोणे केवां कर्त्तव्यो कर्यां हशे ? आपणाथी एमनामां कइ जातनी ापता हशे ? इत्यादि प्रश्नो उद्भवे छे, अने ए प्रश्नोनुं मनमां

समाधान थता क्रियारुचि किंवा सन्मार्ग प्रत्ये आदरभाव उत्पन्न
छे जैन शास्त्रमा प्रतिष्ठित आचार्यो एकी अवाजे " जिनप्रतिमा
सारखी " एवो गभीर घोष करी गया छे. जेवी रीते एक शृं
वती रमणीय मूर्त्तिना दर्शन मात्रथी प्रेक्षकना मनमा रहेली
वृत्तिओ एकाएक उछाळो मारी व्हार धसी आवे छे तेज रीते
रागमूर्त्तिना दर्शन मात्रथी पण मनमा रहेली दिव्य वृत्तिओ प्र
पणे स्फुरी आवे छे. आ प्रमाणे प्रतिमापूजाना महत्वमा जेटलु लख
धारीए तेटलु लखी शकाय तेम छे, पण जिनवचनने आज्ञा
मानी प्रवर्त्तता भाविक जनुओ माटे तेनी विशेष आवश्यकता न
प्रतिमाजीने सुगंधी द्रव्योथी स्नान करावबु, पुष्प चडाववा, अ
रचवी अने द्रुकामा कहीए तो तेमने साक्षात् जिनेश्वर समजी
प्रकारे आभूषित अने देदीप्यमान बनाववा ए द्रव्यपूजा छे, अने
भव्य श्रावकोने माटे खास कर्तव्य छे—शास्त्रमा द्रव्यपूजाना एक
प्रकार दर्शाववामा आव्या छे, ते पण स्मरणमा राखवा लायक
ए एकवीश प्रकार नीचे प्रमाणे छे

(१) स्नान (२) विलेपन (३) भूषण (४) फळ (५)
(६) धूप, (७) दीप (८) फुल (९) तादुल (१०) पत्र (१
पुगी (१२) नैवेद्य (१३) जळ (१४) वस्त्र (१५) छत्र (१
चामर (१७) वाजित्र (१८) गीत (१९) नृत्य (२०) स्तुति
(२१) देवद्रव्य भडार वृद्धि. मुख्यत्वे करीने जिनेश्वर भगवा
द्रव्यपूजा आठ प्रकारे थइ शके छे आ आठ प्रकारनी पूजामा
प्रकारनो समावेश थइ जाय छे तेमा जे गभीर हेतु रहेलो छे ते

ानकडो भूमिकामां संपूर्ण रीते स्पष्ट थइ शके तेम नथी. प्रत्येक
यपूजा वखते पूजक आत्माए केवा प्रकारनी भावना राखवी जो-
; तेनुं अत्रे संक्षिप्तमांज वर्णन आप्युं छे. प्रभुने निर्मळ जळवडे स्नान
रावती वखते आपणा मनमां एवी भावना रहेवी जोइए के–" हे
भु ! आवा प्रकारना बाह्य प्रक्षालनथी जेम बाह्य मळ विनाश पामे
तेवी रीते मारा आत्मानो अंतरंग मळ–कर्ममळ पण एनी साथेज
ाश पामो." चंदनपूजा करती वखते एवी भावना होवी जोइए
–" हे प्रभु ! आ चंदन जेवी रीते अंगे अगमां शीतळता प्रकटावे
तेवीज रीते मारा आत्मामां पण शीतळता प्रकट हो." त्रीजी
ष्पपूजा करती वखते एवी भावना उपर आरूढ रहेवुं जोइए के–
पुष्प जेवुं सुंदर, शुद्ध अने परागवाळुं छे तेवुंज मारुं मन पण
दर, शुद्ध अने भावसुगंध विशिष्ट हो." चोथी धूपपूजा करती
खते एवी भावना वर्तवी जोइए के–" हे प्रभु ! अग्निमां धूप नाख-
ाथी जेवी रीते धूप सळगे छे अने तेनो धूमाडो उंचे उंचे चाल्यो
ाय छे तेवीज रीते मारा आत्माने लागेला कर्मरूप काष्ठनुं दहन
ाओ, अने शुभ भावनारूपी धूप धूमाडानी पेठे उंचे चडो, अने
ारो आत्मा पण उच्च स्थाने अवस्थित हो." पांचमी दीपकपूजा
रती वखते एवा भाव रहेवा जोइए के–" हे प्रभु ! आ दीपक जेवी
ते अंधकारने दूर करी सर्वत्र प्रकाशने फेलावे छे तेवीज रीते
ारा आत्मा उपर रहेलो कर्मरूपी अंधकार दूर हो, अने मारो
ात्मा दीपकनी पेठे प्रकाशित हो." छट्ठी अक्षतपूजा करती वखते
ेवी भावना रहेवी जोइए के–" हे प्रभु ! चार गतिओमांना मारा
ावभ्रमणने दूर करी मने एक एवुं अक्षत–अखंड पद प्राप्त थाओ के

जेथी पुन आ जन्म, जरा, मृत्युवाळा ससारमा मने रझळ्वु न पडे सातमी नैवेद्यपूजा करती वखते एवी भावना होवी जोइए के–' प्रभु! आप जो के निर्वेदी अने अनाहारी छो तोपण आप सन्मुख आ नैवेद्यनी सामग्री मुकी आपने एटलीज प्रार्थना क घु के मने पण आ प्रपचमाथी मुक्त करी आपना जेवुज अनाहा परमानदमय पद प्राप्त हो" आठमी फळपूजा करती वखते प मनमा एवो भावप्रवाह वहेवो जोइए के–"हे प्रभु! आ फळ आप चरणकमळमा धरी एटलुज इच्छु छु के मने पण आपना जेवु शिवपदरूपी फळ प्राप्त हो." आ प्रकारे सक्षिप्त द्रव्यपूजानो हे आप्यो छे, ते उपरथी सत्तरभेदी, एकवीश प्रकारी, एकसो अ प्रकारी तथा एक हजार आठ प्रकारी पूजानो हेतु पण किंचि अशे समजाशे आवा हेतुनु विस्मरण थइ जवाने लीधे पूजा माहात्म्यने जे उणप आवी छे ते उणप दूर थाओ, अने पूजा उत्तमोत्तम फळ सर्वने प्राप्त हो

भावपूजानो हेतु

भाव शब्द परमात्माना स्वरूपनो ज्ञानादिथी निर्धार करी ते लक्षणनु एकाग्र चित्ते चिंतवन करवानो उपदेश करे छे द्र पूजा पण जो के भावपूजानु निमित्त पूरु पाडे छे, पण भावपू बहु आवश्यक अने उपकारक छे ए वातनु विस्मरण थवु जो नथी स्तुति तथा स्तवन विगेरेना गानथी तथा तेमा रहेला अर्थ मननथी चित्तमा भावनो उद्रेक थाय छे खरेखरो भाव प्रकट कर इच्छनारा वन्धुओए स्तवन–स्तुति आदिमा रहेला अर्थनो एक व

नधीर करी लेवो, अने ते पछी पोते तीर्थंकर प्रभुमां जे गुणो
अनुभवे छे ते गुणो पोतानामां उद्भवे छे के नहीं? तेनो शांत भावे
आत्मसाक्षीए विचार करवो. केटलाएक मात्र ओष्ठ अने जिव्हावडे
सुस्तवन ललकारी जवामांज पोतानुं कर्तव्य संपूर्ण थयेलुं माने
छे, पण ए मान्यता यथार्थ नथी. गुण अने गुणीनी एकता न थाय
त्यांसुधी भावपूजा सफळ थयेली गणाती नथी. भावपुजा मुख्यत्वे
प्रकारनी छे. एक तो प्रशस्त रागवाळी भावपुजा अने बीजी
शुद्ध भाववाळी पूजा. आपणने आपणा परिवार तथा वैभव उपर जे राग
थाय छे ते स्वार्थना अंशोवाळो होवाथी ते रागने प्रशस्त राग कही
शकाय नहीं, पण निःस्वार्थ भावे पक्षपातरहितपणे गुणोपणा माटे जे
राग स्फुरे तेने प्रशस्त राग कहेवामां आवे छे. आवो प्रशस्त राग जो के
पुण्यबंधना हेतुरूप थाय छे तोपण तेथी आत्मगुण प्रकट थतो होवाथी
तेमज आत्मगुण स्थिर थतो होवाथी ते उपादेय छे. शुद्ध भावपुजा
सामान्य जीवोने माटे बहु विकट छे तोपण तेनुं संक्षिप्त स्वरूप आ
स्थळे अमे आपवानुं योग्य धार्युं छे. जे आत्माना क्षयोपशमभावी
दर्शन गुण अने ज्ञानादि गुण प्रभुनी प्रभुतामां तल्लीन थया छे. एटले
जेटली आत्मशक्ति प्रगटी छे ते सर्व अरिहंतना गुणने अनुयायी
करीने तन्मयतारूप करे ते शुद्ध भावपुजा छे. आवी रीते शुद्ध
निर्मल तत्वज्ञानी श्री अरिहंत देव सिद्ध भगवानना रसथी तेना
गुणनी भोगी चेतना रंगाय एटले अन्य विकल्प टाळी अनुभव-
भावना सहित प्रभुस्वरूपे रसीली थाय त्यारे आत्मभाव प्रगटे, एटले
भव्य जीव पहेलां आत्मावलंबी थाय त्यारे पोताना गुणने साधतो-
नीपजावतो सम्यग्दर्शनादिक गुणने प्रकट करतो, गुणस्थानकक्रमे

स्वरूपानुभव करतो थको तल्लीनता करी अनादि कालना सर
पुज्य स्वभावने प्रगट करे भावार्थ ए छे के पहेला "हु पण
अने अनतगुणी छु" ए निर्धाररूपी सम्यगदर्शन प्रकटे, त्या
सत्तानु प्रकाशन थाय, पछी जे सत्ता प्रकटी तेना रमणरूप–अनु
रूप चारित्र गुण प्रकटे, पछी शुक्ल ध्यान प्रकटे, अने अते
वरण केवळज्ञान प्रकटे आवी रीने परमपूज्य श्री अरि
भावपूजावडे पूजवाथी पोतानो पूज्य स्वभाव पण प्रकट थया
रहे नही. एज भावपूजानो हेतु अने भावपुजानु सुदर परिणाम

प्रातिहार्य अने अतिशय

चैत्यवदन करती वेळा आपणे नित्य गाइए छीए के—
'बार गुण अरिहत देव प्रणमीजे भावे,
सिद्ध आठ गुण समरता दुःख दोहग जावे."

आ बार गुण ते कया तेनी समजण पाडवी अने अस्थाने
गणाय बार गुणमा आठ प्रतिहार्य तथा चार अतिशयनो समा
थाय छे प्रभुनी पासे प्रतिहारि तरीके जे कायम रहे तेने प्र
हार्य एवु नाम अपाय छे. आ प्रातिहार्योनु सक्षिप्त सूचन नी
श्लोकमा स्पष्ट रीते करवामा आव्यु छे—

अशोकवृक्षः सुरपुष्पवृष्टिः, दिव्यध्वनिश्चामरमासन च ।
भामडल दुंदुभिरातपत्रं, सत्प्रातिहार्याणि जिनेश्वराणाम् ॥

अर्थात्—अशोकवृक्ष, देवताओवडे थती पुष्पवृष्टि, दिव्य ध्व
चामर, सिंहासन, भामडळ, दुदुभि अने छत्र ए प्रकारे जिने
भगवानना आठ प्रातिहार्यो छे. भगवान ज्या ज्या विहार करे

अथवा समवसरे छे त्यां त्यां देवताओ पोते भक्तिभावथी प्रभुनी कायाथी बार गणुं विस्तीर्ण शाखावाळुं अशोकवृक्ष, फूलनी वृष्टि, प्रभुनी देशना मनोहर रूप धारण करे ए माटे स्वरनी पूर्त्ति, भगवानने विंजवा माटे रत्नजडित श्वेत चामरो, भगवानने बेसवा माटे सुवर्णमय सिंहासन, प्रभुना मस्तकने पाछळे भागे ज्योतिःमंडळ अने प्रभुना मस्तकोपरि त्रण छत्र अने आकाशमां दुंदुभि—वाजित्र रचे छे. आ प्रातिहार्यनुं ध्यान करती वेळा आपणे केवी भावना भाववी जोइए ते पण श्रीसिद्धसेन सूरि महाराजे बहु कवित्वभरी वाणीमां कह्युं छे.

अशोकवृक्षना प्रातिहार्य विषे तेओश्री लखे छे के—

धर्मोपदेशसमये सविधानुभावा,-
दास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः ।
अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोऽपि,
किं वा विबोधमुपयाति न जीवलोकः ॥

भावार्थ—हे प्रभु ! आप ज्यारे धर्मोपदेश आपो छो त्यारे आपनी पासे वृक्ष पण अशोक थइ जाय छे तो पछी मनुष्यो शोकरहित थाय एमां आश्चर्यज शुं छे? वळी तेम बने ए अस्वाभाविक पण नथी, (कारण के) सूर्योदय थवाथी मनुष्योज मात्र विबोध किंवा विकासने नथी पामतां, पण वनस्पति सुद्धां पत्रसंकोचादि लक्षणवाळी निद्रानो त्याग करी विकासने पामे छे, ए सर्व जन प्रसिद्ध वात छे.

बीजा प्रातिहार्यना संबंधमां सूरीश्वर महाराज वदे छे के—

चित्रं विभो ! कथमवाङ्मुखवृंतमेव,
विष्वक् पतत्यविरला सुरपुष्पवृष्टिः ।

त्वद्गोचरे सुमनसा यदि वा मुनीश,
गच्छति नूनमध एव हि बन्धनानि ॥

भावार्थ—हे स्वामिन् ! देवताओ ज्यारे पुष्पनी वृष्टि करे छे त्यारे ते पुष्पो मुख उचु राखीने तथा वीट-बन्धन नीचु राखीने पृ उपर पडे छे ए आश्चर्यकारक छे, परतु ते पण एक रीते तो बन जोगज छे, कारण के आपणी समीपे शोभायमान किंवा पवित्र वाळाना अतर-बाह्य बन्धनो अधोमुख थाय अने भावमुख उन थाय ए तो स्वाभाविकज छे. प्रभुना प्रभावथी भव्य लोकना उपर केवी मनहर असर थाय छे तेनु आमा सूचन करवामा अ छे. जेवी रीते पुष्पना बन्धनो नीचे ढकाइ रहे छे अने पादडी विकसी रहे छे तेवीज रीते प्रभुना दर्शन मात्रथी भव्य प्राणीअ रोमेरोममा विकस्वरता प्राप्त थाय छे

त्रीजा प्रातिहार्यना सबधमा तेओश्री प्रकाशे छे के—

स्थाने गभीरहृदयोदधिसभवाया',
पीयूषता तव गिरः समुदीरयंति ।
पीत्वा यतः परमसमदसगभाजो,
भव्या व्रजति तरसाऽप्यजरामरत्व ॥

भावार्थ—समुद्रमथनने अते समुद्रमाथी जेवी रीते अमृत व आव्यु हतु अने तेना पानथी देवताओ अमर बन्या हता तेवी आपनी वाणी गभीर हृदयरूपी समुद्रमा उत्पन्न थयेल अमृतनेज व कहे छे ते स्वाभाविक छे, कारण के तेना पानथी उत्कृष्ट हर्षव भव्यात्माओ जल्दीथी अजर-अमर पदने पामी जाय छे अर्थात् पनो दिव्य ध्वनि अने अमृत एक सरखाज सुखकर तथा कल्याणकर

चोथा प्रातिहार्यना विषयमां तेओश्री दर्शावे छे के-

स्वामिन् सुदूरमवनम्य समुत्पतंतो,
मन्ये वदंति शुचयः सुरचामरौघाः ।
येऽस्मै नतिं विदधते मुनिपुंगवाय,
ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धभावाः॥

भावार्थ—हे स्वामिन् ! मने एम लागे छे के पवित्र देवताओवडे ...तां चामरोना समूह के जे अत्यंत नीचे नमीने उछळे छे तेनो ...श मनुष्योने एवो उपदेश आपवानोज होवो जोइए के 'जे मनु- ... आ मुनिपुंगव-तीर्थंकर प्रभुने नमस्कार करे छे ते खरेखर उंची ...वाळा अने उच्च भाववाळा बने छे.' बीजा शब्दोमां कहीए तो ... चामरो जणावे छे के अमे पण प्रभु आगळ प्रथम मस्तक नमा-... छीए अने ए लघुताज अमने ऊर्ध्व गतिए पहोचाडे छे.

पांचमा प्रातिहार्य विषे श्री सूरीश्वरजी महाराज लखे छे के-

श्यामं गभीरगिरमुज्ज्वलहेमरत्न,-
सिंहासनस्थमिह भव्यसिखंडिनस्त्वा ।
आलोकयंति रभसेन नदंतमुच्चै,-
श्चामीकराद्रिशिरसीव नवांबुवाहम् ॥

भावार्थ—भविजीवरूपी मयूरो ते आ समवसरणने विषे उज्ज्वळ अने रत्नथी जडेला सिंहासनमां बेठेला श्यामवर्ण युक्त अने गंभीर ...वाळा आपने, जेवी रीते मेरु पर्वतना शिखरमां उंचे स्वरे शब्द ...ता-गर्जना करता नवीन मेघनेज जुए तेम उत्सुकपणाथी जुए छे. ...त् मेरु पर्वतने स्थाने सिंहासन समजवुं अने मेघने स्थाने प्रभुनुं ...म शरीर तथा गर्जनाने स्थाने प्रभुनी वाणी समजवी.

छट्ठा प्रातिहार्यने विषे एवी भावना रहेवी जोइए के-

उद्गच्छता तव शितिद्युतिमण्डलेन,
लुप्तच्छदच्छविरशोकतरुर्बभूव ।
सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग,
नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि ॥

अर्थात्--भगवानना महा तेजस्वी भामंडळने लीधे अशोकवृक्ष पत्रकांति तथा रक्तता पण लोपाइ गइ, तेनु कारण स्पष्टज छे के रा द्वेष रहित श्री वीतराग भगवानन्नी समीपताना प्रभावे चेतनत प्रा नीरागता किंवा निर्ममत्वभावने पामे एमां आश्चर्यज नथी प्रभुनी णी सांभळवाथी जे अनहद लाभ थाय छे तेने एक बाजु राखो प्रभुना दर्शनथी जे देवी आनंद प्रकटे छे तेने पण एक तरफ रेह दइए, तोपण प्रभुनी समीपतामा रेहवा मात्रथी पण केटलो लाभ थ छे तेनुं आ श्लोकमा सूचन करवामां आव्युं छे

सातमा देवदुंदुभि नामना प्रातिहार्य विषे केवी भावना सेववी दर्शावता श्रीमान् सूरीश्वर महाराज आ प्रमाणे कहे छे-

भो भो' प्रमादमवधूय भजध्वमेन,-
मागत्य निर्वृतिपुरिं प्रति सार्थवाहम् ।
एतन्निवेदयति देव जगत्त्रयाय,
मन्ये नदन्नभिनभः सुरदुंदुभिस्ते ॥

अर्थात्-पोतानी गर्जनावडे आकाशने घेरी लेतो अने शब्दायम करतो देवदुंदुभिनो नाद जगतने एम भलामणी करतो छे के 'हे जग गतना प्राणीओ ! आळसादि अंतरंग शत्रुओने त्यजी दइ आ तीर्थंकर प्रभु के जे तमने मोक्षमार्ग दर्शावनार छे तेमनी पासे आ

तेमनुं शरण स्वीकारो', आ प्रातिहार्यथी प्रभु जगदुद्धारक तथा
ने अभयदान दाता छे एम सूचित थाय छे.

छेल्ला छत्रत्रय नामना आठमा प्रातिहार्यनी भावना विषे आ-
श्री कहे छे के-

उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ,
तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः ।
मुक्ताकलापकलितोच्छ्वसितातपत्र,-
व्याजात्त्रिधा धृततनुर्ध्रुवमभ्युपेतः ॥

भावार्थ—हे प्रभु ! आपना उपर जे त्रण छत्र जेवुं देखाय छे ते
नथी, परंतु मुक्ताना समूहथी युक्त अने उल्लसित एवा छत्रना
नाथी चंद्र पोते पोताना तारामंडळ साथे त्रण प्रकारनुं शरीर
ण करी आपनी पासे सेवा अर्थे हाजर थयो होय एम लागे छे.
तमारी सेवमां हाजर थाय एमां नवाइ पण नथी, कारण के तेनो
धिकार जगतने जे प्रकाश आपवानो हतो ते आपना प्रकाशथी
ाइ गयो हतो, केमके आप पोते ज्यां त्रण भुवनने प्रकाशित करता
त्यां चंद्र बिचारो निष्फळ थाय एमां कंइ आश्चर्य नथी !

आ प्रमाणे आठ प्रातिहार्यो जेम समजवा योग्य छे तेज प्रकारे
र अतिशयो पण समजवा लायक छे. (१) अपायापगम अतिशय
जेनावडे द्रव्य भाव सर्व प्रकारना उपद्रवो नाश पामे छे, (२) ज्ञा-
तिशय के जेनावडे भगवान् लोकालोकनुं स्वरूप हस्तामलकवत्
ाळी शके छे, (३) पूजातिशय के जेनावडे भगवाननी पूजा
वानी राजा, महाराजा, चक्रवर्त्यादि अने इंद्र जेवा पण अभिलाषा
े छे, (४) वचनातिशय के जेनाथी श्री तीर्थंकर प्रभुनी वाणी

३५ गुण सयुक्त होइने देव, मनुष्य अने तिर्यचने पोतपो
भाषामा समजाय छे

चैत्यवंदननी विधि.

अमे आ भूमिकामा पूर्वे एक वार कही गया छीए के यथा विधिना अभावे आपणे देवदर्शन किंवा देवपूजानु फळ जेवु जे तेवु प्राप्त करी शकता नथी, एटला माटे आ स्थळे ते विषे कइक प्ता करवानु अमे उचित धार्युं छे चैत्यवदन करनारे प्रथम दश समजी लेवा जोइए ते नीचे प्रमाणे—

(१) नैषेधिकीत्रिक—प्रथम निसिही देरासरे जता अग्रद्वारे वी आ निसिहीना उच्चारनी साथेज घर विगेरेना सावद्य-पा व्यापारोथी निवर्त्तवु. निसिहीनो अर्थ पण एज छेके पापमय व्य रोनो मन, वचन, कायाथी निषेध करवो. बीजी निसिही जिन गभारामा पेसती वखते उचारवी, अने तेनी साथे देरासरने ल व्यापारोथी निवर्त्ती द्रव्यपुजामा मनने जोडवुं. त्रीजी निसिही चै वदनना अवसरे भणवी, अने तेनी साथे द्रव्यपुजाथी निवर्त्ती स नादिवडे भावपुजामा तल्लीन थवानो प्रयत्न करवो.

(२) प्रदक्षिणात्रिक—देरासरना दक्षिण भागथी चैत्यने प्रदक्षिणा देवो अने मनमा एवी भावना भाववी के ससारभ्रम छूटवा माटे प्रभुनी जमणी बाजुथी त्रण प्रदक्षिणा करी अनुक्रमे ज्ञ दर्शन अने चारित्रनी आराधना करु छु, अर्थात् त्रण प्रदक्षिणा ज्ञ दर्शन, चारित्ररूप रत्नत्रयनी सिद्धिने माटे आपु छु.

(३) प्रणामत्रिक—बे हाथ जोडी अजलि करी प्रणाम करवा केडथी शरीरने जरा नमाडी माथा तथा हाथ आदिथी भूमिनो

करवो ते, त्रीजुं पंचांग प्रणाम एटले बे जानु, बे हाथ तथा मस्त-
भूमिए लगाडी खमासमण आपी प्रणाम करवा ते. आ त्रण प्र-
रे प्रभुने प्रणाम थइ शके छे.

(४) पूजात्रिक–(१) अंगपूजा (२) अग्रपूजा (३) भावपूजा,
। त्रण प्रकारे प्रभुपूजा थइ शके छे. अंगपुजामां मन, वचन, काया-
पवित्रता साथे वस्त्रो, पूजानां साहित्यो तथा भूमि अने धननी
ा शुद्धि होवी जोइए. प्रथम शुद्ध अने निर्दोष स्थाने शांत चित्ते
ानादि करी, निर्मळ वस्त्रो परिधान करी अठपडो मुखकोश थाय
ुं उत्तरासंग राखी मुखकोशबांधी प्रभुनी अंगपूजामां प्रवृत्त थवुं
चित छे. अंगपूजाना प्रारंभमां प्रतिमाना प्रक्षालन पूर्वे भगवान-
अंगने मोरपींछथी के पुंजणीथी प्रमार्जवुं अने त्यारबाद स्नान करा-
ुं स्नान थइ रह्या पछी प्रभुना अंगने अंगलूहणां वती लुछी नाखी
सर, चंदन, कर्पूर आदिथी विलेपन करवुं तेमज घरेणां तथा फुल-
ादि चडावी मनने उल्लसित करवुं. आ सर्व प्रवृत्ति दरमियान
क बात मनमां सतत जाग्रत रहेवी जोइए के मात्र प्रभुने शृं-
रवा माटेज पूजा नथी, पण तेनी साथे आपणे प्रभु जेवा नि-
ष बनी शकीए एटला माटे आ बधो विधि सेववामां आवे छे.
ाक आत्माए केवळ बाह्यडंबरमांज मुंझाइ नहीं जतां आत्मिक
भो प्राप्त करवानुं लक्ष राखवुं जोइए एवो कहेवानो आशय रहे छे.
अग्रपुजामां धूप, दीप, नैवेद्य आदिनो समावेश थइ जाय
ी अर्थात् प्रभुनी आगळ धूप करवो, दीपक प्रकटाववो तथा
ाक्षत, फळ ने नैवेद्य धरवां अने आरती मंगळदीवो उतारवां,
ं वजाववो ए सर्व अग्रपुजानो विषय छे. चोखानो साथीयो
मती वखते पण साथीयानां चार पांखडां ते चार गति–मनुष्य

गति, देवगति, नरकगति तथा तिर्यंचगति छे एम विचारी
चारेगतिथी मुक्त थवा सारु तेनी उपरना त्रण बिंदु ज्ञा
दर्शन-चारित्ररूपी त्रण रत्नो प्राप्त करवानी भावना भाववी ज
ए एटलुज नहीं, पण साथीयाना सर्वोपरि भागे जे अर्ध चद्रव
चिह्न करवामा आवे छे ते सिद्धशिलानी प्रतिकृति छे एम
चारी ए स्थान मेळववानी त्रिलोकनाथने प्रार्थना करवी जोइ

भावपुजामा स्तुति, स्तवन तथा चैत्यवदननो समावेश थ
छे. कार्यनी सरळता भावनेज अवलबे छे ए वात अमे
पण अनेक वार कही गया छीए, तेथी आ भावपुजा वखते स्तु
स्तवनादिना अर्थोनु मनन करता भावनाश्रेणीए आरोहण करवा
अभ्यास राखवो

(५) अवस्थात्रिक—पिंडस्थ अवस्था, पदस्थ अवस्था अ
रुपातीत अवस्था. ए त्रण अवस्थाओनो आ अवस्थात्रिकमा स
वेश थाय छे प्रभुए तीर्थंकर नामकर्म बाध्यु त्यारथी लइने
वळज्ञान प्राप्त कर्यु त्यासुधीनी अवस्थाने छद्मस्थ अवस्था क
वामा आवे छे, अने तेमा पण जन्मावस्था, राज्यावस्था, श्र
णावस्था समाइ जाय छे प्रभुने स्नान करावती वखते जन्म
वस्थानु चिंतन करवु, केशर चदन अने अगारो चडावती वर
राज्यावस्थानुं चिंतवन करवु अने भगवतनी केशादि रहित मुर्त्ति
हाळी श्रमणावस्थानु ध्यान करवु पदस्थ अवस्थानु ध्यान क
वेळा केवळी तरीकेनी अवस्था चिंतववी, अने तेनी साथे आठ
तिहार्य तथा चार अतिशयनी भावना सयुक्त करवी रूपातीत अव
ए सिद्धपणानी अवस्था छे. प्रभुने पर्यंकासने अथवा कासोत्सर्गमुद्र

स्थित थयेला नीहाळी तद्रूप थवानी भावना भाववानी छे.

(६) दिशावर्जनत्रिक—उंची, नीची अने आडी अवळी दृष्टि फेंचवी मूकी दइ केवळ मात्र जिनमुख उपरज दृष्टि स्थापी राखवी तेने दिशावर्जनत्रिक नामथी संबोधवामां आवे छे.

(७) पद्भूमिप्रमार्जनत्रिक—चैत्यवंदनादि करती वखते पग मूकवानी भूमिने त्रण वार पुंजवी तेनो आ त्रिकमां समावेश छे.

(८) आलंबनत्रिक—नमुथ्थुणं विगेरे सूत्रनो उच्चार करतां अक्षरो शुद्ध रीते बोलवा ते वर्णालंबन अने सूत्रना अर्थनुं मनन करवुं अर्थालंबन तथा जिनप्रतिमानी उपर दृष्टि स्थापी राखवी ते प्रतिमालंबन, एम आलंबनना पण त्रण प्रकार छे.

(९) मुद्रात्रिक-अर्थात् योगमुद्रा जिनमुद्रा अने मुक्ताशुक्तिमुद्रा, एम त्रण प्रकारनी मुद्राओ समजी भाविक पूजके योग्य अवसरे ते मुजब वर्तवुं. बे हाथनी दशे आंगळीने परस्पर मेळवी कमळना डोडाना आकारे हाथ जोडी पेट उपर कोणी राखवी ते योगमुद्रा कहेवाय. आ मुद्राए खमासमण देवां अने स्तवनादि कहेवां. बे पगनां आंगळांनी वच्चमां आगळ चार आंगळ जेटलुं अने पाछळथी सहेज ओछुं अंतर राखी उभा रही काउस्सग्ग करवो ते जिनमुद्रा कहेवाय. आ मुद्राए वांदणां देवानां छे, अरिहंतचेइयाणं आदि कहेवानुं छे तथा काउस्सग्ग करवाना छे. बे हाथ सरखा गर्भितपणे भेगा करी कपाळना मध्य भागमां लगाडवा तेने मोतीनी छीप जेवी मुद्रा कहेवामां आवे छे. आ मुद्राए जय वीयराय आदि भणवाना छे.

(१०) प्रणिधानत्रिक—(१) जावंति चेइआंइ गाथाथी चैत्यवंदनरूप प्रणिधान थाय छे, (२) जावंत केवि साहू गाथाथी गुरुवंदनरूप प्रणिधान थाय छे अने जय वीयराय प्रमुख सूत्रथी प्रार्थना-

स्वरूप प्रणिधान थाय छे. ए त्रण प्रकारना प्रणिधाननु स्वरू लक्षमा राखवा योग्य छे.

देरासरमां प्रवेश करती वेळा उक्त दशत्रिक जाणवानी जेम जरु छे तेज प्रकारे अभिगमनुं स्वरूप पण लक्षगत होवु जोइए. अभिगम ना पाच प्रकार छे. (१) फळ, फूलदि सचित्त वस्तुनो त्याग कर वो. (२) नाणु, वस्त्र, आभुषण आदि अचित्त वस्तुने न छाडवं (३ मनने एकाग्र करवु. (४) उत्तरासग एकवट्टु अने न छेडा सहित राखवु (५) जिनेश्वरने दूरथी नीहाळी अजलिब प्रणाम करवा अने "नमो जिणाण"नो उच्चार करवो. दर्शन कर वेळा पुरुषोए जिनेश्वर भगवाननी जमणी दिशाए उभा रहेवु अ स्त्रीओए डावी दिशामा उभा रहेवु एवी शास्त्राज्ञा छे. आ आज्ञा केटलेक स्थळे पालन थतुं नहीं होवाथी स्त्री पुरुषनो सघट्ट थाय छे ते इच्छवा जोग नथी.

प्रसगोपात अवग्रह अने वदना सबधे पण बे बोल कहीशु. जिने श्वर भगवानथी ९ हाथ दूर रही चैत्यवदना करवी तेने जघन्य अ वग्रह कहेवामा आवे छे. नव हाथथी वधारे अने साठ हाथनी अद रही वदना करवी तेने मध्यम अवग्रह कहेवाय छे अने साठ हा दूर रही वदना करवी ते उत्कृष्ट अवग्रह लेखाय [१]छे. वदनाना प तेवा त्रण भेद छे. केवळ नवकारादि स्तुति श्लोकादिथी प्रभुवद करवी ते जघन्य वदना, चैत्यवदन करी, नमुथ्थुण भणी; उभा अरिहतचेइयाण कही काउस्सग्ग पारी स्तुति कहेवी तेने मध्यम दना अने पाच नमुथ्थुण, आठ स्तुति तथा जावति चेइयाण. जा केवि साहू अने जय वीयरायवडे वंदना करवी तेने उत्कृष्ट वद

१ आ अवग्रहमा देरासरनी विशाळता विगेरे प्रमाण ध्यानमा राखी तद्योग्य अव जाळववाना छे

हेवामां आवे छे.

आपणे जे स्तवनोनो देवमंदिरमां पाठ करीए छीए तेने पण पू- ाचार्योए चार भागोमां वहेंची नाख्यां छे अने ते भेदो पण आ- ोपकारक होवाथी हृदयमां राखवा लायक छे. स्तवनना सामान्य- चार प्रकार छे. (१) प्रभु पासे मोक्षनी मागणी थती होय एवा कारना स्तवनने यांचारूप स्तवन कहेवामां आवे छे. दाखला तरी- ;—"जिनजी चंद्रप्रभु अवधारो के नाथ नीहाळजो रे" ए स्तवनमां त्तर्ा रामविजय कवि पोते पोतानो उद्धार करवानी श्री वीतराग देवने ार्थना करे छे, तेथी तेवी ढबनां स्तवना यांचारूप स्तवनमां स्थान ामे छे. (२) गुणोत्कीर्त्तनरूप स्तवन अर्थात् प्रभुना बाह्य अने भ्यंतर गुणोना वर्णन साथे तेमनी वाणी अने अतिशयोनुं स्वरूप ामां लक्षगत थतुं होय तेने गुणोत्कीर्त्तनरूप स्तवन कहेवामां ावे छे. दृष्टांत तरीके—

"श्री श्रेयांस जिणंद घनाघन गहगह्यो रे,
वृक्ष अशोकनी छाये सुभर छाइ रह्यो रे;
भामंडळनी झबक झबूके वीजळी रे.
उन्नत गढत्रिक इंद्र धनुष्य शोभा मळी रे."

आ स्तवनमां प्रभुनां अतिशयोनुं अने प्रातिहार्योनुं चित्र दृष्टि स- ुख खडुं थाय छे. तेथी तेने गुणोत्कीर्त्तनरूप स्तवननी कक्षामां मू- ावामां आवे छे. (३) स्वनिंदारूप स्तवन—अर्थात् स्तोत्र भणनार जे ाव्यवडे पोतानी आत्मनिंदा प्रभु पासे सरल चित्त करतो होय तेने ानिंदारूप स्तवन कहेवाय छे. दाखला तरीके रत्नाकरपचीशी के ेमां बहु असरकारक रीते स्वदोषोनुं वर्णन कर्युं छे आ पेटामां स- ाइ शके तेमज गुजराती भाषानां स्तवनोमां पण—

"प्रभुजी मुज अवगुण मत देखो—

रागदशाथी तुं रहे न्यारो. हुं मन रागे वालुं
द्वेषरहित तु समता भीनो, द्वेषमारग हु चालु. प्रभुजी० ”

एवा अनेक स्तवनो मळी आवे छे. (४) आत्मस्वरूपानुभव अथ त् प्रभु सन्मुख निश्चय स्वरूपथी पोतानामा अने प्रभुजीमा लेश भेद नथी एवा अनुभवपूर्वक सकळ आत्मस्वरूपना निरूपण साथे स्तुति करवी तेने आत्मस्वरूपानुभवरूप स्तवन कहेवाय. दाखला तरीके

“जगत् दिवाकर श्री नमीश्वर स्वामी जो,
तुज मुख दीठे नाठी भूल अनादिनी रे;
जाग्यो सम्यग्ज्ञान सुधारस धाम जो,
छाडी दुर्जय मिथ्या निंद प्रमादनी रे–”

इत्यादि स्तवनो के जेमा स्तुति करनार शुद्धात्मा प्रभुनी साथे तद्रूपता अनुभवतो होय तेने उपर कही तेवी कोटीमा मूकवामा आवे

अंतिम वचन.

अविधिए थतुं पूजन तथा वंदन दूर थाय अने पूर्वाचार्योए दर्शावेल फळ प्राप्त थाय एटलामाटे अमे शास्त्रीय पद्धत्तिनो किंचित् परिचय आपवानो आ भूमिकामा प्रयत्न सेव्यो छे. तेमा जो कोइ पण स्थळे भूलचूक के प्रमाद जेवु जणाय तो तेने माटे क्षमा याची छेवटे प्रार्थीए छीए के वीतराग देवनी पूजा के जे पापनो लोप करे छे, दुर्गतिने काची घडीमा दळी नाखे छे, आपदाओनो संहार करे छे, पुण्यनो संचय करे छे, सौंदर्यने-लक्ष्मीने वधारे छे, आरोग्य, सौभाग्य अने प्रेमने खीलावे छे एटलुज नहीं, पण यशोराशिने प्रसरावी अन्ते स्वर्ग तथा मोक्ष पर्यंत लइ जइ शके छे ते पूजा अने ते पूजानु अलौकिक रमणीय फळ अमारा वाचकोने पण प्राप्त थाओ

प्रकाशक.

अनुक्रमणिका.

तवनसंग्रह खंड १ लो प्रातःस्मरण पृष्ठ १ थी २३.

तवनसंग्रह खंड २ जो. देरासरे जवानी विधि

पृष्ठ २३ थी ४३.

अथ चैत्यवंदन विधि पृष्ठ २७ थी ३४.

जिनदर्शन तथा पूजाभावनास्वरूप पृष्ठ ३४ थी ३९

स्तवनसंग्रह खंड त्रीजो. तिथि विगेरेनां चैत्यवंदनो, स्तवनो तथा थोयो पृष्ठ ४४ थी ६०.

स्तवनसंग्रह खंड ४ थो. चोवीश तीर्थंकरनां चैत्यवंदनं स्तवनो तथा थोयो पृष्ठ ६१ थी एए.

स्तवनसंग्रह खंड ५ मो. प्रकीर्ण स्तवन तथा चैत्यवंदन-

संग्रह पृष्ट १०० थी १९९.

स्तवनसंग्रह खंड ६ ठो. उपदेशात्मक पदोनी रसमय चुंटणी पृष्ठ २०० थी २४२.

स्तवनसंग्रह खंड ७ मो सज्झायोनो समुच्चय

पृष्ठ २४३ थी २७४.

स्तवनसंग्रह खंड आठमो. लावणीसंग्रह तथा आरतीसमूह पृष्ठ २७५ थी २९९.

स्तवनसंग्रह खंड दशमो.

श्री नवस्मरण, शलोका नेमजीनो नवरसो वगेरे पृष्ठ ३२१ थी ४२४





क्षमा ते महा दान छे, क्षमा ते महा तप छे, क्षमा ते महा ज्ञान छे, क्षमा ते महा दम छे, क्षमा ते महा शील छे, क्षमा ते महा पराक्रम छे, क्षमा संतोष छे, क्षमा ते इंद्रियनिग्रह छे, क्षमा ते महाकुल छे, क्षमा ते महा वीर्य छे, क्षमा ते महा शौर्य छे, क्षमा ते मोटी दया छे, क्षमा ते सुंदर रूप छे, क्षमा ते महा बळ छे, क्षमा ते महा ऐश्वर्य छे, क्षमा ते मोटी धीरता छे, क्षमा ते परम ब्रह्म छे, क्षमा ते महा सत्य छे, क्षमा उत्कृष्ट मुक्तिने आपनार छे, क्षमा सर्व अर्थने साधवावाळी छे, क्षमा जगत्पूज्य छे, क्षमा जगतने हित करनार छे, क्षमा ते कल्याणने देवावाळी छे, क्षमा ते उत्कृष्ट मंगळ छे, क्षमा ते अंतरंग चार शत्रुओने नाश करनार छे, माटे क्षमाने धारण करी क्षमा राखीने वर्तो.



श्री आनंदघनजी कृत

श्री कुंथुनाथ स्वामीनुं स्तवन.

॥ राग गुर्जरी ॥ अंबर देहो मुरारी हमारो० ॥ ए देशी ॥

कुंथुजिन मनडुं किमही न बाजे, हो कुं० ॥ जिम जिम जतन करीने राखुं, तिम तिम अलगुं भाजे हो ॥ कुं० ॥ १ ॥ रजनी वासर वसती उजड, गयण पायाले जाय; साप खायने मुखडुं थोथुं, एह उखाणो न्याय हो ॥ कुं० ॥२॥ मुगति तणा अभिलाषी तपीया, ज्ञानने ध्यान अभ्यासे, वयरीडुं कांइ एहवुं चिंते, नाखे अवले पासे हो ॥ कुं० ॥ ३ ॥ आगम आगमधरने हाथे; नावे किणविध आंकुं; किहां कणे जो हठ करी हटकुं, तो व्याल तणी परे वांकुं हो ॥ कुं० ॥ ४॥ ठग कहुं तो ठगतो न देखुं, शाहुकार पण नाही; सर्व मांहे ने सहुंथी अलगुं, ए अचरिज मन मांही हो ॥ कुं० ॥ ५ ॥ जे जे कहुं ते कान न धारे, आप मते रहे कालो; सुर नर पंडित जन समजावे, समजे न महारो सालो हो ॥ कुं० ॥ ६ ॥ में जाण्युं ए लिंग नपुंसक, सकल मरदने ठेले; बीजी वाते समरथ छे नर, एहने कोइ न जेले ॥ कुं० ॥ ७ ॥ मन साध्युं तेणे सघलुं साध्युं, एह वात नहि खोटी एम कहे साध्युं ते नवि मानुं, ए कहि वात छे महोटी हो ॥ कुं० ॥ ८ ॥ मनडुं दुराध्य तें वश आण्युं, ते आगमथी मति आणुं; आनंदघन प्रभु माहरुं आणो, तो साचुं करी जाणुं हो ॥ कुं० ॥ ९ ॥



॥ श्रावकनुं कर्त्तव्य ॥

रात्रीना पाछला पहोरे चार घडी बाकी रहे त्यारे ब्रह्म मुहू नवकार मंत्रनुं स्मरण करता श्रावके जाग्रत थवुं. पोते कोण छे, छे, केटलो वखत थयो छे अने लघुनीति के वडीनीतिनी शंका नहीं एम विचार करतो शय्यामा निद्रा रहित थाय. नासिका करीने श्वासोश्वास दबाववाथी निद्रा रहित थवाय छे, माटे निद्रा र थइने काइ पण स्वर कर्या वगर झाडा पीशाब करवाना स्थले शंका रहित थइने महा मंगलकारी नवकार मत्रनु स्मरण करे. शय्य बेठा बेठा नवकार मंत्रनु स्मरण करवु होय तो सूत्रनो अविनय करवाने मनमांज चिंतवन करवु. ओछामां ओछुं जाग्रत थती व सात आठ नवकार मत्रनु स्मरण करवानुं शास्त्रमां कह्युं छे. वली ते व धर्मजागरिका एटले धर्म विषेना विचारो करवा पण श्रेष्ठ छे. हु छुं, मारे शुं करवानुं छे, पापी छु के धर्मी छुं विगेरे विचार करी य नियमथी वर्तवानो निश्चय करे. पछी जो प्रतिक्रमण बनी शके तो करवु अने न बनतुं होय तोपण कुस्वप्न दुःस्वप्न अमगलिक होय एनु फल मिथ्या करवा माटे जाग्रत थया पछी चार लोगस कायोत्सर्ग करवो.

॥ स्तवन संग्रह ॥

॥ प्रथम खंड ॥

॥ प्रातःस्मरण ॥

सर्वारिष्टप्रणाशाय, सर्वाभीष्टार्थदायिने ।
सर्वलब्धिनिधानाय, गौतमस्वामिने नमः ॥

भावार्थः—सर्व प्रकारनां पापो अने विघ्नोनो नाश करनार तथा
प्रकारना मनोरथो सिद्ध करनार अने सर्व प्रकारनी लब्धिओना
डार समान श्री गौतमस्वामीने नमस्कार हो ॥

॥ नवकार मंत्र ॥

॥ नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरि-
ाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं,
ो पंचनमुक्कारो सव्वपावप्पणासणो मंगलाणं च स-
सिं पढमं हवइ मंगलं ॥

॥ नवकार मंत्रनुं माहात्म्य ॥ दोहरा ॥

॥ वांछित पूरे विविध परे, श्री जिनशासन सार ॥
श्री नवकार नित्य, जपतां जयजयकार ॥१॥ अड-
अक्षर अधिक फल, नव पद नवे निधान ॥ वीत-
स्वयं मुख वदे, पंच परमेष्ठी प्रधान ॥२॥ एकज अ-
एक चित्त, समर्पे संपत्ति थाय ॥ संचित सागर

सातनां, पातक दूर पलाय ॥३॥ सकल मंत्र शिर मुकु
मणि, सद्गुरु भाषित सार ॥ सो भवियां मन शुद्ध
नित्य जपीए नवकार, ॥ ४ ॥

॥ छद हाटकी ॥

॥ नवकार थकी श्रीपाल नरेसर, पाम्यो राज्य
सिद्ध ॥ समशाना विषे शिव नाम कुमरने, सोव
पुरिसो सिद्ध ॥ नव लाख जपंतां नरक निवारे, पा
भवनो पार ॥ सो भवियां भत्ते चोखे चित्ते, नि
जपीए नवकार ॥ १ ॥ वांधी वडशाखा शिंके बेस
हेठल कुंड हुताश ॥ तस्करने मंत्र समर्प्यो श्राव
उड्यो ते आकाश ॥ विधि रीते जपतां विषधर
टाले, ढाले अमृत धार ॥सो०॥२॥ वीजोरा कारण र
महावल, व्यंतर दुष्ट विरोध ॥ जेणे नवकारे ह
टाली, पाम्यो यक्ष प्रतिवोध ॥ नव लाख जपतां थ
जिनवर, इस्यो छे अधिकार ॥ सो० ॥ ॥ ३ ॥ पल्लिप
शिख्यो मुनिवर पासे, महा मंत्र मन शुद्ध ॥ पर
ते रायसिंह पृथिवीपति, पाम्यो परिगल ऋद्ध ॥ ए
थकी अमरापुर पहोच्यो, चारुदत्त सुविचार ॥ सो०
संन्यासी काशी तप साधंतो, पंचाग्नि परजाले ॥ द

पासकुमारे पन्नग, अधबलतो ते टाळे ॥ संभ-
ळ्यो श्री नवकार स्वयंमुख, इंद्रभुवन अवतार ॥
० ॥५॥ मन शुद्धे जपतां मयणासुंदररी, पामी प्रिय
योग ॥ इण ध्याने कष्ट टळ्युं उंबरनुं, रक्तपित्तनो
ग ॥ निश्चेशुं जपतां नव निधि थापे, धर्म तणो
ाधार ॥ सो० ॥ ६ ॥ घट मांहि कृष्ण भुजंगम घाल्यो,
रणी करवा घात ॥ परमेष्ठिप्रभावे हार फूलनो, वसुधा
ांहि विख्यात ॥ कमलावतीए पिंगल कीधो, पाप
णो परिहार ॥ सो० ॥ ७ ॥ गयणांगण जाती राखी
हीने, पामी बाणप्रहार ॥ पद पंच सुणंतां पांडुपति
, ते थइ कुंता नार ॥ ए मंत्र अमूलक महिमा
दिर, भवदुःख भंजणहार ॥ सो० ॥८॥ कंबल ने संबल
द्व काढ्यां, शकट पांचसें धान ॥ दीधे नवकार
॥ देवलोके, विलसे अमर विमान ॥ ए मंत्र थकी
ात्ति वसुधामां लही, विलशे जैन विहार ॥ सो० ॥९॥
गे चोवीशी हुइ अनंती, होशे वार अनंत ॥ नवकार
ी कोइ आदि न जाणे, इम भाखे अरिहंत ॥ पूरव
शि चारे आदि प्रपंचे, समर्या संपत्ति सार ॥ सो० ॥
॥ परमेष्ठि सुरपद ते पण पामे, जे कृत कर्म कठोर ॥

पुंडरगिरि उपर प्रत्यक्ष पेख्यो, मणिधर ने एक मोर
सद्गुरुने सनमुख विधे समरंतां, सफल जनम
सार ॥ सो० ॥ ११ ॥ शूलिकारोपण तस्कर कीधो, लो
खरो परसिद्ध ॥ तिहां शेठे नवकार सुणाव्यो, पाम
अमरनी रिद्ध ॥ शेठने घेर आवी विघ्न निवार्या, सु
करी मनोहार ॥ सो० ॥१२॥ पच परमेष्ठी ज्ञानज पंच
पंच दान चारित्र ॥ पंच सज्झाय महाव्रत पंचह, पं
समिति समकित ॥ पंच प्रमाद विषय तजो पंचह, पा
पंचाचार ॥ सो भवियां० ॥ १३ ॥

॥ कलश–छप्पय ॥

॥ नित्य जपीए नवकार, सार संपत्ति सुखदायक
सिद्ध मंत्र ए शाश्वतो, जपे इम श्री जगनायक ॥ श्र
अरिहंत सुसिद्ध, शुद्ध आचार्य भणीजे ॥ श्री उ
ज्झाय सुसाधु, पच परमेष्ठी थुणीजे ॥ नवकार स
संसार छे, कुशललाभ वाचक कहे ॥ एक चित्ते आ
राधतां, विविध ऋद्धि वांछित लहे ॥ १४ ॥

॥ श्री गौतमस्वामीनो रास ॥ प्रथम ढाल ॥

॥ वीर जिणेसर चरणकमल कमला कयवास
पणमवि पभणिसु सामि साल गोयम गुरु रासो ॥ म

ाणु वयण एकंत करवि निसुणो भो भवियां, जिम
निवसे तुम देहगेह गुणगण गहगहीआ ॥ १ ॥ जंबुदीव
भरि भरहखित्त खोणीतलमंडण, मगधदेश सेणीय
ारेश रिउदलवलखंडण ॥ धणवर गुब्बर गाम नाम
ाहीं गुणगण सज्जा, विप्प वसे वसुभूइ तह तसु
हवी भज्जा ॥ २ ॥ ताण पुत्त सिरिइंदभूइ भूवलयप-
सिद्धो चउदह विज्जा विविह रूव नारी रस विद्धो ॥ वि-
ाय विवेक विचार सार गुणगणह मनोहर, सात हाथ
ुप्रमाण देह रूपे रंभावर ॥ ३ ॥ नयण वयण कर चरण
जणवी पंकज जले पाडिअ, तेजे तारा चंद सूर
ाकाशे भमाडिअ ॥ रूवे मयण अनंग करवि मेल्हिउं
नरधाडिअ, धीरमें मेरु गंभीर सिंधु चंगिम चय-
ाडिअ ॥ ४ ॥ पेखवि निरुवम रूव जास जण जंपे
िंचिअ, एकाकी कलिभीते इत्थ गुण मेहल्या सं-
ेचिअ ॥ अहवा निश्चे पुव्वजम्मे जिणवर इणे अंचिअ,
ंभा पउमा गौरी गंग रतिहा विधि वंचिअ ॥ ५ ॥
ि बुध नहि गुरु कवि न कोइ जसु आगल रहिउं,
ंवसया गुणपात्र छात्र हींडे परवरिउं ॥ करे निरंतर
ज्ञकर्म मिथ्यामति मोहिअ, इणे छलि होशे चरण-

नाण दंसणह विसोहिश्र ॥ ६ ॥

॥ वस्तु छंद ॥

॥ जंबुदीवह जंबुदीवह जरहवासंमि, खोणीत
खमंकणो, मगधदेश सेणीय नरेसर, वर गुब्बर गा
तिहां, विप्प वसे वसुन्नूइ सुंदर, तसु नज्जा पुहर
सयल, गुणगण रूवनिहाण, ताण पुत्त विज्जानिल
गोयम अतिहि सुजाण ॥ ७ ॥

॥ द्वीतीय ढाल ॥ भाषा ॥

॥ चरम जिणेसर केवलनाणी, चउविह संघ पइ
जाणी ॥ पावापुर सामी संपत्तो, चउविह देव निक
यहि जुत्तो ॥ ८ ॥ देवे समवसरण तिहां कीजे, जि
दीठे मिथ्यामति खीजे ॥ त्रिजुवनगुरु सिंघासणे बेठ
ततखिण मोह दिगंते पइठा ॥ ए ॥ क्रोध मान माय
मदपूरा, जाये नाठा जिम दिने चौरा ॥ देवदुंदुनि
आकाशे वाजी, धर्मनरेसर आव्या गाजी ॥१०॥ कुसु
मवृष्टि विरचे तिहां देवा, चउसठ इंद्र जस मा
सेवा ॥ चामर छत्र शिरोवरि सोहे, रूपे जिणवर ज
सहु मोहे ॥११॥ उपसम रसजर जरी वरसंता, योज
वाणी वखाण करंता ॥ जाणिश्र वर्धमान जिण पाय

ुर नर किंनर आवे राया ॥१२॥ कांतिसमूहे झलझल-
ंता, गयण विमाणे रणरणकंता ॥ पेखवि इंद्रभूइ मन
चिंते, सुर आवे अम्ह यज्ञ होवंते ॥१३॥ तीर तरंडक
जेम ते वहता, समवसरण पहुता गहगहता ॥ तो
अभिमाने गोयम जंपे, इण अवसरे कोपे तणु कंपे ॥
१४ ॥ मूढा लोक अजाण्यो बोले, सुर जाणंता इम
कांइ डोले ॥ मु आगल को जाण भणीजे मेरु अवर
किम उपम दीजे ? ॥ १५ ॥

॥ वस्तु छंद ॥

॥ वीर जिणवर वीर जिणवर, नाणसंपन्न, पावा-
पुरी सुरमहिय पत्तनाह संसारतारण, तिहिं देवेहिं
निम्मविअ, समोसरण बहु सुखकाराण, जिणवर
जग उज्जोअकर तेजे करी दिणकार, सिंहासणे सामीय
ठव्यो,हुउ सुजयजयकार ॥ १६ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ भाषा ॥

॥ तव चढिउ घणमाणगजे, इंदभूइ भूदेव तो॥ हुंकारो
करि संचरिउ, कवणसु जिणवर देव तो ॥ १७ ॥ योजन
भूमि समोसरण, पेखे प्रथमारंभ तो ॥ दह दिसि
देखे विबुध वहू, आवंती सुररंभ तो ॥ १८ ॥ मणिमय

तोरण दंड धज, कोसीसे नव घाट नो ॥ वयर विव
र्जित जंतुगण, प्रातिहारज आठ तो ॥ १ए ॥ सुर न
किंनर असुर वर, इंड इंद्राणी राय तो ॥ चित्त चम
क्किय चितवे ए, सेवंता प्रजुपाय तो ॥ २० ॥ सहस
किरण सम वीर जिण, पेखवे रूप विशाल तो ॥ एह
असंजव संजवे ए, साचो ए इंद्रजाल तो ॥ २१ ॥ तव
बोलावे त्रिजग गुरु, इंदजूइ नामेण तो ॥ श्रीमुखे सं
शय सामि सवे, फेडे वेदपएण तो ॥ २२ ॥ मान मेल्ही
मद ठेली करी, जक्किए नामे शीस तो ॥ पचसयाशु
व्रत लीउं ए, गोयम पहेलो शीस तो ॥ २३ ॥ बंध
सजम सुणवि करी, अगनिजूइआवेय तो ॥ नाम लेइ
अन्यास करे, ते पण प्रतिबोधेय तो ॥ २४ ॥ इणे अनु
क्रमे गणहर रयण, थाप्या वीरे अग्यार तो ॥ तव उप
देशे जुवनगुरु, सयमशुं व्रत बार तो ॥ २५ ॥ बि
उपवासे पारणुं ए, आपणपे विहरंत तो ॥ गोयम
सयम जग सयल, जयजयकार करंत तो ॥ २६ ॥

॥ वस्तु छद ॥

॥ इदजूइअ, इंदजूइअ, चढिअ बहु माने, हुंकार
२ करीकपतो, समोसरणे पहोतो तुहोतो तुरंत, अह संस

ामि सवे, चरमनाह फेडे फुरंत, बोधिबीज संजाय
ाने, गोयम जवह विरत्त, दिरक लेइ सिरका सहिअ,
ाणहरपय संपत्त ॥ २७ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ भाषा ॥

॥ आज हुउं सुविहाण, आज पचेलिमां पुण्य जरो ॥
ीठा गोयम सामि, जो निअ नयणे अमिय सरो ॥
० ॥ (सिरिगोयम गणधार, पंचसया मुनि परवरिय॥
ूमिय करथ विहार, जवियण जन पमिबोह करे ॥)
मवसरण मझारि, जे जे संशय उपजे ए ॥ तेते परउ-
ाकार, कारण पूछे मुनिपवरो ॥ २ए ॥ जिहा जिहां दीजे
ीख, तिहां तिहां केवल उपजे ए ॥ आप कन्हे अण-
ुत, गोयम दीजे दान इम ॥ ३० ॥ गुरु उपरि गुरु जत्ति,
ामी गोयम उपनीय ॥ एणि छल केवलनाण, रा-
ज राखे रंगजरे ॥ ३१ ॥ जो अष्टापद शैल, वंदे चमि
उवीस जिण ॥ आतमलब्धि वसेण, चरमसरीरी
ोइ मुनि ॥ ३२ ॥ इय देसण निसुणेइ, गोयम गण-
र संचलिउं ॥ तापस पन्नरसएण, तो मुनि दीठो
ावतो ए ॥ ३३ ॥ तपसोसिय निय अंग, अम्ह सगति
वि उपजे ए ॥ किम चमसे दृढ काय, गज जिम

दीसे गाजतो ए ॥ ३४ ॥ गिरुए एणे अभिमान, ता
पस जो मने चिंतवे ए ॥ तो मुनि चढियो वेग, आ
लंबवि दिनकर किरण ॥ ३५ ॥ कंचणमणि निप्पन्न
दंड कलस धज वड सहिअ ॥ पेखवि परमानंद
जिणहर भरतेसर विहिअ ॥ ३६ ॥ निय निय काय
प्रमाण, चउदिसि संठिअ जिणह विंव ॥ पणमि
मन उल्हास, गोयम, गणहर तिहां वसिय ॥ ३७ ॥
वइर सामीनो जीव, तिर्यक्जृंभक देव तिहां ॥ प्रति
बोधे पुंडरीक, कंडरीक अध्ययन भणी ॥ ३८ ॥ वलता
गोयम सामी, सवि तापस प्रतिबोध करे ॥ लेइ आ
पणे साथ, चाले जिम जुथाधिपति ॥ ३९ ॥ खीर खांड
घृत आणि, अमिअवूठ अंगुठ ठवी ॥ गोयम एक
पात्र, करावे पारणो सवि ॥ ४० ॥ पचसया शुभ भावि
उज्ज्वल भरियो खीरमसि ॥ साचा गुरु सयोगे, कवल
केवलरुप हुउ ॥ ४१ ॥ पचसया जिणनाह, समवसरण
प्राकार त्रय ॥ पेखवी केवलनाण, उपन्नु उज्जो
करे ॥ ४२ ॥ जाणो जिणवि पीयुष, गाजती घण मेघ
जिम ॥ जिनवाणी निसुणेइ, नाणी हुआ पंचसय ॥ ४३

॥ वस्तु छंद ॥

॥ इण अनुक्रमे, इणे अनुक्रमे, नाण संपन्न, पन्न-
ह सय परिवरिय; हरिय दुरिय, जिणनाह वंदइ;
नाणेवि जगगुरु वयण तिहनाण अप्पाण निंदइ;
चरम जिणेसर इम नणे, गोयम करिस म खेउ;
छहि जइ आपणे सही, होस्युं तुल्ला वेउ ॥ ४४ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ भाषा ॥

॥ सामीउं ए वीर जिणंद, पुनिमचंद जिम उल्ल-
सिय ॥ विहरिउं ए नरहवासंमि, वरस वहोत्तर संव-
सिय ॥ ठवतो ए कणय उपमेव, पायकमल संघहि
सहिय ॥ आविउं ए नयणाणंद, नयर पावापुरि सुर-
महिय ॥ ४५ ॥ पेखीउं ए गोयमसामि, देवसर्मा प्रति
बोध कए ॥ आपण ए त्रिशलादेवी,—नंदन पहोतो
परमपए ॥ वलतो ए देव आकासि, पेखवि जाएयो
जण समे ए ॥ तो मुनि ए मन विखवाद, नादन्नेद
जिम उपनो ए ॥ ४६ ॥ कुण समे ए सामिय देखी,
आप कन्हे हुं टालीउं ए ॥ जाणतो ए तिहुअणनाह,
लोकविवहार न पालिउं ए ॥ अति नलुं ए कीधलुं
सामि, जाएयुं केवल मागसे ए ॥ चिंतव्युं ए बालक

जेम, अहवा केडे लागशे ए ॥ ४७ ॥ हुं किम ए वी जिणंद, नगते नोलो नोलव्यो ए ॥ आपणो ए अवि हड नेह, नाह न संपे साचव्यो ए ॥ साचो ए एह वीतराग, नेह न जेहने लालिउ ए ॥ तिणे समे ए गोयम चित्त, राग विरागे वालिउं ए ॥ ४८ ॥ आवतं ए जे उलट, रहेतो रागे साहिउं ए ॥ केवलुं ए नाण उपन्न, गोयम सहेजे उमाहिउं ए ॥ त्रिजुवने ए जय जयकार, केवलिमहिमा सुर करे ए ॥ गणधरु ए कर वखाण, नवियण नव जिम निस्तरे ए ॥ ४९ ॥

॥ वस्तु छंद ॥

॥ पढम गणहर पढम गणहर, वरिस पचास गिह वासे संवसिअ, तीस वरिस सजम विनूसिय, सि केवलनाण, पुण बार वरस तिहुअण नमंसिअ, राज ग्रही नगरी ठव्यो, वाणुवय वरसाउ, सामी गोयम गुणनिलो, होस्ये सीवपुर ठाउ ॥ ५० ॥

॥ ढाल छठ्ठी ॥ भाषा ॥

॥ जिम सहकारे कोयल टहुके, जिम कुसुमहवने परिमल बहेके, जिम चंदन सोगंधनिधि ॥ जि गंगाजल लहेरे लहके, जिम कणयाचल तेजे ऊलके

तिम गोयम सोहागनिधि ॥ ५१ ॥ जिम मानससर निवसे हंसा, जिम सुरवर शिरे कणयवतंसा, जिम महुयर राजीव वने ॥ जिम रयणायर रयणे विलसे, जिम अंबर तारागण विकसे, तिम गोयम गुण केलिवनि ॥ ५२ ॥ पुनिम निशि जिम ससिहर सोहे, सुरतरु महिया जिम जग मोहे, पूरव दिसि जिम सहसकरो ॥ पंचानने जिम गिरिवर राजे, नरवइ घरे जिम मयगल गाजे, तिम जिनशासन मुनिपवरो ॥५३॥ जिम सुरतरुवर सोहे साखा, जिम उत्तम मुखे मधुरी भाषा, जिम वन केतकी महमहे ए ॥ जिम भूमिपति भूयबल चमके, जिम जिणमंदिर घंटा रणके, तिम गोयम लब्धे गहगहे ए ॥५४॥ चिंतामणि करे चढियुं आज, सुरतरु सारे वंछित काज, कामकुंभ सो वसि हुउं ए ॥ कामगवी पूरे मन कामी, अष्ट महा सिद्धि आवे धामी, सामी गोयम अणुसरु ए ॥ ५५ ॥ प्रणवाक्षर पहेलो भणिजे, माया बीज श्रवण निसुणीजे, श्रीमुखे शोभा संभवे ए ॥ देवह धुरि अरिहंत नमीजे, विनय पहु उवझाय थुणीजे, इणे मंत्रे गोयम नमो ए ॥ ५६ ॥ पुर पुर वसता कांइ

करीजे, देश देशान्तर कांइ नमीजे, कवण काउ आयास करो ॥ प्रह उठी गोयम समरीजे, काउ सवे ततखिण ते सीजे, नव निधि विलसे तास घरे ॥ ५७ ॥ चउदहसे (चउदसय) वारोत्तर वरिसे (गोयम गणधर केवल दिवसे) संज नयर प्रमु पास पसाये, कीधो कवित उपगारकरो ॥ आदिहै मंगल एह जणीजे, परव महोत्सव पहिलो दीजे रिद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ५८ ॥ धन्य माता जेणे उयरे धरीया, धन्य पिता जिण कुले अवतरीया, धन्य सहगुरु जिणे दीखिया ए ॥ विनयवंत विद्यानंभार, जस गुण पुहवी न लन्ने पार, वड जिम शाखा विस्तर ए ॥ ५९ ॥ गौतमस्वामीनो रास जणीजे, चउविह संघ रलियायत कीजे, सयल संघ आणंद करो ॥ कुंकुम चंदन ठकों देवरावो, माणेक मोतीना चोक पुरावो, रयण सिंहासण बेसणु ए ॥ ६० ॥ तिहां बेसी गुरु देशना देशे, नविक जीवनां काज सरेसे, उदयवंत (विजयचन्द्र) मुनि एम जणे ए ॥ गौतमस्वामि तणो ए रास, जणतां सुणतां लीलविलास, सासय सुख निधि संपजे ए ॥ ६१ ॥ एह रासजे नणे नणावे

रमयगल लही घर आवे, मनवंछित आशा फले
॥ ६२ ॥

॥ श्री गौतमस्वामीनो छंद ॥

॥ वीर जिनेश्वर केरो शिष्य, गौतम नाम जप-
नशदिश ॥ जो कीजे गौतमनुं ध्यान, तो घर विलसे
वे निधान ॥ १ ॥ गौतम नामे गिरिवर चढे, मनोवां-
छेत हेला संपजे ॥ गौतम नामे नावे रोग, गौतम
ामे सर्व संयोग ॥ २ ॥ जे वैरी विरुआ वंकडा, तस
ामे नावे ढुकडा॥ भूत प्रेत नवि मंडे प्राण, ते गौत-
नां करुं वखाण ॥३॥ गौतम नामे निर्मल काय, गौतम
ामे वाधे आय ॥ गौतम जिनशासन शणगार, गौतम
ामे जयजयकार ॥ ४ ॥ शाल दाल सुरहा घृत गोल,
नोवांछित कापड तंबोल ॥ घर सुगृहिणी निर्मल
चेत्त, गौतम नामे पुत्र विनीत ॥ ५ ॥ गौतम उदयो
अविचल भाण, गौतम नाम जपो जग जाण ॥ म-
ोटा मंदिर मेरु समान, गौतम नामे सफल विहाण॥
॥ धर मयगल घोडानी जोड, वारु पहोंचे वांछित
ोड ॥ महीयल माने मोटा राय, जो त्रुठे गौतमना
ाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्या पातक टले, उत्तम नरनी

संगत मळे ॥ गौतम नामे निर्मळ ज्ञान, गौतम नामे वाधे वान ॥ ८ ॥ पुण्यवंत अवधारो सहु, गुरु गौतमना गुण छे बहु ॥ कहे लावण्यसमय कर जोम गौतम त्रुठे संपत्ति कोम ॥ ए ॥

॥ श्री गौतमस्वामीनुं प्रभाती स्तवन ॥ राग प्रभाती ॥

॥ मात पृथ्वी सुत प्रातः उठी नमो, गणधर गौतम नाम गेले ॥ प्रहसमे प्रेमशुं जेह ध्यातां सदा चढती कला होय वंशवेले ॥ मा० ॥ १ ॥ वसुन्नूति नंदन विश्वजन वंदन, दुरित निकंदन नाम जेहनुं अन्नेद बुद्धे करी न्नविजन जे न्नजे, पूर्ण पहोंचे सही न्नाग्य तेहनुं ॥ मा० ॥ २ ॥ सुरमणि जेह चितामणि सुरतरु, कामित पूरण कामधेनु ॥ एह गौतम तणु ध्यान हृदये धरो, जेह थकी अधिक नहीं माहात्म्य केहेनु ॥ मा० ॥ ३ ॥ प्रणव आदे धरी माया बीज करी, श्रीमुखे गौतम नाम ध्याये ॥ कोमि मनकामना सफल वेगे फळे, विघन वैरी सवे दूर जाये ॥ मा० ॥४॥ ज्ञान बल तेज ने सकल सुख संपदा, गौतम नामथी सिद्धि पामे ॥ अखम प्रचंम प्रताप होय अवनिमां, सुर नर जेहने शीश नामे ॥ मा० ॥५॥ दुष्ट दूर

ले स्वजन मेलो मले, आधि उपाधिने व्याधि नासे ॥
तनां प्रेतनां जोर जांजे वली, गौतम नाम जपतां
नासे ॥ मा० ॥ ६ ॥ तीर्थ अष्टापदे आप लब्धे जइ,
नरसें त्रणने दीख दीधी ॥ अठ्ठम पारणे तापस
रणे, क्षीर लब्धे करी अखुट कीधी ॥मा० ॥७॥ वरस
वास लगे गृहवासे वस्या, वरस वली त्रीश करी
र सेवा ॥ बार वरसां लगे केवल जोगव्युं, नक्ति
हनी करे नित्य देवा ॥ मा० ॥ ८ ॥ महीयल गौतम
ोत्र महिमानिधि, गुणनिधि रुद्धि ने सिद्धिदाइ ॥
दय जस नामथी अधिक लीला लहे, सुजस
ौनाग्य दोलत सवाइ ॥ मा० ॥ ए ॥

॥ सोल महासतीओनुं प्रातःस्मरण ॥

॥ आदिनाथ आदे जिनवर वंदी, सफल मनोरथ
ीजीए ए ॥ प्रनाते उठी मांगलिक कामे, सोल
तीनां नाम लीजीए ए ॥१॥ बालकुमारी जग हित-
ारी, ब्राह्मी नरतनी बहेनडी ए ॥ घटघट व्यापक
क्षररूपे, सोल सती मांहिजे वडी ए ॥ २ ॥ बाहुबल
गिनी सतीय शिरोमणि, सुंदरी नामे रुषनसुता
॥ अंक स्वरूपी त्रिज्ञुवन मांहे, जेह अनुपम गुण-

जुता ए ॥ ३ ॥ चंदनबाला बालपणाथी, शीयलव
शुद्ध श्राविका ए ॥ अरुदना वाकुला वीर प्रतिल
ज्या, केवल लही व्रत जाविका ए ॥३॥ उग्रसेन धुत्र
धारिणी नंदनी, राजीमती नेम वल्लजा ए ॥ जोब
वेशे कामने जीत्यो, संयम लेइ देव डुल्लजा ए
५ ॥ पंच जरतारी पांरुवनारी, डुपद तनया वखाणी
ए ॥ एकसो आठे चीर पूराणां, शीयल महिमा त
जाणीए ए ॥६॥ दशरथ नृपनी नारी निरुपम, कौशल्य
कुलचंद्रिका ए ॥ शीयल सलुणी रामजनेता, पुए
तणी प्रणालिका ए ॥ ७॥ कोशंबिक ठामे संतानि
नामे, राज्य करे रंग राजीउ ए ॥ तस घर गृहिए
मृगावती सती, सुरजुवने जश गाजीउ ए ॥८॥ सुलस
साची शीयले ए काची, राची नही विषयारसे ए ॥मु
खडुं जोतां पाप पलामे, नाम लेतां मन उल्लसे ए ॥ए
राम रघुवंशीतेहनीकामिनी, जनकसुतासीता सती ए
जग सहु जाणे धीज करंतां, अनल शीतल थयो शीर
लथी ए ॥ १० ॥काचे तांतणे चालणी बांधी, कुवा थव
जल काढीयु ए ॥ कलंक उतारवा सती सुजद्रा, चं
बार उघामीयुं ए ॥ ११ ॥ सुर नर वंदित शियल अर

नत, शिवा शिवपद गामिनी ए ॥ जेहने नामे निर्मल
ड्डए, बलिहारी तस नामनी ए ॥ १२ ॥ हस्तिनाग-
रे पांकु रायनी कुंता नामे कामिनी ए ॥ पांकव
ाता दसे दसारनी, ब्हेन पतिव्रता पद्मिनी ए ॥ १३ ॥
ीयलवती नामे शीलव्रत धारिणी, त्रिविधे तेहने
दीए ए ॥ नाम जपंतां पातक जाये, दरिसण डु-
रत निकंदीये ए ॥ १४ ॥ निषिधा नगरी नलह नरिं-
नी, दमयंती तस गेहिनी ए ॥ संकट पकतां शीय-
ज राख्युं, त्रिजुवन कीर्त्ति जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनंग
प्रजिता जगजन पूजिता, पुष्पचुला ने प्रजावती ए ॥
श्वविख्याता कामितदाता, सोलमी सती पद्मावती
॥ १६ ॥ वीरे जाखी शास्त्रे साखी, उदयरत्न जाखे
दा ए ॥ वहाणुंवातां जे नर जणशे, ते लेशे सुख
पदा ए ॥ १७ ॥

॥ श्री प्रभातीः स्तवन ॥

॥ जगो जगो रे मोरा आतमराम, जिनमुख जोवा
इये रे ॥ प्रजुजीनुं दरिशण ठे अति दोहेलुं, ते
म सोहेलुं जाणो रे ॥ वारंवार मानवजव जेहवुं,
वुं मुशकील टाणुं रे ॥ जगो जगो० ॥१॥ चार दिव-

सनो चटको मटको, देखीने मत राचो रे ॥ विणसी जातां वार न लागे, कायाघट छे काचो रे ॥ उठो उठो० ॥ २ ॥ हीरोहाथ अमूलख पायो, मूढपणे मत गमजो रे ॥ सहेज सलूणा पास जिणंदशुं, राजी थइ चित्त रमजो रे ॥ उठो उठो० ॥ ३ ॥ अनंत गुणे करी भरीउं जिनवर, पूरव पुण्ये पायो रे ॥ ते देखीने महारा मनमां, आनंद अधिक सोहायो रे ॥ उठो उठो० ॥ ४ ॥ मनगत मेरा आतमराम, करजो सुकृत कमाइरे ॥ लाभ उदय जिणचंद लइने, वर्त्ते सिद्ध सवाइ रे, वर्त्ते आनंद वधाइ रे ॥ उठो उठो० ॥ ५ ॥

॥ विषय वासना त्यागनु प्रभाती स्तवन ॥

॥ विषयवासना त्यागो चेतन, साचे मारग लागो रे ॥ ए आंकणी ॥ तप जप संयम दानादिक सहु, गिनती एक न आवे रे ॥ इंद्रियसुखमां जो लग ए मन, वक्र तुरंग जिम धावे रे ॥ विषय० ॥१॥ एक एकके कारण चेतन, वहुत वहुत दुःख पावे रे॥ ते तो प्रगट पणे दीसे, इणिविध भाव लखावे रे ॥ विषय० ॥ २ ॥ मन्मथ वश मातंग जगतमें, परवशता दुःख पावे रे ॥ रसना लुब्ध होय झग मूरख, जाल पड्यो पछ

तावे रे ॥ विषय० ॥३॥ घ्राण सुवास काज सुन जमरा, संपुट मांहे बंधावे रे ॥ ते सरोज संपुट संयुत पुन, गमरवके मुख जावे रे ॥ वि० ॥ ४ ॥ रूप मनोहर देख पतंगा, पकृत दीपमां जाइ रे ॥ देखो याको दुःखकारनमें, नयन जये हे सहाइ रे ॥ वि० ॥ ५ ॥ श्रोत्रेंद्रिय आसक्त मिरगलां, छिनमें शीश कटारे रे ॥ एक एक आसक्त जीव इम, नानाविध दुःख पावे रे ॥ विषय० ॥ ६ ॥ पंच प्रबल वर्त्तें नित जाकुं, ताकुं कहाजु कहीये रे ॥ चिदानंद ए वचन सुणीने, निज स्वजावमें रहीये रे ॥ विषय० ॥ ७ ॥

॥ श्री प्रभाती स्तवन ॥

॥ रे जीव जिनधर्म कीजीए, धर्मना चार प्रकार ॥ दान शीयल तप जावना, जगमां एटलुं सार ॥ रे जीव० ॥१॥ वरस दिवसने पारणे, आदीश्वर सुखकार ॥ शेरडी रस वोरावीयो, श्रीश्रेयांसकुमार ॥ रे जीव० ॥२॥ चंपा-पोल उघाडवा, चारणीए काढयां नीर ॥ सतीय सुजद्रा जश थयो, शीयले सुर नर धीर ॥ रे जीव० ॥ ३ ॥ तप करी काया शोषवी, सरस नीरस आहार ॥ वीर जिणंद वखाणीयो, धन्य धन्नो अणगार ॥ रे जीव०

॥ ४ ॥ अनित्य भावना भावतां, धरतां निर्मल ध्यान। भरत आरीसाभुवनमां, पाम्या केवलज्ञान ॥ रे जीव०। ॥५॥ जैनधर्म सुरतरु समो, जेहनी शीतल छाया ॥ समय सुंदर कहे सेवतां, वांछित फल पाया ॥ रे जीव० ॥६॥

॥ जागे सो जिन भक्त कहावे, सोवे सो संसारी हे ॥ त्रस जीवकी हत्या न करे, थावर करुणाकारी हे ॥ जागे० ॥ १ ॥ थापणमोसो अदत्त न लेवे चोरी मारी वारी हे ॥ पंचनी साखे पाणिग्रहण करतां अवर स्त्रीया ब्रह्मचारी हे ॥ जागे० ॥ २ ॥ स्नान प्रमित जल जिनकी सेवा, परिग्रह संख्या धारी हे रुपचंद कहे समकितके लक्षण, ताकु वंदना हमारी हे ॥ जागे० ॥ ३ ॥

अर्हन्तो भगवन्त महिताः सिद्धाश्च सिद्धिगता।
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायका॥
श्रीसिद्धांतसुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः।
पञ्चैते परमेष्टिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो मंगलम्



॥ द्वितीय खंड ॥



धन्यास्त एव भुवनाधिप ये त्रिसंध्य-
माराधयन्ति विधिवद्विधुतान्यकृत्याः ॥
भक्त्योल्लसत्पुलकपक्ष्मलदेहदेशाः
पादद्वयं तव विभो भुवि जन्मभाजः ॥

भावार्थ—हे त्रिभुवननाथ ! हे विभु ! तेज मनुष्योने धन्य छे के जे बीजा कार्यो छोडीने अने भक्तिए करी उल्लास पामता एवा रोमांचथी पोताना शरीरना भाग व्याप्त करी आपना चरणकमलने विधिपूर्वक त्रण काल आराधे छे–सेवे छे.

॥ देरासरे जवानी विधि ॥

त्यारपछी शक्ति अनुसार चौद नियम धारण करवा अने नवकारसी पोरिसी विगेरे यथाशक्ति पच्चरकाण करवुं. पछी जूदुं वस्त्र पहेरीने मलोत्सर्ग मौनपणे ज्यां निर्जीव स्थानक होय त्यां करवो. पछी दंतशुद्धि करवा माटे दातण करवुं अने ज्यांदांतनो मेल पडे त्या धूल नाखी यतनापूर्वक दररोज दातण करवुं. पछी घरव्यवहारना कार्यथी निवृत्त थइने प्रभुदर्शन तेमज पूजन माटे त्रसादिक जीवरहित पवित्र भूमि उपर अचित्त अने उष्ण गलेल पाणीथी स्नान करवुं. पछी देरासरे जाय त्यारे विनयवंत थइने पोताना कुलाचार प्रमाणे पोतानी संपदा अनुसार वस्त्राभूषणनो आडंबर करीने कुटुंब समुदाय साथे

अथवा एकलो प्रभुदर्शन करवाने जाय. देरासरे जइने श्रावव
पंचाभिगम साचवे. तेना नाम (१) शस्त्र, पुष्प, बूट तथा सचि
वस्तुओ विगेरे दूर मूकवी (२) सर्व आभूषण राखवा (३
उत्तरासण राखवुं (४) प्रभुने देखताज 'नमो जिणाणं' क
(५) मननी एकाग्रता राखवी. आ प्रमाणे पचाभिगम साचवी
श्रावक 'निसिहि' ए पदनो उच्चार करतो देरासरमा प्रवेश क
देरासरमा प्रवेश करता पहेला तन, मन जेम बने तेम निर्मल अ
निष्पाप राखी, देरासर तरफ गति करवानी जरुर छे अने एट
माटे सावद्य व्यापारोमाथी मनने दूर करवु जोइए. प्रभुदर्शन थ
मस्तक नमावी प्रणाम करे, पछी भावना करे, पछी ज्ञान, दर्श
अने चारित्रनी प्राप्ति माटे त्रण प्रदक्षिणा करे, पछी निसिहिपूर्व
मूल मडपमा प्रवेश करे, प्रभुनी जमणी बाजुए उभा रहीने तेमन
गुणोनी स्तवना करे, पछी स्वस्तिक प्रमुख करे.

॥ स्वस्तिक (साथीया) नी समजण ॥

देरासरमा स्त्री पुरुषो बाजोठ उपर चोखानो जे स्वस्ति
(साथीयो) करे छे, तेमा घणोज गभीर अर्थ रहेलो छे. ते दरे
जैने जाणवो जोइए, एम धारी अमे तेनु रहस्य आपीए छीए:—
स्वस्तिक (साथीया) ने चार पाखडा होय छे, ते चार पाख
एटले (१) मनुष्य, (२) देव, (३) तिर्यंच, (४) नारक
एम चार गति समजवी, अने तेनी उपरना त्रण बिंदुने (१) ज्ञान
(२) दर्शन, (३) चारित्र एम त्रण रत्न समजवा. तेनी उपर
अर्ध चद्राकार चिह्न ते ऊर्ध्व स्थान, सिद्धस्थान किंवा मुक्तिस्थ
४ सूचवे छे साथीयानी अदरना चार स्थानाना चार तथा वचलु ए

ा मली जे पांच बिंदु थाय तेने (१) अर्हंत, (२) सिद्ध, (३) ाचार्यजी, (४) उपाध्यायजी, (५) सर्व साधु एम पंचप- ेष्ठी जाणवा.

उक्त रीते स्वस्तिक (साथीयो) रचीने इच्छवानुं अथवा प्रार्थ- ानुं के हे त्रिलोकनाथ ! आ चार गतिमांथी मने मुक्त करी ज्ञान- र्शन–चारित्ररूप दान दइ अजरामर मोक्षस्थान प्राप्त करवा क्तिमान् करो.

चैत्यवंदन एकाग्र चित्तथी करे अने पोताना आत्मानी स्थितिनो चार करतो थको प्रभुनी स्तवना करे. चैत्यवंदन विधि पुर्ण करी ्रभु सन्मुख उभा रही पोताना आत्मानी निंदा करे अने प्रभुना गोनी भावना भावे. पछी वांदणाना आवर्त विधि साचवी वरकाण प्रभुसन्मुख ले.

॥ पूजा करवानी विधि ॥

सवारना पूर्वोक्त कहेल ते प्रमाणे प्रातःस्मरण कर्या पछी घर ्यवहारना कार्यथी निवृत्त थइ प्रभुपूजन माटे त्रसादिक जीवरहित पवित्र भूमि उपर अचित्त अने उष्ण गलेल पाणीथी स्नान करवुं. शरीरना कोइ भागमांथी रसी के परु नीकलतुं होय तो तेणे ापूजा न करवी. अग्रपूजा अने भावपुजा करवी. स्नान कीधा ी रुमाल प्रमुखथी अंग लुंछन करी कामली पहेरवी. शुद्ध जनी- ीं थइने पवित्र स्थानके आवी मनोहर, नवीन, फाटेल के सांधेल ीं एवुं सफेद वस्त्र पहेरवुं. वीजाए पहेरेलुं अथवा जे वस्त्रथी लघु- ीति, वडीनीति के मैथुनादिक कीधुं होय तेवुं वस्त्र पहेरवुं नहीं. द्र सफेद वस्त्र न होय तो रेशमी रंगीन वस्त्र पहेरवुं, अने अखंड

उत्तरासण जमणी वाजुथी राखवुं. जो के रेशमी वस्त्र पवित्र माने छे, परंतु भोजनादिकथी अपवित्र थयेलु रेशमी वस्त्र पूजामा न राख जोइए. टुंकामा प्रभुपूजामा वापरवानां वस्त्र प्रभुपुजा सिवाय बी बपाय वापरवा नहीं.

॥ पूजानी द्रव्य सामग्री ॥

शुद्ध भूमिमा उत्पन्न थयेला सुगंधी पुष्पो, पवित्र केशर, बरास चदन, धूप, गायना घीनो दीवो, अखड अक्षत, ताजा नैवेद्य अ मनोहर स्वादिष्ट सचित्त अचित्त प्रमुख फल ए प्रकारे अष्टप्रकार पुजानी सामग्री तैयार करवी.

पछी देरासरनी जमणी बाजुथी प्रवेश करीने त्रण निसिहिनु चि तवन करे, त्रण प्रदक्षिणा फरे, त्रिकरण (मन, वचन, कायानी शुद्धि करे, पवित्र पाटला पर बेसीने मनोहर तिलक करे, अने पुजार विलेपनने धूपथी धूपीने पछी निसिहि कहेता थका देरासरना मू मडपमा प्रवेश करीने पचाग नमस्कार त्रण वार करे. पछी अष्टप मुखकोश बाधी जिनराजप्रतिमाना आगला दिवसना निर्माल्य उत, पछी मोरपीछवडे प्रभुनु प्रमार्जन पोते करे. यतनापुर्वक आग दिवसना पुष्प चंदन केसर उतारवा अने दुधथी पखाल करीने पा शुद्ध जलथी प्रक्षाल्न करवु. ते वखते जन्माभिषेक समयी सर्व चित मनमा चितववो. पछी बे के त्रण मुवाला अगलुहणाथी प्रभुनु अं जलरहित करवु, अने नवे अगे धुपथी केशरने शुद्ध करी पुज करवु. देवपुजा वखते मुख्य वृत्तिए करीने मौनज रहेवु कयुं छे. तेम न बनी शके तो प्रभुना गुणनी भावना भाववी. प्रथम मूलना कनी पुजा करी पछी अनुक्रमे सर्व बिंबनी पुजा करवी. दर्शन थ

नुं मन प्रफुल्लित थाय तेवी रीते पुष्पथी आंगी रचवी. अनुक्रमे दीपनी पुजा करवी.

अग्रपुजा—उज्ज्वल शालि प्रमुखना अखंड अक्षतवडे प्रभु सन्मुख मंगलिकनो आलेख करवो अथवा शुद्ध स्वस्तिक करी भावना ववी. छेवट ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररूप रत्नत्रयीना आराधन नित्तें पाटला उपर अक्षतना पुंज करवा. पछी त्रिविध प्रकारनां नैवेद्य डाववां. तेमां पोताने घेर हमेशां जे भोजन तैयार थतुं होय ते वेद्य मूकवानो शास्त्रमां अधिकार छे, अने ते पछी उत्तम प्रकारनां ल धरी मोक्षनी भावना भाववी. वली गायन करवुं, वाजित्र वगाडां, लुण उतारवुं, आरती उतारवी, दीपक करवो ए विगेरे क्रियानो अग्रपुजामां समावेश थाय छे.

भावपुजा—जिनेश्वर भगवाननी द्रव्यपुजाना निषेधरूप त्रीजी सिहिपुर्वक शरु थाय छे. पुरुषे जमणी बाजुए अने स्त्रीए डावी जुए ओछामां ओछा प्रभुथी नव हाथ अने वधारेमां वधारे साठ थ छेटे चैत्यवंदन करवा बेसवुं. विधिपुर्वक एक चित्ते चैत्यवंदन करी भुना गुणोनी स्तुति मनोहर स्तवन स्तोत्रथी करवी, अने उत्तम प्रकारनी शुद्ध मनोवृत्तिवडे भावना भाववी.



॥ स्तुति ॥

॥ अद्य मे सफलं जन्म, अद्य मे सफला क्रिया ॥
तो दिनोदयोऽस्माकं, जिनेंद्र तव दर्शनात् ॥ १ ॥
द्य मिथ्यांधकारस्य, हंता ज्ञानदिवाकरः ॥ उदितो

महरीरेऽस्मिन्, जिनेंद्र तव दर्शनात् ॥ २ ॥ अद्य मे कर्मसंघातं, विनष्टं चिरसंचितम् ॥ डुर्गत्यापि निवृत्तोऽहं, जिनेंद्र तव दर्शनात् ॥ ३ ॥ न हि त्राता न हि त्राता, नहि त्राता जगत्त्रये ॥ वीतरागसमो देवो, न नूतो न नविष्यति ॥ ४ ॥ न कोपो न लोनो न मानं न माया, न हास्यं न लास्यं न गीतं न कान्ता ॥ न चापत्यशत्रोर्न मित्रं, कलत्रं त्वमेकं प्रपद्ये जिनं देवदेवम् ॥ ५ ॥ दर्शनं देवदेवस्य, दर्शनं पापनाशनम् ॥ दर्शनं स्वर्गसोपानं, दर्शनं मोक्षसाधनम् ॥ ६ ॥

॥ अथ चैत्यवदन विधि ॥

॥ इहामि खमासणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहियाए, मह्णएण वंदामि ॥

(ए प्रमाणे जपर मुजव त्रण खमासमण देइ इहाकारेण संदिसह जगवन् चैत्यवंदन करुं)

॥ अथ चैत्यवदन ॥

॥ वार गुणअरिहंत देव, प्रणमीजे जावे ॥ सिद्ध आठ गुण समरतां, डुःख दोहग जावे ॥ आचारज गुण ठत्रीश, पचवीश उवज्जाय ॥ सत्यावीश गुण साधुना, जपतां सुख थाय ॥ अष्टोत्तर सय गुण मली

ए, एम समरो नवकार ॥ धीरविमल पंन्डित तणो, नय प्रणमे नित्य सार ॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ जं किंचि नाम तिहं, सग्गे पायालि माणुसे लोए॥ जाइं जिणबिंबाइं, ताइंसवाइं वंदामि ॥

॥ अथ नमुत्थुणं ॥

(बे हाथ जोडी नासिका सुधी उंचा राखी कहेवुं.)

॥ नमुत्थुणं, अरिहंताणं, जगवंताणं, आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंमरीयाणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहियाणं, लोगपइवाणं, लोगपज्जोअगराणं, अजयदयाणं चरकुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं, धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं, अप्पमिहयवरनाणदंसणधराणं, जिणाणं, जावयाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं, बुद्धाणं, बोहयाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं, सव्वनूणं, सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमरकयमवाबाहमपुणरावित्ति, सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जियजयाणं

जे य अइआ सिद्धा, जे अ नविस्संतणागए काले संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥

॥ अथ जावंति चेइआई ॥

॥ जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरियलोए अ ॥ सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइ ॥

(इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहियाए मत्थएण वंदामि)

॥ अथ जावंत केवि साहू ॥

॥ जावंत केवि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ ॥ सव्वेसि तेसि पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥

॥ अथ नमस्कार ॥

॥ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

॥ अथ स्तवन ॥

॥ अंतरजामी सुण अलवेसर, महिमा त्रिजग तुमारो ॥ सांभलीने आव्यो हुं तीरे, जन्म मरण दुःख वारो ॥ सेवक अरज करे छे राज, अमने शिव सुख आपो ॥ ए आंकणी ॥ सहुकोनां मनवंछित पूरो, चिंता सहुनी चूरो ॥ एवुं बिरुद छे राज तमारुं, केम राखो छो दूरे ॥ सेवक० ॥ २ ॥ सेवकने वलवलतं

दुःखी, मनमां महेर न धरशो ॥ करुणासागर केम कहेवाशो, जो उपकार न करशो ॥ सेवक० ॥ ३ ॥ लटपटनुं हवे काम नहीं छे, प्रत्यक्ष दरिसण दीजे ॥ धुंआडे धीजुं नहीं साहेब, पेट पड्या पती जे ॥ सेवक० ॥ ४ ॥ श्री शंखेश्वर मंडण साहेब, विनतडी अवधारो ॥ कहे जिनहर्ष मया करी मुजने, भवसागरथी तारो ॥ सेवक० ॥ ५ ॥

॥ अथ जय वीयराय ॥

(बे हाथ जोडी माथा सुधी ऊंचा राखी जय वीयराय आभवमखंडा सुधी कही हाथ जरा नीचा उतारी बाकी रहेला जय वीयराय पूरा करवा.)

॥ जय वीयराय जगगुरु, होउ ममं तुह पभावउ भयवं ॥ भवनिव्वेउ मग्गा,—णुसारिया इठ्ठफलसिद्धी ॥ १ ॥ लोगविरुद्धच्चाउ, गुरुजनपूआ परत्थकरणं च ॥ सुहगुरुजोगो तव्वय,—णसेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥ वारिज्जइजइवि नियाणबंधणं वीयराय तुह समए ॥ तहवि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥ ३ ॥ दुरकखउ कम्मखउ, समाहिमरणं च बोहिलाभोअ ॥ संपज्जउमह एअं, तुह नाह पणामकरणेणं

॥ ४ ॥ सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणं ॥ प्रधा
सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥

॥ अथ अरिहंतचेइयाण ॥

(उजा थई वोलवुं.)

॥ अरिहंतचेइयाण करेमि काउस्सग्गं वंदणवि
याए, पूअणवत्तियाए, सक्कारवत्तियाए, सम्माण
त्तियाए, बोहिलाजवत्तियाए, निरुवसग्गवत्तिया
सद्धाए, मेहाए, धिइए, धारणाए, अणुप्पेहा
वहमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥

॥ अथ अन्नच्छ ऊससिएण ॥

॥ अन्नह ऊससिएणं नीससिएण खासिएणं
एणं जंजाइएण उड्डुएण वायनिसग्गेण जमली
पित्तमुछाए सुहुमेहि अंगसंचालेहिं सुहुमेहि खेलस
चालेहि सुहुमेहि दिठिसचालेहि एवमाइएएहिं आग
रेहि अजग्गो अविराहिउ हुज्ज मे काउस्सग्गो जा
अरिहंताणं जगवंताणं नमुकारेणं न पारेमि ता
कायं ठाणेण मोणेणं जाणेणं अप्पाणं वोसिरामि

त्यारपठी एक नवकारनो काउस्सग्ग करी न
अरिहंताण बोली, नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायस
५ साधुभ्य. कही थोय कहेवी.

॥ अथ थोय ॥

॥ श्री शत्रुंजय तीरथ सार, गिरिवरमां जेम मेरु
दार, ठाकुर राम अपार ॥ मंत्र मांहि नवकारज
णुं, तारामां जेम चंद्र वखाणुं, जलधर जलमां
णुं ॥ पंखीमां जेम उत्तम हंस, कुल मांहि जेम
षजनो वंश, नाभि तणो ए अंश ॥ क्षमावंतमां
ी अरिहंत, तपशुरामां महा मुनिवंत, शत्रुंजय
गरि गुणवंत ॥

॥ जिनदर्शन तथा पूजाभावनास्वरूप ॥

॥ दर्शनभावना ॥

॥ श्लोक ॥

॥ दर्शनात् दुरितध्वंसः, वंदनात् वंछितप्रदः ॥ पूज-
ात् पुरुषः श्रीदः, जिनः साक्षात् सुरद्रुमः ॥ १ ॥
र्शनं देवदेवस्य, दर्शनं पापनाशनं ॥ दर्शनं स्वर्गसो-
नं, दर्शनं मोक्षसाधनं ॥ २ ॥

॥ दुहा ॥

॥ प्रभुदरशन सुख संपदा, प्रभुदरशन नव निध ॥
ुदरशनथी पामीए, सकल पदारथ सिद्ध ॥ ३ ॥
वे जिनवर पूजीए, भावे दीजे दान ॥ भावे भावना
वीए, भावे केवलज्ञान ॥ िवक्षा जिनवर

पूजीए, पूजानां फल होय ॥ राजा नमे प्रजा न
आण न लोपे कोय ॥ ५ ॥ फुलां केरा बागमां, वे
श्री जिनराज ॥ जेम तारामां चंद्रमा, तेम शो
महाराज ॥ ६ ॥ प्रभु नामकी औषधी, खरे मन
खाय ॥ रोग पीडा व्यापे नहीं, महादोष मीट जा
॥ ७ ॥ कुंभे बांध्युं जल रहे, जल विण कुंभ न होय
ज्ञाने बांध्युं मन रहे, गुरु विना ज्ञान न होय ॥ ८
गुरु दीवो गुरु देवता, गुरु विना घोर अंधार ॥
गुरुवाणी वेगला, ते रवड्या ससार ॥ ९ ॥ ज्ञान स
कोइ धन नहीं, समता समु नहीं सुख ॥ जीवि
समी आशा नहीं, लोभ समुं नहीं दुःख ॥ १० ॥
जे दर्शन दर्शन विना, ते दर्शन निर्पेक्ष ॥ जे दर्श
दर्शन हुए, ते दर्शन सापेक्ष ॥ ११ ॥ दर्शन दर्श
रटतो फीरु, तो रणरोझ समान ॥ दर्शन शुद्ध स्वभा
वतुं, अनुभव मन विश्राम ॥ १२ ॥

॥ श्लोक ॥

-सरसशांतिसुधारससागरं, शुचितरं गुणरत्नमहागरं
भविकपंकजबोधदिवाकरं, प्रतिदिनं प्रणमामि जिने
श्वरं ॥ १३ ॥ नमस्कारसमो मंत्रः, शत्रुंजयसमो गिरी

तरागसमो देवो, न भूतो न भविष्यति ॥ १४ ॥
ताले यानि बिंबानि, यानि बिंबानि भूतले ॥
र्गेऽपि यानि बिंबानि, तानि वंदे निरंतरम् ॥ १५ ॥
न्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम ॥ तस्मात्
ारुण्यभावेन, रक्ष रक्ष जिनेश्वर ॥ १६ ॥

॥ पूजाभावना ॥

॥ प्रभु पूजनकुं हुं चल्यो, केशर चंदन घनसार ॥
व अंगे पूजा करी, सफल करुं अवतार ॥ १ ॥
ंच कोमीने फुलडे, पाम्या देश अढार ॥ कुमार-
ल राजा थयो, वरत्यो जयजयकार ॥ २ ॥ श्री
िनेश्वर पूजतां, उत्कृष्ट परिणाम ॥ करतां केइ जीव
ामीआ, स्वर्ग मोक्षनां धाम ॥ ३ ॥ समकितने
जुवालवा, उत्तम एह उपाय ॥ पूजाथी तमे प्री-
जो, मनवांछित सुख थाय ॥ ४ ॥ भवदव दहन
वारवा, जलद घटा सम जेह ॥ जिनपूजा जुगते
री, त्रिविधे कीजे तेह ॥५॥ पूजा कुगतिनी अर्गला,
ुण्य सरोवर पाल ॥ शिवगतिनी साहेलमी, आपे मंगल-
ाल ॥६॥ जिन दर्शन पूजा विना, जेहनादहामा जाय ॥
सर्वे वांझीया जाणीए, वली जन्म अकारथ जाय ॥७॥

॥ नव अग पूजाना दोहा ॥

॥ जल जरी संपुटपत्रमां युगलिक नर पूजंत ।
रुषज चरण अंगुठडे दायक जवजल अंत ॥ १ ।
जानुवले काउस्सग्ग रह्या, विचर्या देश विदेश ।
खम्रा खम्रा केवल लह्युं, पूजो जानु नरेश ॥ २ ।
लोकांतिक वचने करी, वरस्या वरसी दान ॥ कर
कांडे प्रजु पूजना, पूजो जवि वहु मान ॥ ३ ॥ मान
गयुं दोय अंशथी, देखी वीर्य अनंत ॥ जूजावले
जवजल तर्या, पूजो खध महंत ॥ ४ ॥ सिद्धशिल
गुण उजली, लोकांते जगवंत ॥ वसीया तिणे कारण
जवि, शिरशिखा पूजंत ॥ ५ ॥ तीर्थंकर पद पुण्यथी,
त्रिजुवन जन सेवंत ॥ त्रिजुवनतिलक समा प्रजु,
जाल तिलक जयवंत ॥ ६ ॥ सोल पहोर प्रजु देशना,
कंठविवर वर्तुल ॥ मधुर ध्वनि सुर नर सुणे, तेणे
गले तिलक अमूल ॥ ७ ॥ हृदयकमल उपशम वले,
बाल्या राग ने रोष ॥ हीम दहे वनखमने, हृदय
तिलक संतोष ॥ ८ ॥ रत्नत्रयी गुण उजली, सकल
सुगुण विश्राम ॥ नाजिकमलनी पूजना, करतां अवि-
चल धाम ॥ ९ ॥ उपदेशक नव तत्त्वना, तिणे नव

ग जिणंद ॥ पूजो वहुविध रागशुं, कहे शुभवीर
णींद ॥ १० ॥

॥ प्रदक्षिणाना दुहा ॥

॥ काल अनादि अनंतथी, भवभ्रमणनो नहीं पार ॥
भ्रमणा निवारवा, प्रदक्षिणा दउं त्रण सार ॥ १ ॥
मतीमां भमतां थका, भव भावठ दूर पलाय ॥
र्शन ज्ञान चारित्ररूप, प्रदक्षिणा त्रण देवाय ॥ २ ॥
न्म मरणादि सवि भय टले, सीझे जो दर्शनकाज
रत्नत्रय प्राप्ति भणी, दर्शन करो जिनराज ॥ ३ ॥
ज्ञान वडुं संसारमां, ज्ञान परम सुख हेत ॥ ज्ञान
वेना जगजीवडा, न लहे तत्त्व संकेत ॥ ४ ॥ चयते
ंचय कर्मनो, रिक्त करे वली जेह ॥ चारित्र नाम
नेर्युक्ते कह्युं, वंदो ते गुणगेह ॥ ५ ॥ दर्शन ज्ञान चा-
रेत्र ए, रत्नत्रयी निर्धार ॥ त्रण प्रदक्षिणा ते कारणे,
भवदुःख भंजनहार ॥ ६ ॥

॥ साथीयो करती वेला भाववाना दुहा ॥

तेमां प्रथम त्रण ढगली अने सिद्धशिला करती वखते भाववुं के—

॥ दर्शन ज्ञान चारित्रना, आराधनथी सार ॥
सिद्धशिलानी उपरे, हो मुज वास श्रीकार ॥ १ ॥

॥ हवे साथीयो करती वखते ॥

॥ अक्षतपूजा करतां थका, सफल करुं अवतार ॥
फल मागुं प्रभु आगले, तार तार मुज तार ॥ १ ॥

॥ फल मूकती वखते ॥

॥ फलपूजा करतां थका, सफल करुं अवतार ॥
फल मागुं प्रभु आगले, तार तार मुज तार ॥ १ ॥
सांसारिक फल मागीने, रवड्यो बहु संसार ॥ अष्ट
कर्म निवारवा, मागुं मोक्षफल सार ॥ २ ॥ चिहुं गति
भ्रमण संसारमां, जन्म मरण जजाल ॥ पंचमगति
विण जीवने, सुख नहीं त्रिहुं काल ॥ ३ ॥

॥ जिनदर्शन महिमा फल ॥ शार्दूलविक्रीडित छंद ॥

यास्याम्यायतनं जिनस्य लभते ध्यायंश्चतुर्थफलं,
षष्ठं चोत्थित उद्यतोऽष्टममथो गंतुं प्रवृत्तोऽध्वनि ॥
श्रद्धालुर्दशमं बहिर्जिनगृहात्प्राप्तस्ततो द्वादशं
मध्ये पाक्षिकमीक्षिते जिनपतौ मासोपवासं फल ॥१॥

अर्थ—हु जिनमदिरमा जइश एवुं चिंतवता एक उपवासनु
जवाने उठता छठ तपनु, मार्गे चालता अठ्ठम तपनु, जिनगृह पासे
चार उपवासनु, चैत्यमा आवे त्यारे पाच उपवासनु, चैत्यनी मध्यमां
आवता पदर उपवासनु, अने जिनेश्वरना दर्शन करता मासो-
पवासनु फल मळे छे.

देवदर्शन पूजा आदि कर्या पछी बहार आवे. पछी देरासरना नोकर, चाकर, नामां लेखादिनी तपास करे अने यथोचित सुधारणा करे. दरेक प्रकारनी आशातना टाळे अने देवद्रव्य तथा साधारणद्रव्यनी सारी व्यवस्था करे.

व्याख्यानवाणी लक्षपूर्वक श्रवण करे, हृदयमां तेना रहस्यनुं चिंतवन करे, गुरुना अभावे सामायिक समभावे करतां थका पोते स्वाध्याय करे अने करावे.

ए प्रमाणे सवारनी धर्मकरणीमांथी निवृत्त थइ गृहतंत्र चलाववाना उद्यमनो विचार करे. प्रथम प्रहर वीत्या पछी अने द्वितीय प्रहर वीत्या पहेलां शांतिथी शुद्ध भोजन करे. साधु मुनिराज होय तो तेमने वहोरावे तेमज गुरुने सुखशाता पूछी तेमनी शुश्रूषा करे. पछी व्यापारी होय तो बजारमां पोताना व्यापारमांथी द्रव्यउपार्जननो विचार करे अने राज्यनी के बीजी नोकरी होय तो तेओ राज्यसभामां के पोताना काम उपर जाय. व्यापारमां व्यवहारशुद्धि साचववानुं लक्ष राखवुं, कारण के तेथी व्यापरनी वृद्धि थाय छे अने धर्मने बाध आवतो नथी.

॥ आजीविका चलाववाना सात प्रकार छे ॥

(१) व्यापार (२) विद्या (३) खेती (४) पशुपाल (५) हुन्नर कला (६) नोकरी अने (७) भिक्षा मागवी. आ सातेमां व्यापार सर्वथी श्रेष्ठ छे. लक्ष्मी व्यापारमांज वसे छे. नोकरी करवी तोपण सारा शेठनी करवी अने धर्मक्रियाने भूली जवी नहीं. व्यापार हमेशां पोतानी पुंजीनुं बल जोइने करवो, देश काल तथा पोताना भाग्योदयनो विचार करवो, विचार कर्या वगर शक्ति उपरांत व्यापार करवाथी हानि अने हांसी थाय छे.

॥ द्रव्यशुद्धि ॥

श्रावकने माटे पंदर कर्मादाननो व्यापार वर्ज्य कह्यो ; धर्म सचवाय नहीं एवा व्यापारथी धननो लाभ थतो होय तोप शुद्ध श्रावके ते व्यापार करवो जोइए नहीं छेवट निर्वाह क रीते थइ न शके तो महारभनो त्याग करी कर्मादाननो व्याप करवो, पण सर्वे जीव पर दयाभाव राखवो, निर्दयपणे चलाव देवु नहीं. हमेशा स्वामिद्रोह, विश्वासघात, वृद्धद्रोह, बालद्रो थापण उळववी, खोटी साक्षी, कोइनी वात चिंतववी, कोइन आजीविकानो भग करवो विगेरे महा पापना कार्यो सर्वथ त्याग करवा.

॥ श्रावक जावकनो नियम ॥

श्रावके पेदाशना प्रमाणमा खर्च करवो. पेदाशना चार भा करवानुं कह्युं छे. एक भागनो सग्रह करे, एक भाग धर्मकार्य अ पोतानी जातना सुखने माटे राखे, एक भाग व्यापारमा नाखे अ चोथो भाग कुटुंब, दास दासी तथा दुःखी माणसोनी संभा माटे राखे

भाग्यथी प्राप्त थयेला द्रव्यनो हमेशा सदुपयोग करवो त दान देवामा तथा धर्मकार्यमा वापरीने पुण्यनुं उपार्जन कर कारण के लक्ष्मी चपल छे अति तृष्णा पण करवी नहीं ते लोभने तद्दन तजी पण देवो नहीं. यथायोग्य आ लोक अ परलोकनो विचार करी जे रस्तामा पोतानु चित्त शांति प ते रस्तो करवो

॥ धर्म, अर्थ अने काम ॥

शुद्ध श्रावक गृहस्थे अन्योन्य अप्रतिबंधपणे धर्म, अर्थ अने काम ए त्रणे वर्गनुं सेवन करवुं. ए त्रणेने एवो संबंध छे के एक तरफ दुर्लक्ष करवाथी बधुं बगडे छे. धर्म वगरनुं अर्थ साधन अनर्थी भरपूर होय छे अने धर्म तथा अर्थ वगरनी कामभोगनी आसक्ति आ लोक अने परलोकमां घणी नीची गतिए पहोंचाडनार छे तेमज गृहस्थने माटे अर्थप्राप्ति वगर एकलो धर्म साधन थइ शकतो नथी, माटे त्रणे वर्गने परस्पर बाध न आवे तेम उचित साधना करवी.

॥ देश काल विरुद्ध ॥

शुद्ध श्रावके देश विरुद्ध, काल विरुद्ध, राज विरुद्ध अने जाति विरुद्ध वर्तवानो सर्वथा त्याग करवो. जे देशमां जेवा आचार विचारनो रिवाज होय तेने मान आपवुं, लोक विरुद्ध वर्तवुं नहीं. शास्त्रमां कह्युं छे के ' यद्यपि शुद्धं लोकविरुद्धं नाचरणीयं नाकरणीयं.' जो के शुद्ध वर्तन होय तोपण लोकाचार विरुद्ध होय तो तेथी उपकार नहीं थता तेनो त्याग करवो. काल विरुद्ध एटले चोमासामां मुसाफरी करवी नहीं, फागण मास पछी तल पीलाववा के खावा नहीं. चोमासामां भाजी वनस्पतिनो पण त्याग करवो. जे कालमां जे करवा योग्य होय तेज करवुं अने जे तजवा योग्य होय तेनो त्याग करवो. एने लोक विरुद्ध त्याग कहे छे. राज विरुद्ध त्याग एटले राजाना हुकमने मान आपवुं, राजद्रोह करवो नहीं अने राज्य विरुद्ध हीलचालमां सामेल थवुं नहीं जाति विरुद्ध एटले न्यात जातथी जूदा पडी चालवुं नहीं, कुटुंबनो त्याग करवो नहीं, न्यातना नियमने मान आपवुं अने बधा साथे हळीमलीने चालवुं.

॥ रात्रिभोजननो त्याग ॥

पोताने उचित धधामा आवक जावकनो विचार करी संध्य कालें तेमांथी निवृत्त थवु अने चार घडी दिवस बाकी रहे त्य भोजन करी लेवुं जोइए. छेक सध्याकाले भोजन करवाथी रात्रिभो ननो दोष लागे छे, रात्रिभोजननो शुद्ध श्रावके सर्वथा त्या करवो जोए. कारण के तेमा अनेक जीवोनी हिंसा थवानुं शास्त्रका कहे छे, तेमज वली वैदक नियम जोता पण रात्रिभोजन त्या करवाथी शारीरिक प्रकृति सारी रहे छे, माटे रात्रिभोजननो सर्वथ त्याग करवो. भोजन कर्या पछी यथाशक्ति चउविहार, तिविहार दुविहारनु पच्चरकाण करवुं. दिवस बाकी रहे त्यांज पच्चरकाण क लेवु, पण तेम कदाच न बनी शके तो रात्रे छेवट सुती वखते प पच्चरकाण करवु लाभकारी छे.

पछी साजनेला सूर्य अर्ध अस्त थाय ते पहेलां त्रीजी वखत विधि पूर्वक जिनेश्वर प्रभुना दर्शन करे अने ते पछी उपाश्रयमा जा जयणापूर्वक प्रमार्जन करी सामायिक लइ विधिपूर्वक छ प्रकारन आवश्यकने साचववारूप देवसि प्रतिक्रमण करे. रात्रे असुरु प्रतिक्र मण करवुं कह्यु नथी, पण सूर्य अर्ध अस्त थाय त्यारे वंदिता स कहेवुं, एम शास्त्रकारो कहे छे. ते छता कोइ कारणसर रात्रिन बार वागे त्यांसुधी थइ शके छे ए प्रमाणे सज्झाय ध्यान करी ग होय, तो तेनी शुश्रुषा करे अने धर्मचर्चा करी प्रतिबोध पमे.

एक प्रहर रात्रि गया पछी माफक आवे एवा स्थानक निर्द जीवरहित पल्यक विगेरे शय्यामां विधिपूर्वक अल्प निद्रा करे, यथ शक्ति ब्राह्मचर्यनु पालन करे, सुती वखते नवकार मत्रनु स्मरण व अरिहत, सिद्ध, साधु अने जैन धर्म ए चार शरणा याद करे शातिथी अल्प निद्रा करे इति श्रावककर्तव्य.

॥ तृतीय खंम ॥

यं शैवाः समुपासते शिव इति ब्रम्हेति वेदान्तिनो,
ाद्धाः बुद्ध इति प्रमाणपटवः कर्त्तेति नैयायिकाः।
ार्हन्नित्यथ जैनशासनरताः कर्मेति मीमांसकाः,
ोऽयं नो विदधातु वाच्छितफलं श्रीवीतरागो जिनः ॥

॥ वार विशेषनां चैत्यवंदनो, स्तवनो तथा थोयो ॥

॥ बीजनुं चैत्यवंदन ॥

॥ दुविध धर्म जिणे उपदिश्यो, चोथा अभिनंदन॥ ीजे जन्म्या ते प्रभु, भवदुःख निकंदन ॥ १ ॥ ुविध ध्यान तुमे परिहरो, आदरो दोय ध्यान ॥ इम ्कास्युं सुमति जिने, ते चवीया बीज दिन ॥ २ ॥ ोय बंधन राग द्वेष, तेहने भवि त्यजीए ॥ मुज परे ीतल जिन कहे, बीज दिन शिव भजीए ॥ ३ ॥ ीवाजीव पदार्थनुं, करो नाण सुजाण ॥ बीज दिने ासुपूज्य परे, लहो केवलनाण ॥ ४ ॥ निश्चयनय यवहार दोय, एकांत न ग्रहीए ॥ अर जिन बीज ने चवी, एम जिन आगल कहीए ॥ ५ ॥ वर्त्तमान ोवीशीए, एम जिन कल्याण ॥ बीज दिने केइ ्मीया, प्रभु नाण निर्वाण ॥ ६ ॥ एम अनंत चोवी-

शोए ए, हुआं वहु कल्याण ॥ जिन उत्तम पदपद्मने, नमतां होय सुखखाण ॥ ७ ॥

॥ वीजनुं स्तवन ॥

॥ प्रणमी शारद माय, शासन वीर सुहंकरु जी वीज तिथि गुणगेह, आदरो नवियण सुंदरु जी ॥ १ ॥ एह दिन पंच कल्याण, विवरीने कहुं ते सुणो जी ॥ माहा सुदि वीजे जाण, जन्म अजिनंदन तणो जी ॥ २ ॥ श्रावण सुदिनी हो वीज, सुमति चव्या सुर लोकथी जी ॥ तारण नवोदधि तेह, तस पद सेवे सुर थोकथी जी ॥ ३ ॥ समेत शिखर शुन ठाण दशमा शीतल जिन गणु जी ॥ चैत्र वदिनी हो वीज वर्या मुक्ति तस सुख घणुं जी ॥ ४ ॥ फाल्गुन मासनी वीज, उत्तम उज्ज्वल मासनी जी ॥ अरनाथ च्यवन, कर्मक्षये नवपासनी जी ॥ ५ ॥ उत्तम माघज मास, सुदिवीजे वासुपूज्यनो जी ॥ एहीज दिन केवलनाण, शरण करो जिनराजनो जी ॥ ६ ॥ करणीरूप करो खेत, समकितरूप रोपो तिहां जी ॥ खातर किरिया ही जाण, खेरू समता करी जिहां जी ॥ ७ ॥ उपशम तद्रूप नीर, समकित ठोड प्रगट होवे जी ॥

संतोष करी अहो वारू, पच्चरकाण व्रत चोकी सोहे जी ॥ ८ ॥ नासे कर्मरिपु चोर, समकित वृक्ष फल्युं तिहां जी ॥ मांजर अनुभवरूप, ऊतरे चारित्र फल जिहां जी ॥ ए ॥ शांति सुधारस वारि, पान करी सुख लीजीए जी ॥ तंबोल सम ल्यो स्वाद, जीवने संतोष रस कीजीए जी ॥ १० ॥ बीज करो दोय मास, उत्कृष्टी बावीश मासनी जी ॥ चोविहार उपवास, पालीये शील वसुधासनी जी ॥ ११ ॥ आवश्यक दोय वार, पडिलेहण दोय लीजीए जी ॥ देववंदन त्रण काल, मन वच कायाए कीजीए जी ॥ १२ ॥ उजमणुं शुभ चित्त, करी धरीए संयोगथी जी ॥ जिनवाणी रस एम, पीजीए श्रुत उपयोगथी जी ॥ १३ ॥ एणी विधि करीए हो बीज, राग ने द्वेष दूरे करी जी ॥ केवलपद लही तास, वरे मुक्ति उलट धरी जी ॥ १४ ॥ जिनपूजा गुरुभक्ति, विनय करी सेवो सदा जी ॥ पद्मविजयनो शिष्य, भक्ति पामे सुख संपदा जी ॥ १५ ॥

॥ ज्ञानपंचमीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ त्रिगडे बेठा वीर जिन, भाखे भविजन आगे

॥ त्रिकरणशुं त्रिहुं लोक जन, निसुणो मन रागे ॥
१ ॥ आराहो नली नातसें, पांचम अजुवाली ॥
ज्ञानआराधन कारणे, एहज तिथि निहाली ॥ २
ज्ञान विना पशु सारिखा, जाणो एणे संसार ॥ ज्ञा
आराधनथी लह्युं, शिवपदसुख श्रीकार ॥ ३ ॥ ज्ञा
रहित क्रिया कही, काशकुसुम उपमान ॥ लोका
लोक प्रकाशकर, ज्ञान एक परधान ॥ ४ ॥ ज्ञान
सासोसासमे, करे कर्मनो खेह ॥ पूर्व कोमी वरस
लगे, अज्ञाने करे तेह ॥ ५ ॥ देश आराधक क्रिय
कही, सर्व आराधक ज्ञान ॥ ज्ञान तणो महिमा घणो
अंग पांचमे नगवान ॥ ६ ॥ पंच मास लघु पंचमी, जाव
जीव उत्कृष्टी ॥ पंच वरस पंच मासनी, पचमी करो
शुन दृष्टि ॥ ७ ॥ एकावनही पंचनो ए, कोउस्सग्ग
लोगस्स केरो ॥ उजमणुं करो नावशु, टाले नवफेरो ॥ ८ ॥
एणी पेरे पंचमी आराहीए ए, आणी नाव अपार ॥
वरदत्त गुणमंजरी परे, रंगविजय लहो सार ॥ ए ॥

॥ ज्ञानपचमीनुं स्तवन ॥

॥ पंचमी तप तमे करो रे प्राणी, जेम पामो
निर्मल ज्ञान रे ॥ पहेलुं ज्ञान ने पठी क्रिया, नही को

ज्ञान समान रे ॥ पंचमी० ॥ १ ॥ नंदी सूत्रमां ज्ञान
वखाण्युं, ज्ञानना पांच प्रकार रे ॥ मति श्रुत अवधिने
मनःपर्यव, केवल एक उदार रे ॥ पंचमी० ॥ २ ॥ मति
अठावीश श्रुत चउदह वीश, अवधि छे असंख्य
प्रकार रे ॥ दोय भेदे मनःपर्यव दाख्युं, केवल एक
उदार रे ॥ पंचमी० ॥ ३ ॥ चंद्र सूर्य ग्रह नक्षत्र
तारा, एकथी एक अपार रे ॥ केवलज्ञान समुं नहीं
कोइ, लोकालोक प्रकाश रे ॥ पंचमी० ॥ ४ ॥
पार्श्वनाथ प्रसादे करीने, म्हारी पूरो उमेद रे ॥
समयसुंदर कहे हुं पण पामुं, ज्ञाननो पांचमो भेद
रे ॥ पंचमी० ॥ ५ ॥

॥ अष्टमीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ माहा सुदि आठमने दिने, विजया सुत जायो
॥ तेम फागुण सुदि आठमे, संभव चवी आव्यो
॥ १ ॥ चैतर वदनी आठमे, जन्म्या ऋषभ जिणंद
॥ दीक्षा पण ए दिन लही, हुआ प्रथम मुनिचंद
॥ २ ॥ माधव सुदि आठम दिने, आठ कर्म कर्यां
दूर ॥ अभिनंदन चोथा प्रभु, पाम्या सुख भरपूर
॥ ३ ॥ एहीज आठम उजली, जन्म्या सुमति जि-

णंद् ॥ आठ जाति कलशे करी, नवरावे सुर इं
॥ ४ ॥ जन्म्या जेठ वदि आठमे, मुनिसुव्रत स्वा
॥ नेम आषाढ सुदि आठमे, अष्टमी गति पामी
५ ॥ श्रावण वदिनी आठमे, नमि जन्म्या ज
जाण ॥ तिम श्रावण सुदि आठमे, पासजीनुं निर्वा
॥ ६ ॥ भाद्रवा वदि आठम दिने, चवीया स्वामी सु
पास॥ जिन उत्तम पदपद्मने, सेव्याथी शिववास ॥ ७

॥ अष्टमीनु स्तवन ॥

॥ हांरे मारे ठाम धरमना साडा पचवीश दे
जो, दीपे रे त्यां देश मगध सहुमां शिरे रे लो
हांरे मारे नयरी तेहमां राजगृही सुविशेष जो, रा
रे त्यां श्रेणिक गाजे गज परे रे लो ॥ १ ॥ हांरे मा
गाम नगर पुर पावन करता नाथ जो, विचरंत
तिहां आवी वीर समोसरया रे लो ॥ २ ॥ हांरे मा
चौद सहस मुनिवरना साथे साथ जो, सुधा रे त
संयम शीयले अलंकरया रे लो ॥ ३ ॥ हांरे मा
फूल्या रसभर झुल्या अंब कदंब जो, जाणु रे गुण
शील वन हसी रोमंचीउं रे लो ॥ हांरे मारे वा
७ वाय सुवाय तिहां अविलंब जो, वासे रे परिम

हुं पासे संचीऊ रे लो ॥ ३ ॥ हांरे मारे देव चतु-
ध आवे कोमाकोम जो, त्रिगडुं रे मणि हेम रजततनुं
रचे रे लो ॥ हांरे मारे चोसठ सुरपति सेवे
माहोम जो, आगे रे रस लागे इंद्राणी नचे रे
॥ ४ ॥ हांरे मारे मणिमय हेम सिंहासन बेठा
ाप जो, ढाले रे सुर चामर मणि रत्ने जड्यां रे
॥ हांरे मारे सुणतां दुंदुभिनाद टले सवि ताप
ो, वरसे रे सुर फूल सरस जानुं अड्यां रे लो ॥
॥ हांरे मारे ताजे तेजे गाजे घन जेम घुंव जो,
जे रे जिनराज समाजे धर्मने रे लो ॥ हांरे मारे
रखी हरखी आवे जनमन लुंब जो, पोषे रे रस
पडे धोके नर्ममां रे लो ॥ ६ ॥ हांरे मारे आगम
ाणी जिननो श्रेणिक राय जो, आव्यो रे परिवरीयो
य गय रथ पायगे रे लो ॥ हांरे मारे देइ प्रदक्षिणा
ी बेठो ठाय जो, सुणवा रे जिनवाणी मोटे ना-
ा रे लो ॥ ७ ॥ हांरे मारे त्रिभुवननायक लायक
भगवंत जो, आणी रे जन करुणा धर्मकथा
रे लो ॥ हांरे मारे सहज विरोध विसारी ज-
ना जंतु जो, सुणवा रे जिनवाणी मनमां गह-
रे लो ॥ ८ ॥

॥ एकादशीनु चैत्यवदन ॥

॥ शासननायक वीरजी, प्रभु केवल पायो ॥ स
चतुर्विध थापवा, महसेन वन आयो ॥ १ ॥ माध
सीत एकादशी, सोमल द्विज यज्ञ ॥ इंद्रभूति अ
मल्या, एकादश विज्ञ ॥ २ ॥ एकादशसे चउगुण
तेहनो परिवार ॥ वेद अर्थ अवलो करे, मन अभि
मान अपार ॥ ३ ॥ जीवादिक संशय हरी ए, एका
दश गणधार ॥ वीरे थाप्या वंदीए, जिनशास
जयकार ॥ ४ ॥ मल्लि जन्म अर मल्लि पास, व
चरण विलासी ॥ ऋषभ अजित सुमति नमी, म
घनघाती विनाशी ॥ ५ ॥ पद्मप्रभ शिववास पा
नव नवना तोमी ॥ एकादशी दिन आपणी, ऋ
सघली जोमी ॥ ६ ॥ दश क्षेत्रे त्रिहुं कालनां, त्रण
कल्याण ॥ वरस अग्यार एकादशी, आराधो वर ना
॥ ७ ॥ अगीयार अग लखावीए, एकादश पाठां
पुंजणी ठवणी विंटणी, मषी कागल काठां ॥ ८
अगीयार अव्रत छांमवां ए, वहो पमिमा अगीय
॥ खिमाविजय जिनशासने, सफल करो अवतार ॥ ९

॥ एकादशीनु स्तवन ॥

॥ जगपति नायक नेमि जिणंद, द्वारिका नग

मोसरचा ॥ जगपति वंदवा कृष्ण नरिंद, जादव
ोमशुं परिवरचा ॥ १ ॥ जगपति धी गुण फूल अ-
ल, नक्तिगुणे माला रची ॥ जगपति पूजी पूछे
षण, क्षायिक समकित शिवरुचि ॥ २ ॥ जगपति
ारित्रधर्म अशक्त, रक्त आरंन परिग्रहे ॥ जगपति
ज आतम उद्धार, कारण तुम विण कोण कहे
३ ॥ जगपति तुम सरिखो मुज नाथ, माथे गाजे
णनिलो ॥ जगपति कोइ उपाय बताव, जेम करे
ावववधू कंतलो ॥ ४ ॥ नरपति उज्ज्वल मागशिर
ास, आराधो एकादशी ॥ नरपति एकसो ने
चास, कल्याणक तिथि उल्लसी ॥ ५ ॥ नरपति
श क्षेत्रे त्रण काल, चोवीशी त्रीशे मली ॥ नरपति
ुं जिननां कल्याण, विवरी कहुं आगल वली
६ ॥ नरपति अर दीक्षा नमि नाण, मल्लि जन्म
न केवली ॥ नरपति वर्तमान चोवीशी, मांहे कल्या-
क आ वली ॥ ७ ॥ नरपति मौनपणे उपवास,
ढसो जपमाला गणो ॥ नरपति मन वच काय
ेत्र, चरित्र सुणो सुव्रत तणो ॥ ८ ॥ नरपति
क्षिण धातकी खंम, पश्चिम दिशि इक्षुकारथी ॥

नरपति विजय पाटण अन्निधान, साचो नृप प्रजा-पालथी ॥ ए ॥ नरपति नारी चंद्रावती तास, चद्र मुखो गजगामिनी ॥ नरपति श्रेष्ठी शूर विख्यात शीयल सलीला कामिनी ॥ १० ॥ नरपति पुत्रादिव परिवार, सार नूपण चीवर धरी ॥ नपरति जाः नित्य जिनगेह, नमन स्तवन पूजा करे ॥ ११ ॥ नः पति पोपे पात्र सुपात्र, सामायिक पोपध वरे ॥ नर पति देववंदन आवश्यक, कालवेलाए अनुसरे ॥ १२ ।

॥ नवपदजीनुं चैत्यवदन ॥ हरिगीत ॥

॥ शिवसंपदा वरवा सदा नवपद धरुं हृ ध्यानमां नववासनानो वेग टाले राचतां गुणतानकां ॥ श्री पाल मयणासुंदरी साधी घणां सुखीआं थयां, नवपद नजो सहु नावथी एमां अखिल मंत्रो रह्या ॥ १ । अरिहंतपदने प्रथम गुणतां विघ्न सहु दूरे टले वली सिद्ध आचारज अने उवज्झायथी शांति मले ॥ पंचम मनोहर साधुपदने सेवतां शिवपुर गया नवपद नजो सहु नावथी एमां अखिल मंत्रो रह्य ॥ २ ॥ दर्शन अने शुन्न ज्ञान ने चारित्रपदनी योजन ए त्रितयनी अराधना पूरे सदा सहु कामना ॥ अतिः

रह्युं तपपद चलकतुं चार जस भेदो कह्या, नवपद भजो सहु भावथी एमां अखिल मंत्रो रह्या ॥ ३ ॥

॥ श्रीसिद्धचक्रनुं स्तवन ॥

॥ श्री सिद्धचक्र आराधीए, शिवसुख फल सहकार लाल रे ॥ ज्ञानादिक त्रण रत्ननुं, तेज चढावणहार लाल रे ॥ श्री सिद्ध० ॥ १ ॥ गौतमे पूछंतां कह्यो, वीर जिणंद विचार लाल रे ॥ नवपद मंत्र आराधतां, फल लहे भविक अपार लाल रे ॥ श्री सिद्ध० ॥ २ ॥ धर्मरथनां चार चक्र छे, उपशम ने सुविवेक लाल रे ॥ संवर त्रीजुं जाणीए, चोथुं सिद्धचक्र छेक लाल रे ॥ श्री सिद्ध० ॥ ३ ॥ चक्री चक्ररयण बले, साधे सयल छ खंड लाल रे ॥ तिम सिद्धचक्रप्रभावथी, तेज प्रताप अखंड लाल रे ॥ श्री सिद्ध० ॥ ४ ॥ मयणा ने श्रीपालजी, जपतां बहु फल लीध लाल रे ॥ गुण जशवंत जिनेंद्रनो, ज्ञानविनोद प्रसिद्ध लाल रे ॥ श्री सिद्ध० ॥ ५ ॥

॥ अखात्रीजनुं स्तवन ॥

॥ आदि जिणेश्वर कीयो पारणुं, आ रस शेलडी आदि० ॥ घडा एकसो आठ सेलडी, रस भरीया

ठे नीका ॥ उलट नाव श्रेयांस वहोरावे, मांमदि- वीआ बुकारे ॥ आदि० ॥ १ ॥ देवडुंडुनि वाज रही रे, सोनैया रे वरपा ॥ वारे मासशुं कीयो पारणो, गइ नुख सब तिरपा रे ॥ आदि० ॥ २ ॥ रिद्धि सिद्धि कारज मनोकामना, घर घर मंगल चार ॥ डुनिया हर्ख वधामणां, शिरे अखात्रीज तेहे- वार रे ॥ आदि० ॥ ३ ॥ संकट कांटो विघ्न निवारो, राखो हमारी लाज ॥ वे कर जोमी विनवलां, रिख- नदेव महाराज रे ॥ आ रस शेलमी ॥ आदि० ॥ ४ ॥

॥ पजुसणनुं स्तवन ॥

॥ पर्व पजुसण आवीयां रे लाल, कीजे घणु धर्म- ध्यान रे ॥ नविक जन ॥ पर्व० ॥ आरंन सकल निवरीए रे लाल ॥ जीवने दीजे अनयदान रे ॥ ॥ न० ॥ पर्व० ॥ १ ॥ सवला मासमां मास वमो रे लाल, नाद्रव मास सुमास रे ॥ न० ॥ तेहमां आठ दिन रुअमा रे लाल, कीजे सुकृत उल्लास रे ॥ न० ॥ पर्व० ॥ २ ॥ खांमण पीसण गारना रे लाल, ना- वण धोवण जेह रे ॥ न० ॥ एवा आरंनने टालीए रे लाल, वंगे सुख अठेह रे ॥ न० ॥ पर्व० ॥ ३ ॥

पुस्तक वासीने राखीए रे लाल, उंह्रव करीए अनेक रे ॥ न्न० ॥ घर सारु वित्त वावरो रे लाल, हइडे आणी विवेक रे ॥ न्न० ॥ पर्व० ॥ ४ ॥ पूजा अर्चीने आणीए रे लाल, सद्गुरुनी पास रे ॥ न्न० ॥ ढोल ददामण फेरीया रे लाल, मंगलिक गावो न्नास रे ॥ न्न० ॥ ॥ पर्व० ॥ ५ ॥ श्रीफल सरस सोपारीया रे लाल, दीजे स्वामीने हाथ रे ॥ न्न० ॥ लान्न अनंता बतावीए रे लाल, श्रीमुख त्रिन्नुवन-नाथ रे ॥ न्न० ॥ पर्व० ॥ ६ ॥ नव वांचना श्री सूत्रनी रे लाल, सांन्नलो शुद्धे न्नाव रे ॥ न्न० ॥ स्वामिव-त्सल कीजीए रे लाल, न्नवजल तरवा नाव रे ॥ न्न० ॥ पर्व० ॥ ७ ॥ चित्त चैत्य जुहारीए रे लाल, पूजा सत्तर प्रकार रे ॥ न्न० ॥ अंगपूजा सद्गुरु तणी रे लाल, कीजीए हरख अपार रे ॥ न्न० ॥ पर्व० ॥ ८ ॥ जीव अमार पलावी रे लाल, तेहथी शिवसुख होय रे ॥ न्न० ॥ दान संवत्सरी दीजीए रे लाल, इण समो पर्व न कोइ रे ॥ न्न० ॥ पर्व० ॥ ए ॥ काउस्सग्ग करी सांन्नलो रे लाल, आगम आपणे कान रे ॥ न्न० ॥ छठ अठम तपस्या करो रे लाल, कीजे उज्ज्वल ध्यान रे

॥ ज० ॥ पर्व० ॥ १० ॥ इणविध आराधशे रे लाल लेशे सुखनी कोड रे ॥ ज० ॥ मुक्तिमंदिरमां चालशे रे लाल, मति हंस नमे कर जोड रे ॥ ज० ॥ पर्व० ॥ ११ ।

॥ दीवालीनुं स्तवन ॥

॥ मारे दीवाली थइ आज, जिनमुख जोवाने । सर्यां सर्यां रे सेवकनां काज, जवदुःख खोवाने । ए टेक ॥ महावीरस्वामी मुगते पोहोता, गौतम केवल ज्ञान रे ॥ धन्य अमावास्या दीवाली मारे, वीर प्रभु निरवाण ॥ जिन० ॥ १ ॥ चारित्र पाली निरमलुं रे टाल्या विषय कषाय रे ॥ एवा मुनिने वंदीए तो उतारे जवपार ॥ जिन० ॥ २ ॥ वाकुला वोरया वीरजी रे, तारी चंदनवाला रे ॥ केवल लइ प्रभु मुगते पहोता, पाम्या जवनो पार ॥ जिन० ॥ ३ ॥ एवा मुनिने वंदीए जे, पंच ज्ञाने धारता रे ॥ समवसरण देइ देशना रे, प्रभु तारया नर ने नार ॥ जिन० ॥ ४ ॥ चोवीशमा जिनेश्वर ने, मुगति तणा दातार रे ॥ कर जोडी कवि एम जणे रे, प्रभु दुनिया फेरो टाल ॥ जिन० ॥ ५ ॥

॥ बीजनी थोय ॥

॥ दिन सकल मनोहर, बीज दिवस सुविशेष ॥
ाय राणा प्रणमे, चंद्र तणी जिहां रेख ॥ तिहां
ंद्र विमाने, शाश्वता जिनवर जेह ॥ हुं बीज तणे
देन, प्रणमुं आणी नेह ॥

॥ पांचमनी थोय ॥

॥ श्रावण सुदि दिन पंचमी ए, जन्म्या नेम जि-
ांद तो ॥ श्याम वरण तनु शोभतुं ए, मुख शारदको
ंद तो ॥ सहस सरस प्रभु आउखुं ए, ब्रह्मचारी
नगवंत तो ॥ अष्ट कर्म हेले हणी ए, पहोता मुक्ति
महंत तो ॥

॥ आठमनी थोय ॥

॥ मंगल आठ करी जस आगल, भाव धरी सुर-
ाजजी ॥ आठ जातिना कलश करीने, नवरावे जिन-
ाजजी ॥ वीर जिनेश्वर जन्ममहोत्सव, करतां शिव-
ुख साधेजी ॥ आठमनुं तप करतां अम घर,
ंगल कमला वाधेजी ॥

॥ एकादशीनी थोय ॥

॥ एकादशी अति रुअडी, गोविंद पूछे नेम ॥
ोण कारण ए पर्व मोटुं, कहो मुजशुं तेम ॥ जिनवर

कल्याणक अति घणां, एकसो ने पचास ॥ तेणे कारण ए पर्व मोटुं, करो मौन उपवास॥

॥ पजुसणनी थोय ॥

॥ सत्तरभेदी जिनपूजा रचीने, स्नात्र महोत्सव कीजेजी ॥ ढोल ददामा भेरी नफेरी, झल्लरी नाद सुणीजेजी ॥ वीर जिन आगल भावना भावी, मानवभव फल लीजेजी ॥ परव पजुसण पूरव पुण्ये, आव्यां एम गणीजेजी ॥ १ ॥ मास पास वली दसम दुवालस, चत्तारी अठ कीजेजी ॥ उपर वली दश दोय करीने, जिन चोवीश पूजीजेजी ॥ वडा कल्पनो छठ करीने, वीरचरित्र सुणीजेजी ॥ पडवेने दिन जन्ममहोत्सव, धवल मंगल वरतीजेजी ॥ २ ॥ आठ दिवस लगे अमारि पलावी, अठमनुं तप कीजेजी ॥ नागकेतुनी परे केवल लहीए, जो शुभ भावे रहीएजी ॥ तेलाधर दिन त्रण कल्याणक, गणधरवाद वदीजेजी ॥ पास नेमीसर अंतर त्रीजे, रुषभचरित्र सुणीजेजी ॥ ३ ॥ बारसें सूत्र ने सामाचारी, संवछरी पडिक्कमीएजी ॥ चैत्यप्रवाडी विधिशुं कीजे, सकल जंतुने खामीजेजी ॥ पारणाने दिन स्वामिवछल, कीजे

अधिक वधाइजी ॥ मानविजय कहे सकल मनोरथ, पूरो देवी सिद्धाइजी ॥ ४ ॥

॥ सिद्धचक्रनी थोय ॥

॥ जिनशासन वंछित, पूरण देव रसाल ॥ जावे जवि जणीए, सिद्धचक्र गुणमाल ॥ त्रिहुं काले एहनी, पूजा करे उजमाल ॥ ते अजर अमरपद, सुख पामे सुविशाल ॥

॥ नित्यस्तुति ॥

॥ सकल करम वारी, मोक्षमार्गाधिकारी ॥ त्रिजुवन उपकारी, केवलज्ञानधारी ॥ जवियण नित्य सेवो, देव ए जक्तिजावे ॥ ए जिन जजंतां, सर्व संपत्ति आवे ॥

॥ स्तुति काव्य ॥

अशोकवृक्षः सुरपुष्पवृष्टिः, दिव्यध्वनिश्चामरमासनं च ॥ जामंरूलंडुंडुजिरातपत्रं, सत्प्रातिहार्याणि जिनेश्वराणाम् ॥



॥ खंम ४ थो ॥

॥ चोवीश तीर्थंकरना चैत्यवंदनो, स्तवनो तथा थोयो ॥

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्त्तिहराय नाथ, तुभ्यं नम क्षितितलामलभूपणाय । तुभ्य नमस्त्रिजगतः परमे श्वराय, तुभ्य नमो जिन भवोदधिशोपणाय ॥ अद्या भवत् सफलता नयनद्वयस्य, देव त्वदीयचरणांबुज वीक्षणेन । अद्य त्रिलोकतिलकः प्रतिभासते मे, संसा रवारिधिरयं चुलुकः प्रमाणम् ॥ अद्य मे सफलं जन्म अद्य मे सफला क्रिया ॥ शुभो दिनोदयोऽस्माकं जिनेंद्र तव दर्शनात् ॥

॥ श्रीरूपभ जिन चैत्यवंदन ॥

॥ आदि देव अलवेसरु, विनीतानो राय ॥ नाभि राया कुलमंडणो, मरुदेवा माय ॥ पांचसें धनुपनं देहडी, प्रभुजी परम दयाल ॥ चोराशी लख पूर्वनु जस आयुविशाल ॥ वृपभ लंछन जिन वृपभरु ए उत्तम गुण मणिखाण ॥ तस पदपद्म सेवन थकी लहीए अविचल ठाण ॥ ३ ॥

॥ श्रीअजितनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ अजितनाथ प्रभु अवतर्या, विनीतानो स्वामि

॥ जितशत्रु विजया तणा, नंदन शिवगामी ॥ १ ॥ बहोंतेर लाख पूरव तणुं, पाल्युं जिणे आय ॥ गज लंछन लंछन नहीं, प्रणमे सुरराय ॥ २ ॥ साडा-चारसें धनुषनी ए, जिनवर उत्तम देह ॥ पादपद्म तस प्रणमीए, जिम लहीए शिवगेह ॥ ३ ॥

॥ श्रीसंभवनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ सावत्थी नयरी धणी, श्री संभवनाथ ॥ जितारि नृप नंदनो, चलवे शिव साथ ॥ १ ॥ सेना नंदन चंदने, पूजो नव अंगे ॥ चारसें धनुषनुं देहमान, प्रणमुं मनरंगे ॥ २ ॥ साठ लाख पूरव तणुं ए, जिनवर उत्तम आय ॥ तुरग लंछन पदपद्मने, नमतां शिवसुख थाय ॥ ३ ॥

॥ श्री अभिनंदन चैत्यवंदन ॥

॥ नंदन संवर रायना, चोथा अभिनंदन ॥ कपि लंछन वंदन करो, भवदुःख निकंदन ॥ १ ॥ सिद्धा-रथा जस मावडी, सिद्धारथ जस ताय ॥ साडात्रणसें धनुष मान, सुंदर जस काय ॥ २ ॥ विनीता वासी वंदीए ए, आयु लख पंचास ॥ पूरव तस पदपद्मने, नमतां शिवपुरवास ॥ ३ ॥

॥ श्री सुमतिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ सुमतिनाथ सुहंकरु, कोशल्ला जस नयरी ॥

मेघराय मगला तणी, नदन जित वयरी ॥ १ ॥ क्रौंच लंछन जिनराजीउं, त्रणसें धनुपनी देह ॥ चालीश लाख पूरव तणुं, आयु अति गुणगेह ॥ २ ॥ सुमति गुणे करी जे नरयो ए, तरयो संसार अगाध ॥ तस पदपद्म सेवा थकी, लहो सुख अव्याबाध ॥ ३ ॥

॥ श्री पद्मप्रभ चैत्यवंदन ॥

॥ कोसंबी पुरी राजीउं, धर नरपति ताय ॥ पद्मप्रभ प्रभुतामयी, सुसीमा जस माय ॥ १ ॥ त्रीश लाख पूरव तणु जिन आयु पाली ॥ धनुष अढीसे देहनी, सवि कर्मने टाली ॥ २ ॥ पद्म लंछन परमेश्वरु ए, जिनपदपद्मनी सेव ॥ पद्मविजय कहे कीजीए, भविजन सहुनित्यमेव ॥ ३ ॥

॥ श्री सुपार्श्वनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ श्री सुपास जिणंद पास, टालो भवफेरो ॥ पृथ्वी माताने उरे, जायो नाथ हमेरो ॥ १ ॥ प्रतिष्ठित सुत सुंदरु, वाणारसी राय ॥ वीश लाख पूरव तणु, प्रभुजीनुं आउ ॥ २ ॥ धनुप बसे जिन देहनी ए, स्वस्तिक लछन सार ॥ पदपद्मे जस राजतो, तार नार भव तार ॥ ३ ॥

॥ श्री चद्रप्रभ चैत्यवंदन ॥

॥ लक्ष्मणा माता जनमीआ, महसेन जस ताय ॥

रुपति लंछन दीपतो, चंद्रपुरीनो राय ॥ १ ॥ दश
ख पूरव आउखुं, दोढसो धनुषनी देह ॥ सुर नरपति
वा करे, धरत अति ससनेह ॥ २ ॥ चंद्रप्रभ जिन
गठमा ए, उत्तम पद दातार ॥ पद्मविजय कहे प्रण-
ीए, मुज प्रभु पार उतार ॥ ३ ॥

॥ श्री सुविधिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥सुविधिनाथ नवमा नमुं, सूग्रीव जस तात ॥
गर लंछन चरणे नमुं, रामा रूडी मात ॥ १ ॥ आयु
लाख पूरव तणुं, शत धनुषनी काय ॥ काकंदी
यरी धणी, प्रणमुंप्रभु पाय ॥२ ॥ उत्तम विधि जेहथी
ाहो ए, तेणे सूविधि जिन नाम ॥ नमतां तस पद-
झने, लहीए शाश्वत धाम ॥ ३ ॥

॥ श्री शीतलनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ नंदा दृढरथ नंदनो, शीतलशीतलनाथ ॥ राजा भ-
ीलपुर तणो, चलवे शिव साथ ॥ १ ॥ लाख पूरवनुं
प्राउखुं, नेवुं धनुष प्रमाण ॥ काया माया टालीने,
ह्या पंचम नाण ॥ २ ॥ श्रीवत्स लंछन सुंदरु ए,
दपद्मे रहे जास ॥ ते जिननी सेवा थकी, लहीए
ीलविलास ॥ ३ ॥

॥ श्री श्रेयासनाथ चैत्यनदन ॥

॥ श्री श्रेयांस अग्यारमा, विष्णु नृप ताय। विष्णु माता जेहनी, एशी धनुषनी काय ॥ १ ॥ वर्ष चोराशी लाखनु, पाल्युं जेणे आय ॥ षडूगी लंछन पदकजे, सिंहपुरीनो राय ॥ २ ॥ राज्य तजी दीक्षा वरी ए, जिनवर उत्तम ज्ञान ॥ पाम्या तस पदपद्मने, नमतां अविचल थान ॥ ३ ॥

॥ श्री वासुपूज्य चैत्यवदन ॥

॥ वासव वंदित वासूपूज्य, चंपापुरी ठाम॥ वासू-पूज्य कुल चंद्रमा, माता जया नाम ॥ १ ॥ महिष लंछन जिन बारमा, सीतेर धनुष प्रमाण ॥ काया आयु वरस वली, बहोतेर लाख वखाण ॥ २ ॥ संघ चतुर्विध स्थापीने ए, जिन उत्तम महाराय ॥ तस मुखपद्म वचन सुणी, परमानंदित थाय ॥ ३ ॥

॥ श्री विमलनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ कंपिलपुरे विमल प्रभु, श्यामा मात मलार ॥ कृतवर्मा नृप कुल नभे, उगमीयो दिनकार ॥ १ ॥ लंछन राजे वराहनुं, साठ धनुषनी काय ॥ साठ लाख वरसां तणु, आयु सुखदाय ॥ २ ॥ विमल विमल

पोते थया ए, सेवक विमल करेह ॥ तुज पदपद्म विमल प्रत्ये, सेवुं धरी ससनेह ॥ ३ ॥

॥ श्री अनंतनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ अनंत अनंत गुण आगरु, अयोध्यावासी ॥ सिंहसेन नृप नंदनो, थयो पाप निकासी ॥ १ ॥ सुजसा मात जन्मीयो, त्रीश लाख उदार ॥ वरस आउखु पालीउं, जिनवर जयकार ॥ २ ॥ लंछन सिंचाणा तणुं ए, काया धनुष पचास ॥ जिनपदपद्म नम्या थकी, लहीए सहज विलास ॥ ३ ॥

॥ श्री धर्मनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ भानुनंदन धर्मनाथ, सुव्रता भली मात ॥ वज्र लंछन वज्री नमे, त्रण भुवन विख्यात ॥ १ ॥ दश लाख वरसनुं आउखुं, वपु धनुष पीस्तालीश ॥ रत्नपुरीनो राजीउ, जगमां जास जगीश ॥ २ ॥ धर्ममारग जिनवर कहे ए, उत्तम जन आधार ॥ तिणे तुज पादपद्म तणी, सेवा करुं निरधार ॥ ३ ॥

॥ श्री शांतिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ शांति जिनेश्वर सोलमा, अचिरासुत वंदो ॥ विश्वसेन कुलनभमणि, भविजन सुखकंदो ॥ १ ॥

मृग लंठल जिन आउखुं, लाख वरस प्रमाण ॥ हत्थि-
णाउर नयरी धणी, प्रजुजी गुणमणिखाण ॥ २ ॥
चालीश धनुषनी देहनी ए, समचोरस सठाण ॥ वद-
नपद्म ज्यु चंदलो, दीठे परम कल्याण ॥ ३ ॥

॥ श्री कुंथुनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ कुंथुनाथ कामित दीये, गजपुरनो राय ॥ सिरि
माता उरे अवतरयो, सुर नरपति ताय ॥ १ ॥ काया
पांत्रीश धनुषनी, लंछन जस छाग ॥ केवलज्ञानादिक
गुणा, प्रणमो धरी राग ॥ २ ॥ सहस पंचाणुं वरसनुं
ए, पाली उत्तम आय ॥ पद्मविजय कहे प्रणमीए
जावे श्री जिनराय ॥ ३ ॥

॥ श्री अरनाथ चैत्यवदन ॥

॥ नागपुरे अर जिनवरु, सुदर्शन नृपनंद ॥ देवी
माता जन्मीयो, जविजन सुखकंद ॥ १ ॥ लंछन नंदा
वर्त्तनु, काया धनुषह त्रीश ॥ सहस चोराशी वरसनुं
आयु जास जगीश ॥ २ ॥ अरुज अजर अज जिनवर
ए, पाम्या उत्तम ठाण ॥ तस पदपद्म आलंबतां, लहीए
पद निरवाण ॥ ३ ॥

॥ श्री मल्लिनाथ चैत्यवदन ॥

॥ मल्लिनाथ उंगणीशमा, जस मिथिला नयरी ।

ज्ञावती जस मावडी, टाळे कर्मवयरी ॥ १ ॥ तात श्री कुंभ नरेसरु, धनुष पचवीशनी काय ॥ लंछन कलश मंगलकरु, निर्मम निरमाय ॥ २ ॥ वरस पंचावन सहसनुं ए, जिनवर उत्तम आय ॥ पद्मविजय कहे तेहने, नमतां शिवसुख थाय ॥ ३ ॥

॥ श्री मुनिसुव्रतस्वामी चैत्यवंदन ॥

॥ मुनिसुव्रत जिन वीशमा, कच्छपनुं लंछन ॥ पद्मा माता जेहनी, सुमित्र नृपनंदन ॥ ॥ १ ॥ राजगृही नयरी धणी, वीश धनुष शरीर ॥ कर्म निकाचित रेणुव्रज, उद्दाम समीर ॥ २ ॥ त्रीश हजार वरस तणुं ए, पाली आयु उदार ॥ पद्मविजय कहे शिव लह्या, शाश्वत सुख निरधार ॥ ३ ॥

॥ श्री नमिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ मिथिला नयरीनो राजीउ, वप्रा सुत साचो ॥ विजयराय सुत छोडीने, अवरा मत माचो ॥ १ ॥ नील कमल लंछन भलुं, पन्नर धनुषनी देह ॥ नमि जिनवरनुं सोहतुं, गुणगण मणि गेह ॥ २ ॥ दश हजार वरस तणुं ए, पाळ्युं परगट आय ॥ पद्मविजय कहे पुण्यथी, नमीए ते जिनराय ॥ ३ ॥

॥ श्री नेमिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ नेमिनाथ बावीशमा, शिवादेवी माय ॥ समुद्र विजय पृथिवीपति, जेह प्रज्ञुना ताय ॥ १ ॥ दश धनु पनी देहडी, आयु वरस हजार ॥ शंख लंछनधर स्वामीजी, तजी राजुल नार ॥ २ ॥ सोरीपुर नयरी जली ए, ब्रह्मचारी जगवान ॥ जिन उत्तम पदमञ्जने नमतां अविचल थान ॥ ३ ॥

॥ श्री पार्श्वनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ आश पूर प्रज्ञु पासजी, त्रोडे जवपाश ॥ वामा माता जनमीयो, अहि लंछन जास ॥ १ ॥ अश्वसेन सुतसुखकरु, नव हाथनी काया ॥ काशी देश वाणारसी, पुण्ये प्रज्ञु पाया ॥ २ ॥ एकसो वरसनुं आउखुं ए, पाली पासकुमार ॥ पद्म कहे मुगते गया, नमतां सुख निरधार ॥ ३ ॥

॥ श्री महावीरस्वामी चैत्यवंदन ॥

॥ सिद्धारथ सुत वंदीए, त्रिशलानो जायो ॥ क्षत्रीकुंडमां अवतरयो, सुरनरपति गायो ॥ १ ॥ मृगपति लंछन पाउले, सात हाथनी काया ॥ बहोंतेर वरसनुं आउखुं, वीर जिनेश्वर राया ॥ २ ॥ खिरे

वेजय जिनराजना ए उत्तम गुण अवदात॥सात बोलश्री
ार्णव्या, पद्मविजय विख्यात ॥ ३ ॥

॥ श्री आदीश्वर प्रभुनुं स्तवन ॥

॥ माता मरुदेवीना नंद, देखी ताहरी मूरति मारुं
मन लोभाणुं जी ॥ मारुं दिल लोभाणुं जी ॥ देखी० ॥
करुणानागर करुणासागर, काया कंचनवान ॥ धोरी
लंछन पाउले, कांइ धनुष पांचसें मान ॥ माता० ॥ १ ॥
त्रिगडे बेसी धर्म कहंता, सुणे पर्षदा बार ॥ जोजन
गामनी वाणी मीठी, वरसंती जलधार ॥ माता० ॥ २ ॥
उर्वशी रूडी अप्सरा ने, रामा छे मनरंग ॥ पाये नेपुर
रणझणे कांइ, करती नाटारंभ ॥ माता० ॥ ३ ॥ तुंही
ब्रह्मा तुंही विधाता, तुं जग तारणहार ॥ तुज सरिखो
नहीं देव जगतमां, अरवडीया आधार ॥ माता०
॥ ४ ॥ तुंही भ्राता तुंही त्राता, तुंही जगतनो देव ॥
सुर नर किन्नर वासुदेवा, करता तुज पद सेव ॥ माता०
॥ ५ ॥ श्री सिद्धाचल तीरथ केरा, राजा ऋषभ
जिणंद ॥ कीर्त्ति करे माणेक मुनि ताहरी, टालो
भवभय फंद ॥ माता० ॥ ६ ॥

॥ श्री अजितनाथ प्रभुनु स्तवन ॥ ललित ॥

॥ अजितनाथजी अर्ज उचरुं, तुज कृपावडे भव
निधि तरुं ॥ शरण आवी आ दास आ समे, विनयथ
विभु वंदीए अमे ॥ १ ॥ विजयथी भव्या विनीत
पति, जननी आपनां विजया सती ॥ रमणी मुक्तिथ
रोज तुं रमे, विनयथी विभु वंदीए अमे ॥ २ ॥ ज
जगत्पति जिन जाचीए, भजन भक्तनुं भक्ति साचं
ए ॥ तरण तारणा तात हो तमे, विनयथी विभु वंदी
अमे ॥ ३ ॥ कुटिल थइ करयां पाप मे घणां, कुशील
सेवतां राखी ना मणा ॥ सुखद सेवथी पाप सौ शमे
विनयथी विभु वंदीए अमे ॥ ४ ॥ विषयवृत्तिथी भर
ना कस्तु, धन धूती घणु धूलमा धस्तु ॥ अवर देवत
दिल ना गमे, विनयथी विभु वंदीए अमे ॥ ५ ॥
स्मरण स्वामीनु हु करुं सदा, तरत टालशो आप आ
पदा ॥ सुरपति सो नाथने नमे, विनयथी विभु वंदी
अमे ॥ ६ ॥ जैननी सभा जिनजी जपे, खचित सर्वन
पाप तो खपे ॥ समजतो नथी वंदना विधि, विनति
आपनी केशवे कीधी ॥ ७ ॥

॥ श्री संभवनाथ प्रभुनु स्तवन ॥

॥ साहेब सांभलो रे, संभव अरज हमारी ॥ भवे

नव हुं नम्यो रे, न लही सेवा तमारी ॥ नरक निगो-
दमां रे, तिहां हुं बहु नव नमीयो ॥ तुम विना दुःख
सह्यां रे, अहोनिश क्रोधे धमधमीयो ॥ सा० ॥ १ ॥
इंद्रियवश पड्यो रे, पाल्यां व्रत नवि सोसे ॥ त्रस पण
नवि गण्या रे, हणीया थावर होंशे ॥ व्रत चित्त नवि
धरयां रे, बीजुं साचुं न बोल्युं ॥ पापनी गोठमी रे,
तिहां में हइमलुं खोल्युं ॥ सा० ॥ २ ॥ चोरी में करी
रे, चउविह अदत्त न टाल्युं ॥ श्री जिन आणशुं रे,
में नवि संजम पाल्युं ॥ मधुकर तणी परे रे, शुद्ध न
आहार गवेख्यो ॥ रसना लालचे रे, नीरस पिंम
उवेख्यो ॥ सा० ॥ ३ ॥ नरनव दोहिलो रे, पामी
मोहवश पमीयो ॥ परस्त्रीदेखीने रे, मुज मन तिहां
जइ अमीयो ॥ काम न को सरयां रे, पापे पिंम में
भरीयो ॥ शुद्ध बुद्ध नवि रही रे, तेणे नवि आतम
तरीयो ॥ सा० ॥ ४ ॥ लक्ष्मीनी लालचे रे, में बहु
हीनता दाखी ॥ तोपण नवि मली रे, मली तो नवि
रही राखी ॥ जे जन अभिलषे रे, ते तो तेहथी नासे
। तृण सम जे गणे रे, तेहनी नित्य रहे पासे ॥
सा० ॥ ५ ॥ धन्य धन्य ते नरा रे, एहनो मोह विछोमी

॥ विषय निवारीने रे, जेहने धर्ममां जोडी ॥ अनद्‌य ते में नख्यां रे, रात्रिनोजन कीधां ॥ व्रत ठ नवि पालीयां रे, जेहवां मूलथी लीधां ॥ सा० ॥ ६ ॥ अनंत नव हुं नम्यो रे, नमतां साहिब मलीयो ॥ तुम विण कोण दीये रे, बोधरयण मुज वलीयो ॥ संनव आपजो रे, चरणकमल तुम सेवा ॥ नय एम विनवे रे सुणजो देवाधिदेवा ॥ सा० ॥ ७ ॥

॥ श्री अभिनंदन प्रभुनु स्तवन ॥

॥ कहु छुं नसीने दुःखीओ कीधो छे ए राह ॥

॥ करुणा नजरथी प्रनुजी कृपालु, दीजीए दरिशन देव दयालु ॥ करुणा० ॥ ए टेक ॥ अनिनंदन प्रनु पापनिकंदन, नक्ति यकी नवनयडुःख टालुं ॥ करुणा० ॥ १ ॥ चरण शरण स्वामी करण हुं आव्यो, आप प्रतापथी पाप प्रजालुं ॥ करुणा० ॥ २ ॥ नवनयनंजन नजन करंतां, साहिब समकित गुण अजवालु । करुणा० ॥ ३ ॥ जैन प्रवर्त्तक शिवसुत केशव, नीहाल थयो प्रनु मुखडुं नीहालु ॥ करुणा० ॥ ४ ॥

॥ श्री सुमतिनाथ प्रभुनु स्तवन ॥

॥ जगतगुरु सुमतिनाथ साचा रे (२) व्यसन

ात सब दूर करीने, ए जिनने राचो (२) जगत० ॥
तुर नर चोरी परहरवी रे (२) मांस मदिरा जुगार
हिंसा, कदीए नवि करवी (२) तजो परनारी मेरी
ान तजो परनारी, वेश्याथी थाये खुवारी ॥ सुमत
धरी प्रभु आगल नाचो रे (२) व्यसन सात सब दूर
करीने, ए जिनने राचो ॥ ज० ॥ रावण परनारीथी
ललचायो रे (२) महा दुःखनी खाण नरकमां, खूब
अपटायो रे (२) मेरी ध्यान शीयल तप धरजो, भावे
हडो तप करजो ॥ सुमत धरी जिनपूजा राचो रे ॥
व्यसन० ॥ ज० ॥ नगरमां जैनशाला सारी रे (२)
प्रभु सभा खुशी जिनपूजाथी, सदा आनंदकारी (२)
मेरी ध्यान पूजन नित्य करवुं, मोहरायनी साथे लडवुं ॥
सिद्धिसुख वरवा भवि राचो रे ॥ व्यसन० ॥ ज० ॥

॥ श्री पद्मप्रभुनुं स्तवन ॥ राग इंद्रसभानो ॥

॥ हे पदम प्रभुजी परम कृपालु, प्रणमुं धरी हुं प्रेम ॥
किंकर केरां कर्म विदारो, तार धरीने रहेम ॥ १ ॥
चार गतिमां हुं भमी आव्यो, वार अनंती अनंत ॥
पूरव पुन्य थकी हवे मलीयो, पुरुषोत्तम भगवंत ॥
२ ॥ सुरपति पूजित शंकर स्वामी, परमेश्वर जिन-

देव ॥ अनेक तारो तुंडे मागे, पद पंकेरु हसेव ॥ ३ ।
जैन प्रवर्तक मंरूख जिनजी, निशदिन गुण तुज गाय ।
मुनि माणेक कर जोमी वंदे, जगदीश्वर तुम पाय ॥४

॥ श्रीसुपार्श्व प्रभु स्तवन ॥ भेख रे उतारो राजा भरथरी-ए राग

॥ तार प्रजु तार मुजने, जगजीवन जगराजजी
शरणे आव्यो रे विजु ताहरे, कर जोमीने आजजी ।
अरज सुणो रे श्री सुपासजी ॥ ए आंकणी ॥ क्षम
रे करो प्रजु माहरा, आव्यां वांक अपारजी ॥ करु
णानिधि करुणा करी, आपो जवजल पारजी ॥ अ
रज० ॥ तरण तारण जिन तुजने, नमुं वार हजारजं
॥ परम प्रजु परमातमा, मुज दुरित प्रहारजी ।
अरज० ॥ मुक्ति आपी जिननाथजी, सारो सेवव
काजजी॥ विश्वपति तुजने नमे, मुनि माणेक आ
जजी ॥ अरज० ॥

॥ श्री चंद्रप्रभप्रजु स्तवन ॥ सज्जानो पूरण थयो छे—ए राग ॥

॥ चंद्रप्रजु जगवान् सेवो जवि चंद्रप्रजु जगवा
॥ टेक ॥ चैत्र वदि पचमी दिने चवीया, शुज विजय
विमान ॥ सेवो० ॥ पोष वदि बारस दिन जनमीय
चंद्रपुरी शुज स्थान ॥ सेवो० ॥ लक्ष्मणा जननी ज

ा, प्रभु शिवशर्म निदान ॥ सेवो० ॥ महासेन नृपति
मजुना पिता, परिपूरण पुन्यवान् ॥ सेवो० ॥ उडुपति
लंछन पाया जिनजी, काया इंदु समान ॥ सेवो० ॥
दीक्षा लइ प्रभु केवल पाम्या, पाम्या शिवपुर स्थान ॥
। सेवो० जैन सचा मुनि माणेक मागे, आपो केवल-
ज्ञान ॥ सेवो० ॥

॥ श्री सुविधिनाथ प्रभुनुं स्तवन ॥ प्रभाती राग ॥

॥ मुजरा साहेब, मुजरा साहेब, साहेब मुजरा
तेरा रे ॥ साहेब सुविधि जिनेश्वर प्यारा, चरण पखालुं
प्रभु तेरा रे ॥ मुजरा० ॥ १ ॥ केशर चंदन चर्चुं अंगे
फूल चडावुं सेहरा रे ॥ घंट वजावुं भ्रमर उखेवुं, करुं
प्रदक्षिण फेरा रे ॥ मुजरा० ॥ २ ॥ पंच शब्दके वाजे
बजाउं, नृत्य करुं अति गहिरा रे ॥ रुपचंद गुण गावत
हरखित, दास निरंजन तेरा रे ॥ मुजरा० ॥ ३ ॥

॥ श्री शीतलनाथ प्रभुनुं स्तवन ॥ राग वनझारो ॥

॥ हे शीतलनाथ जिन प्यारा, मुज साहिब
मोहनगारा ॥ टेक ॥ तुमे नंदादेवीना जाया, शुभ
माघ मासमां आया ॥ वदि बारस जन्म तुमारा,
मुज साहिब मोहनगारा ॥ हे शीतल० शुभ माघ

वदि प्रभु वारे, करयो दीक्षाउत्सव प्यारे ॥ धन्य दिन ते मगलकारा, मुज साहिब मोहनगारा ॥ हे शीतल० ॥ तुम भद्दीलपुरनी मांहि, बनी सभा अति शुभ त्यांहि। मल्या साधुउ वीश हजारा, मुज साहिब मोहनगारा। हे शीतल० ॥ वली गणधर एक ने एंशी, तेनी मूरती चंद्रज जेसी ॥ वली श्रावक साथ अपारा, मुज साहिब मोहनगारा॥ हे शीतल० ॥ प्रभु पोष तणो दिन सारो, वदि चौदश मंगलकारो ॥ प्रभु केवल-ज्ञान सुधारया, मुज साहिब माहनगारा ॥ हे शी-तल० हुं वली पूजा करवा आवुं, शुभ केसर चदन लावुं ॥ वली पुष्प अने फल प्यारां, मुज साहिब मोहनगारा ॥ हे शीतल० ॥ प्रभु ज्ञानोदय गुण गावे, शीश वाडीलाल नमावे ॥ थो शिवरमणी आ वारा, मुज साहिब मोहनगारा ॥ हे शीतलनाथ जिन प्यारा० ॥

॥ श्री श्रेयासनाथ प्रभुनु स्तवन ॥

॥ दीननो दयाल छोडी कोने शरणे जाउ–ए देशी ॥

॥ जिनपति श्रेयांसनाथ अरज आ स्वीकारो ॥ ए टेक ॥ तरण तुंज स्मरण करुं, चोगति निवारो ॥

जिन० ॥ १ ॥ चरण शरण करण आव्यो, भवसमुद्र तारो ॥ जनम मरण दुःख मुज, जिनजी विदारो ॥ जिन० ॥ २ ॥ जगत भ्रात तात स्वामी, दास हुं तमारो॥ नमुं नमुं नमुं प्रभु, अघसमूह वारो॥ जिन० ॥३॥ माफ करजो में उथापी, आण जे हजारो॥ दीनदयाल छेको हवे, नथी हुं छोडनारो ॥ जिन० ॥ ४ ॥ मोक्ष सात स्वामी, शिष्य काज सारो ॥ माणेकविजय सहित विभु, जैन सेवक तारो ॥ जिन० ॥ ५ ॥

॥ श्री वासुपूज्य प्रभुनुं स्तवन ॥ साहेबा मोतीडो हमारो–ए देशी ॥

॥ स्वामी तुमे कांइ कामण कीधुं, चित्तडुं अमारुं चोरी लीधुं ॥ साहेबा वासुपूज्य जिणंदा, मोहना वासुपूज्य जिणंदा ॥ ए आंकणी ॥ अमे पण तुमशुं कामण करशुं, भक्ति ग्रही मन घरमां धरशुं ॥ साहेबा० ॥ १ ॥ मन घरमां धरीया घर शोभा, देखत नित्य रहेशो थिर थोभा ॥ मन वैकुंठ अकुंठित भक्त योगी, भाखे अनुभव युक्ते ॥ साहेबा० ॥ २ ॥ क्लेशे वासित मन संसार, क्लेश रहित मनने भवपार ॥ ॥ जो विशुद्ध मन घर तुमे आव्या, प्रभु तो अमे नव निधि रिद्धि पाम्या ॥ साहेबा० ॥ ३ ॥ सात

राज अलगा जइ वेठा, पण जगते अम मनमां पेठा ॥ अलगाने वलगा जे रहेवुं, ते जाणा खरुखरु दुःख सहेवुं ॥ साहेवा० ॥ ४ ॥ ध्यायक ध्येय ध्यान गुण एके, जेद वेद करशुं हवे टेके ॥ खीर नीर परे तुमशु मलशु, वाचक यश कहे हेजे हलशुं ॥ साहेवा० ॥ ५ ॥

॥ श्री विमलनाथ प्रभुनुं स्तवन ॥ ललित छंद ॥

॥ विमलनाथजी सुणजो तमे, अरज आज तो उचारीए अमे ॥ अजरनाथजी त्रिजगतपति, दीनदयाल तुं आप सन्मति ॥ १ ॥ अहनिश ताहरो जाप जपीए, तुम कृपा थकी दुःख कापीए ॥ शुजद जिनजी वार दुर्गति, दीनदयाल तुं आप सन्मति ॥ २ ॥ परम जावथी वंदीए तने, जव सारितपति तार दासने ॥ विजु निवारजो मुज कुमति, दीनदयाल तुं आप सन्मति ॥ ३ ॥ जगतमां घणा देव तो जमे, तुज विना प्रजु मुज ना गमे ॥ जिनपति थकी जाय विपत्ति, दीनदयाल तुं आप सन्मति ॥ ४ ॥ चरणपद्मनी सेवना करुं, जवमुद्रथी पार उतरुं, ॥ हृदय धारजो माणिक विनति, दीनदयाल तुं आप सन्मति ॥ ५ ॥

॥ श्री अनंतनाथ प्रभुनुं स्तवन ॥

॥ अरे लालदेव इस तर्फ जल्दीआव–ए देशी ॥

॥ नमुं हुं करो रे कृपा जिनराय, दीयो सेव आजे अति सुखकार ॥ न रूपं सरूपं न लोभं न मान, चिदानंद रूपं नमे बालज्ञान ॥ १ ॥ करी पाप दूरे वरया शिवनार, हवे राज राजेश्वरा मुज तार ॥ दयालु जिनंदा दयाना निधान, चिदानंद रूपं नमे बालज्ञान ॥ २ ॥ करयां में अनंतां नहीं जवाय पार, भरी पाप पेटी न कीधो विचार ॥ नहीं दिन एके धर्युं तुज ध्यान, चिदानंद रूपं नमे बालज्ञान ॥ ३ ॥ जन्म्यो भूतले हुं सुणो आज वात, बन्यो राय रांक अनंतीज जात ॥ नहीं धर्म कीधुं नहीं शुभ दान, चिदानंद रूपं नमे बालज्ञान ॥ ४ ॥ धरी प्रेम पूरो हुं आव्योज आज, जिनंदा हवे हुं सुधारोज काज ॥ करुं सेव जे हुं लीयो आप कान, चिदानंद रूपं नमे बाल-ज्ञान ॥ ५ ॥ जिनंदा जिनंदा जपुं नाम हुं, कृपानाथ आजे दीये सहाय तुं ॥ नहीं अन्य तारा विना गुण-वान, चिदानंद रूपं नमे बालज्ञान ॥ ६ ॥ नमी कोरु वारे वदे बालुलाल, दीयो रत्नमाला वरुं शिव-

माल ॥ सत्ता जैन गावे प्रभु गुणगान, चिदानंद रूपं नमे बालज्ञान ॥ ७ ॥

॥ श्री धर्मनाथ प्रभुनु स्तवन ॥ ललित छद ॥

॥ जगतपालजी धर्मनाथ रे, भवक तारजो झाली हाथ रे ॥ सुखद देव रे, भाव हुं धरी, जिन तने नमुं घस्त्र सर्वरी ॥ १ ॥ लपन ताहरु देखी आज रे, हरख पामीयो विश्वराज रे ॥ सफल ताहरुं नाथ मे करी जिन तने नमुं घस्त्र सर्वरी ॥ २ ॥ शरण ताहरुं हुं हवे करुं, पलक एकमां मुक्तिने वरुं ॥ जनम मरणना दुःखने हरी, जिन तने नमु घस्त्र सर्वरी ॥ ३ ॥ पूरण पुन्यथी तुं हवे मल्यो, सकल कष्टना ढंधने ऋल्यो । अरज मुनि माणेकनी धरी, जिन तने नमुं घस्त्र सर्वरी ॥ ४ ॥

॥ श्री शांतिनाथ प्रभुनु स्तवन ॥

॥ शांति प्रभु विनति एक मोरी रे, तारी आंखडी कामणगारी ॥ शांति० ॥ विश्वसेन राजा तुज ताय रे राणी अचिरा देवी माय रे ॥ तुं तो गजपुरी नयरीनो राय ॥ शांति० ॥ १ ॥ प्रभु सोवन कांति विराजे रे मुगटे हीरा मणि छाजे रे ॥ तारी वाणी गंगापुर गाजे ॥ शांति० ॥ २ ॥ प्रभु चालीश धनुषनी काया रे, भवि

जनना दिलमां भाव्या रे ॥ कांइ राज राजेसर राया ॥ ॥ शांति० ॥ ३ ॥ प्रभु मारा छो अंतरजामी रे, करुं विनंति हुं शिर नामी रे ॥ चौद राजना छो तुमे स्वामी ॥ शांति० ॥ ४ ॥ प्रभु परषदा बारे मांहे रे, दीये देशना अधिक उछांहे रे ॥ प्रभु अंगीयां भेट्यां उमाहे ॥ शांति० ॥ ५ ॥ श्रावक श्राविका बहु पुण्यवंतां रे, शुभ करणी करे महंतां रे ॥ शांतिनाथनां दरशन करतां ॥ शांति० ॥ ६ ॥ संवत् अढार अढाणुंसो सार रे, चासकल्प कर्यो तेणी वार रे ॥ सूरि मुक्तिपदना धार शांति० ॥ ७ ॥

॥ श्री कुंथुनाथ प्रभुनुं स्तवन ॥

कुंथु प्रभुजी दया दिल धारो, सेवकने भव पार उतारो ॥ कुंथु प्रभु० ॥ १ ॥ भवभयभंजन शिवपुरगामी, जन्म मरण भय दुःख विदारो ॥ कुंथु प्रभु० ॥ २ ॥ शरण तमारे हुं शंकर आव्यो, चार गति मुज दूर वारो ॥ कुंथु प्रभु० ॥ ३ ॥ दुरित निवारक श्री जिनचंदा, अविचल दो मुज शिववास सारो ॥ कुंथु प्रभु० ४ ॥ चरणजलज वंदे शिर नामी, मुनि माणेक प्रभु य तमारो ॥ कुंथु प्रभु० ॥ ५ ॥

॥ श्री अरनाथ प्रभुनु स्तवन ॥

॥ आ अरजी अर जिनवरजी (२) अम तारं गरीब निवाज, बिरुद तुज राज सहायता करजी ॥ चा गतिमां लाख चोरयाशी, योनि दुःखनी खाण ॥ काल अनादि भवअटवीमां, भ्रमण कर्युं भगवान् ॥ सहायता करजी ॥ आ अरजी० ॥ काम क्रोध मद मोह मानथी, छोभावो जगनाथ ॥ पामर प्राणी करुं प्रार्थना, ग्रहो सेवकनो हाथ ॥ सहायता करजी ॥ आ अरजी० ॥ अनंतबली पण अबल थयो हुं, जग विषे जिनराज ॥ कसे सेवक मंगल मागु, प्रभु तुज पद आधार ॥ सहायता करजी ॥ आ अरजी० ॥

॥ श्री मल्लिनाथ प्रभुनुं स्तवन ॥ इडरसभानी देशी ॥

॥ मल्लि जिनेश्वर हमसें बोलो, प्रेम धरी महाराज॥ सेवक उभो अरज करे छे, कर जोडी जिनराज ॥ १ ॥ जयंत नाम विमानथी चवीया, फागण सुदि चोथ ॥ मथुरानगरी शोभती, इक्ष्वागकुलनो ठेथ ॥ २ ॥ मागशिर सुदि अगीयारस जाणुं, जन्मतिथि सुखकार ॥ सुर नर किन्नर उत्सव करतां, हुओ ते जयजयकार ॥ ३ ॥ प्रभावती माताना जाया, मेष राशि सोहाय ॥ कुंभ

जा कुलचंदलो, पचीश धनुषनी काय ॥ ४ ॥ आयु
र्ष पंचावन सहस्रनुं, नीलावर्णी काय ॥ कुमारपदवी
ोगवी, कलश लंछन प्रभु पाय ॥ ५ ॥ त्रणसो साधु
ाथे दीक्षा, लीधी प्रभु निज हाथ ॥ उछव महो-
त्सव अतिही भारी, करता थइ सनाथ ॥ ६ ॥ माग-
शर सुदि अग्यारस प्यारी, दीक्षातिथि सुखकार ॥
थम पारणुं आनंदकारी, विश्वसेन घरे सार ॥ ७ ॥
ागशर सुदि अग्यारस जाणुं, केवल लह्योमहाराज ॥
ागण सुदिनी द्वादशी, पहोंच्या मुक्ति विभुराज
८ ॥ अरज दासनी सुणो मल्लिजी, छो त्रिजगतना
ात ॥ ज्ञानप्रवर्तक मंगली मलीने, प्रीते जिन-
ण गात ॥ ए ॥

॥ श्री मुनिसुव्रत स्वामीनुं स्तवन ॥

॥ मारा स्वामी माराथी छोटा—ए राग ॥

॥ नमुं मुनिसुव्रत जिनराया, राजा सुमित्र कुले
ाव्या ॥ नमुं० श्यामवरण प्रभुनी काया, पद्मावती
ते तणा जाया ॥ नमुं० ॥ लंछन कूर्म तणुं सोहे,
ी भविजननां मन मोहे ॥ नमुं० राजगृही नगरी
ामी, पुरंदर वंदे शिर नामी ॥ नमुं० ॥ आयु

त्रीश सहस तणुं पाली, वर्या शिवरमणी रूपाली ॥ नमुं० ॥ जे प्रभु पदपंकज पूजे, तेना अष्टकर्म रिपु धूजे ॥ नमुं० ॥ किंकर हुं तुं प्रभु तारो, नवाब्धि थकी मुजने उतारो ॥ नमुं० तुज गुण जैन सभा गावे, माणिक अघसंचय जावे ॥ नमुं० ॥

॥ श्री नमिनाथ प्रभुनु स्तवन ॥ राग वनझारो ॥

॥ नमिनाथ भजो जयकारी, मत भूला भमो नर नारी ॥ ए आंकणी ॥ ए अनंतवली चिद्रूप, जस सेवक सुर नर भूप रे ॥ जुओ निरभय आयुध टारी मत भूला० ॥ जे आपो आप जगदीश, किम समरेण ईश रे ॥ तिणे जपमाला नही धारी, मत भूला० ॥ गत राग द्वेष मद हास, हत वेद उदय पर आश रे। रति अरति रामा टारी, मत भूला० ॥ सर्व वेदी गत भरमे, जे पूरण छे सवि धरमे रे ॥ ते देव लक्षण जुओ धारी, मत भूला० ॥ वृद्धि गभीर सुख सेवे, निज रूप लहो जिनदेवे रे ॥ होय सुरशिव मंगलकारी मत भूला० ॥

॥ श्री नेमिनाथ प्रभुनु स्तवन ॥ राग वनझारो ॥

॥ सांभल रे सखीयां हमारी, मुजे नेम पियाने

सारी ॥ टेक ॥ प्रभु तोरणकुं जब आये, तब सोर
शुने सुनाये रे ॥ प्रभु जइ चढे गढ गिरनारी, मुजे
नेम० ॥ १ ॥ सखी राजुलकुं जइ सुनाये, तोहे नेम
नु छटकावे रे ॥ वे परणी मुगति नारी, मुजे नेम०
॥ २ ॥ ए तो शोक कहांसें आइ, मेरे प्यारेकुं भरमाइ
॥ में भइ हुं निराधारी, मुजे नेम० ॥ ३ ॥ तुम मात
ता सुनो भाइ, में संयम लेडं जाइ रे ॥ प्रभु पहेलां
शिव प्यारी, मुजे नेम० ॥ ४ ॥ जैन प्रकाश अमृत
त पावे, गुणचंद गोपाल गावे रे ॥ प्रभु चरणकमल
त्त धारी, मुजे नेम० ॥ ५ ॥

॥ श्री पार्श्वनाथ प्रभुनुं स्तवन ॥

॥ आवो आवो पासजी मुज मलीया रे, मारा
ना मनोरथ फलीया ॥ आवो० ॥ तारी मूरति
नगारी रे, सहु संघने लागे छे प्यारी रे ॥
ने मोही रह्यां सुर नर नारी ॥ आवो० ॥ अल-
मूरत प्रभु तारी रे, तारा मुखडा उपर जाउं
रे ॥ नाग नागिणीनी जोडु उगारी ॥ आवो० ॥
धन्य देवाधिदेवा रे, सुरलोक करे छे सेवा रे ॥
ने आपो शिवपुर मेवा ॥ आवो० ॥ तमे शिव-

रमणीना रसिया रे, जइ मोक्षपुरीमां वसीया रे, मारा हृदयकमलमां वसीया॥ आवो० ॥जे कोइ पार्श्व तणा गुण गाशे रे ॥ तेनां भवभवनां पातीक जाशे रे ॥ तेनां समकित निर्मल थाशे ॥ आवो० ॥ प्रभु त्रेवीशमा जिनराया रे, मोता वामादेवीना जाया रे ॥ अमने दर्शन द्योने दयाला ॥ आवो० ॥ हुं तो लळी लळी लागुं पाय रे, मारा उरमां ते हरख न माय रे॥ एम माणेकविजय गुण गाय ॥ आवो० ॥

॥श्री महावीर स्वामीनु स्तवन.॥

॥ सिद्धारथना रे नंदन विनवुं, विनतडी अवधार॥ भवमंडपमांरे नाटक नाचीयो, हवे मुज दान देवराव॥ हवे मुज पार उतार ॥ सिद्धारथ० ॥ १ ॥ त्रण रतन मुज आपो तातजी, जीम नावे रे संताप ॥ दान दीयंता रे प्रभुजी कोसीर कीसी, आपो पदवी रे आप ॥ सि० ॥ २ ॥ चरणअंगुठे रे मेरु कंपावीयो, सुरनु मोडयुं रे मान ॥ अष्ट करमना रे झगडा जीतवा, दीधुं वरसी रे दान ॥ सि० ॥ ३ ॥ शासननायक सवि सुखदायक, त्रिशला कुखे रतन ॥ सिद्धारथनो रे वंश दीपावीयो, प्रभुजी तमे धन्य धन्य ॥ सि० ॥ ४ ॥ वाचकशेखर

कीर्त्तिविजय गुरु, पामी तास पसाय ॥ धर्म तणे रसे जिन चोवीशना, विनयविजय गुण गाय ॥ सि० ॥५॥

॥ श्री महावीर प्रभुनुं स्तवन ॥

॥ वीर जिनेश्वर साहेब मेरा, पार न लहुं तेरा ॥ महेर करी टालो महाराजजी, जन्म मरणना फेरा हो जिनजी, अब हुं शरणे आव्यो ॥१॥ गर्भावास तणां दुःख मोटां, ऊंधे मस्तक रहीउ ॥ मल मूतर मांहे लपटाणो, एहवां दुःख में सहीआं ॥ हो जिनजि० ॥ २ ॥ नरक निगोदमां ऊपनो ने चवीयो, सूक्ष्म बादर थइउ ॥ विंधाणो सुइने अग्रभागे, मन तिहां किहां रहीउ ॥ हो जिनजि० ॥ ३ ॥ नरक तणी वेदना अति उल्लसी, सही ते जीवे बहु ॥ परमाधामीने वश पडीयो, ते जाणो तमे सहु ॥ हो जिनजि० ॥४॥ तिर्यंच तणा भव कीधा घणेरा, विवेक नहींय लगार ॥ निशदिननो वहेवार न जाण्यो केम उतराय भवपार ॥ हो जिनजी० ॥ ५ ॥ देव तणी गति पुन्य हुं पाम्यो, विषया रसमां भीनो ॥ व्रत पच्चक्खाण उदय नहीं आव्या, तान मान मांहे लीनो ॥ हो जिनजी० ॥६॥ मनुष्यजनम ने धर्मसामग्री, पाम्यो हुं बहु पुण्ये ॥ राग द्वेष मांहे बहु भलीउ, ॥ नटली

समता बुद्धि हो जिनजी ॥ ७ ॥ एक कंचन ने वी कामिनी, तेहशुं मनरुं वाध्युं ॥ तेना जोग लेवा ने शूरो, केम करी जिनधर्म साधुं हो जिनजी ॥ ८ ॥ मन दोरू कीधी अति काळी, हुं छुं कोक जरू जेवो ॥ क कली कल्पनामे जन्म गुमायो, पुनरपि पुनरपि तेह हो जिनजी ॥ ९ ॥ गुरु उपदेशथी हुं नथी जीनो, ना सद्दहणा स्वामी ॥ हवे वराइ जोइए तमारी, खीजम मांहे स्वामी हो जिनजी ॥ १० ॥ चार गति मांहे रू कीयो, तोए न सिध्यां काज ॥ रूपच कहे तारो सेवकं चांहे ग्रह्यानी लाज हो जिनजि ॥ ११ ॥

॥ थोयो अथवा स्तुतिओ ॥

॥ श्रीआदीश्वरस्तुति ॥

भव्यांभोजविवोधनैकतरणे विस्तारिकर्मावली,–
रंभासामज नाभिनंदन महानष्टापदाभासुरैः ॥
भक्त्या वंदितपादपद्म विदुषां संपादय प्रोज्झिता,–
रंभासाम जनाभिनंदन महानष्टापदाभासुरैः ॥ १ ॥

॥ श्रीअजितनाथस्तुति ॥ पुष्पिताग्रा वृत्त ॥

॥ तमजितमभिनोमि यो विराजद्घनघनसेरुपरागम स्तकांतम् ॥ निजजननमहोत्सवेऽधितष्ठावनघनमे परागनस्तकांतम् ॥ १ ॥ स्तुत जिननिवहं तमर्तितसाघ

ंदसुरामरवेण वस्तुवंति ॥ यममरपतयः प्रगाय पार्श्वे-
ष्ठानदसुरामरवेणवस्तुवंति ॥ २ ॥

॥ श्रीसंभवनाथस्तुति ॥ आर्या गीति वृत्त ॥

नुर्निन्नशत्रुनवनय शं नवकांतारतार तार ममारम्॥
शतर त्रातजवत्त्रय शंनव कांतारतारतारममारं ॥ १ ॥
॥श्रयतु तवप्रणतं विनया परमा रमारमानमदमरैः॥स्तु-
नरहित जिनकदंबक विजयापरमार मारमानमदमरैः॥२॥

॥ श्रीअभिनंदनस्तुति ॥ द्रुतविलंवित वृत्त ॥

ामशुनान्यनिनंदन नंदितासुरवधूनयनः परमोदरः ॥
नरकरींद्रविदारणकेसरिन्सुरव धूनय नः परमोऽदरः १
ानवराः प्रयतध्वमितामया मम तमोहरणाय महा-
ेणः ॥ प्रदधतो नुवि विश्वजनीनताममतमोहरणा
महारिणः ॥ २ ॥

॥ श्रीसुमतिनाथस्तुति ॥ आर्या गीति वृत ॥

दमदनरहित नरहित सुमते सुमतेन कनकतारेतारे॥
म दमपालय पालय दरादरातिक्ृतिकृपातःपातः॥ १ ॥
धुतारा विधुतारा सदाः सदाना जिना जिताघा-
घाः ॥ तनुतापातनुतापा हितमाहितमानवनव-
नवा विनवाः ॥ २ ॥

॥ श्रीपद्मप्रभस्तुति ॥ वसततिलका वृत्त ॥

पादद्वयी दलितपद्ममृदुः प्रमोद,-
मुन्मुद्रतामरसदामलतांतपात्री ॥
पाद्मप्रभी प्रविदधातु सतां वितीर्ण,-
मुन्मुद्रतामरसदा मलतांतपात्री ॥ १ ॥
सा मे मति विननुताज्जिनपंक्तिरस्त,-
मुद्रा गतामरसभासुरमध्यगाध्याम् ॥
रत्नांशुभिर्विदधती गगनांतराल,-
मुद्रागतामरसभासुरमध्यगाध्याम् ॥ २ ॥

॥ श्रीसुपार्श्वनाथस्तुति ॥ मालिनी वृत्त ॥

कृतनति कृतवान्यो जंतुजातं निरस्त,-
स्मरपरमदमायामानबाधायशस्त ॥
सुचिरमविचलत्वं चित्तवृत्त॰ सुपार्श्व,
स्मर परमदमाया मानबाधाय शस्तं ॥ १ ॥
व्रजतु जिनतति॰ सा गोचरं चित्तवृत्तेः,
सदमरसहिताया बोऽधिका मानवानां ॥
पदमुपरि दधाना वारिजानां व्यहार्षी,-
त्सदमरसहिता या वोधिकामा नवानां ॥ २ ॥

॥ श्रीचंद्रप्रभस्तुति ॥ मंदाक्रांता वृत्त ॥

तुभ्यं चंद्रप्रभ जिन नमस्तामसोज्जृंभितानां,

हाने कांतानलसम दयावंदितायासमान ॥
विद्रुत्पंक्त्या प्रकटितपृथुस्पष्टदृष्टांतहेतू,-
हानेकांतानलसमदया वंदितायासमान ॥ १ ॥

॥ श्रीसुविधिनाथस्तुति ॥ उपजाति वृत्त ॥

॥ तवाऽभिवृद्धिं सुविधिर्विधेयात्स न्नासुरालीनतपा
गावन् ॥ यो योगिपंक्त्या प्रणतो नभःसत्सन्नासु-
लीनतपादयावन् ॥ १ ॥ या जंतुजाताय हितानि
जी स्तारा जिनानामलपद्ममालं ॥ दिश्यान्मुदं पाद-
गं दधाना सा राजिनानामलपद्ममालं ॥ २ ॥

॥ श्रीशीतलनाथस्तुति ॥ द्रुतविलंबित वृत्त ॥

॥ जयति शीतलतीर्थकृतः सदा चलनतामरसं सदलं
नं ॥ नवकमंबुरुहां पथि संस्पृशच्चलनतामरसंस-
लंघनं ॥ १ ॥ स्मर जिनान्परिनुन्नजरारजोजननता-
वतोदयमानतः ॥ परमनिर्वृतिशर्मकृतो यतो जन
तानवतोऽदयमानतः ॥ २ ॥

॥ श्रीश्रेयांसनाथस्तुति ॥ हरिणी वृत्त ॥

कुसुमधनुषा यस्मादन्यं न मोहवशं व्यधुः,
कमलसदृशां गीतारावा बलादयि तापितं ॥
प्रणमततमां द्राक्श्रेयांसं न चाहृत यन्मनः,
कमलसदृशांगी तारा वाबला दयितापि तं ॥ १ ॥

॥ श्रीवासुपूज्यस्तुति ॥

पूज्य श्रीवासुपूज्यावृजिन जिनपते नूतनादित्यकान्ते,-
ऽमायासंसारवासावन वर तरसाली नवालानवाहो ॥
आनम्रात्रायतांश्रीप्रनवनवनयाद्दिग्रतीनक्तिनाजा,-
मायासं सारवासावनवरतरसालीनवालानवाहो ॥१॥

॥ श्री विमलनाथस्तुति ॥

अपापदमलं घनं शमितमानमामो हितं,
नतामरसनासुरं विमलमालयामोदितम् ॥
अपापदमलंघन शमितमानमामो हित,
न तामरसनासुरं विमलमालयामोदितम् ॥ १ ॥

॥ श्रीअनंतनाथस्तुति ॥

॥ सकलधौतसहासनमेरवस्तव दिशन्त्वनिपेकजल
प्लवाः ॥ मतमनन्तजितः स्नपितोल्लसत्सकलधौतसहा
सनमेरवः ॥ १ ॥ मम रतामरसेवित ते क्षणप्रद
निहन्तु जिनेन्द्र कदम्बक ॥ वरद पादयुगं गतमङ्गता
ममरतामरसे विततेक्षण ॥ २ ॥

॥ श्रीधर्मनाथस्तुति ॥

नमः श्रीधर्म निष्कर्मोदयाय महितायते ॥
मर्त्यामरेंद्रनागेन्द्रैर्दयायमाहृता ते ॥ १ ॥

जीयाज्जिनौघो ध्वान्तान्तं ततान लसमानया ॥
भामंडलत्विषा यः स ततोनलसमानया ॥ २ ॥

॥ श्रीशांतिनाथस्तुति ॥

राजन्त्या नवपद्मरागरुचिरैः पादैर्जिताष्टापदा,-
द्रेऽकोपद्रुत जातरूपविभया तन्वार्य धीर क्षमाम् ॥
बिभ्रत्यामरसेव्यया जिनपते श्रीशांतिनाथास्मरो,-
द्रेकोपद्रुत जातरूप विभयातन्वार्यधी रक्ष माम् ॥ १ ॥

॥ श्रीकुंथुनाथस्तुति ॥

भवतु मम मनः श्रीकुंथुनाथाय तस्मा,-
यमितशमितमोहायामितापाय हृद्यः ॥
सकलभरतभर्ताभूज्जिनोऽप्यक्षपाशा,-
यमितशमितमोहायामितापायहृद्यः ॥ १ ॥

॥ श्रीअरनाथस्तुति ॥

व्यमुचच्चक्रवर्तिलक्ष्मी मिह तृणमिव यः क्षणेन तं,
सन्नमदमरमानसंसारमनेकपराजितामरम् ॥
द्रुतकलधौतकान्तमानमतानन्दितभूरिभक्तिभा,-
वसंनदमरमानसं सारमनेकपराजितामरम् ॥ १ ॥

॥ श्रीमल्लिनाथस्तुति ॥

॥ नुदंस्तनुं प्रवितर मल्लिनाथ मे प्रियंगुरोचिररुचि-

रोचितां वरम् ॥ विडम्बयन्वररुचिमंडलोज्ज्वलः प्रिये गुरोऽचिररुचिरोचितांवरम् ॥ १ ॥ जवाद्धत जगद्वतो वपुर्य्यथाकदम्बकैरवशतपत्रसं पदम् ॥ जिनोत्तमान्स्तुत दधतः स्रजं स्फुरत्कदम्बकैरवशतपत्रसंपदम् ॥ २ ॥

॥ श्रीमुनिसुव्रतस्तुति ॥

जिनमुनिसुव्रतः समवताज्ञानतावनतः,
समुदितमानवा धनमलोभवतो भवतः ॥
अवनिविकीर्णमादिपत यस्य निरस्तमनः,–
समुदितमानवाधनमलो भवतो भवतः ॥ १ ॥

॥ श्रीनमिनाथस्तुति ॥

स्फुरद्विद्युत्कान्ते प्रविकिर वितन्वति सततं,
ममायासं चारो दितमद नमेऽघानि लपित. ॥
नमद्भव्यश्रेणीभवभयभिदां हृद्यवचसा–
ममायासंचारोदितमदनमेघानिल पितः ॥ १ ॥

॥ श्रीनेमिनाथस्तुति ॥

चिक्षेपोर्जितराजकं रणमुखे यो लक्षसख्यं क्षणा,–
दक्षामं जन भासमानमहसं राजीमतीतापदम् ॥
तं नेमिं नम नम्रनिर्वृतिकरं चक्रे यदूनां च यो,
दक्षामंजनभासमानमहसं राजीमतीतापदम् ॥ १ ॥

॥ श्रीपार्श्वनाथस्तुति ॥

मालामालानबाहुर्दधदद्धदरं यामुदारा मुदारा,–ल्लीनालीनामिहाली मधुरमधुरसां सूचितोमाचितोमा ॥ पातात्पातात्स पार्श्वो रुचिररुचिरदो देवराजीवराजी,–पत्रापत्रा यदीया तनुरतनुरवो नंदकोनोदकोनो ॥ १ ॥

॥ श्रीमहावीरस्तुति ॥

॥ नमदमरशिरोरुहस्रस्तसामोदनिर्निद्रमन्दारमालारजोरंजितांहे धरित्रीकृता,–वम वरतम संगमोदारतारोदितानंगनार्यावलीलापदेहेक्षितामोहिताक्षोनवान् ॥ मम वितरतु वीर निर्वाणशर्माणि जातावतारो धराधीशसिद्धार्थधाम्नि क्षमालंकृता,–वनवरतमसंगमोदारतारोदितानंगनार्याव लीलापदे हे क्षितामो हिताक्षोनवान् ॥ १ ॥

॥ श्री महावीरस्वामीनी थोय ॥

॥ त्रिदशविहितमानं, सप्तहस्तांगमानं ॥ दलितम दनमानं, सद्गुणैर्वर्द्धमानं ॥ दनवरतजिमानं, क्रोधमस्यस्यमानं ॥ जिनवरमसमानं, संस्तुवे वर्द्धमानम् ॥ १ ॥

॥ श्री सीमंदिरस्वामीनी थोय ॥

॥ श्री सीमंधर जिनवर, सुखकर साहिब देव,

अरिहंत सकलनी, जाव धरी करुं सेव ॥ सकल आगम पारक, गणधर जाखित वाणी, जयवंती आणा, ज्ञानविमल गुणखाणी ॥

॥ श्री पंचतीर्थनी थोयो ॥

॥ श्रीशत्रुंजयमुख्यतीर्थतिलकं श्रीनाजिराजांगज, वंदे रैवतशैलमौलिमुकुट, श्रीनेमिनाथं यथा ॥ तारगेऽप्यजितं जिनं जृगुपुरे श्रीसुव्रतं स्तंजने श्रीपार्श्व प्रणमामि सत्यनगरे श्रीवर्द्धमानं त्रिधा ॥ १ ॥ वंदेऽनुत्तरकल्पजुवने, ग्रैवेयकव्यंतरज्योतिष्यामरमंदराद्रिवसतींस्तीर्थकरानादरात् ॥ जंबुपुष्करधातकीपु रुचके नंदीश्वरे कुंमले, ये चान्येऽपि जिना नमामि सततं तान् कृत्रिमाकृत्रि मान् ॥२॥ श्रीमद्वीरजिनस्य पद्महृदतो निर्गम्यते गौतमं, गंगावर्तनमेत्य या प्रविजिदे मिथ्यात्ववैताढ्यक॥ उत्पत्तिस्थिति हृतित्रिपथगा ज्ञानांबुदा वृद्धिगा, सामे कर्ममलं हरत्वविकल श्रीद्वादशांगी नदी ॥ ३ ॥ शक्रश्चंद्ररविग्रहाश्च धरणब्रह्मेन्द्रशांत्यविका, दिक्पालाः सकपर्दिगोमुखगणिश्चक्रेश्वरी जारती ॥ येऽन्ये ज्ञानतपःक्रियाव्रतविधिश्रीतीर्थयात्रादिपु, श्रीसंघस्य तुरा चतुर्विधसुरास्ते सतु जद्रकरा ॥ ४ ॥

॥ श्री सिद्धाचलजीनी थोय ॥ पुंडरगिरि महिमा—ए देशी ॥

॥ शत्रुंजय मंमण ऋषज जिणंद दयाल, मरुदेवानंदन वंदन करुं त्रण हुं काल ॥ ए तीरथ जाणी पूर्व नवाणुं वार, आदीश्वर आव्या जाणी लाज अपार ॥१॥ त्रेवीश तीर्थंकर चढ्या एणे गिरि नाथ, ए तीरथना गुण सुरसुरादिक गाय ॥ ए पावन तीरथ त्रिज्जुवन नहीं तस तोले, ए तीरथना गुण सीमंधर मुख बोले ॥२॥ पुंमरगिरि महिमा आगममां परसिद्ध, विमलाचल नेटी लहीए अविचल रिद्ध ॥ पंचमी गति पहोता मुनिवर कोमाकोम, एणे तीरथ आवी कर्मविपाक विठोम ॥३॥ श्री शत्रुंजय केरी अहोनिश रक्षाकारी, आद जिनेश्वर आण हृदयमां धारी ॥ श्री संघ विघ्नहर कवम जक्ष गण नूर, श्री रवि बुद्धसागर संघनां संकट चूर ॥ ४ ॥

॥ शांति जिन थोय ॥ मालिनी छंद ॥

॥ गजपुर अवतारा, विश्वसेन कुमारा ॥ अवनीतले उदारा, चक्कवि लह्मीधारा ॥ प्रति दिवस सवारा, सेवीए शांति सारा ॥ जवजलधि अपारा, पामीए जेम पारा ॥ १ ॥ जिनगुण जस मल्लि, वासना

विश्ववल्लि ॥ मन सदन च सल्लि, मानवंती निसलि
सकल कुशल वल्ली, फुलडे वेग कुल्ली ॥ डुरगति तस
डुल्लि, तासदा श्री वहुल्लि ॥ २ ॥ जिन कथित विशाल
सूत्र श्रेणी रसाला, सकल सुख सुखाला, मेलवा मुर्त्ति
वाला ॥ प्रवचनपद माला, डूतिका ए दयाला ॥ ज
धरी सुकमाला, मूकीए मोहजाला ॥ ३ ॥ अति चपल
वखाणी, सूत्रमां जे प्रमाणी ॥ जगवती ब्रह्माणी, विघ्न
हंता निर्वाणी ॥ जिनपद लप टाणी, कोमो कल्याण
खाणी ॥ उदयरत्न जाणी सुखदाता सयाणी ॥ ४ ॥

॥ श्री जिन पचक थोय ॥ हरिगीत छंद ॥

॥ श्री आदि शांति नेमि पास, वीर शासनपति
वली ॥ नमो वर्तमान अतीत अनागत, चोवीशे जिन
मन मली ॥ जिनवरनी वाणी गुणनी खाणी, प्रेमे
प्राणी सांजली ॥ थया समकित धारी जव निठारी
सेवे सुरवर लळी लळी ॥



॥ खंड ५ मो ॥

॥ प्रकीर्ण स्तवन संग्रह तथा चैत्यवंदन ॥

ॐकारबिन्दुसंयुक्तं, नित्यं ध्यायन्ति योगिनः ॥
कामदं मोक्षदं चैव, ॐकाराय नमो नमः ॥
य एव वीतरागः स, देवो निश्चीयतां ततः ॥
भविनां भवदंभोलिः, स्वतुल्यपदवीप्रदः ॥
वीतरागं यतो ध्यायन् वीतरागो भवेद्भवी ॥
ईलिका भ्रमरीभीता, ध्यायंति भ्रमरीं यथा ॥

॥ श्री चोवीस तीर्थंकरनुं चैत्यवंदन ॥

॥ प्रह समे भाव धरी घणो, प्रणमुं मन रे आनंद ॥ धन्य वेला धन्य ते घडी, निरखुं प्रभु मुखचंद ॥ १ ॥ रिखभ अजित संभव भला, अभिनंदन वंदुं ॥ सुमति पद्मप्रभु जिनवरा, श्री सुपार्श्व जिनेंदु ॥ २ ॥ चंद्रप्रभु सुविधि नमुं, शीतल श्रेयांस ॥ वासुपूज्य विमल प्रभु, अनंत धर्म जिनेश ॥ ३ ॥ शांति कुंथु अर जिनवरा, ए त्रण चक्री कहीजे ॥ मल्लि मुनिसुव्रत प्रभु, नमि नेम नमीजे ॥ ४ ॥ पार्श्ववीर नित्य वंदीए, एहवा जिन चोवीश ॥ ज्ञानविमल सूरि प्रणमतां नित्यहोय जगीश ॥ ५ ॥

॥ श्री महावीरस्वामीनु स्तवन ॥

॥ श्री शखेश्वरा प्रभु पार्श्व जिनवरा–ए राग ॥

॥ श्री जिनेश्वरा महावीर जयहरा, उमंग सग नमन करुं अचल सुखकरा ॥ ए टेक ॥ १ ॥ तारक तुज सम त्रण भुवनमां, वीजो न मले नाथ ॥ वारक भव-भयहारक जिनपद, शिवपुर केरो साथ ॥ श्री जि० ॥२॥ महादेव ब्रह्मा जगदीश्वर, वीतराग अविकार ॥ निर्मोही निर्मायी अलोभी, तिम नहीं क्रोध लगार ॥ श्री जि० ॥ ३ ॥ तुज शासन राजे जग गाजे, मंगल आनंदपूर ॥ शिवसुख उत्तम पद मागे छे, दिन दिनवधतुं नूर ॥ श्री जि० ॥ ४ ॥

॥ श्री पार्श्वनाथ स्तवन ॥

॥ पास जिणंद सदा शिवगामी, वालोजी अंतरजामी रे ॥ जगजीवन जिनजी, मूरत लाहरी मोहनगारी भवियणने हितकारी रे ॥ जगजीवन जिनजी ॥ १ ॥ वामा रे नंदन सांभलो स्वामी, अरज करुं शिर नामी रे ॥ जग० ॥ देव घणा मे तो नयणे रे दीठा तमे लागो छो मीठा रे ॥ जग० ॥ २ ॥ मे तो मन मांहे तुहीज ध्यायो, रत्न चिंतामणि पायो रे ॥ जग० ॥ रात दिवस मुज मन मांहे वसीयो, हुं छु तुम गुण रसियो

रे ॥ जग० ॥३॥ महेर करीने साहेबा नजरे नीहालो, तुमे छो परम कृपालु रे ॥ जग० ॥ गोमी रे गाममां तुंहीज सोहिये, सुर नरनां मन मोहीये रे ॥ जग० ॥ ४ ॥ बे कर जोमीने प्रभु पाय लागुं, नित्य नित्य दरिशण मागुं रे ॥ जग० ॥ देव नहीं कोये ताहेरी तोले, नित्य लाभ एणी परे बोले रे ॥ जग० ॥ ५ ॥

॥ श्री नेमिनाथ स्तवन ॥

॥ रघुपति राम हृदयमां रहेजो रे—ए देशी ॥

॥ भवि तुमे नेमनाथने सेवो रे, जे मोक्ष बतावण मेवो ॥ भवि० ॥ प्रभु शिवादेवीना जाया रे, शुभ समुद्रविजयकुल आया रे ॥ सोहे श्याम वरण शुभ काया ॥ भवि० ॥ १ ॥ जेम तारामां चंद्र वखाणुं रे, तेम मुख तणुं तेज जाणुं रे ॥ वली लंछन शंख प्रमाणुं रे ॥ भवि० ॥ २ ॥ जेनी दश धनुष्यनी काया रे, सोरीपुरमां जन्म धराया रे ॥ रथ तोरणथी जे फरीया ॥ भवि० ॥ ३ ॥ जेणे छंमी छे राजुल नारी रे, जाइ चढ्या गढ गिरनारी रे ॥ लीधो संजम त्यां सुखकारी ॥ भवि० ॥ ४ ॥ शुभ केशर चंदन रंग रे, घोली मृगमद परिमल संग रे ॥ पूजो परमातम नव अंगे ॥ भवि० ॥ ५ ॥

गुण वाल ज्ञानोदय गावे रे, वाफीलाल ते शीश नमावे रे ॥ जेथी जनम मरण दुःख जावे ॥ भवि० ॥ ६ ॥

॥ श्रीऋषभदेवनुं स्तवन ॥ विनति अरजो ध्यान–ए राग ॥

॥ भवजल पार उतार, जिणंदजी, भवजल पार उतार ॥ मुज पापीने तार ॥ जिणंदजी ॥ ए टेक । श्री सिद्धाचल तीरथ राजा, त्रण भुवनमां सार ॥ जि० । पूर्व नवाणुं वार शेत्रुंजे, आव्या श्री नाभिकुमार । जि० ॥ १ ॥ आज हमारे सुरतरु प्रगट्यो, दीठो प्रभु देदार ॥ जि० ॥ भवोभव भटकी शरणे आव्यो, राखो लाज आ वार ॥ जि० ॥ २ ॥ भरतादिक असख्यने तारया, तिम प्रभु मुजने तार ॥ जि० ॥ माता मरुदेवाने दीधु, केवलज्ञान उदार ॥ जि० ॥ ३ ॥ क्षायक समकित मुजने आपो, एहीज परम आधार ॥ जि० ॥ दीनदयालु दरिशण दीजे, पाय पडु सो वार ॥ जि० ॥ ४ ॥ अवसर पामी अरज सुणीने, विनतडी अवधार ॥ जि० ॥ नीतिविजयना वाल सिद्धिनी. आवागमण निवार ॥ जि० ॥ ५ ॥

॥ अथ स्तुति काव्य ॥

॥ अष्टापदे श्री आदि जिनवर, वीर पावापुरी वरु।

वासुपूज्य चंपा नयर सिद्धा, नेम रेवा गिरिवरु ॥ १॥
समेतशिखरे वीश जिनवर, मोक्ष पहोता मुनिवरु ॥
चोवीश जिनवर नित्य वंदुं, सयल संघ सुहंकरु ॥ ४॥

॥ श्री पंच तीर्थ स्तुति ॥

आबु अष्टापद गिरनार, समेतशिखर शेत्रुंजो सार ॥ए
पंचे तीरथ उत्तम ठाम, सिद्धि गया तेने करुं प्रणाम ॥ १ ॥

॥ चैत्यवंदन ॥

॥ आज देव अरिहंत नमुं, समरुं तोरुं नाम ॥ज्यां
ज्यां प्रतिमा जिन तणी, त्यां त्यां करुं प्रणाम ॥ १ ॥
शेत्रुंजे श्री आदि देव नेम नमुं गिरनार ॥ तारंगे श्री
अजितनाथ, आबु ऋषभ जुहार ॥ २ ॥ अष्टापद गिरि
उपरे, जिन चोवीशे जोय ॥ मणिमय मूरति मानशुं,
भरते भरावी सोय ॥ ३ ॥ समेतशिखर तीरथ वडुं, ज्यां
वीशे जिनपाय ॥ वैभार गिरि उपरे, श्रीवीर जिनेश्वर
राय । ४ ॥ मांडवगढनो राजीयो, नामे देव सुपास ॥
रिखव कहे जिन समरतां, पहोंचे मननी आश ॥ ५ ॥

॥ श्री आदिनाथ स्तवन ॥

॥ महाविदेह क्षेत्र सोहामणुं—ए देशी ॥

॥ जगजीवन जग वाल हो, मरुदेवीनो नंद लाल

रे ॥ मुख दीठे सुख उपजे, दर्शन अतिहि आनद लाल रे ॥ जग० ॥ १ ॥ आंखडी अंबुज पांखडी, अष्ठमी शशी शम जाल लाल रे ॥ वदन ते शारद चदलो, वाणी अतिहि रसाल लाल रे ॥ जग० ॥ २ ॥ लक्षण अंगे विराजतां, अडहिय सहस उदार लाल रे ॥ रेखा कर चरणादिके, अभ्यतर नहीं पार लाल रे ॥ जग० ॥ ३ ॥ इंद्र चंद्र रवि गिरि तणा, गुण लइ घडीयुं अंग लाल रे ॥ भाग्य किहां थकी आवीयुं, अचरिज एह उत्तग लाल रे ॥ जग० ॥ ४ ॥ गुण सघला अंगे भरया, दूर करया सवि दोष लाल रे ॥ वाचक जश-विजये थुणयो, देजो सुखनो पोष लाल रे ॥ जग० ॥ ५ ॥

॥ श्री पार्श्वनाथनुं स्तवन ॥

॥ रातां जेवां फुलडां ने, सामल जेवो रग ॥ आज तारी आंगीनो, कांइ रुडो बन्यो रग ॥ प्यारा पासजी हो लाल, दीनदयाल मुने नयणे नीहाल ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ जोगीवाडे जागतो ने, मातो धींगड मल्ल ॥ शामलो सोहामणो ने, जीत्या आठे मल्ल ॥ प्यारा०

॥ २ ॥ तुं छे मोरो साहिबो ने, हुं तुं तारो दास ॥ आशा पूरो दासनी कांइ, सांभली अरदास ॥ प्यारा० ॥ ३ ॥ देव सघला दीठा तेमां, एक तुं अवल्ल ॥ लाखेणुं छे लटकुं ताहरुं, देखी रीजे दिल्ल ॥ प्यारा० ॥ ४ ॥ कोइ नमे पीरने ने, कोइ नमे राम ॥ उदयरत्न कहेरे प्रभु, मारे तुमशुं काम ॥ प्यारा० ॥ ५ ॥

॥ श्री महावीर जिन स्तवन ॥

॥ नारे प्रभु नहीं मानुं, नहीं मानुं रे अवरनी आण ॥ नारे० ॥ म्हारे तारुं वचन प्रमाण ॥ नारे प्रभु० ॥ ए आंकणी ॥ हरि हरादिक देव अनेरा, में दीठा जगमांय रे ॥ भामिनी भरम भृकुटीए भूल्या, ते मुजने न सुहाय ॥ नारे० ॥ १ ॥ केइक रागी ने केइक द्वेषी, केइक लोभी देव रे ॥ केइक मद मायाथी भरीया, केम करीये तस सेव ॥ नारे० ॥ २ ॥ मुद्रा पण तेमां नवि दीसे प्रभु, तुज मांहेली तिलमात रे ॥ ते देखी दिलकुं नवि रीझे, शी करवी तेहनी वात ॥ नारे० ॥ ३ ॥ तुं गति तुं मति तुं मुज प्रीतम, जगजीवन आधार रे ॥ रात दिवस स्वपनांतर तुंही, तुं माहारे निरधार ॥ नारे० ॥ ४ ॥ अवगुण सहु उवेखीने प्रभु, सेवक करीने

नीहाल रे ॥ जगबंधव ए विनति मोरी, म्हारां सवि दुःख दूरे टाल ॥ नारे० ॥ ५ ॥ चोवीशमा प्रभु त्रिभुवनस्वामी, सिद्धारथना नंद रे ॥ त्रिशलाजीना न्हान कीया प्रभु, तुम दीठे अति आनंद ॥ नारे० ॥ ६ ॥ सुमतिविजय कविरायनो रे, रामविजय कर जोरु रे ॥ उपगारी अरिहंतजी म्हारा, भवभवना बंध छोरु ॥ नारे० ॥ ७ ॥

॥ श्री सिद्धाचल स्तुति ॥

॥ पूर्णानंदमयं महोदयमयं कैवल्यचिद्दृग्मयं, रुपातीतमयं स्वरूपरमणं स्वाभाविकीश्रीमयं ॥ ज्ञानोद्योतमयं कृपारसमयं स्याद्वादविद्यालयं, श्रीसिद्धाचलतीर्थराजमनिशं वंदेऽहमादीश्वरं ॥ १ ॥ श्रीमद्युगादीश्वरमात्मरूप, योगींद्रगम्य विमलादिसंस्थं ॥ सद्ज्ञान सुदृष्टिसुदृष्टलोकं, श्रीनाभिसूनु प्रणमामि नित्य ॥ २ ॥ राजादिनाधस्तनभूमिभागे, युगादिदेवांघ्रिसरोजपीठं ॥ देवेंद्रवंद्य नरराजपूज्य, सिद्धाचलाग्रस्थितमर्चयामि ॥ ३ ॥ आदिप्रभोर्दक्षिणदिग्विभागे, सहस्रकूटे जिनराजमूर्ती ॥ सौम्याकृती· सिद्धिततीनिभाश्च, शत्रुंजयस्थापरिपूजयामि ॥ ४ ॥ आदिप्रभोर्वक्त्रसरोरुहाच, विनि

गतां श्रीत्रिपदीमवाप्य ॥ यो द्वादशांगीं विदधे गणेशः,
स पुंडरीको जयताद्विमाद्रौ ॥ ५ ॥

॥ श्री सिद्धाचल खामणां ॥

॥ सिद्धाचल समरुं सदा, सोरठ देश मोझार ॥
मनुष्यजन्म पामी करी, वंदुं वार हजार ॥ १ ॥

॥ श्री सिद्धाचलनुं चैत्यवंदन ॥

॥ विमल केवलज्ञान कमला, कलित त्रिभुवन हित-
करं ॥ सुरराज संस्तुत चरणपंकज, नमो आदि जिने-
श्वरं ॥ १ ॥ विमल गिरवर श्रृंगमंडण, प्रवर गुणगण
भूधरं ॥ सुर असुर किन्नर कोडि सेवित ॥ नमो० ॥२॥
करती नाटक किन्नरीगण, गाय जिनगुण मनहरं
निर्जरावली नमे अहोनिश ॥ नमो० ॥ ३ ॥ पुंडरीक
गणपति सिद्धि साधी, कोडी पण मुनि मनहरं ॥ श्री
विमल गिरिवर श्रृंग सिद्धा ॥ नमो० ॥ ४ ॥ निज
साध्य साधन सुर मुनिवर, कोडि (अनंत) ए गिरि-
वरं ॥ मुक्ति रमणी वर्या रंगे ॥ नमो० ॥ ५ ॥ पाताल
नर सुरलोक मांहि, विमल गिरिवर तो पर ॥ नहीं
अधिक तीरथ तीर्थपति कहे ॥ नमो० ॥ ६ ॥ इम
विमल गिरिवर शिखर मंडण, दुःख विहंडण ध्याइए॥

निज शुद्ध सत्ता साधनार्थ, परम ज्योति निपाइए ॥ ७ ॥ जीत मोह कोह विछोह निद्रा, परम पद स्थित जयकरं ॥ गिरिराज सेवा करण तत्पर, पद्म-विजय सुहितकरं ॥ ८ ॥

॥ श्री सिद्धाचल स्तवन ॥

॥ विमलाचलवासी मारा वाला, सेवकने विसारो नहीं ॥ वि० ॥ जल विना मीन दुःख अति पामे, जिणंद आप जाणो सही ॥ जा० ॥ दुःख हरनारा नविजन प्यारा, शरणे तुं महाराज ॥ चार चोर मुज केडे पडीया, पुण्यरतनने काज ॥ सेवक० ॥ विमला० ॥ १ ॥ पापी चंडालो पकडी मुज, माल हरी लेनार ॥ जिनजी जो मुज वारे आवो, तो तु उगरनार ॥ सेवक० ॥ विमला० ॥ २ ॥ जन्म मरणनां दुःख वेठ्यां बहु, पण नव आव्यो तुम दरबार ॥ सेवक० ॥ विमला० ॥ ३ । अरजी उर धरी नेह नजर करी, सेवकनी करो सार । कृपा तणा ए सिंधु तुम विण, कोण उतारे पार । सेवक० ॥ विमला० ॥ ४ ॥ नवदुःखनजन नगचंद करो, कठण करमनो नाश ॥ पदपंकज रहे प्राण मधुकर, पूरो मननी आश ॥ सेवक० ॥ विमला० ॥ ५ ।

॥ श्री सिद्धाचल स्तवन ॥

॥ श्री रे सिद्धाचल भेटवा, मुज मन अधिक उमाहो ॥ ऋषभ जिणंद जुहारीने, लीजे भव तणो लाहो ॥ श्री० ॥ १ ॥ मणिमय मूरति श्री ऋषभनी, ते निपाइ अभिराम ॥ भुवन कराव्यां कनकनां, राख्युं भरते नाम ॥ श्री० ॥ २ ॥ पूर्व नवाणुं समोसरया, स्वामी ऋषभ जिणंद ॥ राम पांडव मुक्ते गया, पाम्या परमानंद ॥ श्री० ॥ ३ ॥ नेम विना त्रेवीश जिन, आव्या सिद्धक्षेत्र जाणी ॥ शेत्रुंजा समुं तीरथ नहीं, बोल्या सीमंधर वाणी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ पूरव पुण्य पसायथी, विमलाचल पायो ॥ कांतिविजय हर्षे करी, विमलाचल गुण गायो ॥ श्री० ॥ ५ ॥

॥ श्री सिद्धाचल स्तवन ॥

॥ मारुं मन मोह्युं रे श्री सिद्धाचले रे, देखी हरषित होय ॥ विधिशुं कीजे रे यात्रा एहनी रे, भव-भवनां दुःख जाय ॥ मारुं० ॥ १ ॥ पांचमे आरे रे पावन कारणे रे, ए समुं तीरथ कोय ॥ मोहोटो महिमा रे महीयल एहनो रे, आ भरते इहां जोय ॥ मारुं० ॥ २ ॥ इणे गिरि आव्या रे जिनवर गणधरा रे, सिद्धा साधु

अनंत ॥ कठिण कर्म पण एणे गिरि फरसतां रे होय कर्म निशांत ॥ मारुं० ॥ ३ ॥ जैनधर्मने साच जाणीये रे, मानव तीर्थ ए थंज ॥ सुर नर किन्नर नृप विद्याधरा रे, करता नाटारज ॥ मारुं० ॥ ४ ॥ धन्य धन्य दहाडो रे धन्य धन्य ए घडी रे, धरी हृदय मोझार । ज्ञानविमल प्रजु एहना गुण घणा रे, कहेतां नावे पार ॥ मारु० ॥ ५ ॥

॥ श्री सिद्धाचल स्तवन ॥

॥ सिद्धाचल गिरि जेटथा रे, धन्य जाग्य हमार ॥ ए आंकणी ॥ ए गिरिवरनो महिमा मोटो, कहेता न आवे पार ॥ रायण रिखज समोसर्या स्वामी, पूरव नवाणु वार रे ॥ ध० ॥ १ ॥ मूल नायक श्री आदि जिनेश्वर, चोमुख प्रतिमा चार ॥ अष्टद्रव्यथी पूजो जावे, समकित मूल आधार रे ॥ ध० ॥ २ ॥ जाव जक्तिशु प्रजुगुण गातां, अपना जनम सुधारो ॥ जात्रा करी जविजन शुज जावे, नरक तिर्यच गति वारो रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ दूर देशांतरथी हु आव्यो, श्रवणे सुणी गुण तोरा ॥ पतित उद्धारन बिरुद तुमारो ए तीरथ जग सारा रे ॥ ध० ॥ ४ ॥ अढारस व्याशी

मास अषाडे, वद आठम सोमवारा ॥ प्रभुके चरणप-
सायथी संघमां, खेमारतन प्रभु प्यारो रे ॥ ध० ॥ ५ ॥

॥ श्री शत्रुंजय गिरिराज विनति ॥

॥ सुण जिनवर शेत्रुंजा धणीजी, दास तणी अर-
दास ॥ तुज आगल बालक परेजी, हुं तो करुं वेखास
रे ॥ जिनजी मुज पापीने तार ॥ तुं तो करुणारस
भर्योजी रे, तुं सहुनो हितकार रे ॥ जिनजी ॥ मुज०
॥ १ ॥ हुं अवगुणनो ओरडोजी, गुण तो नहीं लवलेश ॥
परगुण पेखी नवि शकुंजी, केम संसार तरीश रे ॥
जिनजी ॥ मुज० ॥ २ ॥ जीव तणा वध में कर्याजी,
बोल्यो मृषावाद ॥ कपट करी परधन हर्यांजी, सेव्या
विषय सवाद रे ॥ जिनजी ॥ मुज० ॥ ३ ॥ हुं लंपट हुं
लालचुजी, कर्म कीधां केइ कोड ॥ त्रण भुवनमां को
नहींजी, जे आवे मुज जोड रे ॥ जिनजी ॥ मुज० ॥ ४ ॥
छिद्र परायां अहोनिशेजी, जोतो रहुं जगनाथ ॥ कुगति
तणी करणी करीजी, जोड्यो तेहशुं साथ रे ॥ जिनजी ॥
मुज० ॥ ५ ॥ कुमति कुटिल कदाग्रहीजी, वांकी गति
मति मुज ॥ वांकी करणी माहरीजी, शी संभलावुं तुज
रे ॥ जिनजी ॥ मुज० ॥ ६ ॥ पुन्य विना मुज प्राणीओजी,

जाणे मेलुं रे आथ ॥ ऊंचां तरुवर मोरीयांजी, त्यांहि पसारे हाथ रे ॥ जिनजी मुज० ॥ ७ ॥ विण खाधा विण जोगव्याजी, फोगट कर्म बंधाय ॥ आर्त्तध्यान मिटे नहींजी, कीजे कवण उपाय रे ॥ जिनजी मुज० ॥ ८ ॥ काजलथी पण शामलांजी, मारा मन परिणाम ॥ स्वप्ना मांहि ताहरुंजी, संभारुं नहीं नाम रे ॥ जिनजी मुज० ॥ ए ॥ मुग्ध लोक ठगवा भणीजी, करु अनेक प्रपच ॥ कूम कपट हुं केलवीजी, पाप तणो करुं संच रे ॥ जिनजी मुज० ॥ १० ॥ मन चंचल न रहे किमेजी, राचे रमणी रे रूप ॥ काम विटंबणा शी कहुंजी पमीश हुं डुर्गति कूप रे ॥ जिनजी मुज० ॥ ११ ॥ किस्या कहुं गुण माहराजी, किस्या कहु अपवाद ॥ जेम जेम संभारुं हैयेजी, तेम वाधे विखवाद रे ॥ जिनजी मुज० ॥ १२ ॥ गिरुआ ते नवि लेखवेजी, निगुण सेवकनी वात ॥ नीच तणे पण मंदिरेजी, चंड न टाले ज्योत रे ॥ जिनजी मुज० ॥ १३ ॥ निगुणो तोपण ताहरोजी, नाम धराव्यु दास ॥ कृपा करी संभारजोजी, पूरजो मुज मन आश रे ॥ जिनजी मुज० ॥ १४ ॥ पापी जाणी मुज भणीजी, मत मूको विसार ॥ विख हलाहल आदर्यो जी, ईश्वर

न तजे तास रे ॥ जिनजी ॥ मुज० ॥ १५ ॥ उत्तम गुण-कारी हुएजी, स्वार्थ विना सुजाण ॥ करसण सिंचे सर भरेजी, मेह न मागे दाण रे ॥ जिनजी ॥ मुज० ॥ १६ ॥ तुं उपकारी गुणनिलोजी, तुं सेवक प्रतिपाल ॥ तुं समरथ सुख पुरवाजी, कर माहरी संभाल रे ॥ जिनजी ॥ मुज० ॥ १७ ॥ तुजने शुं कहीये घणुं जी, तुं सौ वाते जाण ॥ मुजने थाजो साहिबाजी, भव भव ताहरी आण रे ॥ जिनजी ॥ मुज० ॥ १८ ॥ नाभिराया कुलचंदलोजी, मारुदेवीना नंद ॥ कहे जिनहरख निवाजजोजी, देजो परमानंद रे ॥ जिनजी मुज पापीने तार ॥ १९ ॥

॥ श्री चैत्यवंदन ॥

॥ अरिहंत नमो भगवंत नमो, परमेश्वर श्री जिनराज नमो ॥ प्रथम जिनेश्वर प्रेमे पेखत, सिद्धां सघलां काज नमो ॥ अरि० ॥ १ ॥ प्रभु पारंगत परम महोदय, अविनाशी अकलंक नमो ॥ अजरामर अद्भुत अतिशयनिधि, प्रवचन जलधिमयंक नमो ॥ अरि० ॥ २ ॥ तिहुअण भवियण जण मण वंछिय, पूरण देव रसाल नमो ॥ लळी लळी पाय नमुं हुं भावे, कर जोडीने त्रिकाल नमो ॥ अरि० ॥ ३ ॥ सिद्ध बुद्ध तुं जग जन

सज्ञान, नयनानंदन देव नमो ॥ सकल सुरासुर नर व नायक सारे अहोनिश सेव नमो ॥ अरि० ॥ ४ ॥ तीर्थंकर सुखकर साहेब, तुं निष्कारण बंधु नमो। शरणागत भविने हितवत्सल, तुंही कृपारससिधु नमो। अरि० ॥ ५ ॥ केवलज्ञानादर्शे दर्शित, लोकालोक स्वभाव नमो ॥ नाशित सकल कलंक कलुषगण, दुरित उपद्रव भाव नमो ॥ अरि० ॥ ६ ॥ जगचिंतामणि जगगुरु जगहितकारक, जगजननाथ नमो ॥ घोर अपार भवोदधितारण, तुं शिवपुरनो साथ नमो ॥ अरि० ॥ ७ ॥ अशरण शरण नीराग निरंजन, निरुपाधिक जगदीश नमो ॥ बोधि दीयो अनुपम दानेश्वर, ज्ञानविमल सूरीश नमो ॥ अरि० ॥ ८ ॥

॥ श्री ऋषभ जिन स्तवन ॥

॥ कृपा करो भगवान्, अम पर कृपा करो भगवान्—ए राग ॥

॥ आज आनंद अपार, मुज मन आज आनंद अपार ॥ ए टेक ॥ मरुदेवीनंदन, कर्मनिकंदन निरख्या नाभि कुमार ॥ मुज० ॥ १ ॥ अजर अमर अकलंक जिनेश्वर, रूपस्वरूप अपार ॥ मुज० ॥ २ ॥ अशरण शरण करण जगनायक, दायक शिवसुख सार ॥

मुज० ॥ ३ ॥ तुम सेवा शुभ भावे करतां, पामुं भवनो पार ॥ मुज० ॥ ४ ॥ कहे जिनदास प्रभु दरिशनथी, सफल थयो अवतार ॥ मुज मन आज० ॥ ५ ॥

॥ श्री अजितनाथ स्तवन ॥

॥ राग केरवो ॥

॥ अरज अजित जिनराज रे, मोरी मानो महाराजा ॥ मानो महाराजा, मोरी मानो महाराजा ॥ अरज० ॥ जितशत्रु राणी विजयानंदन, शोभत सुंदर साज रे ॥ मोरी मानो महाराजा ॥ अरज० ॥ १ ॥ हुं हुं पापी प्रभुजी अघापि, चांहे ग्रह्यानी लाज रे ॥ मोरी मानो महाराजा ॥ अरज० ॥ २ ॥ भवसागरथी पार उतारी, दीजीए शिव शिरताज रे ॥ मोरी० ॥ अरज० ॥ ३ ॥ निज सेवक पर कृपा करीजे, अरिहंत अरजी आज रे ॥ मोरी० ॥ अरज० ॥ ४ ॥ कहे जिनदास जिनवर प्यारा, पूर्ण करो मन आश रे ॥ मोरी० ॥ ॥ अरज० ॥ ५ ॥

॥ श्री संभवनाथनु स्तवन ॥

॥ राग–रहो रहो रे जादवराय दोय घडीयां० राग–खमाच ॥

॥ प्रभु तोरी सुरत परवारी वारीआं, भला वारी

वारीआं जाउं बलिहारीआं ॥ प्रभु० ॥ ए टेक ॥ चंद्र ज्योत तेरुं मुखरुं विराजे, दंत शोभत दाडम कलीयां ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ नयन सुंदर नाथ तुमारे. अधर मधुर मेरो दिल हरीयां ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ मोहनी मूरत सोहीनी सूरत, निरखत हरखत मन रलीयां ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ श्री संभव जिनराज सलुणा, देखत दुरगति दूर टलीआं ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ कहे जिनदास जिनदरिश-नथी, मनके मनोरथ सब फलीआ ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥

॥ श्री अभिनंदन जिन स्तवन ॥

॥ तुज कुमला जीअरवा ओ पिता मोरा—ए राग ॥

• ॥ सुनो अरजी आ मारी ऊं प्रभु मोरा, सुनो अरजी आ मारी ॥ अभिनंदन जिनवर सुखकारी, सुनो अरजी आ मारी ॥ होजी सुनो अरजी आ मारी ॥ ए टेक । मंद मति हुं फंदमां फुल्यो, भूल्यो सेवा तुमारी । होजी भूल्यो० ॥ सुनो० ॥ अभिनंदन० ॥ १ ॥ भवभ्रं भटकी शरन तमारे, हवे आव्यो हु हारी ॥ होजी हवे० ॥ सुनो० ॥ अभिनंदन० ॥ २ ॥ निज सेवक पर कृपा करीजे, रीझ दीजे सुधारी ॥ होजी रीझ० । सुनो० ॥ अभिनंदन० ॥ ३ ॥ तुम विन ओर न जाचुं

जिणंदा, साचुं मानो हुं वारी ॥ होजी साचुं० ॥ सुनो० ॥ अभिनंदन० ॥ ४ ॥ कहे जिनदास अब मन मेरे, लागी तो संग तारी ॥ होजी लागी० ॥ सुनो० ॥ अभिनंदन० ॥ ५ ॥

॥ श्री जिनराज विनति ॥

॥ परम देवनो देव तुं खरो, धर्म ताहरो में नथी कर्यो ॥ भरसमां भम्यो तुं नवि गम्यो, करमपाशमां हुं अति दम्यो ॥ १ ॥ गरीब प्राणीना प्राण में हण्या, त्रस थावरो जीव ना गण्या ॥ थरर धूजतां मोतथी डरी, अरर एहनी घात में करी ॥ २ ॥ नृप सभा जइ जूठ बोलीयो, धर्मी जीवनो मर्म खोलीयो ॥ सद्गुणी शिरे आल आपीआं, अरर पापना पंथ थापीआ ॥ ३ ॥ अदत्तदानथी हुं नथी डरयो, परधनो हरी केर में करयो ॥ तस्करो तणा तानमां चड्यो, अरर पापना पुंजमां पड्यो ॥ ४ ॥ रमणी रंगमां अंग उल्लस्युं, विषयसुखमां चित्तडुं वस्युं ॥ शीयल भंगनो दोष ना गण्यो, अरर हाय रे बावरो बन्यो ॥ ५ ॥ अथिर दाममां हुं रह्यो अडी, धरमवात तो चित्त ना चडी ॥ उडत मोहमां हुं थयो अति, अरर माहरी शी थशे गति ॥ ६ ॥ क्रूर

जावथी क्रोध मे करयो, सुजन इहवी रोषमां रह्यो ॥ सर्व लोकथी रूप ठोमीयो, तूल तृण थकी तुछ हुं थयो ॥ ७ ॥ चित्त मत्सरे मे बहु कर्यों, ममत जावथी हु अति जरयो ॥ मद ठके चड्यो मानमां अड्यो, विनय ना करयो गर्वमां पड्यो ॥ ८ ॥ दगलबाजीए हु बहु रम्यो, कपट कूडमां कोल निर्गम्यो ॥ मुख मीठुं लवी सृष्टि जोलवी, अरर केम रे जूलशे जवि ॥ ९ ॥ धन हीरा कणी मोती ने मणि, अवुर आयनो हुं थयो धणी ॥ अधिक आश तो अतरे घणी, अरर लोजने ना शक्यो हणी ॥ १० ॥ मगन मनथी साजनो परे, हित घणु धरी पोपीआ खरे ॥ तरकटी तणा फंदमां फस्यो, अरर रागथी ना लह्यो कस्यो ॥ ११ ॥ दिल दुःखी रह्यो द्वेष दरदमां, गुण नवि गण्यो मेरी मरदमां ॥ अरुण आंखमी रोषथी जरी, अरर सर्वनो हु थयो अरि ॥ १२ ॥ निज कुटुंब ने नात जातमां, वढी पड्या हु तो बात बातमां ॥ अबुज आतमा गर्तमां गड्यो, अरर क्लेशथी कूपमां पड्यो ॥ १३ ॥ अणहुतां दीयां आल अन्यने, अलीक उच्चरी मेळ्यु धनने ॥ सद्गुरु तणो संग ना करयो, अरर पापथी पिंड मे जरयो ॥ १४ ॥ परनी चोवटे

चुगली करी, नृप सभा जूठी साहेदी भरी ॥ पिशुन धूर्त हुं लांच लालची, पशुपणे रह्यो पापमां मची ॥ १५॥ पर तणी पुंठे दोष दाखवा, जश तणो घणो स्वाद चाखवा ॥ रहस वात तो में करी छती, भवअरण्यमां हुं भूल्यो अति ॥ १६ ॥ अधम काममां हर्ष में धर्यो, धरम ध्यानमां अमर्ष भर्यो ॥ दुर्गणे रच्यो मोहमां मच्यो, अरर कर्मना नृत्यमां नच्यो ॥ १७॥ छल विधि करी अर्थ संचीआ, जूठ लवी घणा लोक वंचीआ ॥ पतित रांकने छेतर्यां बहु, अरर पाप हुं केटलां कहुं ॥ १८॥ शरीर शुद्ध तो में नवि कर्यो, जन्म प्रसंगथी योनिमां फर्यो ॥ शुद्ध विचार तो चित्त ना चढ्यो, मिथ्या शल्य तो मुजने नड्यो ॥ १९॥ कर्म वेरीए वींटीयो मने, करगरी करुं अरज जिनने ॥ कर ग्रहो प्रभु रांक जाणीने, दिल दया धरो मेहेर आणीने ॥ २० ॥ तकसीरो घणी को शके गणी, बक्षीसो गुना जगतना धणी ॥ रीझ करी खरी त्रीभी त्रोलने, शरण राखजो खोसीदासने ॥ २१ ॥ नभ भुजा अरि चंद्रमा ग्रही, पटण प्राचीथी पश्चिमे सही ॥ चतुर्मासमां बिंदरे रही, ललित वंदनी जोड ए कही ॥ २२ ॥

॥ श्री सीमधर जिन स्तवन ॥

॥ सुणो चदाजी, सीमंधर परमातम पासे जाजो ॥ मुज विनतमी, प्रेम धरीने एणी परे तुमे संजला-वजो ॥ ए आंकणी ॥ जे त्रण जुवननो नायक ढे, जस चोसठ इंद्र पायक ढे, नाण दरिसण जेहने क्षायक ढे ॥ सुणो० ॥ १ ॥ जेनी कंचनवरणी काया ढे, जस धोरी लंढन पाया ढे, पुंमरीगिणि नगरीनो राया ढे ॥ सुणो० ॥ २ ॥ वार पर्षदा मांहि विराजे ढे, जस चोत्रीश अति-शय ढाजे ढे, गुण पांत्रीश वाणीए गाजे ढे ॥ सुणो० ॥ ३ ॥ जविजनने ते पमिबोहे ढे, तुम अधिक शीतल गुण सोहे ढे, रूप देखी जविजन मोहे ढे ॥ सुणो० ॥ ४ ॥ तुम सेवा करवा रसीयो बु, पण जरतमां दूरे वसीयो बु, महा मोहराय कर फसीयो बुं ॥ सुणो० ॥ ॥ ५ ॥ पण साहिब चित्तमां धरीयो ढे, तुम आण खड्ग कर ग्रहीउं ढे, पण कांइक मुजथी मरीयो ढे ॥ सुणो० ॥ ६ ॥ जिन उत्तम पुंठ हवे पूरो, कहे पद्मवि-जय थाउं शूरो, तो वाधे मुज मन अति नूरो ॥ सुणो० ॥ ७ ॥

॥ श्री सीमंधर जिन स्तवन ॥

॥ धन्य धन्य महाविदेहजी, पुंकरीगिणि गाम ॥
धन्य तिहांनां मानवीजी, नित्य उठी करे रे प्रणाम ॥
सीमंधर स्वामी कहींये रे हुं, महाविदेह आवीश ॥
जयवंता जिनवर कहींये रे हुं तुमने वांदीश ॥ १ ॥
चांदलीया संदेशकोजी, कहेजो सीमंधर स्वाम ॥ भर-
तक्षेत्रनां मानवीजी, नित्य उठी करे रे प्रणाम ॥ सी०
॥ २ ॥ समवसरण देवे रच्युं तिहां, चोसठ इंद्र नरेश
॥ सोना तणे सिंहासन बेठा, चामर छत्र धरेश ॥ सी०
॥ ३ ॥ इंद्राणी काढे गहुंलीजी, मोतीना चोक पूरेश ॥
लली लली लीये, लूंछणांजी, जिनवर दीये उपदेश ॥
सी० ॥ ४ ॥ एहवे समे में सांभल्युंजी, हवे करवां
पच्चरकाण ॥ पोथी ठवणी तिहांकणेजी, अमृत वाणी
वखांण ॥ सी० ॥ ५ ॥ रायने वहाला घोकलाजी, वेपा-
रीने वहाला छे दाम ॥ अमने वहाला सीमंधर स्वामी,
जिम सीताने श्रीराम ॥ सी० ॥ ६ ॥ नहीं मागुं प्रभु
राज ऋद्धिजी, नहीं मागुं गरथ भंडार ॥ हुं मागुं प्रभु
एटलुंजी, तुम पासे अवतार ॥ सी० ॥ ७ ॥ देव न
दीधी पांखकीजी, केम करी आवुं रे हजूर ॥ मुजरो

माहरो मानजोजी, प्रह उगमते सूर ॥ सी० ॥ ८ ॥ समयसुंदरनी विनतिजी, मानजो वारंवार ॥ बे कर जोमी विनवुंजी, विनतमी अवधार ॥ सी० ॥ ए ॥

॥ श्री पार्श्वनाथ स्तुति ॥

॥ सकलकुशलवल्ली पुष्करावर्त्तमेघो, ऽुरिततिमिरनानुः कल्पवृक्षोपमान ॥ नवजलनिधिपोतः सर्वसंपत्तिहेतुः, स नरतु नवतां नो श्रेयसे पार्श्वनाथ. ॥ १ ॥ दशावतारो नुवनैकमल्लो, गोपांगनासेवितपादपद्मः ॥ श्रीपार्श्वनाथः पुरुषोत्तमोऽयं, ददातुवः सर्वसमीहितानि ॥ २ ॥ श्रीपार्श्वनाथो नवपापताप,–प्रशांतधाराधरचारुरूपः ॥ विघ्नौघहंता प्रणतोरगेन्द्र, समस्तकल्यानकरो जिनेंद्रः ॥ ३ ॥

॥ श्री शाति जिन स्तवन ॥

॥ शांतिजीनु मुखमु जोवा नणीजी, मुज मनमुं रे लोनाय ॥ चित्तमु जाणे उमी मिलुजी, पण प्रनु केम रे मिलाय ॥ शांति० ॥ १ ॥ दैव न दीधी मुजने पांखमीजी, आवु हुं केम रे हजूर ॥ पण प्रनु जाणजो वदनाजी, आतमराम सनूर ॥ शांति० ॥ २ ॥ गजपुरी नगरीनो राजीउंजी, अचिरादेवीनंदन एह ॥ जिम रे

पारेवमो राखीउंजी, तिम प्रज्जु राखजो नेह ॥ शांति० ॥ ३ ॥ मस्तके मुगट सोहामणोजी, काने कुंमल श्रीकार ॥ बांहे बाजुबंध वहेरखाजी, कंठे नवसरो हार ॥ शांति० ॥ ४ ॥ आज नले रे दिन उगीयोजी, दूधडे वूठमा मेह ॥ वाचक सहजसुंदर तणोजी, नित्य लान्न प्रज्जु गुणगेह ॥ शांति० ॥ ५ ॥

॥ श्री पार्श्वनाथ स्तवन ॥

॥ पास शंखेश्वरा सार कर सेवकां, देवका एवमी वार लागे ॥ कोमी कर जोमी दरबार आगे खमा, ठाकुरा चाकुरा मान मागे ॥ १ ॥ प्रगट था मासजी मेली पमदो परो, मोर असुराणने आप ठोमो ॥ मुज महीराण मंजुसमां पेसीने, खलकना नाथजी बंध खोलो ॥ २ ॥ जगतमां देव जगदीश तुं जागतो, एम शुं आज जिनराज उंघे ॥ मीटा दानेश्वरी तेहने दाखीए, दान दे जेह जग काल मोंघे ॥ ३ ॥ नीम पमी जादवा जोर लागी जरा, ततक्षण त्रीकमे तुज संन्नार्यो ॥ प्रगट पातालथी पलकमां तें प्रज्जु, नक्त जन तेहनो न्नय निवारयो ॥ ४ ॥ आदि अनादि अरिहंत तुं एक छे, दीनदयाल छे कोण डुजो ॥

उदयरत्न कहे प्रगट प्रभु पासजी, पामी भयभंजनो
एह पूजो ॥ ५ ॥

॥ श्री वीर प्रभुनु चैत्यवंदन ॥

॥ सिद्धार्थसुत वंदीए, त्रिशलानो जायो ॥ क्षत्र
कुंडमां अवतरयो, सुर नरपति गायो ॥ १ ॥ मृग
पति लंछन पाउले, सात हाथनी काया ॥ बहोंते
वरसनुं आउखुं, वीर जिनेश्वर राया ॥ २ ॥ क्षमा
विजय जिनराजना ए, उत्तम गुण अवदात ॥ सात
बोलथी वर्णव्या, पद्मविजय विख्यात ॥ ३ ॥

॥ श्रीप्रभुना वर्णनु चैत्यवंदन ॥

॥ पद्मप्रभ ने वासुपूज्य, दोय राता कहीए ।
चंद्रप्रभ ने सुविधिनाथ, दोय उज्ज्वल लहीए ।
१ ॥ मल्लिनाथ ने पार्श्वनाथ, दो नीला निरखा ॥
मुनिसुव्रत ने नेमनाथ, दो अंजन सरिखा ॥ २ ॥
सोले जिन कंचन समा ए, एवा जिन चोवीश ॥ धीर·
विमल पंडित तणो, ज्ञानविमल कहे शिश ॥ ३ ॥

॥ श्री प्रभुना भवनु चैत्यवंदन ॥

॥ प्रथम तीर्थंकर तणा हुवा, भव तेर कहीजे ॥
शांति तणा भव बारा सार, नव भव नेम लहीजे ॥ १ ॥

दश भव पास जिणंदने, सत्यावीश श्री वीर ॥ शेष तीर्थंकर त्रिहुं भवे, पाम्या भवजल तीर ॥ २ ॥ ज्यांथी समकित फरसीयुं, त्यांथी गणीए तेह ॥ धीरविमल पंफित तणो, ज्ञानविमल गुणगेह ॥ ३ ॥

॥ श्री अरिहंतनां लंछननुं चैत्यवंदन ॥

॥ वृषभ लंछन रीखभदेव, अजित लंछन हाथी ॥ संभव लंछन घोफलो, शिवपुरनो साथी ॥ १ ॥ अभि-नंदन लंछन कपि, क्रौंच लंछन सुमति ॥ पद्म लंछन पद्म प्रभु, विश्वदेवा सुमति ॥ २ ॥ सुपार्श्व लंछन साथीउं, चंद्र प्रभु लंछन चंद्र ॥ मगर लंछन सुविधि प्रभु, श्रीवह लंछन शीतल जिणंद ॥ ३ ॥ लंछन खड्गी श्रेयांसने, वासुपूज्यने महिष ॥ वराह लंछन पाये विमलदेव, भविया ते नामो शीष ॥ ४ ॥ सिचाणो जिन अनंतने ए, वज्र लंछन श्री धर्म ॥ शांति लंछन मृगलो, राखे धरमनो मर्म ॥ ५ ॥ कुंथु लंछन बोकमो, अर जिन नंदावर्त ॥ घट लंछन मल्लि प्रभु, काचबो मुनिसुव्रत ॥ ६ ॥ नमि जिनने नीलोकमल, पामीए पंकज मांहि ॥ शंख लंछन प्रभु नेमजी, दीसे ऊंचे आंहि ॥ ७ ॥ पारसनाथजीने चरण सर्प, नीलवर्ण शोभित ॥ सिंह लंछन कंचन तनु, वर्धमान विख्यात

॥ ८ ॥ इणी परे लंछन चितवी ए, उलखीए जिनराय ॥ ज्ञानविमल प्रभु सेवतां, लक्षीरत्न सूरिराय ॥ ए ॥

॥ श्री रुषभदेवनु स्तवन ॥

॥ प्रथम जिनेश्वर प्रणमीए, जास सुगंधी रे काय ॥ कल्पवृक्ष परे तास इन्द्राणी नयन जे, भृग परे लपटाय ॥ १ ॥ रोग उरग तुज नवि नडे, अमृत जेह आस्वाद ॥ तेहथी प्रतिहत तेह मानु कोइ नवि करे, जगमां तुमशु रे वाद ॥ २ ॥ वगर धोइ तुज निरमली, काया कंचनवान ॥ नही प्रस्वेद लगार तारे तु तेहने, जे धरे ताहरं ध्यान ॥ ३ ॥ राग गयो तुज मन थकी, तेहमां चित्र न कोय ॥ रुधिर आमिषथी राग गयो तुज जन्मथी, दुध सहोदर होय ॥ ४ ॥ श्वासोश्वास कमल समो, तुज लोकोत्तर वाद ॥ देखे न आहार निहार चर्मचक्षु धणी, एवा तुज अवदात ॥ ५ ॥ चार अतिशय मूलथी, उगणीश देवना कीध ॥ कर्म खप्याथी अग्यार चोत्रीश इम अतिशया, समवायांगे प्रसिद्ध ॥ ६ ॥ जिन उत्तम गुण गावतां, गुण आवे निज अंग ॥ पद्मविजय कहे एम समय प्रभु पालजो, जेम थाउं अक्षय अभंग ॥ ७ ॥

॥ श्री अजित जिन स्तवन ॥

॥ प्रीतलडी बंधाणी रे अजित जिणंदशुं, कांइ प्रभु पाखे क्षण एके मन न सुहाय जो ॥ ध्याननी ताली रे लागी नेहशुं, जलद घटार जिम शिव सुख वाहन दाय जो ॥ प्री० ॥ १ ॥ नेहघेलुं मन माहरुं रे प्रभु अलजे रहे, तन धन मन ए कारणथी प्रभु मुज जो ॥ मारे तो आधार रे साहिब रावलो, अंतरगतनुं प्रभु आगल कहुं गुज्ज जो ॥ प्री० ॥ २ ॥ साहेब ते साचो रे जगमां जाणीए, सेवकनां जे सहेजे सुधारे काज जो ॥ एहवे रे आचरणे किम करीने रहुं, बिरुद तुमारो तारण तरण जिहाज जो ॥ प्री० ॥ ३ ॥ तारकता तुज मांहे रे श्रवणे सांभली, ते भणी हुं आव्यो छुं दीनदयाल जो ॥ तुज करुणानी लेहरे रे मुज कारज सरे, शुं घणुं कहीए जाण आगल कृपाल जो ॥ प्री० ॥ ४ ॥ करुणादिक कीधी रे सेवक उपरे, भव भय भावठ भांगी भक्ति प्रसन्न जो ॥ मनवांछित फलियां रे जिनआलंबने, कर जोडीने मोहन कहे मनरंग जो ॥ प्री० ॥ ५ ॥



॥ श्री संभवनाथजीनुं स्तवन ॥

॥ साहिब सांजलो रे, संजव अरज हमारी ॥ जवोजव हुं जम्यो रे, न लही सेवा तुमारी ॥ नरक निगोदमां रे, तिहां हुं बहु जव जमीयो ॥ तुम विना दुःख सह्यां रे, अहोनिश क्रोधे धमधमीयो ॥ साहेब० ॥ १ ॥ इंडियवश पड्यो रे, पाल्यां व्रत नवि सुंसे ॥ त्रस पण नवि गण्या रे, हणीया थावर हुंशे ॥ व्रत चित्त नवि धरयां रे, बीजु साचु न बोल्युं ॥ पापनी गोठमी रे, तिहां मे हडकलु खोल्युं ॥ साहेब० ॥ २ ॥ चोरी मे करी रे, चजविह अदत्त न टाल्यु ॥ श्री जिन आणशु रे, में नवि संयम पाल्युं ॥ मधुकर तणी परे रे, शुद्ध न आहार गवेख्यो ॥ रसना लालचे रे, निरस पिम उवेख्यो ॥ साहेब० ॥ ३ ॥ नरजव दोहिलो रे, पामी मोहवश पमीउं ॥ परस्त्री देखीने रे, मुज मन तिहां जइ अमीउं ॥ काम न को सरयां रे, पापे पिम मे जरीउं ॥ शुद्ध बुद्ध नवि रही रे, तेणे नवि आतम तरीउं ॥ साहेब० ॥ ४ ॥ लक्ष्मीनी लालचे रे, मे बहु दीनता दाखी ॥ तोपण नवि मली रे, तो नवि रही राखी ॥ जे जन अजिलखे रे, ते तो तेहथी नासे ॥

तृण सम जे गणे रे, तेहनी नित्य रहे पासे ॥ साहेब० ॥ ५ ॥ धन्य धन्य ते नरा रे, एहनो मोह विछोमी ॥ विषय निवारीने रे, जेहने धर्ममां जोमी ॥ अनदय ते में नख्यां रे, रात्रिनोजन कीधां ॥ व्रत छ नवि पालीयां रे, जेहवां मूलथी लीधां ॥ साहेब० ॥ ६ ॥ अनंत नव हुं नम्यो रे, नमतां साहिब मलीयो ॥ तुम विना कोण दीये रे, बोधरयण मुज वलीयो ॥ संनव आपजो रे, चरणकमल तुम्ह सेवा ॥ नय एम विनवे रे, सुणजो देवाधिदेवा ॥ साहिब० ॥ ७ ॥

॥ श्री अभिनंदन जिन स्तवन ॥

॥ अनिनंदन जिन दरिशण तरसीए, दरिशण फुर्लन देव ॥ मत मत नेदे रे जो जइ पूछीए, सहु थापे अहमेव ॥ अनिनंदन० ॥ १ ॥ सामान्ये करी दरिशण दोहलुं, निर्णय सकल विशेष ॥ मदमें घेरयो रे आंधो केम करे, रवि शशि रूप विलेख ॥ अनिनंदन० ॥ २ ॥ हेतु विवादे हो चित्त धरी जोइए, अति फुर्गम नय-वाद ॥ आगमवादे हो गुरुगम को नहीं, ए सबलो विषवाद ॥ अनिनंदन० ॥ ३ ॥ घाति फुंगर आमा अति घणा, तुज दरिशण जगनाथ ॥ धीठाइ करी मारग

संचरुं, सेशुं कोइ न साथ ॥ अभिनंदन० ॥ ४ ॥ दरिशण दरिशण रटतो जो फरु, तो रणरोफ समान । जेहने पिपासा हो अमृतपाननी, किम भांजे विषपान ॥ अभिनंदन० ॥ ५ ॥ तरस न आवे हो मरण जीवन तणो, सीजे जो दरिशण काज ॥ दरिशण दुर्लभ सुलभ कृपा थकी, आनदघन महाराज ॥ अभिनंदन० ॥ ६ ॥

॥ श्री सुमति जिन स्तवन ॥

॥ मोहना माती थो हमारो–ए देशी ॥

॥ अतुलीबल अरिहंत नमीजे, मन तनु वचन विकार वमीजे ॥ श्री जिन केरी आण वहीजे, तो मनवांछित सहेजे लीजे ॥ सेवीए भवि सुमति जिणंदा, टालीए भवफंदा ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ अशुभाश्रवनो संग न कीजे, समकित शुद्ध सुधारस पीजे ॥ अभय सुपात्र दान दोय दीजे, निज गुरुनी भली भक्ति वदीजे ॥ से० ॥ टाली० ॥ २ ॥ सुमति जिनेश्वर सुमति जो आपे, जिन दरशनथी दुर्गति कापे ॥ नाम जपो अष्टोत्तर शत जापे, मोहतिमिर हसे तप रवितापे ॥ से० ॥ टाली० ॥ ३ ॥ त्रिकरण शुद्ध नवनिध निरूपण, पहेरो शील सलील विभूषण ॥ सगयथी नित्य रहीए लुखा,

जबलगे नव अवगाहे पूखा ॥ से० ॥ टाली० ॥ ४ ॥ धर्मनुं काम ते जावशुं कीजे, गुरु मुख वचन विनय करी लीजे ॥ जवसमुद्र तरवा वांछीजे, जरु चेतन वेहु जिन्न लखीजे ॥ से० ॥ टाली० ॥ ५ ॥ पंचमगतिगामी प्रजु पाया, सवि कारज सिद्धां दिल जाया ॥ सात्नागयचंद्र गुरु सुपसाया, स्वरूपचंद्रे जिनना गुण गाया ॥ से० ॥ टा० ॥ ६ ॥

॥ श्री पद्मप्रभुनुं स्तवन ॥

॥ श्री पद्मप्रज जिनराजजी, तनु रक्त कमल सम वान हो ॥ ज्ञान अनंतशुं जाणता, दिल करुणागेह समान हो ॥ श्री पद्म० ॥ १ ॥ केवलदर्शन देखीने, कहे लोक अलोकनी वात हो ॥ समयांतर उपयोगथी, साकार अनाकार जात हो ॥ श्री पद्म० ॥ २ ॥ जावि जूत जवि-ष्यनी, जवि आगल कहे जगनाथ हो ॥ चउमुखे वाणी प्ररूपता, तारण कारण जवपाथ हो ॥ श्री पद्म० ॥ ३ ॥ पुष्कर मेघ थकी जली, बोधि अंकुर रोपणहार हो ॥ श्रद्धा जाषण रमणता, मूल कंद खंद निरधार हो ॥ श्री पद्म० ॥ ४ ॥ शम संवेग निर्वेदता, अनुकंपा अने आस्तिक्य हो ॥ शाखा चार अने जलो, ऊर्ध्व शाखा

ते विकिस आधिक्य हो ॥ श्री पद्म० ॥ ५ ॥ पत्र संपत्ति सुखरूपीया, सुरसुख ठे त्यां फूल हो ॥ फल शिवसुख पामे नवि जिहां, अक्षय स्थिति अनुकूल हो ॥ श्री पद्म० ॥ ६ ॥ नाव मेघ बहु गुण जाणीए, जिनवाणी सकल मल शोध हो ॥ वाणी नवनिस्तारिणी, ते सुणी पाम्यो प्रतिबोध हो ॥ श्री पद्म० ॥ ७ ॥ ते उपकारी त्रिलोकने आपे अविचल सुखवास हो ॥ सौभाग्यचन्द्र पसायथी, कहे स्वरूपचंद्र गुण भास हो ॥ श्री पद्म० ॥ ८ ॥

॥ श्री सुपार्श्व जिन स्तवन ॥

॥ दक्षिण दोहिलो हो राज–ए देशी ॥

॥ श्री जिन सातमो राज, स्वामी सुपासजी राज, तेहनुं दर्शन हो लहीए पूरण पुण्यथी ॥ प्रभु शुभ ध्यानी हो राज, समकितदानी हो राज, शोभा अधिक हो कहीए सुर नर अन्यथी ॥ १ ॥ जगत शिरोमणी राज, पास जिणंदनो राज, नमीए तेहने रे शुद्ध भावित भक्तिथी ॥ जिनप्रतिमाने हो राज, रूप विधाने हो राज, पूजो प्रणमो हो ध्यावो शुभ स्वर युक्तिथी ॥ २ ॥ वांछित काजे हो राज, स्वामी निवाजे हो राज, ते जिन आपे हो रुमी शिवपुर सपदा ॥ जस मुख दीठे हो राज,

जातक नीठे हो राज, नामे नावे हो दारिद्र दोहगता, कदा ॥ ३ ॥ बाह्य अभ्यंतर हो राज, शुभ गुण शोभता हो राज, सहस्स अठोत्तर हो आपे अनंत गुणाकरा ॥ दोष न दीसे हो राज, अढार अनेरा हो राज, निज गुण निर्मल हो भासे जे निशाकरा ॥ ४ ॥ नयरी वाणारसी हो राज, रयणे उल्लसी हो राज, तिहां प्रभु जन्म्या हो स्वामी नर सुर इंदना ॥ सौभाग्यचंद्रनो हो राज, सेवक बोले हो राज, स्वामी साची हो मानो स्वरूपनी वंदना ॥ ५ ॥

॥ श्री चंद्रप्रभुजीनुं स्तवन ॥

॥ जिनजी चंद्रप्रभु अवधारो के, नाथ नीहालजो रे लोल ॥ बमणो बिरुद गरीबनिवाजनी, वाचा पालजो रे लोल ॥ १ ॥ हरखे हुं तुम शरणे आव्यो के, मुजने राखजो रे लोल ॥ चोरटा चार चुगल जे भूंडा के, तेने दूर नाखजो रे लोल ॥ २ ॥ प्रभुजी पंच तणी परशंसा के, रूडी थापजो रे लोल ॥ मोहन महेर करीने मुजने, दरिशन आपजो रे लोल ॥ ३ ॥ तारक तुम पालव में झाल्यो के, हवे मुने तारजो रे लोल ॥ कुतरी कुमति थइ छे केडे के, तेने वारजो रे लोल ॥ ४ ॥ सुंदरी

सुमति सोहागण सारी के, प्यारी छे घणी रे लाल ॥ तातजी ते विण जीवे चोद के, भुवन करयु आंगणु रे लोल ॥ ५ ॥ लख गुण लखमणा राणीना जाया के, मुज मन आवजो रे लोल ॥ अनुपम अनुभव अमृत मीठी के, सुखमी लावजो रे लोल ॥ ६ ॥ दीपती दोढसो धनुष्य परिमाण के, प्रभुजीनी देहमी रे लोल ॥ देवनी दश पूरव लाख मान के, आयुष्य वेलमी रे लोल ॥ ७ ॥ निर्गुण निरागी पण हु रागी के, मन मांहे रे रह्यो लोल ॥ शुभ गुरु सुमतिविजय सुपसाय के, रामे सुख लह्यो रे लोल ॥ ८ ॥

॥ श्री सुविधि जिन स्तवन ॥

॥ हवे न जाउ मही वेचवा रे लोल–ए देशी ॥

॥ साहेब सुविधि जिणंदने रे लो, पूजो धरी मन खंत ॥ शुभ भावथी रे, चालो जइए जिनवर वंदवा रे लो ॥ उमंग आणी अगमां रे लो, आलस मूको दिगत ॥ शु० ॥ चा० ॥ १ ॥ चरण पावन थाये चालतां रे लो, दर्शने नयन पवित्र ॥ शु० ॥ पंचाभिगमने सचारीने रे लो, निसिही त्रिकरण विचित्र ॥ शु० ॥ चा० ॥ २ ॥ शिर नामी कर जोमी रे लो, वंदन करो एक-

चित्त ॥ शु० द्रव्य भाव तव साचवी रे लो, शुद्ध करो समकित ॥ शु० ॥ चा० ॥ ३ ॥ जिनप्रतिमा जिनसारखी रे लो, एहमां नहीं संदेह ॥ शु० ॥ तेहनी भक्ति कर्या थकी रे लो, लहीए सुख अछेह ॥ शु० ॥ चा० ॥ ४ ॥ शोभन विधि सुविधि प्रभु रे लो, मगर लंछन महाराय ॥ शु० ॥ दीजे सौभाग्य पद सेवतां रे लो, आत्म स्वरूप पसाय ॥ शु० चा० ॥ ५ ॥

॥ श्री शीतलनाथजीनुं स्तवन ॥

॥ म्हारे शीतल जिनशुं लागी पूरण प्रीत जो, साहेबजीनी सेवा भवदुःख भांजशे रे जो ॥ जिनप्रतिमा जिन सरखी दिलमां जोय जो, भक्ति करतां प्रभुजी खूब निवाजशे रे जो, ॥ १ ॥ जेणे जोतां लाधुं रत्न चिंतामणि हाथ जो, तेहने रे मूकीने कुण ग्रहे काचने रे जो ॥ जेणे मनशुं कीधां जूठानां पच्चक्खाण जो, ते नर बोले सो वाते पण साचने रे जो ॥ २ ॥ जे पाम्या परिगल प्रीते अमृतपान जो, खारुं जल ते पीवा कहो कुण मन करे रे जो ॥ जे घरमां बेठा पाम्या लखमी जोर जो ॥ धनने काजे देश देशांतर कोण फरे रे जो ॥ ३ ॥ जेणे सेव्या पूरण चित्ते अरिहंत देव जो, तेहना रे

मन मांहे किम वीजा गमे रे जो ॥ ए तो दोषरहित निकलंकी गुणभंडार जो, मनडुं रे अमारुं प्रभु साथे रमे रे जो ॥ ४ ॥ मुने मलीया पूरण भाग्ये शीतलनाथ जो, देखीने हु हरख्यो तन मन रंजीयां रे जो, ॥ ए तो दोलतदायी प्रभुजीनो देदार जो, में तो जोतां प्रभुने कर्मदल गजीयां रे जो ॥ ५ ॥ श्री विधिपक्षे देहरे मुंद्रा नगर मोझार जो, आंगी रे नवरंगी शिखर सोहामणी रे जो ॥ ए तो तेजे दीपे झगमग ज्योति विशाल जो, सोहे दे मनमोहन मूर्त्ति रलियामणी रे जो ॥ ६ ॥ सय सत्तर एकाशीए रुडो भाद्रव मास जो, स्तवन रच्युं ए प्रेमे परव पजुसणे रे जो ॥ श्री सहजसुंदर शिष्य बोले इणी परे वाणी जो, भावे रे नित्य लाभ कहे हरषे घणे रे जो ॥ ७ ॥

॥ श्री श्रेयास जिन स्तवन ॥

॥ कर्म न छूटे रे प्राणीया–ए देशी ॥

॥ तुमे बहु मित्री रे साहिबा, मारे तो मन एक ॥ तुम विण बीजो रे नवि गमे, ए मुज मोटी रे टेक॥ श्री श्रेयांस कृपा करो ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ मन राखो तुमे सवि तणां, पण किहां एक मली जाओ ॥ लल-

चाखो लख लोकने, साथी सहेज न थाउं ॥ श्री० ॥ २ ॥ राग भरे जन मन रहो, पण तिहुं काल वैराग ॥ चित्त तुमारा रे समुद्रनो, कोइ न पामे रे ताग ॥ श्री० ॥ ३ ॥ एवा शुं चित्त मेलव्युं, मेलव्युं पहेलां न कांइ ॥ सेवक निपट अबूझ छे, निर्वहेशो तुमे सांइ ॥ श्री० ॥ ४ ॥ निरागीशुं रे किम मले, पण मलवानो एकांत ॥ वाचक यश कहे मुज मिल्यो, भक्के कामण तंत ॥ श्री० ॥ ५ ॥

॥ श्री वासुपूज्यनुं स्तवन ॥

॥ वासुपूज्य जिन त्रिभुवनस्वामी, घननामी परनामी रे ॥ निराकार साकार सचेतन, करम करम फल कामी रे ॥ वा० ॥ १ ॥ निराकार अभेद संग्राहक, भेदग्राहक साकारो रे ॥ दर्शन ज्ञान दुभेद चेतन, वस्तु ग्रहण व्यापारो रे ॥ वा० ॥ २ ॥ कर्त्ता परिणामी परिणामो, कर्म जे जीवे करीए रे ॥ एक अनेक रूप नयवादे, नियते नय अनुसरीए रे ॥ वा० ॥ ३ ॥ दुःख सुख रूप करम फल जाणो, निश्चय एक आनंदो रे ॥ चेतनता परिणाम न चूके, चेतन कहे जिनचंदो रे ॥ वा० ॥ ४ ॥ परिणामी चेतन परिणामो, ज्ञान करम फल भावी रे ॥ ज्ञान करम फल चेतन कहीए, लेजो

तेह मनावी रे, ॥ वा० ॥ ५ ॥ आतमज्ञानी श्रमण कहावे, बीजा तो द्रव्यलिंगी रे ॥ वस्तुगते जे वस्तु प्रकाशे, आनंदघन मति संगी रे ॥ वा० ॥ ६ ॥

॥ विमल जिन स्तवन ॥

॥ विमल विमल गुणे राजता, बाह्य अभ्यंतर भेद ॥ जिणंद जुहारीए ॥ सूची पुला दृष्टांतथी, मन वच काय निवेद ॥ जि० ॥ १ ॥ स्पष्ट बद्ध निधत्त ते, निकाचित अविशेष ॥ जि० ॥ आत्मप्रदेश मांहे मल्या, मल ते कर्म प्रदेश ॥ जि० ॥ २ ॥ असंख्य प्रदेशी चिन्मयी, चेतन गुण सभार ॥ जि० ॥ प्रदेशे प्रदेशे रमी रही, वर्गणा कर्म अपार ॥ जि० ॥ ३ ॥ पच रसायन भावना, भावित आतम तत्त्व ॥ जि० ॥ उपलता छांमी कनकता, पामे उत्तम सत्त्व ॥ जि० ॥ ४ ॥ प्रथम भावना श्रुत तणी, बीजी तपतीय सत्त्व ॥ जि० ॥ तुरीय एकत्व भावना, पंचम भाव सुसत्त्व ॥ जि० ॥ ५ ॥ एम करी सर्व प्रदेशने, विमल करया जिनराय ॥ जि० ॥ नाम यथार्थ विचारीने, नमे स्वरूप नित्य पाय ॥ जि० ॥ ६ ॥

॥ श्री अनत जिन स्तवन ॥

॥ राग मारु–देशी करेलडानी ॥

॥ ज्ञान अनंतु ताहरे रे, दरिशन ताहरे अनत ॥

सुख अनंतमय साहिबा रे, वीर्य पण उल्लस्युं अनंत ॥ १ ॥ अनंत जिन आपजो रे, मुज एह अनंताचार ॥ अ० ॥ मुजने नहीं अवरशुं प्यार ॥ अ० ॥ तुजने आपंतां शी वार ॥ अ० ॥ एह बे तुज यशनो गर ॥ अ० ॥ ए आंकणी ॥ आप खजीनो न खोलवो रे, नहीं मलवानी चिंत ॥ मारे पोते बे सवे रे, पण विचे आवरणनी भिंत ॥ अ० ॥ २ ॥ तप जप किरिया मोघरे रे, भांजी पण भांगी न जाय ॥ एक तुज आण लगे थकी रे, हेलामां परही थाय ॥ अ० ॥ ३ ॥ मात भणी मरुदेवीने रे, जिन रुषभे क्षणमां दीध ॥ आप पियारुं विचारतां रे, इम किम वीतरागता सिद्ध ॥ अ० ॥ ४ ॥ ते माटे तस अरथीया रे, तुज प्रार्थता जे कोइ लोक ॥ तेहने आपो आपणी रे, तिहां न घटे करावची टोक ॥ अ० ॥ ५ ॥ तेहने तेहनुं आपवुं रे, तिहां स्यो उपजे बे खेद ॥ प्रार्थना करते ताहरे रे, प्रभुताइनो पण नहीं बेद ॥ अ० ॥ ६ ॥ पाम्या पामे पामशे रे, ज्ञानादिक जेह अनंत ॥ ते तुज आणाथी सवे रे, कहे मानविजय उल्लसंत ॥ अनंत० ॥ ७ ॥

॥ श्री धर्म जिनेश्वरनु स्तवन ॥

॥ सुखने मरूलडे–ए देशी ॥

॥ श्री धर्म जिणंद दयालजी ॥ धर्म तणो दाता ॥ सवि जंतु तणो रखवालजी ॥ धर्म तणो त्राता ॥ जस अमीय समाणी वाणीजी ॥ धर्म० ॥ जेह निसुणे नवि प्राणीजी ॥ धर्म० ॥ १ ॥ तेहना चित्तनो मल जायजी ॥ धर्म० ॥ जिम कतक फले जल थायजी ॥ धर्म० ॥ निर्मलता तेहज धर्मजी ॥ धर्म० ॥ कलुषाइ मिथ्यानो मर्मजी ॥ धर्म० ॥ २ ॥ निज धर्म तो सहज सभावजी ॥ धर्म० ॥ तोहि तुज निमित्त प्रभावजी ॥ धर्म० ॥ वनराजी फुलन शक्तिजी ॥ धर्म० ॥ पण ऋतुराजे होइ व्यक्तिजी ॥ धर्म० ॥ ३ ॥ कमलाकरे कमल विकासजी ॥ धर्म० ॥ सोरभला लखमीवासजी ॥ धर्म० ॥ ते दिनकर करणी जोयजी ॥ धर्म० ॥ इम धर्मदायक तु होयजी ॥ धर्म ॥ ४ ॥ ते माटे धर्मना रागीजी ॥ धर्म० ॥ तुज पद सेवे वडभागीजी ॥ धर्म० ॥ कहे मानविजय उवझायजी ॥ धर्म० ॥ निज अनुभव ज्ञान पसायजी ॥ धर्म० ॥ ५ ॥

॥ श्री शांति जिन स्तवन ॥

॥ शांति जिनेसर साहिबा रे, शांति तणो दातार ॥ सलूणा ॥ अंतरजामी छो माहरा रे, आतमना आधार ॥ स० ॥ शांति० ॥ १ ॥ चित्त चाहे प्रभु चाकरी रे, मन चाहे मलवाने काज ॥ स० ॥ नयण चाहे प्रभु निरखवा रे, द्यो दरिशण महाराज ॥ स० ॥ शांति० ॥ २ ॥ पलक न विसरो मन थकी रे, जेम मोरा मन मेह ॥ स० ॥ एक पखो केम राखीए रे, राज कपटनो नेह ॥ स० ॥ शांति० ॥ ३ ॥ नेह नजर नीहालतां रे, वाधे बमणो वान ॥ स० ॥ अखूट खजानो प्रभु ताहरो रे, दीजीए वंछित दान ॥ स० ॥ शांति० ॥ ४ ॥ आश करे जे कोइ आपणी रे, नहीं मूकीए निराश ॥ स० ॥ सेवक जाणीने आपणो रे, दीजीए तास दिलास ॥ स० ॥ शांति० ॥ ५ ॥ दायकने देतां थका रे, क्षण नवि लागे वार ॥ स० ॥ काज सरे निज दासनां रे, ए मोटो उपगार ॥ स० ॥ शांति० ॥ ६ ॥ एवुं जाणीने जगधणी रे, दिल मांहि धरजो प्यार ॥ स० ॥ रूपविजय कविरायनो रे, मोहन जयजयकार ॥ स० ॥ शांति० ॥ ७ ॥

॥ श्री कुंथुनाथ स्तवन ॥

॥ केसरवरणो हो काढ कसुंबो म्हारा लाल–ए देशी ॥

॥ कुंथु जिननी हो सेवा मागु म्हारा लाल, विनय करीने हो पाये लागु म्हारा लाल ॥ जगजीवन जिनजी हो इण भव दीठा म्हारा लाल, साकर दुधथी हो लागे मीठा म्हारा लाल ॥ १ ॥ समोसरण बेठा हो प्रभुजी दीपे म्हारा लाल, समता रसशुं हो जगने जीपे म्हारा लाल ॥ देवदुंदुभि रुडा हो गगने वाजे म्हारा लाल, वली तिहां किण जाणु हो भामंडल ठाजे म्हारा लाल ॥ २ ॥ चारे दिशि देवता हो चामर ढाले म्हारा लाल, भवना फेरा हो प्रभुजी टाले म्हारा लाल ॥ जिनजीनुं दर्शन हो मोहनगारुं म्हारा लाल, पल एक दिलथी हो हुं न विसारुं म्हारो लाल ॥ ३ ॥ सेवक उपर हो म्हेर धरीजे म्हारा लाल, सुखडां दीजे हो ताप हरीजे म्हारा लाल ॥ नित्य लाभ प्रणमी हो एम पयपे म्हारा लाल, प्रभुजीने समरी हो पातक कंपे म्हारा लाल ॥ ४ ॥

॥ श्री अरनाथनुं स्तवन ॥

॥ आणमरा जोगी–ए देशी ॥

॥ श्री अर जिन भवजलनो तारु, मुज मन लागे

वारु रे ॥ मनमोहन स्वामी ॥ बांह ग्रही ए भविजन तारे, आणे शिवपुर आरे रे ॥ मन० ॥ १ ॥ तप जप मोह महा तोफाने, नाव न चाले माने रे ॥ मन० ॥ पण नवि भय मुज हाथोहाथे, तारे ते छे साथे रे ॥ मन० ॥ २ ॥ भगतने स्वर्ग स्वर्गथी अधिकुं, ज्ञानीने फल देइ रे ॥ मन० ॥ काया कष्ट विना फल लहीए, मनमां ध्यान धरेइ रे ॥ मन० ॥ ३ ॥ जे उपाय बहु-विधनी रचना, योग माया ते जाणो रे ॥ मन० ॥ शुद्ध द्रव्य गुण पर्याय ध्याने, शिव दीये प्रभु सपराणो रे ॥ मन० ॥ ४ ॥ प्रभु पद वलग्या ते रह्या ताजा, अलगा अंग न साजा रे ॥ मन० ॥ वाचक यश कहे अवर न ध्याउं, ए प्रभुना गुण गाउं रे ॥ मन० ॥ ५ ॥

॥ श्री मल्लि जिन स्तवन ॥

॥ सासु पूछे हे वहू—ए देशी ॥

१ ॥ महिमा मल्लि जिणंदनो, एके जीभे कह्यो किम जाय ॥ योग धरे भिन्न योगशुं, चालो पण योगना हेखाय ॥ म० ॥ १ ॥ वयणे समजावे सभा, मन समजावे अनुत्तर देव ॥ औदारिक काया प्रत्ये, देव समीपे करावे सेव ॥ म० ॥ २ ॥ भाषा पण सवि श्रोताने,

निज निज भापाए समजाय ॥ हरखे निज निज रीजमां प्रभु तो निरविकार कहाय ॥ म० ॥३॥ योग अवस्था जिन तणी, ज्ञाता हुये तिणे समजाय ॥ चतुरनी वात चतुर लहे, मूढ विचारा देखी मुझाय ॥ म० ॥ ४ ॥ मूरख जन पामे नही, प्रभु गुणनो अनुभव रसस्वाद ॥मानविजय उवझायने, ते रसस्वादे गयो विखवाद ॥म०॥५ ॥

॥ श्री मुनिसुव्रत जिन स्तवन ॥

॥ पाडव पाचे वदता–ए देशी ॥

॥ मुनिसुव्रत जिन वंदतां, अति उल्लसित तन मन थाय रे ॥ वदन अनोपम निरखतां, मारां भव भवनां दुःख जाय रे ॥ १ ॥ मारां भव भवनां दुःख जाय, जगद्गुरु जागतो॥सुखकद रे॥सुखकद अमंद आणद, परम गुरु जागतो ॥ सु० ॥ ए आंकणी ॥ निशिदिन सूतां जागतां, हइडाथी न रहे दूर रे॥ जब उपकार संभारीए, तब उपजे आनंद पूर रे ॥ त० ॥ ज० ॥ सु० ॥ २ ॥ प्रभु उपकार गुणे भरया, मन अवगुण एक न समाय रे ॥ गुण गुण अनुबंधी हुआ, ते तो अक्षय भाव कहाय रे ॥ ते० ॥ ज० ॥ सु० ॥ ३ ॥ अक्षय पद दीये प्रेम जे, प्रभुनु ते अनुभव रूप रे ॥ अक्षर स्वर

गोचर नहीं, ए तो अकल अमाय अरूप रे ॥ ए० ॥ ज० ॥ सु० ॥ ४ ॥ अक्षर थोडा गुण घणा, सज्जनना ते न लिखाय रे ॥ वाचक यश कहे प्रेमथी, पण मन मांहे परखाय रे ॥ प० ॥ ज० ॥ सु० ॥ ५ ॥

॥ श्री नमि जिन स्तवन ॥

॥ गरबो कोणे रे कोराव्यो के नंदजीना लाल रे—ए देशी ॥

॥ नमिनाथ जिणेसर वंदो के, दिलमां आणी रे ॥ ए तो विप्रा राणी नंदो के, गुणमणि खाणी रे ॥ ए तो विजय नृपति कुलचंदो के ॥ दि०॥ एहने दीठे परमानंदो के ॥ गु० ॥ १ ॥ ए तो सोवन वर्ण सोहाया के ॥ दि० ॥ एणे मेली संसारनी माया के ॥ गु० ॥ ए तो वीतराग नाम कहाया के ॥ दि० ॥ ए तो मुक्ति मंदिरमां वाया के ॥ गु० ॥ २ ॥ हुं तो भक्ति करुं भले भावे के ॥ दि० ॥ जेम जन्म मरण भय नावे के ॥ गु० ॥ धरे मंगलमाला आवे के ॥ दि० ॥ मुज मनकुं आनंद पावे के ॥ गु० ॥ ३ ॥ प्रभुमूर्ति मुजने प्यारी के ॥ दि० ॥ भवियणने मोहनगारी के ॥ गु० ॥ गुण गावे सुर नर नारी के ॥ दि० ॥ प्रभु आपे संपत्ति सारी के ॥ गु० ॥ ४ ॥ प्रभु तमे हुं सेवक तारो के ॥ दि० ॥ मुज

आवागमन निवारो के॥गु० ॥ मुज विनतडी अवधारोवे ॥ दि० ॥ नित्य लाज ठे दास तुमारो के ॥ गु० ॥ ५ ॥

॥ श्री नेमनाथ जिन स्तवन ॥

॥ आवो जमाइ प्राहुणा ए–देशी ॥

॥ निरख्यो नेमि जिणंद रे अरिहंताजी, राजेमती कर्यो त्याग जगवंताजी ॥ ब्रह्मचारी सजम ग्रह्यो अरि० अनुक्रमे थया वीतराग जगवंताजी ॥ १ ॥ चक्र चामर सिंहासने अरि० पादपीठ सकेत जग० ॥ ठत्र चाले आकाशमां अरि० देवडुडुजि वरतंत जगवंताजी ॥२॥ सहस्र जोयण ध्वज सोहतो अरि० प्रज्ञु आगल चालंत जगवं० कनककमल तव उपरे अरि० विचरे पाय ठवंत जगवंताजी ॥ ३ ॥ चार मुखे देइ देशना अरि० त्रण गढ फाकफमाल जग० ॥ केशरी जस्स सुनवो अरि० वाधे नहीं कोइ काल ॥ जग० ॥ ४ ॥ कांटा पण उंध होइ अरि० सर्व लोक अनुकूल जग० ॥ खट ऋतु सम काले फले अरि० वायु नहीं प्रतिकूल जग० ॥ ५ ॥ पाणी सुगध सुर कुसुमनी अरि० वृष्टि होइ शुं रसाल जग० ॥ पंखी देइ सुप्रदक्षिणा अरि० वृक्ष नमे अतराल जग० ॥ ६ ॥ जिन उत्तम पद पद्मनी अरि० सेवा

करे सुर कोड़ी जग० ॥ चार निकायना जघन्यथी अरि० चैत्यवृक्ष तिम जाइ भगवंताजी ॥ ७ ॥

॥ श्री शांति जिन विज्ञप्ति ॥

(दोहा)

॥ बे कर जोडी विनवुं, सुण श्री जिनवर शांति ॥ पाप खमावुं आपणां, जे कीधां एकांत ॥ १ ॥ ढाल ॥ एकांत कहुं सुणो स्वामी, हुं तो चरण तमारा पामी ॥ मुज मांहे कपट छे बहुलां, ते तो सुणंता मन थाये डहुलां ॥ २ ॥ पर छिद्र प्रगट में कीधां, कूडां आल में परने दीधां ॥ तेथी छोडवो मुज तात, शांतिनाथ सुणो मोरी वात ॥ ३ ॥ दोहा ॥ भव अनंत भमी आवीयो, चरण तुमारे देव ॥ जिम राख्युं पारेवडुं, तिम राखो मुज हेव ॥ ४ ॥ ढाल ॥ हवे एकेंद्रियादिक जीव, दुहव्या करता अति रीव ॥ तस लाख चोराशी भेद, राग द्वेष पमाड्या खेद ॥ ५ ॥ मृषा बोलतां नावी लाज, तो किम सरशे आतम काज ॥ चोरी इण भव परभव कीधी, पर रमणीशुं दृष्टिज दीधी ॥ ६ ॥ दोहा ॥ मधुबिंदु सम विषयसुख, दुःख तो मेरु समान ॥ मानवी मन चिंते नहीं, करतो कोड अज्ञान ॥ ७ ॥

ढाल ॥ अज्ञानपणे ऋद्धि मेली, व्रत वाली नली पर्ने लेली ॥ हवे सार करो प्रजु मोरी, रात दिवस सेव करुं तोरी ॥ ७ ॥ वहु गुनही छुं श्री शांति, मुज टालो जवनी च्रांति ॥ हुं तो मागुं छुं अविचल राज, इम पनणे श्री जिनराज ॥ ए ॥

॥ श्री सिद्धाचलनु चैत्यवंदन ॥

॥ राग हरिगीत ॥

॥ श्री विमल गिरिवर सुर सुसेवित तीर्थ जे शाश्वत सदा, महिमा मनोहर जेहनो जिनराज गावे सर्वदा ॥ मुनिराजनां मंमल जिहां विचरी परम सुखने वर्या, गावो सदा गिरिराजना गुण काज सघलां तो सर्या ॥ १ ॥ त्रैलोक्यमां त्रण कालमां जेनो विछेद न थाय छे, सुर असुर इंद्र नरेंद्र सरवे जावथी गुण गाय छे ॥ ज्यां प्रथम श्री जिनराज पूर्व नवाणु वार समोसर्या, गावो सदा गिरिराजना गुण काज सघलां तो सर्या ॥ २ ॥ पुंमरीक प्रथमाधीश गणपति साधता गति पंचमि, जस नामथी संकट अने जवजीरुता जाये शमी ॥ दर्शन अने स्पर्शन थकी जव्यो घणा जवथी तर्या, गावो सदा गिरिराजना गुण काज सघलां तो सर्या ॥ ३ ॥

॥ श्री ऋषभदेवनुं स्तवन ॥

॥ ऋषभ जिणंदशुं प्रीतडी, किम कीजे हो कहो चतुर विचार ॥ प्रभुजी जइ अलगा वस्या, तिहां किणे नवि हो को वचन उच्चार ॥ ऋषभ जिणंदशुं प्रीतडी ॥ ए आंकणी ॥१॥ कागल पण पहोंचे नहीं, नवि पहोंचे हों तिहां को परधान ॥ जे पहोंचे ते तुम समो, नवि भाखे हो कोइनुं व्यवधान ॥ ऋषभ० ॥ २ ॥ प्रीति करे ते रागीया, जिनवरजी हो तुमे तो वीतराग ॥ प्रीतडी जेह अरागीथी, भेलववी हो ते लोकोत्तर माग ॥ ऋषभ० ॥ ३ ॥ प्रीति अनादिनी विष भरी, ते रीते हो करवा मुज भाव ॥ करवी निर्विष प्रीतडी, किण भाते हो कहो बने बनाव ॥ ऋषभ० ॥ ४ ॥ प्रीति अनंती पर थकी, जे तोडे हो ते जोडे एह ॥ परम पुरुषथी रागता, एकत्वता हो दाखी गुणगेह ॥ ऋषभ० ॥ ५ ॥ प्रभुजीने अवलंबतां, निज प्रभुता हो प्रगटे गुणराश ॥ देवचंद्रनी सेवना, आपे मुज हो अविचल सुखवास ॥ ऋषभ० ॥ ६ ॥

॥ श्री सिद्धाचलनुं स्तवन ॥

॥ सुण सुण शत्रुंजय गिरि स्वामी, हुं तो अरज

करुं शिर नामी ॥ कृपानिधि विनति अवधारो, जव सागरपार उतारो ॥ कृपानिधि० ॥ १ ॥ प्रभु मूरत मोह नगारी, निरख्या हरखे नर नारी, जाउ वारी हुं वार हजारी ॥ कृपानिधि० ॥ २ ॥ हवे कीसीय विमास न कीजे, मुज उपर महेर धरीजे, दिलरजन दरिशण दीजे ॥ कृपानिधि० ॥ ३ ॥ आज सयल मनोरथ फलीआ जव जवनां पातीक गलीआ, प्रभु जो मुजसे मुख मलीआ ॥ कृपानिधि० ॥ ४ ॥ समर्या संकट टली जाय, नित्य नव नव मंगल थाय, मुज आतम पुन्य भराय ॥ कृपानिधि० ॥ ५ ॥ कर जोमी विनति कीजे, केशर चंदन चरचीजे, दिन धन्य धन्य तेह गणीजे ॥ कृपानिधि० ॥ ६ ॥ सेवो स्वामी सदा सुखदायी, कम ना न रहे घर कांइ, वाधे सपत्ति शोज सवाइ ॥ कृपानिधि० ॥ ७ ॥ प्रभु दर्श सरस लह्यो तोरो, एथी हरखित होवे चित्त मोरो, जेम दीठो चंदचकोरो ॥ कृपोनिधि० ॥ ८ ॥ नाजीराय कुमर कुलचदा, जविजन मन नयन आनंदा, उलगे सुर असुर जिणंदा ॥ कृपानिधि० ॥ ए ॥ जयकारी रुपन्न जिणंदा, प्रह सम धरे परम आनंदा, वंदे श्रीजिन जक्ति मुनींदा ॥ कृपानिधि० ॥ १० ॥

॥ श्री सिद्धाचल स्तवन ॥

॥ जात्रा नवाणुं करीए विमलगिरि ॥ जात्रा नवाणुं करीए ॥ ए आंकणी ॥ पूरव नवाणुं वार शेत्रुंजा गिरि, ऋषभ जिणंद समोसरीए ॥ वि० ॥ १ ॥ कोडि सहस भव पातक त्रूटे, शेत्रुंजा सामो डग भरीए ॥ वि० ॥ २ ॥ सात छठ दोय अठम तपस्या, करी चढीए गिरिवरीए ॥ वि० ॥ ३ ॥ पुंडरीक पद जपीए हरखे, अध्यवसाय शुभ धरीए ॥ वि० ॥ ४ ॥ पापी अभव्य न नजरे देखे, हिंसक पण उद्धरीए ॥ वि० ॥ ५ ॥ भुंइ संथारो ने नारी तणो संग, दूर थकी परिहरीए ॥ वि० ॥ ६ ॥ सचित्त परिहारी ने एकल आहारी, गुरु साथे पद चरीए ॥ वि० ॥ ७ ॥ पडिक्कमणां दोय विधिशुं करीए, पाप पडल विखरीए ॥ वि० ॥ ८ ॥ कलिकाले ए तीरथ मोटुं, प्रवहण जिम भवदरीए ॥ वि० ॥ ए ॥ उत्तम ए गिरिवर सेवंता, पद्म कहे भव तरीए ॥ वि० ॥ १० ॥

॥ श्री पुंडरीकजीनुं स्तवन ॥

॥ प्रणमो प्रेमे पुंडरीक राजाउ, गाजीउ जगमां रे एह ॥ सौभागी ॥ जात्रा रे जातां रे पगे पगे निरजरे,

वहु नव संचित खेह ॥ सो० ॥ प्रणमो० ॥ १ ॥ होइ
वज्रलेप समोवडे, ते पण जाये दूर ॥ सो० ॥ जो ए
गिरिनु दर्शन कीजीए, नाव नक्ति नरपूर ॥ सो० ॥
प्रणमो० ॥ २ ॥ गोहत्यादिक हत्या पंच छे, कारक तेहना
जे होय ॥ सो० ॥ ते पण ए गिरि दरशन जो करे,
पामे शिवगति सोय ॥ सो० ॥ प्रणमो० ॥ ३ ॥ श्री शुक
राजा नृपति इण गिरि, करतो जिनवर ध्यान ॥ सो० ॥
खट मासे रिपु विलय गया, वाध्यो अधिक तस वान
॥ सो० ॥ प्रणमो० ॥ ४ ॥ चन्द्रशेखर निज नगिनी
नोगवी, पाप कीधो महंत ॥ सो० ॥ ते पण ए तीरथ
आराधतां, पाम्यो शुन गति संत ॥ सो० ॥ प्रणमो०
॥ ५ ॥ मोर सर्प वाघण प्रमुख, वहु जीव छे जे विक-
राल ॥ सो० ॥ ते पण ए गिरि दरिशन पुन्यथी, पामे
सुगति विशाल ॥ सो० ॥ प्रणमो० ॥ ६ ॥ एवो महिमा
ए तीरथ तणो, चैत्री पुनमे विशेष ॥ सो० ॥ श्री विज-
यराज सूरीश्वर शिष्यनो, दिन गया दुःख लेश ॥
सो० ॥ प्रणमो० ॥ ७ ॥

॥ श्री रायणनु स्तवन ॥

॥ नीलुमी रायण तरु तले ॥ सुण सुंदरी ॥ पीलुमा

प्रभुना पाय रे ॥ गुणमंजरी ॥ उज्ज्वल ध्याने ध्याइए ॥ सुण० ॥ एहीज मुक्ति उपाय रे ॥ गुण० ॥ १ ॥ शीतल छायाए बेसीए ॥ सुण० ॥ रातडो करी मन रंग रे ॥ गुण० पूजीए सोवन फूलडे ॥ सुण० ॥ जेम होय प्रीति अभंग रे ॥ गुण० ॥ २ ॥ खीर झरे जेह उपरे ॥ सुण० ॥ नेह धरीने एह रे ॥ गुण० ॥ त्रीजे भवे ते शिव लहे ॥ सुण० ॥ थाये निर्मल देह रे ॥ गुण० ॥ ३ ॥ प्रीत धरी प्रदक्षिणा ॥ सुण० ॥ दीये एहने जे सार रे ॥ गुण० ॥ अभंग प्रीति होय तेहने ॥ सुण० ॥ भव भव तुम आधार रे ॥ गुण० ॥ ४ ॥ कुसुम फल पत्र मंज रे ॥ सुण० ॥ शाखा थड ने मूल रे ॥ गुण० ॥ देव तणा वासाय छे ॥ सुण० ॥ तीरथने अनुकूल रे ॥ गुण० ॥ ५ ॥ तीरथ ध्यान धरो मुदा ॥ सुण० ॥ सेवो एहनी छांय रे ॥ गुण० ॥ ज्ञानविमल गुण भाखीयो ॥ सुण० ॥ शेत्रुंजा माहात्म्य मांह रे ॥ गुण० ॥ ६ ॥

॥ श्री महावीरस्वामीनुं स्तवन ॥

॥ मारगदेशक मोक्षनो रे, केवलज्ञान निधान ॥ भाव दया सागर प्रभु रे, परउपगारी प्रधान रे ॥ १ ॥ वीर प्रभु सिद्ध थया, संघ सकल आधारो रे ॥ हवे

छण भरतमां, कोण करशे उपगारो रे ॥ वीर० ॥ २ ॥
नाथ विहुणुं सैन्य ज्युं रे, वीर विहुणो रे जीव ॥ साधे
कोण आधारथी रे, परमानंद अभंग रे ॥ वीर० ॥
३ ॥ माता विहुणो बाल ज्युं रे, अरहो परहो अथ-
डाय ॥ वीर विहुणा जीवडा रे, आकुल व्याकुल थाय
रे ॥ वीर० ॥ ४ ॥ संशय छेदक वीरनो रे, विरह ते
केम खमाय ॥ जे दीठे सुख उपजे रे, ते विण केम
रहेवाय रे ॥ वीर० ॥ ५ ॥ निर्यामक भवसमुद्रनो रे
भवअटवी सत्थवाह ॥ ते परमेश्वर विण मले रे, केम
वाधे उत्साह रे ॥ वीर० ॥ ६ ॥ वीर थका पण श्रुत
तणो रे, हतो परम आधार ॥ हवे इहां श्रुत आधार
छे रे, अहो जिनमुद्रा सार रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ त्रण
काले सवि जीवने रे, आगमथी आणंद ॥ सेवो ध्यावो
भवि जनो रे, जिनपडिमा सुखकंद रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥
गणधर आचारज मुनि रे, सहुने इणी परे सिद्ध ॥
भव भव आगम संगथी रे, देवचंद्र पद लीध रे
॥ वीर० ॥ ९ ॥

॥ श्री महावीरस्वामीनु स्तवन ॥

॥ गिरुआ रे गुण तुम तणा, श्री वर्धमान जिन

राया रे ॥ सुणतां श्रवणे अमी झरे, माहरी निर्मल थाये कायारे ॥ गि० ॥ १ ॥ तुम गुण गण गंगाजले, हुं झीली निर्मल थाउं रे ॥ अवर न धंधो आदरुं, निशि-दिन तोरा गुण गाउं रे ॥ गि० ॥ २ ॥ झील्या जे गंगाजले, ते छिल्लर जल नवि पेसे रे ॥ जे मालती फूले मोहीआ, ते बावल जइ नवि बेसे रे ॥ गि० ॥ ३ ॥ एम अमे तुम गुण गोठशुं, रंगे राच्या ने वली माच्या रे ॥ ते केम परसुर आदरुं, जे परनारी वश राच्या रे ॥ गि० ॥ ४ ॥ तुं गति तुं मति आशरो, तुं आलंबन मुज प्यारो रे ॥ वाचक यश कहे माहरे, तुं जीवन जीव आधारो रे ॥ गि० ॥ ५ ॥

॥ श्री महावीरस्वामीनुं स्तवन ॥

॥ वीर प्रभुने चित्त धारजे ॥ सदा रे जीव ॥ वीर प्रभुने चित्त धारजे ॥ काल अनादिना मोह अरि जे, विवेक असिथी तुं मारजे ॥ सदा रे० ॥ १ ॥ आर्त ने रौद्र ध्यान कह्यां छे, धर्मथी तेने निवारजे ॥ सदा रे० ॥ २ ॥ चोराशी लक्ष योनि मांहे फेरा फरतां, अज्ञानी जीवने तारजे ॥ सदा रे० ॥ ३ ॥ कुदेव कुधर्मी चित्त विषेथी, स्वरूप जाणी विसारजे ॥ सदा रे० ॥ ४ ॥ दीन जनोनां दुःख जोइने, रहेम धरीने उधारजे ॥ सदा

रे० ॥ ५ ॥ परोपकारी जीव थया जे, गुणो तेना ह
संभारजे ॥ सदा रे० ॥ ६ ॥

॥ श्री पचतीर्थनु स्तवन ॥

॥ चोवीश चोकनी देशी ॥

॥ हे साहेबजी नेक नजर करी नाथ सेवकने तारं
॥ हे साहेबजी ॥ महेर करी पूजानु फल मूने आलो।
प्रभु तुज मूरति मोहनवेली, पूजे सुर अप्सरा अल
वेली, वर घनसार केसरशु भेली ॥ हे साहेबजी ॥ १ ।
सिद्धाचल तीर्थ भवि सेवो, चोद क्षेत्रे तीरथ नई
एवो, एम बोले देवाधिदेवो ॥ हे साहेबजो ॥ २ ॥ गिर
नारे जइए नेम पासे, इहां भविजन सिद्धि जाशे
जस ध्याने पातकर्मा नासे ॥ हे साहेबजी ॥ ३ ॥ आबु
गढे आदि जिनराया, नेम नाथ शिवादेवी जाया, जस
चोसठ इंद्रे गुण गाया ॥ हे साहेबजी ॥ ४ ॥ वली
समेतशिखरे जघन ईश, गया मोक्षे जिनराज वीश,
ध्येय ध्यावो भविजन निशदिन ॥ हे साहेबजी ॥ ५ ॥
अष्टापदे सकल कर्म टाली, प्रभु वरीया शिववधू लट-
काली, आदीश्वर पूजनां दीवाली ॥ हे साहेबजी ॥
६ ॥ ए तीर्थ प्रणमो मनरंगे, वली पूजा प्रभुने नव
अंगे, कहे धर्मचन्द्र अति उमंगे ॥ हे साहेबजी ॥ ७ ॥

॥ श्री तीर्थमालानुं स्तवन ॥

॥ शत्रुंजय ऋषभ समोसर्या, भला गुण भर्या रे ॥ सिद्धा साधु अनंत, तीरथ ते नमुं रे ॥ त्रण कल्याणक तिहां थयां, मुगते गया रे ॥ नेमीश्वर गिरनार ॥ तीरथ० ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो, गिरि सेहरो रे ॥ भरते भराव्यां बिंब ॥ तीरथ० ॥ आबु चौमुख अति भलो, त्रिभुवन तिलो रे ॥ विमल-वसहि वस्तुपाल ॥ तीरथ० ॥ २ ॥ समेतशिखर सोहामणो, रलियामणो रे ॥ सिद्धा तीर्थंकर वीश ॥ तीरथ० ॥ नयरी चंपा निरखीए, हैये हरखीए रे ॥ सिद्धा श्री वासुपूज्य ॥ तीरथ० ॥ ३ ॥ पूरब दिशे पावापुरी, ऋद्धे भरी रे ॥ मुक्ति गया महा-वीर ॥ तीरथ० ॥ जेसलमेर जुहारीए, दुःख वारीए रे ॥ अरिहंत बिंब अनेक ॥ तीरथ० ॥ ४ ॥ विकानेरज वंदीए, चिर नंदीए रे ॥ अरिहंत देहरां आठ ॥ तीरथ० ॥ सोरिसरो संखेसरो, पंचासरो रे ॥ फलोधी थंभणपास ॥ तीरथ० ॥ ५ ॥ अंतरीक अजावरो, अमीझरो रे ॥ जीरा-वलो जगनाथ ॥ तीरथ० ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरो, जात्रा करो रे ॥ राणपुरे रिसहेस ॥ तीरथ० ॥ ६ ॥ श्री नाडु-लाइ जादवो, गोडी स्तवो रे ॥ श्री वरकाणो पास ॥

तीरथ० ॥ नंदीश्वरनां देहरां, बावन भलां रे ॥ रुचक कुंमले चार चार ॥ तीरथ० ॥ ७ ॥ शाश्वती अशाश्वती, प्रतिमा छती रे ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ तीरथ० ॥ तीरथ जात्रा फल तिहां, होजो मुज इहां रे ॥ समयसुंदर कहे एम, तीरथ ते नमुं रे ॥ ८ ॥

॥ श्री शेत्रुंजानुं स्तवन ॥

॥ वहाला वेगे आवो रे—ए राग ॥

॥ सिद्धाचल गावुं रे, मोतीडे वधावुं रे ॥ दादा सुणो विनति होजी ॥ प्रभु मारां भवोभवनां दुःख वार ॥ दादा सुणो० ॥ १ ॥

॥ साखी ॥

प्रथम पति पृथ्वी तणा, पेला जिणंद मुणींद ॥ योगींद्र श्री आदीश्वर, मरुदेवी माता नंद ॥ हुं तो गिरिवरना गुण गाउं रे ॥ दादा सुणो० ॥ २ ॥ जो प्रीत पालो पूर्वनी, सन्मुख भालो आप ॥ पापी अधमने उद्धरो, प्रतिपालनी ए छाप ॥ दयानिधि दिलमां हुं लावुं रे ॥ दादा सुणो० ॥ ३ ॥ कुर्कट मटी राजा थयो, जे सूरजकुंडे चंद ॥ भगिनीभोगी उद्धर्यो, जे चंद्रशेखर नरिंद ॥ हुं तो मोहथी जग मचावुं रे ॥

दादा सुणो० ॥ ४ ॥ ए ठाम सिद्ध अनंतनो, छे शाश्वतो गिरिराज ॥ सिद्धि वर्या पांडव प्रमुख, ए मुक्ति मंदिर पाज ॥ प्रभु तारुं ध्यान लगावुं रे ॥ दादा सुणो० ॥ ५ ॥ तारो प्रभु जो मुजने, तो गणुं जगदाधार ॥ नथी ख-जानो कांय खोट, तरी तारीयां नर नार ॥ रूडी तारी आंगीउं रचावुं रे ॥ दादा सुणो० ॥ ६ ॥ त्रिभुवन विषे नहीं तीर्थ, बीजुं कहे वीर जिणंद ॥ गिरिराजनां गुण-गान गाये, सेवक सांकलचंद ॥ हुं तो आवागमन पावुं रे ॥ दादा सुणो० ॥ ७ ॥

॥ श्री गिरनारजीनुं स्तवन ॥
॥ गरवानी देशी ॥

॥ जइने रहेजो मारा वालाजी रे, श्री गिरनारने गोंख ॥ जइने० ॥ अमे पण तिहां आवशुं ॥ मारा० ॥ ज्यारे पामीशुं जोख ॥ जइ० ॥ १ ॥ जान लइ जुनागढे ॥ मारा० ॥ आव्या तोरण आप ॥ जइ० ॥ पशुआं पेखी पाछा वळ्या ॥ मारा० ॥ जातां न दीधो जवाब ॥ जइ० ॥ २ ॥ सुंदर आपण सारिखा ॥ मारा० ॥ जोतां नहीं मळे जोड ॥ जइ० ॥ बोल्या अणबोल्या करो ॥ मारा० ॥ ए वाते तमने खोड ॥ जइ० ॥ ३ ॥ हुं रागी तुं वैरागीउं

॥ मारा० ॥ जगमां जाणे सहु कोइ ॥ जइ० ॥ राग तो लागी रहे ॥ मारा० ॥ वैरागी रागी न होय ॥ जइ० ॥ ४ ॥ वर बीजो हुं नवि वरुं ॥ मारा० ॥ सघला मेली स वाद ॥ जइ० ॥ मोहनीयाने जइ मली ॥ मारा० ॥ मोटा साथे श्यो वाद ॥ जइ० ॥ ५ ॥ गढ तो एक गिरनार छे ॥ मारा० ॥ नर तो छे एक श्री नेम ॥ जइ० ॥ रमणी एक राजीमती ॥ मारा० ॥ पूरो पाळ्यो जेणे प्रेम ॥ जइ० ॥ ६ ॥ वाचक उदयनी वंदना ॥ मारा० ॥ मानी लेजो महाराज ॥ जइ० ॥ नेम राजुल मुक्ते मळ्यां ॥ मारा० ॥ सार्यां आतम काज ॥ जइने रहेजो मारा वालाजी रे ॥ ७ ॥

॥ श्री अष्टापदजीनुं स्तवन ॥

॥ कुंवर गभारो नजरे देखताजी—ए देशी ॥

॥ चउ अठ दस दोय वंदीएजी, वर्तमान जगदीश रे ॥ अष्टापद गिरि उपरेजी, नमतां वाधे जगीश रे ॥ भरत भरतपति जिनमुखेजी, उच्चरीयां व्रत बार रे ॥ दर्शनशुद्धीने कारणेजी चोवीश प्रभुनो विहार रे ॥ चउ० ॥ १ ॥ उंचपणे कोस तिग कह्युजी, योजन एक विस्तार रे ॥ निज निज मान प्रमाण भ-

ावीयांजी, बिंब स्वपर उपगार रे ॥ चउ० ॥ २ ॥ अ-
जितादिक चउ दाहिणेजी, पश्चिमे पडिमा आठ रे ॥
अनंत आदे दश उत्तरेजी, पूरवे रिखभ वीर पाठ रे
चउ० ॥ ३ ॥ रिखभ अजित पूर्वे रह्याजी, ए पण आ-
गमपाठ रे ॥ आतमशक्ते करे जातराजी, ते भवि
मुक्ति वरे हणी आठ रे ॥ चउ० ॥ ४ ॥ देखो अ-
चंबो श्री सिद्धाचलेजी, हुआ असंख्य उद्धार रे ॥
आज दिने पण एणे गिरिजी, झगमग चैत्य उदार रे
। चउ० ॥ ५ ॥ रहेशे उत्सर्पिणी लगेजी, देवमहिमा
गुण दाखी रे ॥ सिंह निषद्यादिक थिरपणेजी, वसु-
देव हिंडनी शाख रे ॥ चउ० ॥ ६ ॥ केवली जिनमुख
में सुण्युंजी, एणे विधे पाठ पठाय रे ॥ श्री शुभवीर
वचनरसेजी, गया रिखव शिव ठाय रे ॥ चउ० ॥ ७ ॥

॥ श्री तारंगाजीनुं स्तवन ॥

॥ तुंग तारंग गिरि शोभतो रे लाल, राजे अजित
जिणंद रे ॥ सोभागी ॥ दर्शन करतां दुःख टले रे
लाल, होये परमानंद रे ॥ सोभागी ॥ तुंग० ॥ १ ॥
अजित जिणंद जुहारीने रे लाल, कीजे सफल अव-
तार रे ॥ सोभागी ॥ महिमा जस गाजे सदा रे लाल,

उतारे नवपार रे ॥ सोनागी ॥ तुंग० ॥ २ ॥ कोटि शिला जस उपरे रे लाल, सिद्धशिलानी जेम रे सोनागी ॥ शोने नयणे नीहालतां रे लाल, मोद धरे मन जेम रे ॥ सोनागी ॥ तुंग० ॥ ३ ॥ अवलंबन लेत मुदा रे लाल, मोह पराजय थाय रे ॥ सोनागी ॥ तारे ते तीरथ गणो रे लाल, नव्य जनोने सहाय रे ॥ सोनागी ॥ तुंग० ॥ ४ ॥ निरखी हरखे सहु जनो रे लाल सेवे सुर नर संत रे ॥ सोनागी ॥ रत्नत्रयी प्रगटे खरी रे लाल आवे नवनिधि अंत रे ॥ सोनागी ॥ तुंग० ॥ ५ ॥

॥ श्री आबुजीनु स्तवन ॥

॥ कोइलो पर्वत धुंधलो रे–ए देशी ॥

॥ आबु अचल रलीआमणो रे लोल, देलवाडे मनोहार ॥ सुखकारी रे ॥ बादलीए जेसर धस्यु रे लोल देवल दीपे चार ॥ बलीहारी रे ॥ नाव धरीने नेटीए रे लोल ॥ आ० ॥ वार बादशाह वशकरी रे लोल विमल मन्त्रीश्वर सार ॥ सुख० ॥ तेणे प्रासाद निपाइओ रे लोल, रिखव जगदाधार ॥ ब० ॥ आ० ॥ १ ॥ तेह चैत्यमां जिनवरु रे लोल, आठसे ने ठोंतेर ॥ सु० ॥ जेह

ोठे प्रभु सांभरे रे लोल, मोह करयो जीण जेर ॥ व०
॥ आ० ॥ २ ॥ द्रव्य भरी धरती भली रे लोल, लीधो
वल्लकाज ॥ सु० ॥ चैत्य तिहां मंमावीडं रे लोल, लेवा
शवपुर राज ॥ व० ॥ आ० ॥ ३ ॥ पंदरसें कारीगरे रे
ोल, दीवीधरा प्रत्येक ॥ सु० ॥ तेम मरदनकारक
ली रे लोल, वस्तुपाल ए विवेक ॥ व० ॥ आ० ॥४॥
। कोरणी घोरणी तिहां करी रे लोल, दीठां वने ते
ात ॥ सु० ॥ पण नवि जाये मुखे कही रे लोल, सुर-
ुरु सम विख्यात ॥ व० ॥ आ० ॥ ५ ॥ त्रण वरसे
नीपन्यो रे लोल, ते प्रासाद उत्तम ॥ सु० ॥ बार कोमी
त्रेपन लक्तने रे लोल, खरच्या द्रव्य उठरंग ॥ व० ॥
आ० ॥ ६ ॥ देराणी जेठाणीना गोखला रे लोल, देखतां
हरख ते थाय ॥ सु० ॥ लाख अढार खरचीआ रे लोल,
धन्य धन्य एहनी माय ॥ व० ॥ आ० ॥ ७ ॥ मूलना-
यक नेमीसरु रे लोल, जन्म थकी ब्रम्हचार ॥ सु० ॥
निज सत्ता रमणी थया रे लोल, गुण अनंत आधार ॥
व० ॥ आ० ॥ ८ ॥ चारसें ने अमसठ भलां रे लोल,
जिनवरबिंब विशाल ॥ सु० ॥ आज भले में भेटीया रे
ोल, पाप गयां पाताल ॥ व० ॥ आ० ॥ ए ॥ रिखभ

धातुमयी देहरे रे लोल, एकसो पीस्तालीश बिंब ॥ सु०
॥ चोमुख चैत्य जुहारीए रे लोल, मरुधरमां जेम अंब
॥ व० ॥ आ० ॥ १० ॥ वाणु काउस्सग्गीआ तेहसां रे
लोल, अगन्याशी जिनराय ॥ सु० ॥ अचलगढे बहु
जिनवरा रे लोल, वंदुं तेहना पाय ॥ व० ॥ आ० ।
११ ॥ धातुमयी परमेसरु रे लोल, अद्भुत जास स्वरूप
॥ सु० ॥ चउमुख जिन वंदतां रे लोल, थाये निज गुण
रूप ॥ व० ॥ आ० ॥ १२ ॥ अढारसे ने अढारमां रे
लोल, चउतर वदि त्रीज दिन ॥ सु० ॥ पालणपुरना
संघशु रे लोल, प्रणमी थयो धन्य धन्य ॥ व० ॥ आ०
॥ १३ ॥ तेम शांति जगदीसरु रे लोल, जात्रा करी
अद्भुत ॥ सु० ॥ जे देखी जिन सांभरे रे लोल, सेव
करे पुरहुत ॥ व० ॥ आ० ॥ १४ ॥ इम जाणी आबु
तणी रे लोल, जात्रा करशे जेह ॥ सु० ॥ जिन उत्तम
पद पामशे रे लोल, पद्मविजय कहे तेह ॥ व० ॥
आ० ॥ १५ ॥

॥ श्री राणकपुरनु स्तवन ॥

॥ श्री राणकपुर रली आमणु रे लोल ॥ श्री आदी-
सर देव ॥ मन मोह्यु रे ॥ उत्तग तोरण देहरुं रे लाल

निरखीजे नितमेव ॥ मन० ॥ श्री० ॥ १ ॥ चउवीश मंडप चिहुं दिशे रे लाल, चउमुख प्रतिमा च्यार ॥ मन० ॥ त्रिभुवन दीपक देहरुं रे लाल, समोवड नहीं संसार ॥ मन० ॥ श्री० ॥ २ ॥ देहरी चोराशी दीपती रे लाल, मांड्यो अष्टापद मेर ॥ मन० ॥ भले जुहारयां भोंयरां रे लाल, सुतां उठी सवेर ॥ मन० ॥ श्री० ॥ ३ ॥ देश जाणीतु देहरुं रे लाल, मोटो देश मेवाड ॥ मन० ॥ लख नवाणुं लगावीया रे लाल, धन धरणे पोरवाड ॥ मन० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ खरतरगछही खांतशुं रे लाल, निरखतां सुख थाय ॥ मन० ॥ पांच प्रासाद बीज वली रे लाल, जोतां पातीक जाय ॥ मन० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ आज कृतारथ हुं थयो रे लाल, आज थयो आणंद ॥ मन० ॥ यात्रा करी जिनवर तणी रे लाल, दूर गयुं दुःख दंद ॥ मन० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ संवत् सोलने छोंतरे रे लाल, मागशिर मास मझार ॥ मन० ॥ राणकपुर यात्रा करी रे लाल, समयसुंदर सुखकार ॥ मन ॥ श्री० ॥ ७ ॥

॥ श्री केशरीयाजीनुं स्तवन ॥

॥ केशरीयासें लाग्युं मारुं ध्यान रे, बीजुं मुने कांइ

न गमें रे ॥ के० ॥ नाभि नृप मरुदेवीको नंदन, तुम पर जीया खुरवान रे ॥ वीजुं० ॥ केश० ॥ १ ॥ धनुष पांचसें मान मनोहर, काया कंचनवान रे ॥ वीजुं० ॥ केश० ॥ २ ॥ जुगला रे धर्म निवारण साहिव, राजेश्वर राजान रे ॥ वीजु० ॥ केश० ॥ ६ ॥ रुपचंदासकी आशा पूरजो, सेवक अपना जान रे ॥ वीजु० ॥ केश० ॥ ४ ॥

॥ श्री शिखरजीनु स्तवन ॥

॥ चालो चालो शिखर गिरि जइए रे चा० ॥ वीश जिणंद मुगते गया ॥ चालो० ॥ ए आंकणी ॥ पालगंजमे सफल बोलाइ, मधुवनमे जइ रहीए रे ॥ वी० ॥ १ ॥ आठ मदिरे हैं श्वेतांवरका,तीन दिगंवरी लहीए रे ॥ वी० ॥ सीता नाले निर्मल थइने, केशर प्याला ग्रहीए रे ॥ वी० ॥ २ ॥विषम पाहाडकी कुंज गलनमे, शीतलता वहु लहीए रे ॥ वी० ॥ पश्चिम औठ पूरव दिशि वारे, वीश टुंक जिनपद लहीए रे ॥ वी० ॥ ३ ॥ शामलीया पारसको मदिर, विच शिखर पर सोहीए रे ॥ वी० ॥ वीश टुंके जिनपूजन करके, नरभव लाहो लहीए रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ उंगणीशसे इग्यार महा वदि, एकादशी विधु कहीए रे ॥ वी० ॥ संघ सहित यात्रा

जइ सफली, विनय नमत गुण गहीए रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥

॥ श्री राजगृही स्तवन ॥

॥ शिखरजीकी यात्रा क्यूं न करे—ए देशी ॥

॥ आज आनंद धरी, सखी मोरी आज आनंद धरी ॥ ए आंकणी ॥ राजगृहीमें पांच मंदिरका, दर्शन पूजा करी ॥ गोवर गाममें एक मंदिर है, गौतम जनम पुरी ॥ सखी० ॥ १ ॥ विपुलाचल रतनगिरि दुजो, त्रीजो उदयगिरि ॥ सोन गिरि वैभार पंचोपरि, मंदिर सोल वरी ॥ सखी० ॥२॥ मंदिर मुद्रा चरन पुरातन, वंदुं भाव धरी ॥ बहु मुनि मुगतिपद पाये, धन्य धन्य एह गिरि ॥ सखी० ॥ ३ ॥ उष्ण योनि जलका बहु थानक, कुंभकी रचना करी ॥ केवली प्रभुका ज्ञान विना नर, तीरथ पद पकरी ॥ सखी० ॥ ४ ॥ तीरथ भूमि पद फरशनसें, नरभव सफल करी ॥ क्रोधादिक सब दूर निवारो, समता विनय धरी ॥ सखी० ॥ ५ ॥

॥ श्री बनारसनुं स्तवन ॥

॥ पारस प्रभुका चार कल्याणक, बनारसमें लहीए रे ॥ पारस० ॥ भिल्लुपुरमें दो मंदिर है, सोइ पुरातन कहीए रे ॥ पारस० ॥ १ ॥ रामघाट पर कुशलाजीके,

मदिर वंदन जइए रे ॥ और बहु मंदिर है सुदर
तारीफ कहा मुख कहीए रे ॥ पारस० ॥ २ ॥ वदनी
घाट पर एक मंदिर है, श्री सुपार्श्व गुण गहीए रे ।
चार कल्याणक है प्रभुजीका, गगा लहिरां लहीए रे ।
पारस० ॥ ३ ॥ कोश सात पर चंद्रपुरी है, चंदा प्रभु
पद पहीए रे ॥ कल्याणक चारौं जनहुका, यात्रा कर
नकु जइए रे ॥ पारस० ॥ ४ ॥ कोश तीन पर सिंह
पुरी है, श्री श्रेयांस प्रभु कहीए रे ॥ च्यवन जनम
दीक्षा केवलकी, रचना बहुविध लहीए रे ॥ पारस० ॥
५ ॥ चारौं जिनका सोल कल्याणक, दर्शने चित्त ठर
इए रे ॥ जनम सफल भयो यात्रा करनसे, विनय
नमत सुख पइए रे ॥ पारस० ॥ ६ ॥

॥ श्री पावापुरीनु स्तवन ॥

॥ पावापुरीमें वीर जिनेश्वर, मुक्ते गये वंदो भवि
चरना ॥ पावा० ॥ ए आंकणी ॥ जल मदिरमे चरण
पुरातन, समवसरण रचना दिल ठरना ॥ पावा० ॥
॥ जलकी लहेर कमल शीतलता, नाग फीरत जनं
नहीं डरना ॥ पावा० ॥ २ ॥ मदिर और बगीचामें है
२२ प्रभु मुद्रा दर्शन भव तरना ॥ जमणी बाजु सन्मुख

वेदी पर, प्रभुपदका नित्य पूजन करना ॥ पावा० ॥ ३ ॥ देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमणकी, मूर्त्ति गणधरजीका चरना ॥ दादाजी थूलिभद्र मुनिका, मंदिर चिहुं दिशि पातक हरना ॥ पावा० ॥ ४ ॥ धर्मशालाकी रचना सुंदर, देख तही दिल आनंद करना ॥ कल्याणक भूमि फरशनथें, दर्शन पूजन शिवसुख वरना ॥ पावा० ॥ ५ ॥ भगणीश एकादश वदि, फागुन पंचमीके दिन दर्शन करना ॥ यात्रा सफल भइ सबहुंकी, विनय नमत प्रभुके नित्य चरना ॥ पावा० ॥ ६ ॥

॥ श्री संखेश्वर पार्श्वनाथनुं स्तवन ॥

॥ मंगलकारी श्री संखेश्वर पार्श्वनाथ जग जयवंता, विघ्ननिवारक भवनिधितारक जय जय शिवकर भगवंता ॥ मंगल० ॥ १ ॥ जादवकुलनी जरा निवारी न्हवण नीरथी सुखकंदा, मंत्र महा नवकार सुणावी करयो धरणपति मुखचंदा ॥ मंगल० ॥ २ ॥ ध्याइए निशदिन निर्मल तुम नाम शांति सुख देनारा, हाथ जोडी संगाथ नाथजी विनवीए दुःख दलनार ॥ मंगल० ॥ ३ ॥ चरण शरण भय मरण निहंता करण कोड कल्याण तणुं, भव्य नाथ मम हाथ ग्रहीने करो दास अरदास भणुं

॥ मंगल० ॥ ४ ॥ अमृत सम अम पर तम ठाया नवे
नव होजो सुखकारी, रत्न रमणता करता एक दि
शिव लक्ष्मी ठे वरनारी ॥ मंगल० ॥ ५ ॥

॥ श्री भोयणी तीर्थनु स्तवन ॥

॥ राग वनजारो ॥

॥ प्रभु मल्लिनाथ सुखकारी, समरुं दिल हर्ष वधारी
॥ श्री भोयणी तीर्थ विराजे, सहु विघ्न विदारण काजे
॥ प्रगट्या महिमा अवतारी ॥ प्रभु मल्लि० ॥ १ ॥ सहु
अंग उमंग धरीने, करे यात्रा मोह हरीने, जय जय
सुमंगलकारी ॥ प्रभु मल्लि० ॥ २ ॥ मनमोहन मूरत
तारी, देखी हरखे दिल भारी, दिलथी नहीं दूर थनारी
॥ प्रभु मल्लि० ॥ ३ ॥ तुम नाम सदा हुं ध्यावु, शिव
संपद अक्षय पावुं, प्रभु अरज सुणो आ मारी ॥ प्रभु
मल्लि० ॥ ४ ॥ जगतारक नाम धरावो, मोहरायने आ
हरावो, करुं वदन वार हजारी ॥ प्रभु मल्लि० ॥ ५ ॥
मम मन मंदिरमां वसजो, प्रभु मुजथी दूर न खसजो
आपो रत्नत्रयी जयकारी ॥ प्रभु मल्लि० ॥ ६ ॥



॥ अथ श्री वृद्धचैत्यवंदन प्रारंभ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ केवलनाणी श्री निरवाणी, सागर महाजस विमल ते जाणो ॥ सर्वानुभूति श्रीधर गुणखाणी, दत्त दामो दर वंदुं प्राणी ॥ १ ॥ सुतेज स्वामी मुनिसुव्रत जाणी, सुमतिने शिवगति पंचमनाणी ॥ अस्तांग नेमीसर अनिल ते जाणी, यशोधर सेवो मन मांहि आणी ॥ २ ॥ कृतारथ जपतां नवि होय हाणी, धर्मीसर पाम्या शिवपुर राणी ॥ शुद्ध मति शिवकर स्यंदन राणी, संप्रतिना गुण गाये इंद्राणी ॥ ३ ॥ वाचक मूला कहे जगते जाणी, स्तवन भणो जिम थाउं नाणी ॥ ए चोवीशी नित्य नित्य गाणी, मुक्ति तणां सुख जिम ल्यो ताणी ॥४॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ आदि अजितज रे, संभव अभिनंदन भणुं ॥ श्री सुमतिज रे, पद्मप्रभजीना गुण थुणुं ॥ श्री सुपारस रे, चंद्रप्रभ जग जाणीए ॥ सुविधि शीतल रे, श्रेयांस हरखे वखाणीए ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ वखाणीए श्री वासुपूज्य, विमल अनंत धर्म शांति ए ॥ कुंथु अर मल्लि मुनि-सुव्रत, नमि नेम ध्याउं चित्त ए ॥ शूर धीर पार्श्व वीर,

वर्तमाने जिनवरा ॥ करजोडी वाचक भणे मूला, स्वामी सेवक सुखकरा ॥ ९ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ पद्मनाभ सूरदेव, सुपार्श्व स्वयप्रभ होइ ॥ सर्वानुभूति देवसुत, उदय पेढालज जोइ ॥ १ ॥ पोटिल सत्कीर्ति, मुनिसुव्रत अमम निःकषाय ॥ निपुलायक निर्मम, चित्रगुप्ति वंदुं पाय ॥ २ ॥ समाधि सुसवर यशोधर विजय मल्लि देव ॥ अनंतवीरज भद्रकृत, तेहनी कीजे सेव ॥ ३ ॥ अनागत जिनवर, होशे तेहनां नाम ॥ भणे वाचक मूला, तेहने करुं प्रणाम ॥ ४ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ महाविदेह पंच मझार, प्रत्येके जिन चार ॥ सीमंधर जुगमधर, बाहु सुबाहु अ सुखकार ॥ १ ॥ सुजात स्वयप्रभ स्वामी, रुषभानन लेहु नामी ॥ अनंतवीरज देव, सूर प्रभु करु अ सेव ॥ २ ॥ विशाल वज्रंधर साहु, चद्रानन चंद्रबाहु ॥ भुजंग ईश्वर गाउं, नेमि प्रभु चित्त ए लाउं ॥ ३ ॥ वीरसेन महाभद्र वंदुं, देवजसा दीठे आनंदु ॥ अजितवीरिय वदन, शाश्वता रुषभ चंद्रानन ॥ ४ ॥ वर्द्धमान वारिषेण ईश. ए हुवा जिन चोवीश

॥ एवा छन्नुं ए जिनवर, वाचक मूला कहे सुखकर ॥ ५ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ हवे पायाले लोक मज्ञा, जिहां असुरकुमार ॥ लाख चोसठ जिनभुवन अछे, तिहां करुं जुहार ॥ १ ॥ नागकुमार मांहि कह्यां, तिहां लाख चोराशी ॥ एतां जिनहर तिहां नमुं, थाउं समकितवासी ॥ २ ॥ सोवन-कुमार मज्ञ लाख, बहुंतेर प्रासाद ॥ छन्नुं लाख वायु मज्ञ, सुणीए सुरनाद ॥ ३ ॥ दीपकुमार दिशाकुमार, वली उदधिकुमार ॥ विद्युत् स्तनितकुमार अने, वली अग्निकुमार ॥ ४ ॥ ए छए स्थानक जाणीए, प्रत्येके जिनहर ॥ छहुंतेर छहुंतेर लाख तिहां, नवियण जिन सुखकर ॥ ५ ॥ एवंकारे सवि मली, बहुंतेर तिहां लाख ॥ सात कोमी जिनहर नमुं, श्री जिनवर नाख ॥ ६ ॥ लाख सात नेव्याशी कोमी, अने तेरसें कोमी ॥ जिन-पमिमा श्री जिन तणी, वंदुं बे कर जोमी ॥ ७ ॥ असंख्या व्यंतर जोइषी, असंख्यां जिनहर ॥ असंख्य पमिमा जिन तणी, नमीए नहीं डुर्गतिमर ॥ ८ ॥ वाचक मूला कहे देव, दीउं सुमति सदा मुज ॥ जिन-वचने हुं लीन थइ, गाउं जिनजी तुज ॥ ९ ॥

॥ ढाल ७ही ॥

॥ सोहम ईशान सनत्कुमार ए, माहिंद बंभ रे लांतक सार ए ॥ त्रुटक ॥ सार शुक्र अने सहसारह, आनत प्राणत आरण ॥ अच्युत नवग्रैवेयक त्रिक तिहां, पंच अनुत्तर तारण ॥ अनुक्रमे प्रासाद कहीए, लाख सहस शत संख्या ॥ बत्रीश अठावीश बारह, अठ चउ लख अरकया ॥ १ ॥ चाल ॥ पन्नास चालीश ठ सहस जिन-हरा, दो दो दोढज दोढज सतवरा ॥ त्रुटक ॥ वरा सत्तवर इग्यारोत्तर, सत्योतर सो जाणीए ॥ एकसो उपर पच अनुत्तर, अनुक्रमे वखाणीए ॥ सर्वे मली जिनहर जिन हर, लाख चोराशी साख ए ॥ सहस सत्ताणुं आगलां, तिहां वीश ने त्रण लाख ए ॥ २ ॥ चाल ॥ एकसो कोमी रे, बावन कोमी ए ॥ लाख चोराणुं रे, सख्या जोमीए ॥ त्रुटक ॥ जोमीए चोसठ सहस एकसो, चालीशे तिहां आगली ॥ जिनप्रासाद एकसो असिअ लेखे, वंदु प्रतिमा उज्जली ॥ चैत्य संख्या ऊर्ध्व लोके, वीर वचन विख्यात ए ॥ वाचक मूला कहे जाणजो, स्तवन ए परजात ए ॥ ३ ॥



॥ ढाल सातमी ॥

॥ वेयढगिरि सितिर शय जिनहर, वृषधरनां तिहां त्रीशजी ॥ कुरुद्रुमनां दश जिनहर बोल्या, गजदंते तिहां वीशजी ॥ १ ॥ असिअ ते जिनहर कुरुद्रुम परिधे, असिअ वखारे जाणुंजी ॥ मेरु तणां पंचाशी जिनहर, इखुकारे चार वखाणुं जी ॥ २ ॥ मानुषोत्तर पर्वत ति ां चारज, नंदीसरनां वीशजी ॥ कुंमल रुचक तिहां चार चार जिनहर, ऋषभादिक तिहां ईशजी ॥ ३ ॥ पंच सया इग्यारे अधिकां, जिनहर तीछें लोकेजी ॥ पमिमा एकसठ सहस चारसें, बोली सघले थोकेजी ॥४॥ अधो ऊर्ध्व ने तीछें लोके, सवे मली कोमी आठे- जी ॥ लाख बप्पन ने सहस सत्ताणुं, पणसय चोत्रीश पाठेजी ॥ ५ ॥ जिनपमिमा पन्नरसें कोमी, बेंतालीश वली कोमीजी॥ लाख पंचावन सहस पणवीस, पणसय चालीश जोमीजी ॥ ६ ॥ एतां स्तवन नणे जे नावे, प्रह उगमते सूरेजी ॥ वाचक सूला कहे गुण गातां, डुर्गति नासे दूरेजी ॥ ७ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ अठावय समेतशिखर गिरि ॥ साजनजीअ ॥ रेवत गिरि सित्तुंज ॥ गजपद धम्म चक्क कहुं ॥ सा० ॥

वैभारगिरि उत्तंग ॥ १ ॥ रावते कुजरावते ॥ सा० ॥ तिहुअण गिरि ग्वालेर ॥ काशी अवंती जाणीए ॥ सा० ॥ नागोर जेसलमेर ॥ २ ॥ सोरिपुर हत्थिणाउरे ॥ सा० ॥ अवल इरावण पास ॥ पीरोजीपुरे जूअरू भलो ॥ सा० ॥ फलोधि पूरे आश ॥ ३ ॥ विकानेर ने मेरूते ॥ सा० ॥ सीरोही आवुशृग ॥ राणकपुर ने सादरी ॥ सा० ॥ वरकाणे मनरग ॥ ४ ॥ जिन्नमाल ने कोटडे ॥ सा० ॥ वाहरूमेर मोझार ॥ रायधणपुर रलियामणु ॥ सा० ॥ शांतिनाथ दयोड जुहार ॥ ५ ॥ साचोर जालोर राऊद्रे ॥ सा० ॥ गोरूीपुर वर पास ॥ पाटण अमदा-वाद वली ॥ सा० ॥ सखेसर दीजे वास ॥ ६ ॥ अमी-ऊरे नवपल्लवे ॥ सा० ॥ नव खंरू थलाद्रे ठाम ॥ तारंगे वुरहानपुरे ॥ सा० ॥ वंदुं माणक शाम ॥ ७ ॥ खंभा-यत ने तारापुरे ॥ सा० ॥ मातर ने गंधार ॥ लोऊण चिंतामणि वरु ॥ सा० ॥ सुरत रूनोड जुहार ॥ ८ ॥ देवक पाटण देवगिरि ॥ सा० ॥ नवेनगर वंदी जोय ॥ दीवादिक सवि वदरे ॥ सा० ॥ अंतरिक सिरिपुर होय ॥ ए ॥ वरूनगर ने ऊंगरपुरे ॥ सा० ॥ ऊर मालव देश ॥ कल्याणक जिहां जिन तणां ॥ सा० ॥

मन सूधे प्रणमेश ॥ १० ॥ गाम नगर पुर पाटणे ॥ सा० ॥ जिनमूरति जिहां होय ॥ वाचक मूला कहे मुझ ॥ सा० ॥ वंदतां शिवसुख होय ॥ ११ ॥ कलश॥ ठन्नुंए जिनवर ठन्नुंए जिनवर ॥ अधो ऊर्ध्व ने लोक तीर्छे जाणुं ए ॥ सासय असासय जिनपडिमा, ते सवे वखाणुं ए ॥ गह्व विधिपक्ष पूज्य परगट, श्री धर्म-मूर्त्ति सूरींदु ए ॥ वाचक मूला कहे जणतां, ऋद्धि वृद्धि आणंदु ए ॥ १२ ॥

॥ इति वृद्धचैत्यवंदनं संपूर्णम् ॥



॥ श्री कच्छ केवलनाणी ॥

॥ मंगलाचरण ॥

॥ अरज करुं आनंदथी, जय जय जग कर्तार ॥
" लखम " विनंति आ समे, उर धारो सुखकार ॥

॥ गीति ॥

॥श्री मल्लि जिनवरने, पाये लागी प्रगट करुं कवित॥
करुणा मुज पर करजो, जेथी प्रसरे काव्य तणी रवित॥

॥ कच्छ देशे आवेल जैन चैत्योनी केवलनाणी ॥

॥ दक्षिण भरते कुकण देशे॥ साजीनजीअ ॥ मुंबइ बंदर कहेवाय ॥ जिनमंदिर जिहां घणां ॥ साजीनजीअ ॥ वंदुं वारंवार ॥ १ ॥ कच्छ देशे शोभता ॥ साजीनजीअ ॥ सुथरीअ कीधो वास ॥ आशा सहुनी पूरवे ॥ साजीनजीअ ॥ गरतकल्लोरू जिन पास ॥ २ ॥ साहेरो कोठारो वराडीउं ॥ साजीनजीअ ॥ सांधाण शांति जुहार ॥ सांधव परजाउ वारापद्धर ॥ साजीन जीअ ॥ वांकुअ अजित जुहार ॥ ३ ॥ अरखाणु रायर सिंधोडी ॥ साजीनजीअ ॥ राणपुर लाला जुहार ॥ जसापुर जखो बंदर ॥ साजीनजीअ ॥ वंदुं वीर जिणंद

॥ ४ ॥ वरूसर शुजापुर बांधीउं ॥ साजीनजीअ ॥ तेरा नलीआ मुजार ॥ चंद्रप्रभु अति दीपता ॥ साजीन-जीअ ॥ वंदुं वंदुं वारंवार ॥ ५ ॥ मंजल विथोण अंगीउं नखत्राणुं ॥ साजीनजीअ ॥ माकपट परगणुं कहेवाय ॥ गढसीसो ने कोटडो ॥ साजीनजीअ ॥ देवपुर देव जुहार ॥ ६ ॥ राधणजर ने कोटडी ॥ साजीनजीअ ॥ नागरचो चीआसर गाम ॥ वंढी नाणपुर डुमरो ॥ साजीनजीअ ॥ मोरीमंजल आदि जुहार ॥ ७ ॥ वढ लठेरी बाहाडो ॥ साजीनजीअ ॥ नींयसरा लायजो गाम ॥ देढीआ बायेट हालापुर ॥ साजीनजीअ ॥ साभराइ नोजाय गाम ॥ ८ ॥ नानुं मोटो रतडीउं ॥ साजीनजीअ उंनडोट गोधरो गाम ॥ सेडी दोण मेराओ ॥ साजीनजीअ ॥ नवेवास संति जुहार ॥ ए ॥ रायण कोडाय नागलपुर ॥ साजीनजीअ ॥ मांडवी चैत्य पांच जुहार ॥ गाम गुंदीआरी तणुंआणुं ॥ साजीनजीअ ॥ आसंबीउं ने वाहु ठे गाम ॥ १० ॥ वीदडा जाडीआ कांडाकाहा ॥ साजीनजीअ ॥ नानी मोटी खाखर जुहार ॥ भुजपुर त्रेगडी देशलपुर ॥ साजीनजीअ ॥ मुंनरा नगर जुहार ॥ ११ ॥ गोएर बारइ लुणी बसरो

॥ साजीनजीश्र ॥ वांकी पत्री वराको ठे गाम ॥ टुंढा नविनार कपाइउं ॥ साजीनजीश्र ॥ जदरा नगरी मुजार ॥ १२ ॥ वावन जिनालय दीपतां ॥ साजीनजीश्र ॥ वदु वंदु वीर जिणंद ॥ जुश्रकदगाकुं कुंथ्रोडी ॥ साजीनजीश्र ॥ श्रंजार डुधइ गाम ॥ १३ ॥ जचाउ चोवारीउं जीसरो ॥ साजीनजीश्र ॥ गरपातर धमकको गाम ॥ किकीश्राशर नगर रव वकुतरो ॥ साजीनजीश्र ॥ जगी जरक चीरुकीउं गाम ॥ १४ ॥ गीकी सणुउं उमइयो ॥ साजीनजीश्र ॥ रापर फतेगढ गाम ॥ तुणा जीमाशर श्रादेशर ॥ साजीनजीश्र ॥ सांतलपुर वेलो ठे गाम ॥ १५ ॥ प्रांसुउं ने गांगोधर ॥ साजीनजीश्र ॥ चीत्रोरु मुनफरो गाम ॥ वांढीउं वेध वखाणीए ॥ साजीनजीश्र ॥ कानमेर श्राधोइ गाम ॥ १६ ॥ वेज पासर श्रंवेकी कटारीउं ॥ साजीनजीश्र ॥ सिकारपुर लाककीउं गाम ॥ जुज मानकुउं वेराजो ॥ साजीनजीश्र ॥ पुनकी तुवकी चुनकी ठे गाम ॥ १७ मुखा फराग्रीउं रामाणीउं ॥ साजनजीश्र ॥ जट्ट नयुसानी कदेवाय ॥ संख्या स्रोनी जाणीए ॥ साजीनजीश्र ॥ उपर वत्रीश गाम ॥ १८ ॥ गाम नगर पुर पाटणे ॥ साजीनजीश्र ॥ जिन-

मूरति जिहां होय ॥ उत्तमसागर कहे पूज ॥ साजी-
नजीच ॥ वंदतां शिवसुख होय ॥ १७ ॥ कलश ॥
ढन्नुंच जिनवर ढन्नुंच जिनवर, अधो ऊर्ध्व ने लोक
तीहाँ जाणीए ॥ सासय असासय जिनपडिमा, ते सवे
वखाणीए ॥ १ गछ विधिपक्ष पूज्य प्रकट, ज्ञानदान
मुणंदु ए ॥ वाचक मूला कहे जणतां, रिद्धि वृद्धि
आणंदु ए ॥ २ ॥ इति कच्छदेशनी तीर्थमाला संपूर्ण ॥

॥ श्री शामला पार्श्वनाथजीना देरासरनुं वर्णन ॥

॥ त्रोटक छंद ॥

॥ सुखदाइ सवाइ शहेर जणुं, मही मंमण कछ नूमि
तणुं ॥ शाहुकार श्रीमंत जनो बहुला, नव यौवन नारी
घणी चपला ॥ जिनमंदिर सुंदर शोजी रह्यां, सुरलोकथी
लावी विमान ग्रह्मां ॥ नव रंगीत पंच सुवर्णमयी, बहु
बारी ऊरुख गवाक्ष सइ ॥ चीतरेल मनोहर शिल्प
जने, नर नारी जनावर पक्षी अने ॥ सुर किंनर दानव
नागीनका, जुवना सुर वंतर ज्योतिष्का ॥ वली साथ
साहेली टोली मली, गुण गाय जिनेश्वरना विमली ॥
सुरी किंनरी खेचरी प्रकृति, बहु नृत्ये सुगीत मुखे
स्तवती ॥ धरी जेरी पखाज मृदंग बहु, सरणाइ सतारथी

गाय सहु ॥ गणी कोण शके गुण तेह तणा, जली जातीं जूली रहे जणतां ॥ जइ तेरा नगरे शुज जाव धरी, चरणांबुज वंदन हर्ष करी ॥ प्रजु पार्श्व जिनेश्वर शामलीआ, निरखत मुज पाप सवे टलीआं ॥ करजोमी लखमशी वदे मुखथी, तुम मुक्त करो मुजने डुःखथी ॥ सुख शांति करो पूरी ताप हरो, बल बुद्धि पराक्रमवान करो ॥

॥ अथ श्री महावीरस्वामीना पाच कल्याणकनु
चोढालीयु मारभ ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रेमे प्रणमुं सरस्वती, मागुं अविचल वाणी ॥ वीर तणा गुण गायशुं, पंच कल्याणिक जाणी ॥ १ ॥ गुण गातां जिनजी तणा, लहीए जवनो पार॥ सुख समाधी होये जीवने, सुणजो सहु नर नार ॥ २ ॥

॥ राम शु जो-ए देशी ॥

॥ जंबुद्वीपना जरतमां जो ॥ रुडुं माहणकुंम ठे गाम जो ॥ ऋषजदत्त माहण तिहां वसे जो, तस नारी देवानंद नाम जो ॥ १ ॥ चरित्र सुणो जिनजी तणां जो ॥ ए आंकणी ॥ जेम समकित

निर्मल थाय जो, अष्ट महासिद्धि संपजे जो ॥ वली पातक दूर पलाय जो ॥ च० ॥ २ ॥ उजली छठ-आषाढनी जो, योगे उत्तराफाल्गुनी सार जो ॥ पुष्पोत्तर सुविमानथी जो, चवी कुखे लीयो अवतार जो ॥ च० ॥ ३ ॥ देवानंदा तेणी रयणीए जो, सुतां सुपन लह्यां दश चार जो ॥ फल पूछे निज कंथने जो, कहे रुषन्नदत्त मन धारजो ॥ च० ॥ ४ ॥ न्नोग अरथ सुख पामशुं जो, तमे लहेशो पुत्ररतन जो ॥ देवानंदा ते सांन्नली जो, कीधुं मनमां तहत्ति वचन जो ॥ च० ॥ ५ ॥ सांसारिक सुख न्नोगवे जो, सुणो अचरिज हुउं तिणी वार जो ॥ सुधर्म इंद्र तिहांकणे जो, जोइ अवधि तणे अनुसार जो ॥ च० ॥ ६ ॥ चरम जिणेसर उपना जो, देखी हरख्यो इंद्र महाराज जो ॥ सात आठ पग साहमो जइ जो, एम वंदन करे शुन्न साज जो ॥ च० ॥ ७ ॥ शक्रस्तव विधिशुं करी जो, फरी बेठो सिंहासन जाम जो ॥ च० ॥ मन विमासणमां पड्युं जो, चित्त चिंतवे सुरपति जाम जो ॥ च० ॥ ८ ॥ जिन चक्री हरि रामजी जो, अंत पंत माहणकुले जोय जो ॥ आव्या नहीं नहीं आवशे जो, ए तो उग्र न्नोग

राजकुले होय जो ॥ च० ॥ ए ॥ अंतिम जिणेसर आवीया जो, ए तो माहणकुलमां जेण जो ॥ ए तो अछेराभूत छे जो, थयुं हुंमा अवसर्पिणीमां तेण जो ॥ च० ॥ १० ॥ काल अनंत जाते थके जो, एहवा दश अछेर थाय जो ॥ इण अवसर्पिणीमां थया जो, ते कहीए जे चित्त लाय जो ॥ च० ॥ ११ ॥ गर्नहरण उपसर्गनो जो, मूलरूपे आव्या रवि चंद जो ॥ निष्फल देशना जे थइ जो, गयो सौधर्मे चमरेंद्र जी ॥ च० ॥ १२ ॥ ए श्री वीरनी वारमां जो, कृष्ण अमरकका गया जाण जो ॥ नेमनाथने वारे सही जो, स्त्रीतीर्थ मल्लि गुणखाण जो ॥ च० ॥ १३ ॥ एकसो आठ सिद्धा उपजने जो, वारे सुविधिने असंयती जो ॥ शीतलनाथ वारे थयुं जो, कुल हरिवंशनी उत्पत्ती जो ॥ च० ॥ १४ ॥ एम विचार करे इंदलोजी, प्रजु नीच कुले अवतार जो ॥ तेहनुं कारण शुं अछे जो, इम चिंतवे हृदय मकार जो ॥ च० ॥ १५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ आसो मासे शरद पूनमनी रात जो—ए देशी ॥

॥ नव मोटा कहीए प्रजुना सत्यावीश जो, मरिची
२४ त्रिदंमी ते मांहे त्रीजे नवे रे जो ॥ तिहां नरत चक्री·

सर वांदे आवी जोय जो, कुलनो मद करी नीच गो· त्र बांध्युं तेहवे रे जो ॥ १ ॥ ए तो माहणकुलमां आव्या जिनवर देव जो, अति अणजुगतुं एह थयुं थाशे नहीं रे जो ॥ जे जिनवर चक्री नीच कुल मांहे जो, ठे माहरो आचार धरुं उत्तम कुले सही रे जो ॥ २ ॥ एम चिंतवी तेड्यो हरिणगमेषी देव जो, कहे माहणकुंडे जइने ए कारज करो रे जो ॥ ठे देवानंदानी कुखे चरम जिणंद जो, हर्ष धरीय प्रजुने तिहांथी संहरो रे जो ॥ ३ ॥ नयर क्त्रिकुंम राय सिद्धारथ गेह जो, त्रिशला राणी तेहनी ठे रूपे जली रे जो ॥ तस कुखे जइ संक्रमावो प्रजुने आज जो, त्रिशलानो जे गर्ज अठे ते माहणकुले रे जो ॥ ४ ॥ जेम इंद्रे कह्युं तेम कीधुं त· त्क्षण तेण जो, ब्याशी रातने अंतरे प्रजुने संहरया रे जो ॥ माहणी सुपनां जाणे त्रिशला हरी लीधने जो, त्रिशला देखी चौद सुपन मनमां धरयां रे जो ॥ ५ ॥ गज वृषज अने सिंह लक्ष्मी फूलनी माल जो, चंदो सूरज ध्वज कुंज पद्म सरोवरु रे जो ॥ सागर ने देवविमानज रत्ननी राशि जो, चौदमे सुपने देखी हरखी अग्नि मनोहरु रे जो ॥ ६ ॥ शुज सुहणां देखी हरखी

त्रिशला नार जो, पश्चाते उठीने पियु आगल कहे रे जो ॥ ते सांभली दिलमां राय सिद्धारथ नेह जो, सुपनपाठक तेडीने पूछे फल लहे रे जो ॥ ७ ॥ तुम होशे राज अरथ ने सुत सुख भोग जो, सुणी त्रिशला-देवी सुखे गर्भ पोषण करे रे जो ॥ तव माता हेते प्रभुजी रह्या संलीन जो, ते जाणीने त्रिशला दुःख दिलमां धरे रे जो ॥ ८ ॥ मे कीधां पाप अघोर भवो-भव जेह जो, दैव अटारो दोषी देखी नवि शके रे जो ॥ मुज गर्भ हरयो जे किम पामुं हवे तेह जो, रांक तणे घेर रत्न चिंतामणि किम टके रे जो ॥ ९ ॥ प्रभु-जीए जाणी ततखिण दुःखनी वात जो, मोह विटंबन जालिम जगमां जे लहुं रे जो ॥ जुओ अदीठा पण एवमो जागे मोह जो, नजरे वांध्या प्रेमनु कारण शुं कहुं रे जो ॥ १० ॥ प्रभु गर्भ थकी हवे अभिग्रह लीधो एह जो, मातपिता जीवतां संयम लेशुं नहीं रे जो ॥ एम करुणा आणी तुरत हलाव्यु अंग जो, माताने मन उपन्यो हर्ष घणो सही रे जो ॥ ११ ॥ अहो भाग्य अमारुं जाग्युं सहीयर आज जो, गर्भ अमारो हाल्यो सहु चिंता गइ रे जो ॥ एम सुखभर रहेतां पूरण हुवा

नव मास जो, ते उपर वली साडीसात रयणी थइ रे जो ॥ १२ ॥ तव चैत्र तणी सुदि तेरस उत्तरा रिख जो, जन्म्या श्री जिन वीर हुइ वधामणी रे जो ॥ सहु धरणी विकसी जगमां थयो प्रकाश जो, सुर नरपति घर वृष्टि करे सोवन तणी रे जो ॥ १३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ माहरी सही रे समाणी–ए देशी ॥

॥ जनम समय श्री वीरनो जाणी, आवी छप्पन कुमारी रे ॥ जगजीवन जिनजी ॥ जनम महोत्सव करी गीतज गाये, प्रभुजीनी जाउं बलिहारी रे ॥ ज० ॥ १ ॥ ततक्षण इंद्र सिंहासन हाल्युं, घोषे घंटा वजडावी रे ॥ ज० ॥ मलीया कोडी सुरासुर देवा, मेरु पर्वते आवी रे ॥ ज० ॥ २ ॥ इंद्रो पंच रूपे प्रभुजीने, सुरगिरि उपर लावे रे ॥ ज० ॥ यत्न करी हैडामां राखे, प्रभुने शीश नमावे रे ॥ ज० ॥ ३ ॥ एक कोडी साठ लाख कलशला, निर्मल नीरे भरीया रे ॥ ज० ॥ नाहनो बालक ए किम सहेशे, इंद्रे संशय धरीया रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ अतुलीबल जिन अवधे जोइ, मेरु अंगुठे चंप्यो रे ॥ ज० ॥ पृथ्वी हालकलोल थइ तव, धरणीधर तिहां

कर्यो रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ जिननुं वल देखीने सुरपति, जक्ति करीने खमावे रे ॥ ज० ॥ चार वृषजनां रूप धरीने, जिनवरने नवरावे रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ अमृत अंगुठे थापीने, माता पासे मेले रे ॥ ज० ॥ देव सहु नंदीसर जाये, आवतां पातक ठेले रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ हवे प्रजाते सिद्धारथ राजा, अति घणा उंबव मंमावे रे ॥ ज० ॥ चकले चकले नाच करावे, जगतनां दाण ठंमावे रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ वारमे दिवसे सज्जन संतोषी, नाम दीधुं वर्द्धमान रे ॥ ज० ॥ अनुक्रमे वधतां आठ वरसना, हुआ श्री वर्द्धमान रे ॥ ज० ॥ ए ॥ एक दिन प्रजुजी रमवा चाल्या, तेवतेवमा संघाती रे ॥ ज० ॥ इंद्रमुखे परशंसा निसुणी, आव्यो सुर मिथ्याती रे ॥ ज० ॥ १० ॥ पन्नगरूपे काडे वलग्यो, प्रजुजीए नाख्यो काली रे ॥ ज० ॥ तारू समान वली रूप कीधु, मुठीए नाख्यो उठाली रे ॥ ज० ॥ ११ ॥ चरणे नमीने खमावे सुर, नाम धरे महावीर रे ॥ ज० ॥ जेहवा तुमने इंद्रे वखाएया, तेहवो ठो प्रजु धीर रे ॥ ज० ॥ १२ ॥ मातपिता निशाले जणवा, मूके वालक जाणी रे ॥ ज० ॥ इन्द्र आवी तिहां प्रश्नज पूठे, प्रजु कहे अर्थ वखाणी रे ॥ ज० ॥ १३ ॥

जोबन वय जाणी प्रभु परण्या, नारी यशोदा नामे रे ॥ ज० ॥ अठ्यावीशमे वरसे प्रभुनां, मातपिता स्वर्ग पामे रे ॥ ज० ॥ १४ ॥ भाइजीनो आग्रह जाणी, दोय वरस घरवासी रे ॥ ज० ॥ तेहवे-लोकांतिक सुर बोले, प्रभु कहो धर्म प्रकाशी रे ॥ ज० ॥ १५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ तारे माथे पंचरंगी पाग सोनानो छोगलो मारुजी--ए देशी ॥

॥ प्रभु आपे वरसी दान भलुं रवि उगते ॥ जिन-वरजी ॥ एक कोडी ने आठ लाख सोनैया दिन प्रते ॥ जि० ॥ मागशिर वदि दशमी उत्तरा योगे मन धरी ॥ जि० ॥ भाइनी अनुमति मागीने दीक्षा वरी ॥ जि० ॥ १ ॥ तेह दिवस थकी चउनाणी प्रभुजी थया ॥ जि० ॥ साधिक एक वरस ते चीवर-धारी प्रभुजी ॥ जि० ॥ पछी दीधुं वंभणट बे वार खंडोखंडे करी ॥ जि० ॥ प्रभु विहार करे एकाकी अभिग्रह चित्त धरी ॥ जि० ॥ २ ॥ साडाबार वर्षमां घोर परिषह जे सह्या ॥ जि० ॥ शूलपाणि ने संगम देव गोशालाना कह्या ॥ जि० ॥ चंडकोशी ने गो-वाले खीर रांधी पग उपरे ॥ जि० ॥ काने खीला

खोस्या ते दुष्ट सहु प्रभु उद्धरे ॥ जि० ॥ ३ ॥ लेइ अमदना बाकला चदनबाला तारीया ॥ जि० ॥ प्रभु परउपकारी सुख दुःख सम धारीयां ॥ जि० । ठमासी बे ने नव चोमासी कहीए रे ॥ जि० । अढीमास त्रिमास दोढ मास ए बे बे लहीए रे ॥ जि० ॥ ४ ॥ पट्ट कीधा बे बेमास प्रभु सोहामणा ॥ जि० ॥ बार मास ने पख्क बहोतेर ते रलियामणा ॥ जि० ॥ ठठ बस उंगणत्रीश बार अठम बखाणीए ॥ जि० ॥ नद्रादिक प्रतिमा दिने बे चौदश जाणीए ॥ जि० ॥ ५ ॥ साकाबार वर्ष तप कीधां विण पाणीए ॥ जि० ॥ पारणां त्रणसे उंगणपचास जाणीए ॥ जि० ॥ तव कर्म खपावी ध्यान शुक्ल मन ध्यावता ॥ जि० ॥ वैशाख सुदि दशमी उत्तरा योगे सोहावता ॥ जि० ॥ ६ ॥ शाली वृक्ष तले प्रभु पाम्या केवलनाण रे ॥ जि० ॥ लोकालोक तणा परकाशी थयो प्रभु जाण रे ॥ जि० ॥ इन्द्रनूति प्रमुख प्रतिबोधी गणधर कीध रे ॥ जि० ॥ संघथापना करीने धर्मनी देशना दीध रे ॥ जि० ॥ ७ ॥ चौद सहस नला अणगार प्रभुने शोजता।

॥ जि० ॥ वली साध्वी सहस छत्रीश कही निलोंनता ॥ जि० ॥ उंगणसाठ सहस एक लाख ते श्रावक संपदा ॥ जि० ॥ तीन लाख ने सहस अढार ते श्राविका संपदा ॥ जि० ॥ ७ ॥ चौदपूर्वधारी त्रणसें संख्या जाणीए ॥ जि० ॥ तेरसें उहिनाणी सातसें केवली वखाणीए ॥ जि० ॥ लब्धिधारी सातसें विपुलमति वली पांचसें ॥ जि० ॥ वली चारसें वादी ते प्रभुजी पासे वसे ॥ जि० ॥ ए ॥ शिष्य सातसें ने वली चौदसें साध्वी सिद्ध थयां ॥ जि० ॥ ए प्रभुजीनो परिवार कहेतां मन गहगह्यां ॥ जि० ॥ प्रभुजीए त्रीश वरस घरवासे भोगव्यां ॥ जि० छद्मस्थपणामां बार वरस ते भोगव्यां ॥ जि० ॥ १० ॥ त्रीश वरस केवल बहेंतालीश वरस संजमपणुं ॥ जि० ॥ संपूरण बहोंतेर वरस आयु श्री वीर तणुं ॥ जि० ॥ दीवाली दिवसे स्वाति नक्षत्र सोहंकरु ॥ जि० ॥ मध्य राते मुक्ति पोहोता प्रभुजी मनोहरु ॥ जि० ॥ ११ ॥ ए पांच कल्याणक चोवीशमा जिनवर तणां ॥ जि० ॥ ते भणतां गणतां हरख होये मनमां घणा ॥ जि० ॥ जिन शासननायक त्रिशला सुत चित्त रंजणो ॥ जि० ॥ भवियणने शिवसुखकारी भवभय भंजणो ॥ जि० ॥ १२ ॥

॥ कलश ॥

॥ जयवर जिनवर संघ सुखकर, थुएयो अति उत्सुक धरी ॥ संवत् सत्तर एकाशीए, सुरत चोमासु करी । श्री सहजसुंदर तणो सेवक, जक्तिशुं एणी परे कहे । प्रजुजीशुं पूरण प्रेम राख्यो, नित्य लाज वंछित लहे ॥१३॥

॥ कच्छनी प्रसिद्ध प्रतिष्ठानु चोढालीयु ॥

॥ दोहरा ॥

॥ कुंकण देश सोहामणो, ममाइ बंदर धाम ॥ अनंतनाथजीना देहरे, मांमवी बदर साम ॥ १ ॥ संघ चतुर जिहां शोजीए, तिहां परम निधान ॥ दशा उसवाल कुले प्रगटीयो, सवा नेणशी काम ॥ २ ॥ वेलजी मालु मांहे दीपता, केशवजी नायक सुजाण ॥ संघ मली तिहां सामटो, वरतावी जिन आण ॥ ३ ॥ जात्राए जावे सहु रीऊशु, वाजित्रनो नहीं पार ॥ घेला पदमशी शुज सेवतां, हियडे हरख अपार ॥ ४ ॥ संवत् उगणीसें अढारमां, मागशिर सुदि एकादशी वार ॥ जगद्गुरु दिन सोहावीया, घोघा बंदिर मोऊार ॥ ५ ॥

॥ श्री अरिहंतपद ध्याइए—ए देशी ॥

५ ॥ नवखंमाजी जुहारीए, जात्रा कीधी मनोहार ल

लना ॥ पुन्य पसायथी पामीए, अधिकी उमेद अपार ललना ॥ नव० ॥ १ ॥ शामली मूरत सुहामणी, झलके केवल ज्योत ललना ॥ परचो पूरे पासजी, आतमनो आधार ललना ॥ नव० ॥ २ ॥ कामकाज सवि मेलीयां, कीधो परउपकार ललना ॥ जगति जात्रशुं जे कीजे, शिवगतिनो विसराम ललना ॥ नव० ॥ ३ ॥ पहेली जात्रा तिहां कीधी, बीजी जावनगर मझार ललना ॥ गोमीपास जिन वंदीए, पातीक दूर पलाय ललना ॥ पास जिनेशर वंदीए ॥ ४ ॥ तव तिहांथी चालीया, जेटवा शेत्रंजा राय ललना ॥ स्नात्रपूजा जे करे, शुद्ध स्वरूप नीहाल ललना ॥ पास० ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शेत्रुंजो सुहामणो, मरुदेवीनो नंद ॥ युगला-धर्म निवारतो, नमो नमो युगादि जिणंद ॥ १ ॥ संघ सामैयां सारां कर्यां, वाजित्र सब सोहाय ॥ गीत गावे गुणवंतनां, जाइ तलेटी समुदाय ॥ २ ॥ संसारे जमतां थकां, गयो एले अवतार ॥ मानवजव जो पामीए, जाउं शेत्रुंजे सुपसाय ॥ ३ ॥ श्रावककुले अवतर्यां, पाम्यो सर्वेथी सार ॥ आतिमरूप नीहालतां, वधते मंगलमाल ॥ ४ ॥

॥ धन धन ते जग प्राणीया मनमोहन मेरे--ए देशी ॥

॥ शेत्रुजो सोहामणो ए भेटया आदेसर दयाल मनमोहन मेरे ॥ १ ॥ चउमुख चार दिशे जलो ॥ मन ॥ नव टुके नीहाल ॥ मन० ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र भल ॥ मन० ॥ त्रिहुं वंदना सार ॥ मन० ॥ २ ॥ शिवपुरम वासो वसे ॥ मन० ॥ उमेद अधिक अपार ॥ मन० कामकाज सवि फल्यां ॥ मन० ॥ दरिसण देख्या आर ॥ मन० ॥ ३ ॥ साहमीवछल तिहां कर्यां ॥ मन० दीधां साधुने दान ॥ मन० ॥ जात्रा नवाणुं जे करे ॥ मन० ॥ धन्य ते नर ने नार ॥ मन० ॥ ४ ॥ पंचम काले पामवो ॥ मन० ॥ एहवा प्रभुनो दीदार ॥ मन ॥ सर्व तीर्थथी छे वडो ॥ मन० ॥ शिवगतिनो वि सराम ॥ मन० ॥ ५ ॥

॥ दुहा ॥

॥ सिद्धाचल सहु भेटीया, भाव धरी भरपूर ॥ आ वशे आशाए बहु, मन वचन करी शुद्ध ॥ १ ॥ त तिहांथी चालीया, सोरठ देश मझार ॥ राजकोट आवे तिहा, कीधो आगम विस्तार ॥ २ ॥ आडंबर कीधं

बहु, रचना बहु रसाल ॥ अधिकी उपमा ते कहुं, मन-
मां करी विशाल ॥ ३ ॥ धर्म करे धनवंत ते, देखी
देख्या करे शाल ॥ अवसर ते जाणजो, नाखे
तव ते सार ॥ ४ ॥

॥ सांभलो शेठजी विनति रे ॥ ए देशी ॥

॥ कछ देश सुहामणो रे लाल, सरव मांहे सार ॥
मन मोह्यु रे ॥ धनवंत वसे तिहां रे लाल, श्रावकनो
परिवार ॥ मन० ॥ कछ० ॥ १ ॥ परउपगारी तिहां
हुआ रे लाल, भद्रेसर पाटण ॥ मन० ॥ जगडुसा
लासा तिहां हुआ रे लाल, दीधां जगतने दान ॥ मन०
॥ कछ० ॥ २ ॥ तव श्रावक तिहां ते हवा रे लाल,
धनवंत धर्मी कहेवाय ॥ मन० ॥ पुण्यपसायथी पामी-
या रे लाल, खरचे धन अपार ॥ मन० ॥ कछ० ॥ ३ ॥
प्रेमे प्रतिष्ठा जे करे रे लाल, आव्या मोरवी मझार ॥
मन० ॥ जगतिभावशुं भेटीया रे लाल, फले मनोरथ
सर्व ॥ मन० ॥ कछ० ॥ ४ ॥ संघनी शोभा सारी कहुं
रे लाल, वजर वाजित्र रसाल ॥ मन० ॥ जुगति जोवा
जेवी करी रे लाल, भली भेट ॥ मन० ॥ कछ० ॥ ५ ॥

॥ दुहा ॥

॥ सकारपुर बहु शोभतो, ऊंपतो अधिक अपार
चली जातशुं भेटवा, आव्या अंजार मोझार ॥ १
जिम जोइए तिम शोभीयो, श्रावकनो परिवार ॥ ॰
एकसो दोय, उपसंख्या कीधी मनोहार ॥ २ ॥ ह
हियडा मांहे घणो, करवां धरमनां काज ॥
अधिको ओपतो, कोइ करी परिणाम ॥ ३ ॥

॥ ज्ञान आगल सुदर दीवो रे मनमोहन सुदर मेला—ए देशी

॥ आव्या कोठारा नगर मझार, वाजित्र वली स
॥ रचना रची अपार रे, मलीया माणस बहु सार रे
मनमोहन सुंदर मेलो ॥ हरख हिये सहुने घणो रे
मन० ॥ ह० ॥ १ ॥ देश देश ककोतरी जावे, ह॰
सहु ते आवे ॥ मननी मोजे सुख सहु पावे, ज॰
जश सहु गावे रे ॥ मन० ॥ हरख० ॥ २ ॥ आठ
ओछव मंडावे, मांडवामां सघ सुहावे ॥ जगति भ
जात करावे, तीकमजी वेलजी तवन केवरावे रे
मन० ॥ हरख० ॥ ३ ॥ गच्छ अचल सागरशुं भरी
रतनसागर सूरि ज्ञाननो दरीयो ॥ सर्व साधु संघे
रिवारे परिवरीयो, हरख हियडे मनने धरीयो रे

मन० ॥ हरख० ॥ ४ ॥ गजपुरी नगरीमें ताजा, विश्वसेन महाराजा ॥ अचिरा माताए हुलराव्या, शांतिनाथ तिहां पधराव्या रे ॥ मन० ॥ हरख० ॥ ५ ॥ एक लाख वरस आयु प्रमाणे, धनुष चालीशनुं मान ॥ मृगलंछन मानुं ज्ञान, प्रभु पधरावी दीधां दान रे ॥ मन० ॥ हरख० ॥ ६ ॥ सावग ज्ञारानो देहरो कीधो, शिखर चढावीने जश लीधो ॥ जिम कल्पतरुनी परे ध्वज रोप्यो, महा सुदि तेरस वार बुध सिध्यो रे ॥ मन० ॥ हरख० ॥ ७ ॥ देहरानी मांरूणी सारी लागी, नवानगरथी प्यारी ॥ अधिक उपमा रसाली, जिन देखी तिम लागे प्यारी रे ॥ मन० ॥ हरख० ॥ ८ ॥ सामीवच्छल करीयां सारां, श्रीसंघने लागे प्यारां ॥ चतुर्विध संघ हरखाया, उंगणीश अढार महा सुद तेरस वारा रे ॥ मन० ॥ हरख० ॥ ९ ॥

॥ कलश ॥

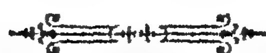
॥ गायो गायो रे शांति तणो गुण गायो, घर घर उंछव अधिक मंमाव्यो, संघ सकल हरखायो रे ॥ शांति तणो गुण गायो ॥ १ ॥ कछ देश कोठारा नगरमें प्रतिष्ठाज्ञाव बनायो, अचल गछ अधिक उपायो, रतनसागर

सूरि कहाव्यो रे ॥ शांति० ॥ २ ॥ घर घर थाल पायो, पांच हजार ते परमाणो, तीकमज वेलजी यो रे ॥ शांति० ॥ ३ ॥ जाचक जनने गुण व. दान अधिको देवराव्यो, मनमां ध्यावे शिवरामपद जिम जगमां जश गवरावे रे ॥ शांति० ॥ ४ ॥

॥ इति चौढालीयुं स्तवन संपूर्ण ॥



॥ षष्ठ खंड ॥



॥ उपदेशात्मक पदोनी रसमय चुंटणी ॥

॥ संसारनी असारता विषे ॥

॥ जपती प्रीतमनी जपमाल--ए राग ॥

॥ आहा आ संसार असार जीव तुं जो विचारी, आधि व्याधि उपाधि अहोनिश जारी ॥ जारी जन्म जरा ने मरण जवारी ॥ आहा० ॥ १ ॥

॥ साखी ॥

॥ रोम रोम व्यापी रह्या, रोग असंख्य प्रकार ॥ पलमां प्रगटे परवशे, पड्यो करे पोकार ॥ ज्ञानी ले आतम अलगी, काया आ करमे वलगी ॥ वलगी कष्ट सहे मन मानी मारी ॥ आहा० ॥ २ ॥

॥ साखी ॥

॥ काम क्रोध मोह मान मद, लोभ जुठ व्यभिचार ॥ हिंसा परिग्रहमां पडी, लहे भव अटवी पार ॥ तन धन धरणी परणी, काजे करजे ए करणी ॥ करणी तेवी पार उतरणी तारी ॥ आहा० ॥ ३ ॥

॥ साखी ॥

॥ वीतराग वैराग्यधर, वीर वचन अनुसार ॥

मोहजाल सूकी परी, निर्मोही शणगार ॥ ८। .२।
क्षयो कर्म करी लहे, लहे आनदघन पद ।• ‒।
॥ आहा० ॥ ४ ॥

॥ आशा ॥

॥ आशा ओरनकी क्या कीजे, ज्ञान सुधारस पी
॥ आशा० नटके द्वार द्वार लोकनके, कूकर ‒ ।
धारी ॥ आतम अनुनव रसके रसीया, उतरे न च
खुमारी ॥ आशा० ॥ १ ॥ आशा दासीके जे जाये,
जन जगके दासा ॥ आशा दासी करे जे नायक,
यक अनुनव प्यासा ॥ आशा० ॥ २ ॥ मनसा ।
प्रेम मसाला, ब्रह्म अग्नि परजाली ॥ तन नाठी
टाइ पीये कस, जागे अनुनव लाली ॥ आशा० ॥ ३
अगम पीयाला पीयो मतवाला, चिह्नी अध्यातम
सा ॥ आनंदघन चेतन वै खेले, देखे लोक तमासा
आशा० ॥ ४ ॥

॥ जमनो झपाटो ॥

॥ जम दे नित्य ऊपाटा रे, कोइ चेतनहारा चेतो
हारे कोइ० ॥ जम० ॥ ठी, ठी, ठी, ठी, दांत काढे
पलमा बगडे पीठी ॥ दीठी दीठी घणानी

चरूप आवी गइ चोठी ॥ जम० ॥ १ ॥ मात पिता जाणे सुत मारो, थाये दिन दिन मोटो ॥ मोत नजीक आवे छे एक दिन, खेल थशे जाइ खोटो ॥ जम० ॥ २ ॥ बंधु जाणे बंधव मारो, जीवे जुग जुग जोडी ॥ काल अचानक आवी पकडशे, तरत नाखशे तोडी ॥ जम० ॥ ३ ॥ सोल अंग शणगार सजीने, रोवड सासु रीझे ॥ एक दी लाल वेरागण बनशुं, वेश बदलवो बीजो ॥ जम० ॥ ४ ॥ दर्पण लइ शुं मुखडुं देखो, समजो जमनी सहेजमां ॥ एक दी करशे काग कोलाहल, चरूप सुवाडे चेहमां ॥ जम० ॥ ५ ॥ दारा पुत्र परिवार तजीने, जावुं मिल्कत मेली ॥ रुषिराज जिनराज विना नथी, कोइ खरेखर बेली ॥ जम० ॥ ६ ॥

॥ अमे अपरपद पाम्या ॥

॥ अब हम अमर भये न मरेंगे ॥ अब० ॥ या कारण मिथ्यात दीयो तज, क्युं कर देह धरेंगे ॥ अब० ॥ १ ॥ राग द्वेष जग बंध करत है, इनको नाश करेंगे ॥ मर्यो अनंत कालतें प्राणी, सो हम काल हरेंगे ॥ अब० ॥ २ ॥ देह विनाशी हुं अविनाशी, अपनी गति पकरेंगे ॥ नासी जासी अम थिर वासी, चोखे व्हैं

निखरेंगे ॥ अब० ॥३॥ मर्यों अनंत वार विन . ~
अब सुख दुःख विसरेंगे ॥ आनंदघन निपट
अक्षर दो, नहीं समरे सो मरेंगे ॥ अब० ॥ ४ ॥

॥ आत्मजागृति भावनो उपदेश ॥

॥ कुलणा छंद ॥

॥ जाग रे आतमा जाग रे आतमा, मोहनी व
चोर लुटे ॥ चित्त दाग अने विषयनी वासना, ' र
शत्रुओ खूब कुटे ॥ जाग० ॥ १ ॥ वृत्ति बाहिर वहे ~
आठे पहे, आत्मा भ्रान्तिथी भान भूल्यो ॥ क्रोध
मानथी लोभ माया थकी, लक्ष चोराशीमां खूब झु-
॥ जाग० ॥ २ ॥ पामी मानवपणु पुण्य उत्कृ~
मुक्ति साधन अरे तें विसार्यु ॥ खूब अपकृत्यथी
गारु भर्यु, जावुं नरकमां केम धार्यु ॥ जाग० ॥ ३
श्वास उच्छ्वासथी जीव आयु घटे, खबर नहीं ~
केम थाशे ॥ कालनु कृत्य ते आ क्षणे कीजीए, ध
थी आ भवाब्धि तराशे ॥ जाग० ॥ ४ ॥ कोटी
आवशे नहीं कदि साथमां, पाप ने पुण्य साथेज
॥ दान करजे सदा धर्म वाटे मुदा, दानथी त
मोक्ष पावे ॥ जाग० ॥ ५ ॥ स्मरण कर देवनु र .

दीननुं, साधुनां दर्शने पुण्य थावे ॥ साधु दर्शन थकी साधु वंदन थकी, कोटी भवनां कर्यां पाप जावे ॥ जाग० ॥ ६ ॥ साधुना संगथी आतमा जागतो, तीर्थ जंगम मुनि भव्य सेवो ॥ तीर्थ जंगम मुनि कल्पवेली अहो, पुष्करावर्तना मेघ जेवो ॥ जाग० ॥ ७ ॥ साधी ले सिद्धने धर्म व्यवहारथी, भक्ति उत्साहथी यत्न धारो ॥ धर्मकरणी करी फोक थावे नहीं, धर्मथी आवशे दुःख आरो ॥ जाग० ॥ ८ ॥ ऊंघ त्यागी अहो देह देवल विषे, शुद्ध चेतन प्रभुने जगाडो ॥ बुद्धिसागर सदा भावना मोगरी, स्मरणनो घंट हेते वगाडो ॥ जाग० ॥ ए ॥

॥ घडीना नवनवा रंग ॥

॥ गझल ॥

॥ घडीमां सुख आवे छे, घडीमां दुःख आवे छे ॥ घडीमां चित्त चकडोले, घडीमां तत्त्व तो खोले ॥ १ ॥ घडीमां ज्ञाननी वातो, घडीमां शोकनी वातो ॥ घडीमां प्रेमना प्याला, घडीमां शोकनी ज्वाला ॥ २ ॥ घडीमां लागतुं मीठुं, घडीमां थाय नहीं दीठुं ॥ घडीमां चित्त आणंदे, घडीमां चित्तकुं फंदे ॥ ३ ॥ घडीमां

क्रोधनी माया, घमीमां ध्याननी छाया ॥ घमीमां ५५
ननी वेला, घमीमां मित्रना मेला ॥ ४ ॥ घमीमां ५
घुलधाणी, घमीमां थाय गुणखाणी ॥ घमीमां थाय
सारुं, घमीमां थाय अंधारुं ॥ ५ ॥ घमीमां अन्न ने पाणि
घमीनी वात नहीं जाणी ॥ घमीमां चित्तने वार्म
घमीमां वेसवा गामी ॥ ६ ॥ घमीमां रकनी वेला, ५
मीमां होय वगडेला ॥ घमीमां चित्त हमकायुं, घमी
चित्त छे माहुं ॥ ७ ॥ घमीमां तत्वनी वातो, घमी
गुरूनी लातो ॥ घमीमां थाय अणधारयु, जीवन
जाग छे हारयुं ॥ ८ ॥ घमीमां चित्त दिलगीरी, ;
मां वात अणधीरी ॥ घमीमां वात छे खोटी, घमी
वात बहु मोटी ॥ ९ ॥ घमीमां रंग छे न्यारा, समज
दिलमां प्यारा ॥ घमीना रंगमां गोटा, घमीना ..
छोटा ॥ १० ॥ घमीमां ज्ञाननी वाजी, घमीमां रक
काजी ॥ बुद्धिविध ध्यानमां धीरा, विवेके
णजो वीरा ॥ ११ ॥

॥ मिथ्या गर्व ॥

॥ कीस पर मान गुमान करीने, एक प्रभुजीको ००
न धरीजे ॥ जोवन जोर मायाके नीशेमे, भूल गये

पुरु एक पलसें ॥ की० ॥ १ ॥ क्रोध कूपमें पमके गी-
मारा, एक उपाय न शोधुं तुमारा ॥ की० ॥ २ ॥ लोन्न
ठुगाइसें मोह पायके, व्होत डुःखी हुर्व नरक जायके
॥ की० ॥ ३ ॥ पांच मित्रके फंदमें पमके, वारंवार तुं
न्नक्रु जमीके ॥ की० ॥ ४ ॥ इनकुं रोक तुम ध्यान
लगावो, अजर अमर सुख सहेजे पावो ॥ की०
॥ ५ ॥ जिनदासकी आश पूरीने, जैन प्रकाशक
गुण गाइजे ॥ की० ॥ ६ ॥

॥ अंते एकला जवुं छे ॥

॥ जावुं छे एकला चाली, खंखेरी हायने खाली ॥
जावुं० ॥ ठाली माथाकुट ठाली ठगारो, मोज रह्यो
जोइ म्हाली ॥ घाली वेग वरवेला गुमानी, जमका
जाशे जाली रे ॥ जावुं० ॥ १ ॥ जावुं अचानक अथिर
आ थानक, तोय रह्यो धुल घाली ॥ काची काया तारी
काचनो कुंपो, मुठ मरकमां ठाली रे ॥ जावुं० ॥ २ ॥
जाण जुवानी जोर आ तारुं, जाय पाणीपूर चाली ॥
जरा आवीने जुतीयां वाग्यां, तुतीयां म कर खाली रे
॥ जावुं० ॥ ३ ॥ जुठी माया तने मीठी लागे पण,
वेवड दीधो वाली ॥ घेरी लीधो तने गढमां घेला,

घाणीमां दीधो घाली रे ॥ जावुं० ॥ ४ ॥ मानवजन्म
अकारथ लीधो, दीधो दाटज वाली ॥ अत समे सं
वैभव फोकट, वीरनी ले रखवाली रे ॥ जावुं० ॥ ५

॥ मिथ्या ससार ॥

॥ काम छे दुष्ट विकारी–ए राग ॥

॥ दोलत दुनिया हारी, जावुं जीव दोलत दुनिय
हारी ॥ जनम्यो ते जवानो नक्की (२) कोइ रह्यु नहं
जारी ॥ जावुं० ॥ १ ॥ पलनी खबर नही प्राणीने, काव
भमे शिर माली ॥ जावु० ॥ २ ॥ पांडव कौरव राम
गजानन, कस गयो रे मोरारी ॥ जावु० ॥ ३ ॥ रावण
योद्धो रणमां हार्यो, कीधी कष्ट पथारी ॥ जावुं० ॥ ४
सत्यवादी हरिश्चंद्र गया, वली हाकेम ने अधिकारी
जावुं० ॥ ५ ॥ वीर गया ने धीर गया कोइ, असं
गया निरधारी ॥ जावु० ॥ ६ ॥ महामल्ल योद्धा न
पाम्या, रणमां यश विस्तारी ॥ जावु० ॥ ७ ॥ चक्रव
निज वैभव मूकी, चाल्या एकला हारी ॥ जावुं० ॥
॥ मात पिता सुत नोतम नारी, प्रीत पदाकमा विसा
॥ जावु० ॥ ए ॥ पाप पुण्यनी पालो वांधी. जाय र
लक जो विचारी ॥ जावु ॥ १० ॥ पाप प्रयोगे पु

वधारी, अधिक करी रखवाली ॥ जावुं० ॥ ११ ॥ कोडी एक न साथे आवे, हस्त चोर जनारी ॥ जावुं० ॥ १२ ॥ अंत समे सौ वैभव फोकट, सत्य धर्म सुखकारी ॥ जावुं० ॥ १३ ॥ सांकलचंद सदा प्रभु ध्याने, दुर्गति दूर निवारी ॥ जावुं० ॥ १४ ॥

॥ मोह निद्रामांथी जागो ॥

॥ राग—आशावरी ॥

॥ अवधू खोली नयन अब जोवो, द्रिग मुद्रित कहा सोवो ॥ अवधू० ॥ मोहनिंद सोवत तुं खोया, सरवस माल अपाणा ॥ पंच चोर अजहुं तोय लूंटत, तास मरम नहीं जाण्या ॥ अवधू० ॥ १ ॥ मली चार चंडाल चोकडी, मंत्री नाम धराया ॥ पाइ केफ पीयाला तोहे, सकल मुलक ठग खाया ॥ अवधू० ॥ २ ॥ शत्रुराय महाबल जोद्धा, निज निज सैन्य सजाये ॥ गुणठाणेमें बांध मोरचे, घेरया तुम पुर आये ॥ अवधू० ॥ ३ ॥ परमादी तुं होय पियारे, परवशता दुःख पावे ॥ गया राजपुर सारथ सेंती, फिर पाछा घर आवे ॥ अवधू० ॥ ४ ॥ सांभली वचन विवेक मित्तका, छिनमें निज दल जोड्या ॥ चिदानंद एसी रमत रमतां, ब्रह्म वंका गढ तोड्या ॥ अवधू० ॥ ५ ॥

॥ जगतमा तारु कोइ नथी ॥

॥ नथी जगतमां साथ संबंधी, विना जिनेश्व नाथ ॥ शु फोकट फांफां मारे मूरखका, जरे आवर्य वाथ ॥ कमलपत्र पर जलबिंदुने, सुकातां शी वार । श्रावणनी जल जरी वादलीओ, विखरातां शी वार । जीवतर समजवुं तेवु, आखर नही लेवुं देवु ॥ जीव जवु ठे खाली हाथ, अंतमां पाप पुण्य संगाथ ॥ कांइ सागी–पथी जीव पामी गयो, नरजव नगर बजार । सोदागर समजी जइ, करो पुण्य वेपार ॥ जीव जवु ठे खाली हाथ, अंतमां पाप पुण्य संगाथ ॥ कां० ॥

॥ स्वप्न सम ससार ॥

॥ आ स्वप्न सम ससार, समजो लोयोने शाणा ॥ डुर्लज मानव अवतार, अवनी माहि ठे शाणा ॥ बाल-पणुं रमतां शुमावे, जुवानीमां लंपटपणु जावे ॥ वृद्ध-पणाए जीव लोजे तणाये, रटे नही कीरतार रे ॥ आ० ॥ मरण श्वास जब चालु थाये, कुत्य कुरु नजरे जराये ॥ पीमाय जारे पस्ताय पापी त्यारे, आंसु वहे चोधार रे ॥ आ० ॥

॥ जीवने शिखामण ॥

॥ चेतावुं चेती लेजे रे—ए राग ॥

॥ जीवलडा झटपट जावुं रे, खटपट लटपटमां शुं
[illegible]झुज्यो ॥ मोह माया मांहि मलकातां, शिवपंथ पुर
[illegible]न सुज्यो ॥ जीव० ॥ १ ॥ मस्तानो थइ मगरुरीमां,
[illegible]भूली करे भडाको ॥ खचित आउखुं तुटी जातां, थाशे
[illegible]धड धडाको ॥ जीव० ॥ २ ॥ वांकं वाका लाले लाता,
[illegible]गाले गाला आवो ॥ वाल तडाका गपगडाका, मारो
[illegible]नहीं पण फावो ॥ जीव० ॥ ३ ॥ वात वातमां लडी
[illegible]मडीने, धर्मधमा बहु करशो ॥ उचालो अणधार्यो
[illegible]तरशो, काम कदि नहीं करशो ॥ जीव० ॥ ४ ॥ गपा-
[illegible]सपां नात जातमां, झगडामां जकडाशो ॥ प्राण पलकमां
[illegible]डता रहेशे, खतां दुःखनां खाशो ॥ जीव० ॥ ५ ॥
[illegible]गोटी झालो कुतर पालो, हसता हसता चालो ॥ एक
[illegible]दिन झाचुं फाटी जाशे, परभव पंथ न झालो ॥ जीव०
[illegible]॥ ६ ॥ पहेरो पाघडी पाए घडीनी, मरडी मुछो म्हालो
[illegible]॥ वणी ठणीने अंते मरवुं, गाठ पडी रहे ठालो ॥
[illegible]जीव० ॥ ७ ॥ छेलछबीला शाह ने शाणा, पण अंते गभ-
[illegible]राणा ॥ प्रभु भज्या विण पार न पाम्या, पाप करम

पमाणा ॥ जीव० ॥ ८ ॥ लाख चोराशी जटको जारी ए तो नर ने नारी ॥ बुद्धिसागर अवसर पामी, धर्म करो सुखकारी ॥ जीव० ॥ ९ ॥

॥ मृत्यु ॥

॥ अरे जीव पामर पंखी रे, माथे मृत्यु बाज छे मोटो ॥ गफलतमां गमगीन बन्याथी, वळे घरीमां गोटो ॥ अरे० ॥ १ ॥ रूप दर्शने रूपे झटपट, वार न लागे झाझी ॥ रमत गमतनो रंग वगाडे, वगडी जावे बाजी ॥ अरे० ॥ २ ॥ राजन साजन माजन मोटा, मृत्यु आगल छोटा ॥ जलजला पण उड्या जागी, खेल थइ गया खोटा ॥ अरे० ॥ ३ ॥ फक्कड थइने अक्कड चाले, मारग सीधो झाली ॥ काल पकडशे वज्र पेटीमां, पेसो जो पाताले ॥ अरे० ॥ ४ ॥ जेनी हाके धरणी धुजे, ते पण उड्या चाली ॥ माटी काया माटी मांहि, खट-पट विशे खाली ॥ अरे० ॥ ५ ॥ जाणो गणो पण अंते जय छे, आंख मीचारो ऊंडी ॥ काया वाडी करमाशे कट, कपट कला सहु कुडी ॥ अरे ॥ ६ ॥ मुसाफर तें मान मानवी, सगां न साथे आवे ॥ करशो ते भोगवशो जवमा, करयां कर्म सहु पावे ॥ अरे० ॥ ७ ॥ आगामां

भ्रमथी अथडावुं, भ्रांतिमां जरमावुं ॥ जीवन सघळु हारी जावुं, पाप पाश पकडावुं ॥ अरे० ॥ ८ ॥ विषयवासना विष छे व्हालुं, आशानुं अजवाळुं ॥ मान मूरख खोटुं ते सहु, ठाम रहे सहु ठालुं ॥ अरे० ॥ ९ ॥ करो व्यापारो भले हजारो, सत्तामां देखाता ॥ करो नोकरी हाजी हा करी, सद्दामां छे वहा ॥ अरे० ॥ १० ॥ करो कर्म पण शर्म न छेवट, मुक्तिमार्ग झट झालो ॥ बुद्धिसागर अवसर पामी, समता सुखमां म्हालो॥अरे०॥११॥

॥ मने आ संसारमां सगां संबंधीथी खरी शांति जणाती नथी ॥

॥ गझल ॥

॥ सगांछे! स्वार्थ ज्यांसुधी, मरता त्यां लगी मित्र ॥ अशक्त त्यां लगी पुत्रो, कुटुंबी स्वार्थना माटे ॥ उपरनो प्रेम ललनानो, प्रिया ए स्वार्थ ज्यांसुधी ॥ उपरनो व्हाल देखाडे, विपत्तिमां नथी कोइ ॥ अशाता उदये सघला, अरे शाता उदय सबला ॥ अरे शाता अशातामां, वखतना रंग बेरंगी ॥ अरे जे स्वार्थना साधु, उपरथी प्रेम देखाडे ॥ विपत्ति वेळा नथी भेला, जरा नहीं ओळखे त्यारे ॥ थयो पंखी तणो मेळो, सहु निज

मार्गने लेशे ॥ मलीने भिन्न ज्यां थावुं, घणा मेला थय एवा ॥ जगतमां बाह्य दृष्टिए, कर्या मेला अनंता रे। मल्यो नहीं शांतिनो ठेरो, अरे रे ऊांऊवा जलमां। समज ऊ जीव मारा रे, गणी सहु खेलने जूठा ॥ सहजनी शांति परखी ले, सदानी एह शोधी ले ॥ उपाधि दुःखनी क्यारी, उपायो जो करे कोटे ॥ तथापि दुःख देखाशे, उपाधि सग ठेरी दे ॥ अहीं तुसारनी पेठे अरे आशातणां बिंदु ॥ पलकमा सर्व चल थाशे, फना सहु देखतां थाशे ॥ मधुबिंदु समा सुखडां, भविष्ये दुःख देनारां ॥ समज नक्की खरुं दिलमां, सुधारी ले जीवन सारु ॥ मने भासे जगत् स्वप्नु, हवे ए दृष्टिनो साक्षी ॥ नथी ए दृष्टिनो दृष्टा, तटस्थत्व हवे सहुमां ॥ खरो निश्चय थयो मुजने, फरे नहीं ध्रुवनी पेठे ॥ विचारीशु सुधारीशुं, अहींशु मुक्ति निसरणी ॥ मने मारो मल्यो दीवो, सकल ज्यां भासता तेऊे ॥ बुद्ध्यब्धि साध्य साधीशुं, अहींने साधनो सघलां ॥

॥ तृष्णानी विचित्रता ॥

॥ एक गरीबनी वधती गयेली तृष्णा ॥

॥ मनहर छंद ॥

॥ हती दीनताइ त्यारे ताकी पटेलाइ अने, मळ

पटेलाइ त्यारे ताकी छे शेठाइने ॥ सांपडी शेठाइ त्यारे ताकी मंत्रिताइ अने, आवी मंत्रिताइ त्यारे ताकी नृपताइने ॥ मली नृपताइ त्यारे ताकी देवताइने, दीठी देवताइ त्यारे ताकी शंकराइने ॥ कहे सेवक मानो मानो शंकराइ मली, वधे तृष्णाइ तोय जाय न मराइने ॥ १ ॥ करोचली पडी दाढी डाचा तणो दाट वाल्यो, काली केशपटी विषे श्वेतता छवाइ गइ ॥ सुंघवुं सांभलवुं ने देखवुं ते मांडी वाल्युं, तेम दांतआवली ते खरी के खवाइ गइ ॥ वली केड वांकी हाड गयां अंग रंग गयो, उठवानी आय जतां लाकडी लेवाइ गइ ॥ कहे सेवक एम युवानी हराइ पण, मनथी न तोय रांड ममता मराइ गइ. ॥ २ ॥ करोडोना करजना शिर पर डंका वागे, रोगथी रुंधाइ गयुं शरीर सुकाइने ॥ पुरपति पण माथे पीडवाने ताकी रह्यो, पेट तणी वेठ पण शके न पूराइने ॥ पितृ अने परणी मचावे अनेक धंध, पुत्र पुत्री खाउं खाउं दुःख दाइने ॥ कहे सेवक तोय जीव डावादावा करे, जंजाल छंडाय नहीं तजी तृष्णाइने ॥ ३ ॥ थइ क्षीण नाडी अचानक जेवो रह्यो पडी, जीवन दीपक पाम्यो केवल झंखाइने ॥ छेली डसे पड्यो जाली

जाइए त्यां एम जाण्युं, हवे टाढी माटी थाय ते तो ठीक जाइने ॥ हाथने हलावी त्यां तो खीजी बुदे सूचव्युं ए, बोल्या विना वेस वाल तारी चतुराइने ॥ कहे सेवक देखो देखो आसपास केवो, जतां गइ नही कोशे ममता मराइने ॥ ४ ॥

॥ प्रभुपूजा प्रत्ये मनने उपदेश ॥

॥ हे मनवा ! कां चकडोले चडाव ! सत्पथ मारे साधवो, शिव प्रीति साधन थाय ॥ साध्य दृष्टिमां आवतुं, जावारोग्य थवाय ॥ हे मनवा० ॥ १ ॥ पूजा प्रीतिरूप छे, प्रीतिरूप अनेक ॥ दर्शन नाम नमन स्तुति, ध्यान मग्नता छेक ॥ हे मनवा० ॥ २ ॥ प्रीतिमां जन जे वसे, प्रीति पात्र समान ॥ मनवा कां प्रीति करे ? विषय अचूक निदान ॥ हे मनवा० ॥ ३ ॥ धाव धाव करतो फरे, पवन थकी वधी जाय ॥ ध्याने करी स्थिरता तु था, ध्येयात्मानी सहाय ॥ हे मनवा० ॥ ४ ॥ बंध मोक्ष हेतु थइ, नव कर कुव्यवहार ॥ जाव सन्निपातथी, मुक्त दशा अवधार ॥ हे मनवा० ॥ ५ ॥ कूडी जगनी वासना, था तु तेथी खिन्न ॥ आत्म धर्म अवलोकीने, जिन परमात्मा लीन ॥ हे मनवा० ॥ ६ ॥

॥ दुनियानी जूठी बाजी ॥

॥ चेतनजी चेतो जूठी आ दुनियानी बाजी, रह्यो शुं तेमां राची माची रे ॥ चेतनजी० ॥ १ ॥ अज्ञाने अंध थइ जोयुं न जीवडा, अंते तो कांइ नथी तारुं ॥ हसता हें हें करतां हो मानवी, फाटी जोशे तारुं मांचुं रे ॥ चेतनजी० ॥ २ ॥ महेल बनाया बाग बनाया, लक्ष्मीना थोका गणाया ॥ एक दिन अणधार्यो उठीश देहथी, कोइ न जाणे क्यां जाया रे ॥ चेतनजी० ॥ ३ ॥ मनमां आवे तेवुं मानी ले मानवी, एले जाशे जन्मारो ॥ बुद्धिसागर सदा गुरुजीना शरणे रहीने, आतम झट तारो रे ॥ चेतनजी० ॥ ४ ॥

॥ योवन विषे गझल ॥

॥ योवन धन सब रंग पतंग रे, मत मन मूरख राचो रे (२) प्रातःसमय जो नजरे आवे, मध्य दिने नहीं दीसे रे ॥ खीली गुलाबकली करमाशे, कर्यो विरथा मन हींसे रे ॥ योवन० ॥ १ ॥ पवन झकोरसें बादल वीखरे, युं तुम जीवन नासे रे ॥ वीजलीका चमकारा जेसे, लक्ष्मी लीला जाशे रे ॥ योवन० ॥ २ ॥ वल्लभ संग तरंग सुपनका, चंचल चित्तसें चेतो रे ॥

चक्री इंद्र पुरंदर राजे, नामे निशान न देतो रे ॥ योवन० ॥ ३ ॥ जगमायामें जावीत होके, मत भूलो मतवाले रे ॥ अजर अमर मनमोहन मेरे, सुधारस अनुभव पी ले रे ॥ योवन० ॥ ४ ॥

॥ तृष्णा ॥

॥ राग–आशावरी ॥

॥ अवधू एसो ज्ञान विचारी, वामे कोण पुरुष कोण नारी ॥ अवधू० ॥ बमनके घेर न्हाती धोती, जोगीके घर चेली ॥ कलमा पढ पढ भइ रे तुरकनी तो. आपही आप अकेली ॥ अवधू० ॥ १ ॥ ससरो हमारो बालोभोलो, सासु बालकुंवारी ॥ पीयुजी हमारो पोढे पारणीए तो, में हुं भुलावनहारी ॥ अवधू० ॥ २ ॥ नहीं हुं परणी नहीं हु कुंवारी, पुत्र जणावनहारी ॥ काली दाढीको में कोइ नहीं छोड्यो, हजुए हुं बाल-कुंवारी ॥ अवधू० ॥ ३ ॥ अढीद्वीपमें खाट खटुली, गगन ठंसीकुं तलाइ ॥ धरतीको ठेको आबकी [illegible] तोपण सोभ न जराइ ॥ अवधू० ॥ ४ ॥ [illegible] गोथ्यां वी आनी, वसुधा [illegible] वहोणु वझोवे [illegible] हु साम

नहीं जाउं सासरीये ने नहीं जाउं पीयरीए, पीयुजीकी सोम वीछाइ ॥ आनंदघन कहे सुणो भाइ साधु तो, ज्योतसे ज्योत मिलाइ ॥ अवधू० ॥ ६ ॥

॥ संसारनी आसक्तता ॥

॥ दुःखे चिंतवे मन आदिनाथ, सुखे कोइ ना कदि सांभरे ॥ ए दुःख छे ए सुख छे, ए सत्य नांही कदि करे ॥ दुःखे० ॥ १ ॥ सगांशु सहोदर राचतो, स्वस्त्री संगमां बहु मालतो ॥ स्थिर ना थयो शिवप्रीतिमां, कार्य क्यां थकी तारु सरे ॥ दुःखे० ॥ २ ॥ सुख ज्यां मने मानी लीधुं, ते स्थाननुं स्मरण कीधुं ॥ ए सुख गयुं ने दुःख रहुं, ते सुखार्थ याद प्रभु करे ॥ दुःखे०॥ ३ ॥ आत्मा जडे विलसी रह्यो, आत्मा स्वज्ञान भूली गयो ॥ आसक्तिथी परिबद्ध थइ, नवां रूप लइ शुं अवतरे॥ दुःखे ॥ ४ ॥ आसक्तथी तुं मुक्त था, अनासक्तिमां तुं आसक्त था ॥ ॥ आत्मभाव सर्व जीवो महीं, परमात्म बनी तुं विचरे ॥ दुःखे० ॥ ५ ॥

॥ कालनो झपाटो ॥

॥ जबरो काल झपाटो रे, माथे मरण बीक बे मोटी ॥ जंतर जाणे मंतर जाणे, जाणे तंतर टाला ॥

महोत बन्यो मरदान मर्द ज्यां, झुजी पडे धराला ॥ जवरो० ॥ १ ॥ वैद बोलावो सैद बोलावो, करो उकाला कुटी ॥ खुटी ते तो जरुर खुटी, खुटी तणी नहीं बुटी ॥ जवरो० ॥ २ ॥ जोयरुं खोदो शिखो सरोदो, तत्त्व विचारो ताजां ॥ खाम्यी जेद दहाम्यी उमो पण, वलशे उंधां वाजां ॥ जवरो० ॥ ३ ॥ जोस जुउ निर्दोष जणीने कोश शुकनना काढो ॥ जम किंकरनो अजब ऊपाटो, गजब करे छे गाढो ॥ ॥ जवरो० ॥ ४ ॥ वेश उतारो केश उतारो, देश उतारो दूजे ॥ पकडे आवी मोत पलकमां, जीवलम्यो शु कुजे ॥ जवरो० ॥ ५ ॥ रोटी बदलो, चोटी बदलो, लोटी बदलो लाखो ॥ दरद मरद जे गर्द करी दे, मोत मर्द छे आखो ॥ ॥ जवरो० ॥ ६ ॥ धर्म करो अधर्मने मेली, खांतेथी, ल्यो खेली ॥ ऋषिराज जिनराज विना नथी, कोइ बराबर बेली ॥ जवरो० ॥ ७ ॥

(२)

॥ पकडे काल पलकमां रे, कांइ अजब ऊपाटो आतो ॥ जीव विचारे अन्नेदान थइ, मेदान करीने मालु ॥ काल विचारे खेदान करवा, जोग मले तो झालुं पकडे० ॥ १ ॥ गम्य गम्य गम्य नोबत वाजे, जबरु लश्कर जातुं ॥ खम्यखम्य खम्यखम्य कोल हसे, कोइ जातु माम्य

जातुं ॥ पकडे० ॥ २ ॥ घोडो नाचे वरघोडामां, ऊग-
ऊग ऊलके ऊलो ॥ जोडे जोने जमडा नाचे, लाकडा
शुं फुलो ॥ पकडे० ॥ ३ ॥ नारी सारी घर सूत्र पुत्र दो,
दे जीवडा सारु जाणे ॥ काल विचारे फराल करवा,
त्रास पमाडुं टाणे ॥ पकडे० ॥ ४ ॥ जमादार सरदार
तैयार त्यां, ठडीदार नित्य बोले ॥ अमलदार वलदार
काल तो, गणे तणखला तोले ॥ पकडे० ॥ ५ ॥ रोवड
रीके नंग रंग जोइ, अंग बराबर ढंपे ॥ खलगलक
कुरबान करी दे, काल पलकमां जो कोपे ॥ पकडे० ॥
६ ॥ देह आल पंपाल कालत्रय, शिखामण आ
ठेली ॥ ऋषिराज जिनराज विना, नथी कोइ बराबर
वेली ॥ पकडे० ॥ ७ ॥

॥ दयामय दृष्टिपात ॥

अंतरना काचा केम रह्यो छे कुटी, केम रह्यो छे
कुटी हैयाना फुट्या ॥ केम० ॥ उत्तम अवसर आ मान-
वतन, क्षणमां जाय वछुटी ॥ अंतरना० ॥ १ ॥ खातां
पीतां ने वावरतां, खरची जाशे खुटी ॥ पुन्य कर्मने
काजे दमडी, छेडेथी नहीं छुटी ॥ अंतरना० ॥२॥ काम
क्रोध मद लोभ लूंटारा, धीरज धन ले लुंटी ॥ ऊंडा

छुंडे हाले चटक्यो, तोए न आशा त्रुटी ॥ अंतरना ॥ ३ ॥ काचा कुंभ समान कलेवर, फुलण जाशे फूटी शम दम साधन संप सरलता, चोंपवडे ले चुंटी अंतरना० ॥ ४ ॥ वगमी वाजी वेस वनावा, वीजी क्य छे बुटी ॥ केशव कहे प्रभु नाम सुधारस, घेरो रस ं घुंटी ॥ अंतरना० ॥ ५ ॥

॥ काया मनोहर बंगलो, लूंटाशे तारी मानवी
॥ सध्या समयना रंग जेवी, जीदगींई जाणवी
॥ आशारूपी विषवेलथी, वींटाइ पामर शुं करे
॥ वेला वेलानी छांयमी, पस्तावो पाछल शुं करे

॥ भावी सूचना ॥

॥ राग–देश, ताल–लावणी ॥

॥ चेत तो चेतावु तुने रे, पामर प्राणी ॥ ए टे ॥ तारे हाथे वपराशे, तेटलुंज तारुं थाशे ॥ बीजु त बीजाने जाशे रे ॥ पामर० ॥ १ ॥ सजी घरबार सार तुं कहे छे मारुं मारुं ॥ तेमा नथी कशुं तारुं रे ॥ पामर० ॥ २ ॥ माखीए मधपूडुं कीधु, न खाधु न खाव दीधुं ॥ लूंटनारे लूंटी लीधु, रे ॥ पामर० ॥ ३ ॥ खंखे रीने हाथ खाली, उर्चातु जावु छे चाली ॥ करे माथा

ोरु ठाली रे ॥ पामर० ॥ ४ ॥ साहुकारमां सवायो ॥ नखपतिमां लेवायो ॥ कहे साचुं शुं कमायो रे ॥ पामर० ५ ॥ कमायो तुं माल केवो, आवे तारी साथे एवो अवेज तपास तेवो रे ॥ पामर० ॥६॥ हजी हाथमां बाजी, करतुं प्रभुने राजी ॥ मुकी तारी थाशे ताजी ॥ पामर० ॥ ७ ॥ हाथमांथी वाजी जाशे, पछीथी स्तावो थाशे ॥ कशुं न करी शकाशे रे ॥ पामर० ॥ ॥ हाथमांथी धन खोयुं, धूलथी कपाल धोयुं ॥ जाण-णुं तारु जोयुं रे ॥ पामर ॥ ए ॥ मननो विचार तारो, नमां रही जनारो ॥ वलती न आवे वारो रे ॥ पामर० १० ॥ नीकल्यो शरीरमांथी, पछी तुं मालीक नथी कहे दलपत कथी रे ॥ पामर० ॥ ११ ॥

॥ भूला पडेला मुसाफरने ॥

॥ धीरानी काफी– राग ॥

॥ उं मुसाफर घेला रे, सीधो रस्तो त्याग मां ॥ अरे मूरखा मन मेला रे, अवली वाटे जाग मां ॥ मा-यानी अंधारी बांधी, बन्यो आंधलो बेल ॥ चोर्याशीनी घाणी फेरी, त्यां नीकल्युं तारु तेल ॥ तोय नथी थाक्यो , मध दरियाने ताग मां ॥ उं० ॥ १ ॥ काले कोलीउं

थाये मोहथी, अमर कुमार पूराय ॥ दीपक तेज वि
मोहीने, पतंग भस्म थइ जाय ॥ आ दुनियानी होर्ल
रे, बळलीने पडमां आगमां ॥ ॐ० ॥ २ ॥ पुण्य पूर्वन
प्रबल हतां, ते पाम्यो मानव देह ॥ मोह करोलीयो जा
पाथरी, देशे तुजने छेह ॥ ए वेर तारां जुनां रे, आव्ये
छे आजे लागमां ॥ ॐ० ॥ ३ ॥ नाम तेहनो नाश छे
सहुने शिर अवसान ॥ जाणे जुवे रुवे निरंतर, तोय
न भजे भगवान ॥ मीठाश ते शी लागे रे, भजनथ
अधिक फागमां ॥ ॐ० ॥ ४ ॥ भगवत भजी त्यज म
नगमतां, शु कर विषय विशेष ॥ अत्तर तेल फुले
त्यजने, शी चोपकवी मेश ॥ तजीने मोक्ष मेवारे, ली
बोली खावा लागमां ॥ ॐ० ॥ ५ ॥ मोह माया छे ज
गनी राणी, तेन तारी जाण ॥ पाप प्रपच करे कमाणी
करी खेच ने ताण ॥ चोरी तुं करमां चोट्टा रे, पुद्ग
लना आ बागमां ॥ ॐ० ॥ ६ ॥ पान करीने भक्ति र
सायन, अमर बनी जा वीर ॥ अवर नथी रस ए स
उत्तम, विचार कर करी धीर ॥ विषय त्रिप चुसी रे
हाथेथी मृत्यु माग मां ॥ ॐ० ॥ ७ ॥ हीरा जकि
सुवर्ण दाबडी, भरशुं तेमां थोर ॥ अमूल्य हीरो मान

जीवन, गुमावे शुं ढोर ॥ वसंत तने वारे रे, हंसा
जा मां कागमां ॥ उं० ॥ ८ ॥

॥ अमे मेमान ॥

॥ काफी ॥

॥ अमे तो आज तमारा बे दिनना ॥ मेमान ॥ सफल करो आ सहज समागम, सुखनुं एज निदान ॥ अमे० ॥ १ ॥ आव्या जेम जशुं ते रीते, सर्वे एम समान ॥ पाछा कोइ दिने नहीं मलीए, क्यां करशो सन्मान ॥ अमे० ॥ ॥ २ ॥ साचवजो संबंध परस्पर, धर्मे राखी ध्यान ॥ संपी सद्गुण लेजो देजो, दूर करी अभिमान ॥ अमे० ॥ ३ ॥ लेश नथी अमने अंतरमां, मान अने अपमान ॥ होय कशी कम्वाश अमारी, तो प्रिय करजो पान ॥ अमे० ॥ ४ ॥

॥ श्रावकने चौद नियम पालवा विषे टुंक स्वरूप ॥

१ सचित्त–वीजवालां फल, फूल अने धान्य प्रमुख अपरिपक्क खावानुं प्रमाण करवुं. २ द्रव्य–जुदा जुदा स्वादनो अनुभव थाय तेवा खावा पीवाना पदार्थोनुं प्रमाण करवुं, ३ विगइ–दुध, दहीं, घी, गोल, तेल, तली तावी (कडाइ) विषयोनुं बने तेटलुं प्रमाण क-

रवुं. ४ उपानह–पगरखां तथा मोजां प्रमुख पगे पहे-रवानु वनी शके तेटलुं प्रमाण करवुं. ५ तंबोल–पान, सोपारी, एलची, लवींग विगेरे मुखवासनुं प्रमाण करवुं. ६ वस्त्र–पहेरवां उढवां योग्य वस्त्रो उपयोगमां लेवानुं प्रमाण करवुं ७ कुसुम–पुष्प, फुलेल अत्तर प्रमुख सुंघवा योग्य द्रव्योनु प्रमाण करवु ८ वाहन–गाडी, घोडा, उंट, वहाण, रेल्वे, स्टीमर प्रमुख स्वारीनु प्रमाण करवुं फरतुं चरतुं ने तरतु प्रमाण करवु ९ शयन–जेना उपर वेसी के सुइ शकाय तेवां पाट, पलंग, मांचा, तलाइ, गादी प्रमुखनुं प्रमाण करवु. १० विलेपन–चंदन, वरास, औषध प्रमुख शरीरे चोपडवा योग्य द्रव्योनुं प्रमाण करवु ११ ब्रह्मचर्य–मन, वचन अने कायाथी सर्वथी के देशथी दिवसे के रात्रे पालवा नि-यम राखवो १२ दिशि–दिक्‌विरमण नामना छठा व्रतमां करेल नियमनो दिशा विदिशाना प्रमाणनो नियम करवो. १३ स्नान–आखा शरीरे सर्व स्थान अने हाथ पगनी शुद्धिरूप देश स्नाननु प्रमाण करवुं. १४ १८ भक्त–भोजन (खानपान) संबंधी सुखे निर्वाह थाय

तेटलुं प्रमाण करवुं. अभ्यासयोगे जेम जेम संतोषवृत्ति वधती जाय तेम तेम वस्तुओनो संक्षेप करवो. पंदर कर्मादान पैकी बधांनो के बने तेटलांनो खास त्याग करवो.

॥ श्री श्रावकना २१ गुणोनुं वर्णन ॥

॥ आ जयंकर अने पारावार संसारभ्रमणमां भमतां थका जीवने मनुष्य जन्मादि उत्तम सामग्री मलवी अति दुर्लभ छे, कदाच ते मले तोपण शुद्ध धर्मनी योग्यता प्राप्त थवी बहुज मुश्केल छे, तो पछी शुद्ध धर्मनी प्राप्तिनी दुर्लभतानुं तो कहेवुंज शुं? माटे ज्ञानी महाराज धर्मनी योग्यता पामवाना श्रावकनां २१ उत्तम लक्षण रूप २१ गुणोनुं कांइक टुंक स्वरूप बतावे छे.

१ क्षुद्र नहीं–अक्षुद्र गंभीर आशयवालो सूक्ष्म रीते वस्तुतत्त्वनो विचार करवाने शक्ति धरावनार समर्थ जीवन विशेष धर्मरत्नने पामी शके. २ रूपनिधि–प्रशस्त रूपवालो पांचे इंद्रियो जेने स्पष्ट रीते प्राप्त थयेल छे एवो अर्थात् शरीर संबंधी सुंदर आकृतिने धरनार आत्मा. ३ सौम्य–स्वभावेज पाप दोष रहित शीतल स्वभाववालो आत्मा. ४ जनप्रिय–सदाचारने

सेवनार लोकप्रिय आत्मा ५ क्रूर नहीं–क्रूरता या निष्ठुरतावडे जेनुं मन मलिन थतुं नथी एवो अक्लिष्ट याने प्रसन्न चित्तयुक्त शांत आत्मा. ६ ज्ञीरु–आ लोक संबंधी अपवादथी मरवावालो अर्थात् अपवादज्ञीरु तेमज पापज्ञीरु होवाथी वधी रीते संज्ञालीने चालनार उज्ञय लोक विरुद्ध कार्यनो अवश्य परिहार करनार आत्मा ७ अशक–छल प्रपंचवडे परने पाशमां नाखवाथी दूर रहेनार ८ सुदखिन–शुज्ञ दाक्षिण्यवंत उचित प्रार्थनानो जंग नही करवावालो समयोचित वरती सामानुं दिल प्रसन्न करनार ए लज्जालुर्ज–लज्जाशील अकार्य वर्जी सत्कार्यमां स्हेजे जोमाइ शके एवो मर्यादाशील पुरुष १० दयालुर्ज–सर्व कोइ प्राणीवर्ग उपर अनुकंपा राखनार ११ सोमदिठिमज्जथ–रागद्वेष रहित निष्पक्षपातपणे वस्तुतत्त्वने यथार्थ रीते उंलखी मध्यस्थताथी दोषने दूर करनार १२ गुणरागी–सद्गुणीनोज पक्ष करनार, गुणनोज पक्ष लेनार १३ सत्कथ–एकांत हितकारी एवी धर्मकथा जेने प्रिय छे एवो १४ सुपक्ख– सुशील अने सानुकूल छे कुटुंब

तेनुं एवो सौजाग्यवंत. १५ दीर्घदर्शी—प्रथमथी सारी रीते विचार करीने परिणामे जेमां लाज्ञ समायो होय एवा शुज्ञ कार्यने करवावालो. १६ विशेषज्ञ—पक्षपात रहितपणे गुण दोष हिताहित कार्य अकार्य उचित अनुचित ज्ञक्ष्य अज्ञक्ष्य पेय अपेय गम्य अगम्य विगेरे विशेष वातनो जाणकार. १७ वृद्धानुगत—परिपक्क बुद्धिवाला अनुज्ञवी पुरुषोने अनुसरी चालनार, नहीं के जेम आव्युं तेम उच्छृंखलपणे इच्छा मुजब काम करनार. १८ विनयवंत— गुणाधिकनुं उचित गौरव साचवनार सुविनीत. १९ कृतज्ञ—बीजाए करेला गुणने कदापि नहीं विसरी जनार. २० परहितकारी—स्वतः स्वार्थ विना परोपकार करवामां तत्पर, दाक्षिण्यतावंत तो ज्यारे तेने कोइ प्रेरणा अथवा प्रार्थना करे त्यारे परोपकार करे अने आ तो पोताना आत्मानीज प्रेरणाथी स्वकर्त्तव्य समजीनेज कोइनी कंइ पण अपेक्षा राख्या विनाज परोपकार कर्या करे एवा उत्तम स्वज्ञावने स्वाज्ञाविक रीते धरनारा ज्ञव्य आत्मा. २१ लब्धलक्ष—कोइ पण कार्यने सुखे साधी शके एवो कार्यदक्ष.

॥ श्री बार व्रतनी संक्षिप्त टीप ॥

॥ सम्यक्त्व ॥

१ शुद्ध देव—ते श्री अरिहंत (अढार दूषण रहित). २ शुद्ध गुरु—ते पंच महाव्रतना पालवावाला सुसाधु. ३ शुद्ध धर्म—ते केवलिज्ञापित

॥ आ उपर प्रमाणे त्रण तत्त्व मारे मानवां अन्य मिथ्यात्वी देव गुरु आदिकने कारणसर नमवुं पडे तो व्यवहार साचववानी जयणा स्वलिंगी (वेषधारी)ने व्यवहारथी तथा उपकारबुद्धिथी वंदनादिक करवु पडे तेनी जयणा, भूलथी अतत्त्वने तत्त्व अने अधर्मने धर्म मनाइ जाय तेनी जयणा. रोज सवारना बनतां सुधी उंठामां उंठुं नवकारशीनुं पच्चक्खाण करवु अने सांजे दुविहार के चोविहार करवो शक्ति प्रमाणे दर वर्षे रु

सात क्षेत्रमां वापरवा सात क्षेत्रनां नाम (१) साधु (२) साध्वी (३) श्रावक (४) श्राविका (५) देरासर (६) जैन प्रतिमा अने (७) ज्ञान ॥ ज्यां देरासरनो जोग होय, त्यां रोज एक वखत दर्शन करवां अने पूजानी जयणा. जे दिवसे दर्शन न थइ शके ते दिवसे त्याग करवो.

बार व्रत.

१ (देशथकी) प्राणातिपातविरमण व्रत.

कोइ त्रस जीवने जाणी जोइने संकल्पीने इरादापूर्वक हणवानी बुद्धिए हणवा नहीं. आरंभ समारंभे तथा व्यापारमां तेमज औषधादिकना प्रयोगथी हणाय तेनी जयणा. *

२ (देशथकी) मृषावादविरमण व्रत.

१–कन्यालीक[1] एटले के कन्या संबंधी सगपण विवाहादिमां जूठुं बोलवुं नहीं.

---

* आ खाली पडेली जग्यामां पोताने ते व्रतना संबंधमां जे लखवुं होय ते लखवुं.

१ नानी कन्याने मोटी न कहेवी अने मोटी कन्याने नानी न कहेवी विगेरे. कन्यालीकथी दरेक बे पगवाला संबंधी जूठुं नहीं बोलवानो समावेश थाय छे, पण व्रत लेनारने जेवी अपेक्षा होय तेवी रीते पच्चख्खाण करवुं.

२–गवालीके[२] एटले गाय पशु आदिक चोपगा जनावर सबधी जूठु बोलवुं नहीं.

३–भूम्यालीके[३] एटले भूमि, खेतर मकान सबधी जूठु बोलवु नहीं.

४–थापणमोसो एटले पारकी थापण ओलववी नहीं.

५–कूडी साख एटले खोटी साक्षी पूरवी नहीं.

आ उपरात जेओने विशेष छुट राखवानी जरुर जणाय ते ओए नीचे लखी लेवु.

---

२ गवालीकमा दरेक चार पगवाला प्राणी सबधी खोटु बोलवानो समावेश थाय छे, तोपण व्रत लेनारने खाली जग्यामां आगार राखी लेवा नानी गायने मोटी कहेवी अने मोटीने नानी कहेवी, थोडा दुधवालीने वधारे दुधवाली कहेवी अने वधारे वेतरवालीने ओछा वेतरवाली कहेवी विगेरे.

३ पोतानी जमीन विगेरे बीजानी कहेवी, बीजानी जमीन विगेरे पोतानी कहेवी.

३ (देशथकी) अदत्तादानविरमण व्रत.

१–गांठ न छोडवी.

२–खीसो न कातरवो.

३–खातर न पाडवुं.

४–तालुं न भांगवुं.

५–लूंट न करवी.

६–कोइनी पडी रहेली चीज लेवी नहीं.

आ उपरांत जेओने विशेष त्याग करवो होय तेओए नीचेनी जग्यामां लखी लेवुं.

४ (देशथकी) मैथुनविरमण व्रत.

स्वस्त्री[1] (पोतानी परणेली) सिवाय परस्त्रीनो सर्वथा कायाथी त्याग करवो.

---

१ तेमज स्त्रीओए (परणेला) पति सिवाय परपुरुषनो सर्वथा त्याग करवो.

आठम चौदश आदिकना पच्चख्खाण करवा होय तो नीचे लखी लेवु.

५ (देशथकी) परिग्रहपरिमाण व्रत

परिग्रहनु नीचे प्रमाणे परिमाण करवुं.

१–रोकडा रु खपे

२–स्थावर मिल्कत* (घर, हाट विगेरे) रु. नी किमतनी खपे,

३–सोना* रूपाना दागीना तथा झवेरात रु नी किमतना खपे

४–नोकर चाकर (सख्या) खपे.

५–सोना* रूपा सिवाय बीजो धातु रु नी किमतनी खपे

---

* आ मिल्कत खरीदती वखते जेटली किमतनी होय तेटली किमतनो हिसाब गणवो.

६–फरनीचर रु. नी किमतनुं खपे.

७–जनावर (संख्या) खपे.

८–ते *सिवाय बीजी मिल्कत रु. सुधीनी खपे.

९–धान्य *किमत रु. सुधी खपे.

अथवा एकंदर[1] रीते रोकड, स्थावर अने जंगम मिल्कत ।धुं मलीने रु.

६ दिशिपरिमाण व्रत.

पूर्व दिशाए गाउ जवुं खपे.
अग्नि खुणामां गाउ जवुं खपे.
दक्षिण दिशाए गाउ जवुं खपे.
नैर्ऋत्य खुणामां गाउ जवुं खपे.
पश्चिम दिशाए गाउ जवुं खपे.
वायव्य खुणामां गाउ जवुं खपे.
उत्तर दिशाए गाउ जवुं खपे.
ईशान खुणामां गाउ जवुं खपे.
ऊर्ध्व (उंचे) गाउ जवुं खपे.
अधो (नीचे) गाउ जवुं खपे.

---

* आ मिल्कत खरीदनी वखते जेटली किमतनी होय तेटली किमतनो हिसाव गणवो.

* व्यापारने माटे जयणा.

१ आ प्रमाणे एकंदर नियम पण थाय छे.

आ उपरात कागल, तार अने छपाओ वाचवानी अथव लखवानी तेमज माणस मोकलवानी जयणा.

७ भोगोपभोगपरिमाण व्रत

भोग एटले एक वार भोगवाय ते, जेमके पुष्प, विलेपन भोजन विगेरे.

उपभोग एटले एकज चीज बहु वार भोगवाय ते, जेमके वस्त्र, अलकार, घर, स्त्री, विगेरे.

उपर प्रमाणे भोग अने उपभोगनी वस्तुनु परिमाण करवु तेने सातमु भोगोपभोगपरिमाण व्रत कहे छे

तेने माटे हमेशा चौद नियम धारवा.

१—*सचित्त वस्तु रोज खपे

---

* १ पृथ्वी—माटी, मीठु विगेरे

२ पाणी—पीवा तथा नावाने माटे परिमाण करवु.

३ अग्नि—चूला, सगडी, चूल्ह विगेरेनु परिमाण करवु

४ वायु—पखा, हिंडोलाखाट विगेरेनुं परिमाण करवु.

५ वनस्पति—अमुक वनस्पति टोपमाथी जे दिवसे जे खावी होय ते वांगीलेवी.

२—द्रव्य एटले खावापीवाना पदार्थ रोज खपे.

३—*विगय एटले घी, तेल, दुध, दहीं, गोळ अने कडा* विगय ए छ विगयमांथी एक विगयनो प्रत्येक दिवसे त्याग करवो.

४—वाणह एटले उपानह, पगरखां तथा मोजां विगेरेनी जोड खपे.

५—तंबोल ते पान सोपारी विगेरे मुखवास खपे.

६—वच्छ एटले वस्त्र खपे.

७—कुसुम ते सुंघवानी वस्तु खपे.

८—वाहन[२] एटले गाडी, वहाण, घोडा विगेरे खपे.

९—शयन एटले शय्या अने आसन खपे.

१०—विलेपन ते शरीरे चोपडवानी वस्तु खपे.

११—ब्रह्मचर्यनो नियम धारी लेवो.

१२—दिशि ते दशे दिशाए कोश जवुं.

---

* विगयनो त्याग बे प्रकारे थइ शके छे. (१) काची विगयनो त्याग एटले दुध विगेरे मूळ पदार्थनो त्याग, अने (२) पाकी विगयनो त्याग एटले मूळमांथी बनेला सघला पदार्थनो त्याग, जेमके दुधपाक, मिष्टान्न विगेरे.

* तळेली चीज (पक्वान्न विगेरे) ते त्रण घाण पहेलां समजवुं.

१. फरतुं, तरतु अने चरतुं.

२. छट्ठा व्रतमां दिशिपरिमाण करेलुं होय तेमांथी ओछुं करवुं.

१३—न्हाण ते रोज वखत स्नान करवु.
(लोकाचारनी जयणा.)

१४—भक्त ते भोजन गेर अने पाणी गेर खपे

पंदर कर्मादान.

१ इगालकर्म—चुनो, इंट, नळीया, कोलसा, जुपेल तेल विगेरे जे भट्ठीथी चीज पाकती होय तेनो भट्ठी करावीने तथा पकावीने वेपार न करवो.

२ वनकर्म—ते पान, फुल, शाक, लाकडा विगेरेनो व्यापार न करवो.

३ साडीकर्म—गाडा, हळ प्रमुख तैयार करावी तेनो व्यापार न करवो

४ भाडीकर्म—गाडी, घोडा विगेरे भाडे आपवानो व्यापार न करवो, तेम वेचवानो व्यापार न करवो, परन्तु वेचवु पडे तेनी जयणा.

५ फोडीकर्म—सुरग करावी जमीन फोडाववानो धधो करवो नहीं

६ दंतवाणिज्य—हाथीदांत विगेरेनो व्यापार न करवो.

७ लख्खवाणिज्य—लाख तथा गुदनो व्यापार न करवो.

---

१ पंदर कर्मादान माहेथी कोइ चीजना गेर, बोन्ध राखवा पडे तथा तेनो मट्टो करवो पडे तेनी जयणा.

८ रसवाणिज्य—घी, गोळ, तेलना व्यापारनो त्याग करवो. जयणा राखवी होय तो नियम करी लेवो.

९ विषवाणिज्य—अफीण, झेर विगेरेनो व्यपार न करवो.

१० केशवाणिज्य—पशु पंखीनां केश, पीछां, उन विगेरेनो व्यपार न करवो.

११ यंत्रपिल्लणकर्म—ते मील, जीन, संचा. घाणी, घंटी विगेरेथी धंधो न करवो.

१२ निर्लांछनकर्म—कोइ बळद, घोडा विगेरेने समरावबा नहीं.

१३ दव—वनमां अग्निदाह देवो नहीं.

१४ शोषणकर्म—सरोवर, तळाव विगेरेना पाणीनुं शोषण करावबुं नहीं, कारणसर कुवा, टांकां गळाववां पडे तेनी जयणा.

१५ असतीपोषण—रमतने खातर कुतरा, बिलाडा, मेना, पोपट विगेरे पाळवां नहीं.

आ पंदर कर्मादानमां जेने जे रीते त्यागमां फेरफार करवो होय तेणे आ नीचेनी जग्यामां अनुक्रमे लखी लेवुं.

१
२
३
४
५
६

७
८
९
१०
११
१२
१३
१४
१५

८ अनर्थदण्डविरमण व्रत

कोइने फासी आपता होय त्या जोवा जवु नही, कोइ पण पक्षीओने क्रीडाने माटे घेर पाळवा नहीं तेमज कुतरा, बिलाडा विगेरे हिंसक जानवरोने पाळवा नहीं हाथी, घोडा, पाडा, घेटा, कुकडा विगेरेनी लडाइनी रमत ज्या थती होय त्या जोवा जवु नही. रस्ते चालता जोवाइ जवाय तेनी जयणा. अने त्यासुधी स्त्रीकथा, राजकथा, देशकथा तथा भोजनकथा विना कारण नहीं करवानो उपयोग राखवो, पण पच्चख्खाण नही.

आ सिवाय कोइ पण अनर्थदड थतो होय तो बनता सुधी उपयोग राखवो, पण पच्चख्खाण नथी शस्त्रना व्यापारनो आम समावेश थाय छे, तो तेनो त्याग के जयणा नीचे लखो लेवु

ए सामायिक व्रत.

दर वर्ष सामायिक करुं. रोगादिक कारणे जयणा.

१० दिशावगाशिक व्रत.

चौद नियम धारवा अने संक्षेपवानो खप करुं एनो अधिकार सातमा व्रतमां आवेलो छे. वळी परंपराथी दश सामायिकनुं दिशावगाशिक व्रत चाले छे ते दर वर्षे करुं. रोगादिक कारणे जयणा.

११ पौषध व्रत.

दर वर्षे आठ पहोरना अथवा चार पहोरना पौषध करुं.

१२–अतिथिसंविभाग व्रत.

पौषधना पारणे अथवा तेम न बने तो वर्ष एकमा वार साधुने दान आप्या पछी जमवु, अने आखा वर्षमा कोइ उत्तम साधुनो जोग न बने तो कोइ उत्तम साधर्मी भाइने वार जमाडीने पछी जमवु.

बार तिथि	लीलोतरी (त्याग के जयणा लखवुं)	खांडवुं, दळवुं. (त्याग के जयणा लखवुं)
	अगर वजन माप	विगेरेथी लखी लेवुं.
सुदि २		
५		
८		
११		
१४		
१५		
वदि २		
५		
८		
११		
१४		
०))		

॥ सप्तम खंड ॥



॥ क्रोधनी सज्झाय ॥

॥ कडवां फल छे क्रोधनां, ज्ञानी एम बोले ॥ रीस तणो रस जाणीए, हलाहल तोले ॥ कडवां० ॥ १ ॥ क्रोधे क्रोड पूरव तणुं, संजम फल जाय ॥ क्रोध सहित तप जे करे, ते तो लेखे न थाय ॥ कडवां० ॥ २ ॥ साधु घणो तपीयो हुतो, धरतो मन वैराग ॥ शिष्यना क्रोध थकी थयो, चंडकोशीउं नाग ॥ कडवां० ॥ ३ ॥ आग उठे जे घर थकी, ते पहेलु घर बाले ॥ जलनो जोग जो नवि मले, तो पासेनु परजाले ॥ कडवां० ॥ ४ ॥ क्रोध तणी गति एहवी, कहे केवलनाणी ॥ हाण करे जे हेतनी, जालवजो एम जाणी ॥ कडवां० ॥ ५ ॥ उद- यरत्न कहे क्रोधने, काढजो गले साही ॥ काया करजो निर्मली, उपशम रस नाही ॥ कडवां० ॥ ६ ॥

॥ माननी सज्झाय ॥

॥ रे जीव मान न कीजीए, माने विनय न आवे रे ॥ विनय विना विद्या नहीं, तो किम समकित पावे रे ॥ रे जीव० ॥ १ ॥ समकित विण चारित्र नहीं, चा

रित्र विण नहीं मुक्ति रे ॥ मुक्तिनां सुख छे शाश्वतां, ते केम लहीए जुक्ति रे ॥ रे जीव० ॥ २ ॥ विनय वडो संसारमां, गुणमां अधिकारी रे ॥ माने गुण जाये गली, प्राणी जोजो विचारी रे ॥ रे जीव० ॥ ३ ॥ मान करयुं जो रावणे, ते तो रामे मार्यो रे ॥ दुर्योधन गरवे करी, अंते सवि हारयो रे ॥ रे जीव० ॥ ४ ॥ सूकां लाकडां सारिखो, दुःखदायी ए खोटो रे ॥ उदयरत्न कहे मानने, देजो देशवटो रे ॥ रे जीव० ॥ ५ ॥

॥ मायानी सज्झाय ॥

॥ समकितनुं मूल जाणीए जी, सत्य वचन साक्षात् । साचामां समकित वसे जी, मायामां मिथ्यात्व रे ॥ प्राणी म करीश माया लगार ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ मुख मीठो जूठो मने जी, कूडकपटनो रे कोट ॥ जीभे तो जी जी करे जी, चित्तमां ताके चोट रे ॥ प्राणी० ॥ २ ॥ आप गरजे आघो पडे जी, पण न धरे विश्वास ॥ मनशुं राखे आंतरो जी, ए मायानो पास रे ॥ प्राणी० ॥ ३ ॥ जेहशुं बांधे प्रीतडी जी, तेहशुं रहे प्रतिकूल ॥ मेल न छंडे मन तणो जी, ए मायानुं मूल रे ॥ प्राणी० ॥ ४ ॥ तप कीधुं माया करी जी, मित्रशुं

राख्यो रे भेद ॥ मल्लि जिनेश्वर जाणजो जी, ते पाम्या स्त्रीवेद रे ॥ प्राणी० ॥ ५ ॥ उदयरत्न कहे सांभलो जी, मेलो मायानी बुद्ध ॥ मुक्तिपुरी जावा तणो जी, ए मारग छे शुद्ध रे ॥ प्राणी० ॥ ६ ॥

॥ लोभनी सज्झाय ॥

॥ तुमे लक्षण जो जो लोभनां रे, लोभे जन पामे क्षोभना रे ॥ लोभे काह्या मन मोल्या करे रे, लोभे दुर्घट पंथे संचरे रे॥ तुमे० ॥ १ ॥ तजे लोभ तेहनां लउ भामणां रे, वली पाये नमीने करु खामणां रे ॥ लोभे मरजादा न रहे केहनी रे, तुमे संगत मेलो तेहनी रे ॥ तुमे० ॥ २ ॥ लोभे घर मेली रणमां मरे रे, लोभे उच ते नीचु आचरे रे ॥ लोभे पाप भणी पगलां भरे रे, लोभे अकारज करतां न उसरे रे ॥ तुमे० ॥ ३ ॥ लोभे मनकु न रहे निर्मलु रे, लोभे सगपण नासे वेगलु रे ॥ लोभे न रहे प्रीति ने पावलु रे, लोभे धन मेले बहु एकलुं रे ॥ तुमे० ॥ ४ ॥ लोभे पुत्र प्रत्ये पिता हणे रे, लोभे हत्यापातक नवि गणे रे ॥ ते तो दाम तणे लोभे करी रे, उपर मणिधर थाये ते मरी रे ॥ तुमे० ॥ ५ ॥ जोतां लोभनो थोभ दीसे नहीं रे, एवुं

सूत्र सिद्धांते कह्युं सह्ा रे ॥ लोभे चक्री सूभूम नामे
हुर्ड रे, ते तो समुद्र मांहे हुबी मुवो रे ॥ तुमे० ॥ ६
॥ एम जाणीने लोभने ठंमजो रे, एक धर्मशुं ममता
मंमजो रे ॥ कवि उदयरत्न नाखे मुदा रे, वंदुं लोभ
तजे तेहने सदा रे ॥ तुमे० ॥ ७ ॥

॥ श्री जंबूस्वामीनी सज्झाय ॥

॥ सरस्वती सामिणी विनवुं, सद्गुरू लागुं जो पाय
॥ गुण रे गाशुं जंबूस्वामीना, हरख धरी मन मांय ॥
धन्य धन्य जंबूस्वामीने ॥ १ ॥ चारित्र छे वत्स दो-
हिलुं, व्रत छे खांमानी धार ॥ पाये अणुआणे जी चा-
लवुं, करवो जी उग्र विहार ॥ धन्य० ॥ २ ॥ मध्याह्न
पछी करवी गोचरी, दिनकर तपे रे निलाम ॥ वेलु
कवल सम कोलीया, ते किम वाल्या रे जाय ॥ धन्य०
॥ ३ ॥ कोमी नवाणुं सोवन तणी, तमारे छे आठे जी
नार ॥ संसार तणां सुख सुण्यां नहीं, नोगवो नोग
उदार ॥ धन्य० ॥ ४ ॥ रामे सीताने विजोगडे, व्होत
कीयो रे संग्राम ॥ छती रे नारी तमे कांइ तजो, कांइ
तजो धन ने धान ॥ धन्य० ॥ ५ ॥ परणीने शुं जी
परिहरो, हाथ मव्यानो संबंध ॥ पछीथी स्वामी करशो

उरतो, जिम कीधो मेघ मुणींद ॥ धन्य० ॥ ६ ॥ जंबू कहे रे नारी सुणो, अम मन संयम नाव ॥ साचो स्नेह करी लेखवो, तो संयम ल्यो अम साथ ॥ धन्य० ॥ ७ ॥ तेणे समे प्रनवो जी आवीयो, पांचसें चोर संघात ॥ तेने पण जंबूस्वामीए बुझव्यो, बुझव्यां मात ने तात ॥ धन्य० ॥ ८ ॥ सासु ससराने बुझव्या, बुझवी आठे नार ॥ पांचसें सत्यावीशशु, लीधो जी संयम नार ॥ धन्य० ॥ ए ॥ सुधर्मा स्वामी पासे आवीया, विचरे ठे मनने उल्लास ॥ कर्म खपावी केवल पामीया, पहोच्या जी मुक्ति मोजार ॥ धन्य० ॥ १० ॥

॥ आप स्वभावनी सज्झाय ॥

॥ आप स्वनावमां रे, अवधू सदा मगनमे रहेना ॥ जगत जीव हे करमाधीना, अचरिज कछुअ न लीना ॥ आप० ॥ १ ॥ तुम नही केरा कोइ नही तेरा, क्या करे मेरा मेरा ॥ तेरा हे सो तेरी पासे, अवर सवे अनेरा ॥ आप० ॥ २ ॥ वपु विनाशी तुं अविनाशी, अव हे इनको विलासी ॥ वपु संग जव दूर निकासी, तव तुम शिवका वासी ॥ आप० ॥ ३ ॥ राग ने रीसा दोय खवीसा, ए तुम दुःखका दीसा ॥ जव तुम उनकुं

दूर करीसा, तब तुम जगका ईशा ॥ आप० ॥ ४ ॥ परकी आशा सदा निराशा, ए है जगजन पासा ॥ ते काटनकुं करो अभ्यासा, लहो सदा सुखवासा ॥ आप० ॥ ५ ॥ कबहीक काजी कबहीक पाजी, कबहीक हुआ अपभ्राजी ॥ कबहीक जगमें कीर्ति गाजी, सब पुद्गलकी बाजी ॥ आप० ॥ ६ शुद्ध उपयोग ने समताधारी, ज्ञान ध्यान मनोहारी ॥ कर्म कलंककुं दूर निवारी, जीव वरे शिवनारी ॥ आप० ॥ ७ ॥

॥ वैराग्य सज्झाय ॥

॥ उंचां मंदिर मालीयां, सोड वालीने सुतो ॥ कहाडो कहाडो एने सहु कहे, जाणे जन्म्योज नहोतो ॥ एक रे दिवस एवो आवशे, मने सबलोजी साले ॥ मंत्री मल्या सर्वे कारीमा, तेनुं कांइ नव चाले ॥एक०॥१॥ साव सोनारां रे सांकलां, पहेरण नव वाघा ॥ धोलुं रे वस्तर एना कर्मनुं, ते तो शोधवा लाग्या ॥ एक० ॥२॥ चरु कढाइ अति घणां, बीजानुं नहीं लेखुं ॥ खोखरी हांडी एना कर्मनी, ते तो आगल देखुं ॥ एक० ॥३॥ केना छोरु ने केनां वाछरु, केनां मा ने बाप ॥ अंतकाले जावुं जीवने एकला, साथे पुण्य ने पाप ॥ एक० ॥४॥

सगी रे नारी एनी कामिनी, ऊभी टगमग जुवे।
तेनु पण कांइ चाले नहीं, वेठी धुसके रुवे ॥एक०॥५।
व्हालां ते व्हालां शुं करो, व्हालां वोलावी वलशे।
व्हालां ते वननां लाकमां, ते तो साथेजी वलशे ॥ एक
॥ ६ ॥ नही तापी नहीं तुंवमी, नथी तरवानो आरो।
उदयरत्न प्रज्ञु इम जणे, मने पार उतारो॥ एक० ॥ ७।

॥ मन भमरानी सज्झाय ॥

॥ जूल्यो मन जमरा तु क्यां जम्यो, जम्यो दिवस
ने रात ॥ मायानो वांध्यो प्राणीउं, जमे परिमल जत
॥ जूल्यो० ॥ १ ॥ कुन काचो रे काया कारमी, तेहनं
करो रे जतन ॥ विणसंता वार लागे नहीं, निर्मल राख
रे मन ॥ जूल्यो० ॥ २ ॥ केनां ठोरु ने केनां वाठम
केहनां माय ने वाप ॥ प्राणी रे जावु ठे एकलु, साथे
पुण्य ने पाप ॥ जूल्यो० ॥ ३ ॥ आशा तो डुंगर जेवमी
मरवुं पगलां रे हेठ ॥ धन संची संची कांइ करो, करं
देवनी वेठ ॥ जूल्यो० ॥ ४ ॥ धंधो करी धन मेलव्युं
लाखां उपर कोम ॥ मरणनी वेला मानवी, लीयो क
१२ दोरो तोम ॥ जूल्यो० ॥ ५ ॥ मूरख कहे धन माहरुं

गोंखे धान्य न खाय ॥ वस्त्र विना जइ पोढवुं, लखपति लोकमा मांय ॥ जूल्यो० ॥ ६ ॥ जवसागर दुःखजले जर्यों, तरवो छे रे तेह ॥ वचमां जय सबलो थयो, कर्म वायरो ने मेह ॥ जूल्यो० ॥ ७ ॥ लखपति छत्रपति सब गया, गया लाख बे लाख ॥ गर्व करी गोंखे बेसता, सर्व थया बली राख ॥ जूल्यो० ॥ ८ ॥ धमण धुखंती रे रही गइ, बुज गइ लाल अंगार ॥ एरणको छबको मव्यो, उठ चव्यो रे लुहार ॥ जूल्यो० ॥ ए ॥ उवट मारग चालतां, जावुं पहेले रे पार ॥ आगल हाट न वाणीयो, संबल लेजो रे सार ॥ जूल्यो० ॥ १० ॥ परदेशी परदेशमें, कुणशुं करो रे सनेह ॥ आया कागल उठ चव्या, न गणे आंधी ने मेह ॥ जूल्यो० ॥ ११ ॥ केइ चाव्या रे केइ चालशे, केइ चालणहार ॥ केइ बेठा रे बुढा बापमा, जाये नरक मोझार ॥ जूल्यो० ॥ १२ ॥ जीण घर नोबत वाजती, थाता छत्रीशे राग ॥ खंडेर थइ खाली पड्यां, बेठण लाग्या बे काग ॥ जूल्यो० ॥ १३ ॥ जमरो आव्यो रे कमलमां, लेवा कमलनुं फूल ॥ कमलनी वांछाए मांहे रह्यो, जिम आथमते सूर ॥

भूल्यो० ॥ १४ ॥ सद्गुरु कहे वस्तु वहोरीए, जे कोइ आवे रे साथ ॥ आपणो लाभ उगारीए, लेखुं साहिब हाथ ॥ भूल्यो० ॥ १५ ॥

॥ श्री सुबाहु कुवरनी सज्झाय ॥

॥ हवे सुवाहु कुंवर एम विनवे, अमे लेशुं संजम भार ॥ माडी मोरी रे ॥ वीर प्रभुनी वाणी सांभली, तेणे में जाण्यो अथिर संसार ॥ माडी हवे हुं नहीं राचु रे संसारमां ॥ १ ॥ हांरे जाया तुज विना सूनां मंदिर सूनां मालीयां, जाया तुज विना सूनो संसार ॥ जाया मोरा रे माणेक मोती मुडीकां, कांइ रिद्धि तणो नही पार ॥ जाया मोरा रे तुज विना घडीए न नीसरे ॥ २ ॥ हांरे माजी तन धन जोवन कारमो, कारमो कुटुंब परिवार ॥ माडी मोरी रे, कारमो सगपणमा कोण रहे ॥ मे तो जाण्यो अथिर संसार, माडी मोरी रे ॥ हवे० ॥ ३ ॥ हांरे जाया संयम पथ घणो आकरो, जाया जेम छे खांडानी धार ॥ जाया मोरा रे, बावीश परीसह जीतवा ॥ जाया रहेवुं जीव पास, जाया मोरा रे ॥ तुज० ॥ ४ ॥ हांरे माडी वनमां रहे छे मृगलां, तेनी कोण

करे संभाल ॥ माजी मोरी रे वनमृगनी परे चालशुं, अमे एकलडा निरधार ॥ माजी० ॥ ५ ॥ हांरे माजी नरक निगोदमां हुं भम्यो, भम्यो अनंत अनंती वार ॥ माजी मोरी रे छेदन भेदन में सह्यां, ते कहेतां नावे पार ॥ माजी हवे० ॥ ६ ॥ हांरे जाया पांचसो पांचसो नारीउं, रहेवा पांचसो पांचसो म्हेल ॥ जाया मोरा रे उंचा ते कुलनी उपनी, रूपे अपसरा समान ॥ जाया० ॥ ७ ॥ हांरे माजी घरमां जो नीकले एक नागणी, सुखे निद्रा न आवे लगार ॥ तो पांचसो नागणीउमां केम रहुं, मारुं मनकुं आकुल व्याकुल थाय ॥ माजी हवे० ॥ ८ ॥ हांरे जाया एटला दिवस हुं जाणती, रमाडी बहु रीते बाल ॥ जाया दिवस अटारो आवीयो, तुं ले छे संजम भार ॥ जाया० ॥ ९ ॥ हांरे माजी मुसाफर आव्यो कोइ परुणलो, फरी भेगो थाय न थाय ॥ इम मानवभव पामवो दोहिलो, धर्म विना दुर्गति मोजार ॥ माजी हवे० ॥ १० ॥ हवे पांचसो वहूउं एम विनवे, तेमां वडेरी करे छे जवाब ॥ वालम मोरा रे, स्वामी तमे तो संजम लेवा मंचर्या ॥स्वामी अमने ते कवण आधार, वालम मोरा

रे वालीम विना किम रही शकुं ॥ ११ ॥ हांरे माजी मात पिता ने जाइ बेनकी, नारी कुटुंब ने परिवार। मारू मोरी रे अत समय अलगां रहे, एक जैन धरम तारणहार ॥ मारु हवे० ॥ १२ ॥ हांरे माजी कार्च ने काया कारमी, सरू पक्ष पण सीजाय ॥ जीवमो जाय ने काया पमी रहे मुआ पठी वाली करे राख ॥ मारु० ॥ १३ ॥ हवे धारिणी माता रही विनवे, आपु मनहि रहे संसार ॥ जविक जन रे, एक दिवसतुं राज्य जोगवी ॥ सयम लीधु महावीर स्वामी पास जविक जन रे सुवाहु कुवर सयम आदर्युं ॥ मारु० ॥ १४ ॥ तप तपी काया शोपवी, आराधी गया देवलोक ॥ जविक जन रे पदर जव पूरा करी महाविदेह क्षेत्रमां जाशे मोक्ष ॥ जविक जन रे ॥ १५ ॥

॥ परस्त्री त्याग सज्झाय ॥

॥ सुण चतुर सुजाण, परनारीशुं प्रीत कबु नव कीजीए ॥ ए आंकणी ॥ हांरे जेणे परनारीशुं प्रीत करी, तेने हैडे रंघण थाय घणी ॥ तेणे कुल मरजादा कांइ न गणी ॥ सुण० ॥ १ ॥ तारी लाज जशे नात जातमां, तुं तो हलवो पमीश सहु साथमां ॥ ए धुमाको न आवे

हाथमां ॥ सुण० ॥ २ ॥ हांरे सांज पडे रवि आथमे, तारो जीव जमरानी पर जमे ॥ तुने घरनो धंधो कांइ न गमे ॥ सुण० ॥ ३ ॥ हांरे तुं जइश मलोश छूतीने, तारुं धन लेशे सर्वे धूतीने ॥ पछी रहीश हेठुं कूटीने ॥ सुण० ॥ ४ ॥ तुं तो वेगो मुओ मरकीने, तारुं कालजुं खाशे करकीने ॥ तारुं मांस लेशे जकरकीने ॥ सुण० ॥ ५ ॥ तुंने प्रेमना प्याला पाइने, तारां वस्त्र लेशे वाइने ॥ तुंने करशे खोखुं खाइने ॥ सुण० ॥ ६ ॥ तुं तो पर मंदिरमां पेसीने, तिहां पारकी सेजे वेसीने ॥ तें जोग कर्या घणा हेंसीने ॥ सुण० ॥ ७ ॥ जेम भुजंग थकी मरता रहीए, तेम परनारीने परिहरीए ॥ जवसायर फेरा नवि फरीए ॥ सुण० ॥ ८ ॥ व्हाला परणी नारीथी प्रीत सारी, ए माथुं वढावे परनारी ॥ तमे निश्चे जाणजो निरधारी ॥ सुण० ॥ ए ॥ सद्गुरु कहे ते साचुं छे, तारी कायानुं सर्वे काचुं छे ॥ एक नाम प्रभुनुं साचुं छे ॥ सुण० ॥ १० ॥

॥ श्रावक योग्य करणीनी सज्झाय ॥

॥ चोपाइ ॥

॥ श्रावक तुं उठे परभात, चार घडी ले पाछली रात

॥ मनमां समरे श्री नवकार, जेम पामे भवसायर पार ॥ १ ॥ कवण[1] देव कवण गुरु धर्म, कवण अमारुं छे कुलकर्म ॥ कवण अमारो छे व्यवसाय[2], एवुं चिंतवजे मन मांय ॥ २ ॥ सामायिक लेजे मन शुद्ध, धर्मनी हैडे धरजे बुद्ध ॥ पडिक्कमणु करजे रयणी[3] तणु, पातक[4] आलोइ आपणुं ॥ ३ ॥ काया शके करे पच्चख्खाण, सुधी पाले जिननी आण भणजे गणजे स्तवन सज्झाय, जिणहुंति[5] निस्तारो थाय ॥४॥ चितवे[6] नित्य चउदे निम, पाले दया जीवतां सीम ॥ देहरे जाइ जुहारे देव, द्रव्य भावथी करजे सेव ॥ ५ ॥ पूजा करतां लाभ अपार, प्रभुजी मोटा मुक्ति दातार ॥ जे उत्थापे जिनवर देव, तेहने नव ढंढकनी टेव ॥ ६ ॥ पोशाले[7] गुरु वंदजे जाय, सुणे वखाण सदा चित्त लाय ॥ निर्दूपण सुजंतो[8] आहार, साधुने देजे सुविचार ॥ ७ ॥

---

१ कोण. २ व्यापार–रोजगार. ३ रात्रिनु. ४ पाप. ५ जेथी ६ चौद नियम सदाय धारजे. पौषधशाला–उपाश्रये. ८ दोष वगरनो साधुने खपे एवो शुद्धमान

स्वामिवत्सल[1] करजे घणुं, सगपण मोहोटुं सामी तणुं ॥ दुःखीया हीणा दीनने देख, करजे तास दया सुविशेष ॥ ८ ॥ घर[2] अनुसारे देजे दान,[3] मोटाशुं म करे अभिमान ॥ गुरुने मुख लेजे आखमी[4], धर्म न मूकीश एके घमी ॥ ए ॥ वारु शुद्ध करे व्यापार, ठेठा अधिकानो परिहार ॥ म भरजे केनी कूमी साख, कूमा जनशुं कथन म भाख ॥ १० ॥ अनंतकाय[5] कही बत्रीश, अभक्ष्य[6] बावीशे विश्वावीश ॥ ते भक्षण नवि कीजे किमे, काचां कुणां फल मत जिमे ॥ ११ ॥ रात्रिभोजनना बहु दोष, जाणीने करजे संतोष ॥ साजी साबु लोह ने गली, मधु धावमी मत वेचो वली ॥१२॥ वली म करावे रंगण पास, दूषण घणां कह्यां ठे तास ॥ पाणी गलजे बे बे वार, अणगल पीतां दोष अपार ॥ १३ ॥ जीवाणीना[7] करजे यत्न, पातक ठंमी करजे पुण्य ॥ ढाणां इंधण चूलो जोइ, वावरजे जिम पाप न होय ॥ १४ ॥ घृतनी परे वावरजे नीर, अणगल नीर

---

१ स्वधर्मिनी सेवा. २ संपत् प्रमाणे. ३ बलीया साथे वाथ भीडीश नहीं. ४ व्रत, नियम, प्रतिज्ञा. ५ जमीनकंद विगेरे. ६ मध, माखण, काचुं मीठुं विगेरे. ७ पाणीनो संखारो वालतां बचेलां जीवजंतुओ.

म धोड्श चीर ॥ ब्रह्मव्रत सुधुं पालजे, अतिचार सघल टालजे ॥ १५ ॥ कह्यां पन्नरे कर्मादान, पाप तणी पर हरजे खाण ॥ माथे म लेजे अनरथदंम,[१] मिथ्या मेल म नरजे पिम ॥ १६ ॥ समकित शुद्ध हैडे राखजे, बोल विचारीने नाखजे ॥ पांच तिथि म करे आरंन, पाले शीयल तजी मन दंन ॥ १७ ॥ तेल तक्र[२] घृत दुध दहीं, उघाडां मत मेले सही ॥ उत्तम ठामे खरचे वित्त पर उपगार करे शुन चित ॥ १८ ॥ [३]दिवसचरिम करजे चोविहार, चारे आहार तणो परिहार ॥ दिवस तणां आलोए पाप, जिम नांजे सघला संताप ॥ १९ ॥ संध्याए आवश्यक[४] साचवे, जिनवर चरण शरण नवनवे ॥ चारे शरण करी दृढ होय, सागारी[५] अणसण ले सोय ॥ २० ॥ करे मनोरथ मन एहवा, तीरथ शेत्रुंजे जायवा ॥ समेतशिखर आबु गिरनार, नेटीश हुं धन्य धन्य अवतार ॥ २१ ॥ श्रावकनी करणी छे एह, एहथी थाये नवनो छेह[६] ॥ आठे कर्म पडे पा

---

१ मिथ्यात्व मेलथी आत्माने मलिन करीश नहीं. २ छाश. ३ सूर्य अस्त थया पहेला सघला खानपाननो त्याग करजे. ४ प्रतिक्रमणादि ५ अमुक आगार (छुट) राखु. ६ अंत, छेडो.

गलां, पाप तणा तूटे आमला[1] ॥ २२ ॥ वारु लहीए अमर[2] विमान, अनुक्रमे पामे शिवपुरधाम ॥ कहे जि नहर्ष नणे ससनेह, करणी दुःखहरणी ठे एह ॥ २३ ॥

॥ गौतमस्वामीनी सज्झाय ॥

॥ हे इंद्रनूति ताहरा गुण कहेतां हरख न माय, हे गुणदरिया सुरवधू कर जोमी गुण गाय ॥ ए आं- कणी ॥ जे शंकर विरंजीनी जोमी, वली मोरलीधरने वेठोमी ॥ तें जिनजी साथे प्रीत जोमी ॥ हे इंद्र० ॥ १ ॥ वेदना अरथ सुणी साचा, वीरना चेला थया जाचा ॥ कोइ लब्धिए न रह्या काचा ॥ हे इंद्र० ॥ २ ॥ परिग्रह नवविधना त्यागी, तुमची जागरणदशा जागी ॥ धर्मध्यान शुक्लध्यानना रागी ॥ हे इंद्र० ॥ ३ ॥ अनुजोग चारना बहु जाण, तेणे निर्मल प्रबल तुज नाण ॥ अमरत रस सम मीठमी वाण ॥ हे इंद्र० ॥ ४ ॥ जे काम नृपने रमवा दमी, त्रण गति त्रिवटे तेह पमी ॥ ते रमणी तुजने नहीं नमी ॥ हे इंद्र० ॥ ५ ॥ अति जागरणदशा ज्यारे जागी, नावठ सघली त्यारे नागी ॥ कहे धर्मजीत नोबत वागी ॥ हे इंद्र० ॥ ६ ॥

---

१ बंध. २ देव.

॥ हितोपदेश सज्झाय ॥

॥ हुं तो प्रणमुं सद्गुरु राया रे, माता सरसतीन वंदुं पाया रे ॥ हुं तो गाउं आतमराया ॥ जीवणजं वारणे मत जाजो रे ॥ तुम घेर वेठा कमावो चेतनजं ॥ वारणे मत जोजो रे ॥ १ ॥ ताहरे वाहिर दुर्मदि राणी रे, केताशु कुमति कहेवाणी रे ॥ तुने नोलवं वांधशे ताणी ॥ जी० ॥ वा० ॥ २ ॥ ताहरा घरमां त्रण रतन रे, तेनुं करजे तुं तो यतन रे ॥ ए अखूट खजानो छे धन ॥ जी० ॥ वा० ॥ ३ ॥ ताहरा घरम पेठा छे धूतारा रे, तेने काढोने प्रीतम प्यारा रे एथी रहोने तुमे न्यारा ॥ जी० ॥ वा० ॥ ४ ॥ सत्ताव नने काढो घरमांथी रे, त्रेवीशने कहो जाये ह्हांथी ॥ पछी अनुनव जागशे मांहेथी ॥ जी० ॥ वा० ॥ ॥ सोल कपायने दीयो शीख रे, अढार पापस्थानक मगावो नीख रे ॥ पछे आठ करमनी शी वीक ॥ जी ॥ वा० ॥ ६ ॥ चारने करोने चकचूर रे, पांचमीशु था हजूर रे ॥ पछे पामो आनंद नरपूर ॥ जी० ॥ वा० ७ ॥ विवेकदीवे करो अजुवालो रे, मिथ्यात्व अधक रने टालो रे ॥ पछे अनुनव साथे मालो ॥ जी०

०॥ ८॥ सुमति साहेलीशुं खेलो रे, दुर्गतिनो छेम्रो
हेलो रे ॥ पछे पामो मुक्ति गढ हेलो ॥ जी० ॥ बा०
ए ॥ ममताने केम न मारो रे, जीती बाजी कांइ
ारो रे ॥ केम पामो नवनो पारो ॥ जी० ॥ बा० ॥१०
शुद्ध देव गुरु सुपसाय रे, मारो जीव आवे कांइ ठाय
॥ पछे आनंदघन मन थाय ॥ जी० ॥ बा० ॥ ११ ॥

॥ मृगापुत्रनी सज्झाय ॥

॥ सुग्रीव नयर सोहामणुं जी, राजा श्री बलनद्र ॥
स घरणी मृगावती जी, तस नंदन गुणवंत रे ॥ मारूी
त्रण लाखिणो जाय ॥ १ ॥ संयम चिंतामणी समो जी,
प्रधिक मोरे मन थाय ॥ तन धन जोबन कारमो जी,
खिण खिण खूटे आय रे ॥ मारूी० ॥ २ ॥ एक दिन
ठा मालीये जी, नारीने परिवार ॥ शीश सूर दाझे
ले जी, दीठो सीरी अणगार रे ॥ मारूी० ॥ ३ ॥ तस
रसण नव सांनर्यो जी, आव्यो मन वैराग ॥ आमण
दुमण उतर्यो जी, लाग्यो माताने पाय रे ॥ मारूी० ॥
। ॥ पाय लागीने विनवे जी, सांनलो मोरी रे मात ॥
ाटकनी परे नाचीउं जी, हवे न लेखुं वात रे ॥ मारूी०
॥ ५ ॥ साते नरके हुं नम्यो जी, अनंत अनंती रे वार

॥ वेदन जेदन त्यां सह्यां जी, कहेतां न लहुं पार रे । मारुी० ॥ ६ ॥ सायरजल पीधां घणां जी, वली पीध मायनां थान ॥ तृप्ति न पाम्यो प्राणीउं जी वली वर्ल मागुं मान रे ॥ मारुी० ॥ ७ ॥ वयण सुणी वेटा तण जी, जननी धरणी ढलत ॥ चित वल्यु तव आरडे जी नयणे नीर जरत रे ॥ मारुी० ॥ ८ ॥ वलतुं मारुी इम जणे जी, सांजलो मोरा रे पुत ॥ मनमोहन मुज वाहल जी, कांइ जागे घरसूत्र रे ॥ जायो तुज विण घमीय न जाय ॥ ए ॥ मोटां मंदिर मालीयां जी, नारीनो परि· वार ॥ वहु तुम पाखे ए सहु जी, रण समोवमी थाय रे ॥जाया० ॥ १० ॥ दश मसवामा उदर धर्यो जी, ज· नम तणे डुःख दीठ ॥ कनककचोले पोसीयो जी, हवे हुं थइ अनिठ रे ॥ जाया० ॥ ११ ॥ जोबनवय रमणी तणा जी, लीजे वहुला रे जोग ॥ ए जोबन वील्या पठी जी, आदरजो तप जोग रे ॥ १२ ॥ परघर जिक्षा मा गवी जी, अरस विरस विहार ॥ चारित्र छे वहु दो हिलो जी, जेसी खांमानी धाररे ॥ जाया० ॥ १३ । पच महाव्रत पालवां जी, पालवा पच आचार ॥ दोष बेतालीश टालवा जी, लेवो शुद्ध आहार रे ॥ जाया०

॥ १४ ॥मीणदांत लोहमय चणा जी, तुं किम चावीश वह ॥ वेलुकवल सम कोलीया जी, संजम कहे जिन-राज रे ॥ जाया० ॥ १५ ॥ पलंग तलाइ पोढता जी, करवा भूमि संथार ॥ कनककचोलां ढांकवां जी, वह काचलीए व्यवहार रे ॥ जाया० ॥ १६ ॥ शियाले शीत ाय छे जी, उनाले लू वाय ॥ वरसाले अति दोहिलो ी, घमी वरस सो थाय रे ॥ जाया० ॥ १७ ॥ कुंवर तणे सुण मातमी जी, संयम सुख भंडार ॥ चौद राज नगरी तणा जी, फेरा टालणहार रे ॥ माभी० ॥ १८ । सुण अमारा बालुमा जी, कोण करशे तुज सार ॥ ोग जब आवी लागशे जी, नहीं औषध उपचार रे ॥ जाया० ॥ १९ ॥ वनमां रहे छे मृगलां जी, कोण करे तेहनी सार ॥ वनमृगनी परे चालशुं जी, अनुमति दीयो मोरी माय रे ॥ माभी० ॥ २० ॥ माय मोकलावीने वली जी, समरथ साहस धीर ॥श्रीगुरु चरणे जइ नम्यो जी, दीक्षा द्यो श्री वीर रे ॥ जाया० ॥ २१ ॥ सुर नर किन्नर बहु मिल्या जी, उछवनो नहीं पार ॥ सर्वविरति जेणे आदरी जी, जिणे लहीए भवजल तीर रे ॥ जाया० ॥ २२ ॥ षट्काय गोवलीयो जी, उपशम रस भंडार ॥

समिति गुप्ति ऋपि पालतो जी, निराधार आधार रे ॥ जाया० ॥ २३ ॥ मृगापुत्र ऋपि राजीयो जी, पाम्यो शिवपुरठाम ॥ सिहविमल एम विनवे जी, होजो तास प्रमाण रे ॥ जाया तुज विण घमीय न जाय ॥ २४ ॥

॥ इलाची पुत्रनी सज्झाय ॥

॥ नाम इलापुत्र जाणीए, धनदत्त शेठनो पुत्र ॥ नटवी देखीने मोहीउं, नवि राख्युं घरनु सूत्र ॥ १ ॥ करम न छूटे रे प्राणीया, पूरव नेह विकार ॥ निज कुळ छंमी रे नट थयो, नाणी शरम लगार ॥ करम० ॥ २ ॥ मात पिता कहे पुत्रने, नट नवि थइए रे जात । पुत्र परणावुं रे पदमिणी, सुख विलसो संघात ॥ करम० ॥ ३ ॥ कहेण न मान्यु रे तातनुं, पूरव कर्म विशेष । नट थइ शीख्यो रे नाचवा, न मटे लख्या रे लेख । करम० ॥ ४ ॥ इकपुर आव्यो रे नाचवा, उचो वंश विशेष ॥ तिहां राय जोवाने आवीउं, मलीयां लोक अनेक ॥ करम० ॥ ५ ॥ ढोल वजावे रे नटवी, गावे किन्नर साद ॥ पायतल घुघर घमघमे, गाजे अंबर नाद ॥ करम० ॥ ६ ॥ दोय पग पहेरी रे पावकी, वंश चढ्यो गज गेल ॥ नोधारो थइ नाचतो, खेले नवनवा खेल ।

करम० ॥ ७ ॥ नटवी रंजा रे सारिखी, नयणे देखे रे जाम ॥ जो अंतेउरमां ए रहे, जनम सफल मुज ताम ॥ करम० ॥ ८ ॥ तव तिहां चिंते रे नृपति, लुब्ध्यो नटवीनी साथ ॥ जो नट पडे रे नाचतो, तो नटवी करुं मुज हाथ ॥ करम० ॥ ए ॥ कर्मवशे रे हुं नट थयो, नाचुं छुं निराधार ॥ मन नवि माने रे रायनुं, तो कोण करवो विचार ॥ करम० ॥ १० ॥ दान न आपे रे नृपति, नटे जाणी ते वात ॥ हुं धन वांछुं छुं रे रायनुं, राय वंछे मुज घात ॥ करम० ॥ ११ ॥ दान लहुं जो हुं रायनुं, तो मुज जीवित सार ॥ एम मन मांहे चिंतवी, चढीउ चोथी रे वार ॥ करम० ॥ १२ ॥ थाल नरी शुद्ध मोदके, पदमणी उन्नी छे बार ॥ ल्यो ल्यो कहे छे लेता नथी, धन्य धन्य मुनि अवतार ॥ करम० ॥ १३ ॥ एम तिहां मुनिवर वोहोरता, नटे पेख्या महानाग ॥ धिग् धिग् विषया रे जीवने, एम नट पाम्यो वैराग ॥ करम० ॥ १४ ॥ संवरनावे रे केवली, थयो ते कर्म खपाय ॥ केवलमहिमा रे सुर करे, लब्धिविजय गुण गाय ॥ करम न छूटे रे प्राणीया ॥ १५ ॥

॥ लोभनी सज्झाय ..

॥ लोज न करीए प्राणीया रे, लोज बूरो संसार
लोज समो जगमां नहीं रे, डुर्गतिनो दातार
जविकजन, लोज बूरो रे संसार ॥ करजो तुमे नि
धार ॥ जविकजन ॥ जिम पामो जवपार ॥ ज०
लोज० ॥ १ ॥ अति लोजे लक्ष्मीपति रे, साग
नामे शेठ ॥ पूर पयोनिधिमां पड्यो रे, जड वेट
तस हेठ ॥ ज० ॥ लोज० ॥ २ ॥ सोवनमृगन
लोजथी रे, दशरथ सुत श्रीराम ॥ सीता नारी गमा
वीने रे, जमीयो ठामो ठाम ॥ ज० ॥ लोज० ॥ ३
दशमा गुणठाणा लगे रे, लोज तणु ठे जोर ॥ शिव
पुर जातां जीवने रे, एहज मोटो चोर ॥ ज०
लोज० ॥ ४ ॥ क्रोध मान माया लोजथी रे, डुर्गति
पामे जीव ॥ परवश पमीउं वापमो रे, अहोनिश
पाडे रीव ॥ ज० ॥ लोज० ॥ ५ ॥ परिग्रहना परि
हारथी रे, लहीए शिवसुख सार ॥ देव दानव नर
पति थइ रे, जाशे मुक्ति मोझार ॥ ज० ॥ लोज० ॥ ६
जावसागर पंकित जणे रे, वीरसागर बुध शिष्य
लोज तणे त्यागे करी रे, पहोंचे सयल जगीश
जविकजन ॥ लोज० ॥ ७ ॥

॥ शिखामणनी सज्झाय ॥

॥ जीव वारु तुं मोरा वालमा, परनारीथी प्रीति म जोम ॥ परनारीनी संगत नहीं नला, तारा कुलमां लागशे खोम ॥ जीव० ॥ १ ॥ जीव ए संसार ठे कारमो, दीसे ठे आलपंपाल ॥ जीव एहवुं जाणी चेतजे, आगल माठीडे नाखी ठे जाल ॥ जीव० ॥ २ ॥ जीव मात पिता नाइ बेनमी, सहु कूटुंब तणो परिवार ॥ जीव वेती वारे सहु सगुं, पठे लांबा कीधा जुहार ॥ जीव० ॥ ३ ॥ जीव देहेली लगे सगुं आंगणुं, शेरी लगे सगी माय ॥ जीव सीम लगे साजन नलो, पठे हंस एकीलो जाय ॥ जीव० ॥ ४ ॥ जीव जातां तो नवि जाणीउं, नवि जाएयो वार कुवार ॥ जीव गारुं नरीयुं इंधणे, वली खोखरी हांमली सार ॥ जीव० ॥ ५ ॥ जीव आठम पाखी न उलखी, जीव बहुलां कीधा पाप ॥ जीव सुमतिविजय मुनि एम नणे, जीव आवागमन निवार ॥ जीव० ॥ ६ ॥

॥ जोवन अस्थिरनी सज्झाय ॥

॥ जोबनीआनी मोजां फोजां, जाय नगारां देती रे ॥ घमी घमी घमीआलां वाजे, तोही न जागे

तेथी रे, ॥ जो० ॥ १ ॥ जरा राक्षसी जोर करे छे फेलावी फजेती रे, ॥ आवी अवधे छंडके नहीं लखपतिने देती रे ॥ जो० ॥ २ ॥ माले बेठो मोज करे छे, खांते जोवे खेती रे ॥ जमरो नमरो ताणं लेशे, गोफण गोला सेती रे ॥ जो० ॥ ३ ॥ जे ते उपर जोर करो छो, चतुर जुवोने चेती रे, । मांधाता सरखा नर वलीया, रोजवियो थया रेती रे। जो० ॥ ४ ॥ जिन राजाने शरणे जाउं, जोरालो को न जेथी रे ॥ दुनियामां दुजो दीसे नहीं, आखर तरशो तेथी रे ॥ जो० ॥ ५ ॥ दंत पड्या ने कोस थयो, काज सर्यु नहीं केयी रे ॥ उदयरत्न कहे आपे समजो, कहीए वातो केती रे ॥ जो० ॥ ६ ॥

॥ श्री शीयळ विषे सज्झाय ॥

॥ सोम विमल गुरु पय नमी जी, निज गुरु चरण वंदेवि ॥ शील तणा गुण गायशुं जी, हियडे हर्ष धरेवि रे, ॥ जीवडा ॥ धरीए शील व्रत सार ॥ १ ॥ शील विण व्रत सवि खडहडे जी, शील विण संयम सार रे ॥ जीवडा ॥ धरीए शील व्रत सार ॥ ए आंकणी ॥ तोरणथी रथ वालीयो जी, जाग्यो

ेम कुमार ॥ राजीमती विनवे घणुं जी, न धरे
ोह लगार रे ॥ जीवका ॥ धरीए० ॥ २ ॥ थूलि-
तद्र कोश्या घर रहे जी, चतुरपणे चउ मास ॥
ट्टरस नित्य जोजन करे जी, न पड्यो कोश्या
ाश रे ॥ जीवका ॥ धरीए० ॥ ३ ॥ नवाणुं कंचन
ोकी धणी जी, कहीए जंवुकुमार ॥ आठे कन्या
रहरी जी, लीधो संयमजार रे ॥ जीवका ॥
रीए० ४ ॥ धनसंचय पुत्री जणे जी, परणुं वयर
ुमार ॥ वयर स्वामी मन नवि चव्यो जी, जाणी
अथिर संसार रे ॥ जीवका ॥ धरीए० ॥ ५ ॥ शेठ
ुदर्शनने दीए जी, अजया कपिला रे आल ॥
ूली सिंहासन थयुं जी, जाणे ंवाल गोपाल रे ॥
जीवका ॥ धरीए० ॥ ६ ॥ वंकचूल चोरी करे जी,
ठो राय जंमार ॥ राणीए घणुं जोलव्यो जी, न
व्यो चित्त लगार रे ॥ जीवका ॥ धरीए० ॥ ७ ॥
कलह करावे अति घणो जी, ते तो शील प्रजाव रे ॥
जीवका ॥ धरीए० ॥ ८ ॥ चंदनबाला महासती जी,
जगमां हुइ विख्यात ॥ जस हाथे वीर पारणुं जी, हुइ
असंजव वात रे ॥ जीवका ॥ धरीए० ॥ ए ॥ सात

सहस वर्ष आंबिल करी जो, नरतशु ठंडे रे प्रेम ॥
॥ ऋषभ पुत्री ते सुंदरी जी, मुक्ते पहोती खेम रे ॥
जीवमा ॥ ॥ धरीए० ॥ १० ॥ शीलवती नरथारने जी
कमलिनी आपे सार ॥ क्यारे कुर माथे नही जी;
शील तणे अनुभाव रे ॥ जीवमा ॥ धरीए० ॥ ११ ॥
चालणीए जल काढीयुं जी, सती सुभद्रा नार ॥
चपा वार उघाडीयां जी, लोक करे जयकार रे ॥
जीवमा ॥ धरीए० ॥ १२ ॥ सती मांहे सीता भली जी;
जेहने मन श्रीराम ॥ अग्नि टली पाणी थयु जी, राख्युं
जगमां नाम रे ॥ जीवमा ॥ धरीए० ॥ १३ ॥ शीले
हरीयुं हरणलुं जी, शीले सकट जाय ॥ शीले साप न
आभडे जी, पावक पाणी थाय रे ॥ जीवमा ॥धरीए०॥
॥१४॥ जे प्राणी स्वकाय थकी जी, शील पाले गुणवत
॥ ब्रह्मलोके ते अवतरे जी, इम भाखे भगवंत रे ॥
जीवमा ॥ धरीए० ॥ १५ ॥ शील अखंडित पालशे
जी, इण जुग जे नर नार ॥ हस सोम उवज्झाय तणे
जी, तेहने जयजयकार रे ॥ जीवमा ॥धरीए० ॥१६॥

॥ श्री समकितनी सज्झाय ॥

॥ समकित नवि लह्यु रे ए तो रुल्यो चतुर्गति

मांहे ॥ त्रस थोवरकी करुणा कीनी, जीव न एक विराध्यो ॥ तीन काल सामायिक करतां, शुद्ध उपयोग न साध्यो ॥ समकित० ॥ १ ॥ जूठ बोलवाको व्रत लीनो, चोरीको पण त्यागी ॥ व्यवहारादिक महा निपुण भयो, पण अंतर्दृष्टि न जागी ॥ समकित० ॥ ॥ २ ॥ ऊर्ध्व भुजा करी उंधो लटके, भस्म लगा धूम गटके ॥ जटा जूट शिर मुंडे जूठो, विण श्रद्धा भव भटके ॥ समकित० ॥ ३ ॥ निज परनारी त्यागज करके ब्रह्मचारी व्रत लीनो ॥ स्वर्गादिक याको फल पामी, निज कारज नवि सिध्यो ॥ समकित० ॥ ४ ॥ बाह्य क्रिया सब त्याग परिग्रह, द्रव्यलिंग धर लीनो ॥ देवचंद्र कहे आ विध तो हम, बहुत वार कर लीनो ॥ समकित० ॥ ५ ॥

॥ श्री रात्रिभोजननी सज्झाय ॥

॥ पुण्यसंजोगे नरभव लाधो, साधो आतम काज ॥ विषया रस जाणो विस सरखो, एम भाखे जिनराज रे ॥ प्राणी ॥ रात्रि भोजन वारो ॥ आगम वाणी साची जाणी, समकित गुण सही नाणी रे ॥ प्राणी॥ रात्रि० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ अभक्ष्य बावीशमां रय-

णीजोजन, दोष कह्या परधान ॥ तेणे कारण राते म
जमजो, जो हुवे हइडे शान रे ॥ प्राणी ॥ रात्रि० ॥
॥ दान स्नान आयुध ने जोजन, एटलां राते न की
॥ ए करवु सूरजनी शाखे, नीतिवचन समजीजे रे
प्राणी ॥ रात्रि ॥ ३ ॥ उत्तम पशु पंखी पण राते
टाले जोजन टाणो ॥ तुमे तो मानवी नाम धरावे
किम संतोष न आणो रे ॥ प्राणी ॥ रात्रि० ॥ ४
माखी जु कीमी कोलीआवमो, जोजनमां जो आवे
कोढ जलोदर वमन विकलता, एहवा रोग उपावे रे
॥ प्राणी ॥ रात्रि० ॥ ५ ॥ ठन्नुं जव जीव हत्या करतां
पातीक जेह उपायुं ॥ एक तलाव फोमतां तेटलुं, दुषण
सुगुरु बतायु रे ॥ प्राणी ॥ रात्रि० ॥ ६ ॥ एकलोत्त
जव सर फोमया सम, एक दव देतां पाप ॥ अठलो
त्तर जव दव दीधां जिम, एक कुवणिज संताप रे
प्राणी ॥ रात्रि० ॥ ७ ॥ एकसो चुमालीस जव ल
कीधा, कुवणिजना जे दोष ॥ कुडुं एक कलंक दीयं
तेहवो पापनो पोष रे ॥ प्राणी ॥ रात्रि० ॥ एकर
एकावन जव लगे दीधां, कूमां कलंक अपार ॥ ए
वार शील खंड्या जेवो, अनर्थनो विस्तार रे ॥ प्राए

। रात्रि० ॥ ए ॥ एकसो नवाणुं जव लगे खंड्या, शील विषय संबंध ॥ तेहवो एक रात्रिभोजनमां, कर्म निकाचित बंध रे, प्राणी ॥ रात्रि० ॥ १० रात्रिभोजन मां दोष घणा छे, श्यो कहीए विस्तार ॥ केवली कहेतां पार न पावे, पूरव कोमी मजार रे ॥ प्राणी ॥ ॥ रात्रि० ॥ ११ ॥ रात्रे नित्य चोविहार करीने, शुभ परिणाम धरीजे ॥ मासे मासे मासखमणनो, लाभ इणे विध लीजे रे ॥ प्राणी ॥ रात्रि० ॥ १२ ॥ मुनि वसतानी एह शिखामण, जे पाले नर नारी ॥ सुरनर सुख विलसीने होवे, मोक्ष तणा अधिकारी रे ॥ ॥ प्राणी ॥ रात्रि० ॥ १३ ॥

॥ श्री सहजानंदीनी सज्झाय ॥
(बीजी अशरण भावना–ए देशी.)

सहजानंदी रे आतमा, सूतो कांइ निश्चिंत रे ॥ मोह तणा रणीया भमे, जाग जाग मतिवंत रे ॥ लूंटे जगतना जंत रे, नाखी वांक अत्यंत रे, नरकावास ठवंत रे, कोइ विरला उगरंत रे ॥ स० ॥ १ ॥ राग द्वेष परिणति भजी, माया कपट कराय रे ॥ काश कुसुम परे जीवको, फोगट जन्म गमाय रे ॥

माथे जय जमराय रे, श्यो मन गर्व धराय रे, सहु एक मारग जाय रे, कोण जग अमर कहाय रे ॥ स० ॥ २ ॥ रावण सरिखा रे राजवी, नागा चाल्या विण धाग रे ॥ दश माथां रण रुवड्यां, चांच दीए शिर काग रे, देव गया सवि जाग रे, न रह्यो माननो ठाग रे, हरि हाथे हरिनाग रे, जोजो जाइउंना राग रे ॥ स० ॥ ३ ॥ केइ चाल्या केइ चालशे, केता चालणहार रे ॥ मारग वहे तो रे नित्य प्रत्ये, जोतां लक्ष हजार रे ॥ देश विदेश सधार रे, ते नर एणे संसार रे, जातां जम दरबार रे, न जुवे वार कुवार रे ॥ स० ॥ ४ ॥ नारायण पुरी द्वारिका, बलती मेली निराश रे ॥ रोता रणमां ते एकला, नाठा देव आकाश रे ॥ किहां तरु छाया आवास रे, जल जल करी गयो सास रे, बलजड सरोवर पास रे, सुणी पांडव शिववास रे ॥ स० ॥ ५ ॥ राजी गाजीने बोलता, करता हुकम हेरान रे ॥ पोढ्या अग्निमां एकला, काया राख समान रे ॥ ब्रह्मदत्त नरक प्रयाण रे, ए ऋद्धि अथिर निदान रे ॥ जेवुं पीपलपान रे, म धरो जूठ गुमान रे ॥
१५ स० ॥ ६ ॥ वालेसर विना एक घडी, नवि सोहातुं

लगार रे ॥ ते विना जनमारो वही गयो, नहीं
ागल समाचार रे ॥ नहीं कोइ कोइनो संसार
, स्वारथीयो परिवार रे, माता मरुदेवी सार रे,
ोहोता मोक्ष मोझार रे ॥ स० ॥ ७ ॥ मात पिता
ुत बांधवा, अधिको राग विचार रे ॥ नारी
सारी रे चित्तमां, वंछे विषय गमार रे ॥ जुवो सूरि
ांता जे नार रे, विष देती भरतार रे, नृप जिन-
र्मे आधार रे, सज्ञान नेह निवार रे ॥ स० ॥ ८ ॥
सी हसी देतां रे तालीउं, शय्या कुसुमनी सार रे ॥
नर अंते माटी थया, लोक चणे घरवार रे ॥
ाकृता पात्र कुंभार रे, एहवुं जाणी असार रे,
ोड्यो विषय विकार रे, धन्य तेहनो अवतार रे ॥
स० ॥ ए ॥ थावच्चासुत शिव वर्या, वली एलाची कु-
मार रे ॥ धिक् धिक् विषया रे जीवने, लइ वैराग्य
साल रे ॥ मेली मोहजंजाल रे, घर रमे केवल
ाल रे, धन्य करकंडू भूपाल रे ॥ स० ॥ १० ॥ श्री
ुन्नविजय सुगुरु लही, धर्मरयण धरो टेक रे ॥
ोर वचनरस शेलडी, चाखे चतुर विवेक रे, ॥ न
ुमे ते नर नेक रे, धरता धर्मनी टेक रे, भवजल
ारीया अनेक रे ॥ स० ॥ ११ ॥

॥ अष्टम खंड ॥

॥ लावणी संग्रह तथा आरती समूह ॥

॥ आदिनाथनी लावणी ॥

॥ श्री अदिनाथ निरवाणी नमुं ऐसे ध्यानी भवि जीव तरणके काज वणाइ वाणी ॥ ए आंकणी। तुम नाभि राय कुलधारी वडे अवतारी, खूल रई खलकमे खूब केसरकी क्यारी ॥ तुम ममता मनकी मारी आतमा तारी, तज दीनी प्रीत विषयनकी जान कर खारी ॥ तुम करी मुक्ति पट्टरोणी जगतमें जाणी ॥ भवि० ॥ १ ॥ जाण्या सुर नर सुखराशि हुवा हे उदासी, जल गइ जवर जजाल जगतकी फांसी ॥ तुम जगतपति अविनाशी मुक्तिके वासी, शिवमंदिरमां सुख सेज बीछाइ खासी ॥ तुम करी सफल जींदगानी मेरे मन मानी ॥ भवि० ॥ २ ॥ वडे ज्योतिवंत जिनराज जगतमे बाजे, तेरो दरिसण हे सुखदायी सुधारे काजे ॥ तेरी धून गगनमें गाजे वे सुरपति लाजे, गल गया गरव पाखन्ड कामना भाजे ॥ नाटक नाचे इंद्राणी अधिक धून आणी ॥ भवि० ॥

॥ ३ ॥ तेरी महिमा कही न जावे पार नहीं पावे, गांधर्व सुरपति सब देव तेरे गुण गावे तेरे चरनुंमें झपटाइ सरस लय लावे, नर नार हिया के मांहे ज-गति तेरी च्हावे ॥ तेरी तृष्णा सब विरलाणी मुगति-कुं ताणी ॥ जवि० ॥ ४ ॥ मरुदेवा कुखका जाया अ-मर पद पाया, छप्पन कुमरी नारी मीली जस गाया ॥ दुरगतिका दुःख विरलाया सफल करी काया, जिन-दास निरंजन देख शरण तेरे आया ॥ समकितकी सेज पीछान मीली मोहे टाणी ॥ जवि० ॥ ५ ॥

॥ अजितनाथनी लावणी ॥

॥ श्री अजितनाथ महराज, गरीब निवाज, जरूर जिनवर जी ॥ सेवक शिर नामी तने उच्चारे अरजी । ए आंकणी ॥ १ ॥ कर माफी मारा वांक, रझलीउं रांक, अनंता जवमें ॥ आव्यो हुं ताहरे शर्ण, बली दुःखदवमें ॥ क्रोधादिक धूत्ता चार, खरेखर खार, ल-ग्या मुज केडे ॥ वली पापी मारो नाथ, छेक छंछेडे ॥ आ मुजरो मुज जगवान्, करुं गुणगान, ध्यानमां धर-जी ॥ सेवक० ॥ २ ॥ में पूर्ण कर्यां छे पाप, सुणजो आप, कहुं कर जोडी ॥ मुज जुंडामां जगवान्, जूल

नहीं थोमी ॥ जीवहिंसा अपरंपार, करी किरतार, ह
वे शुं करवु ॥ जूठु वहु वोली नाथ, साचने शुं हर
॥ तुज खोलामां मुज शीश, जाण जगदीश, गमे
करजी ॥ सेवक० ॥ ३ ॥ मे कर्यां वहु कुकर्म, धयं
नही धर्म, पूरण हुं पापी ॥ अवलो थइ तहारी आण
मेज उत्थापी ॥ मे मूरख निंदा घणी, मुनिवर तणी
करी हरखायो ॥ परदारा देखी लवारू, हुं ललचायो ।
किंकर कहे केशवलाल, आणीने वहाल, दुःखने हर
जी ॥ सेवक शिर नामी, तने उच्चारे अरजी ॥ ४ ।

॥ शांतिनाथनी लावणी ॥

॥ सुण शांति शांति दातार, जगत आधार अचल
जिनवरजी, अचल जिनवरजी, किंकर शिर नामी
तने सुणावे अरजी ॥ ए आंकणी ॥ कैवल्यद जि
तुज नाम, सुणी गुणधाम, हरख धरी मनमां, हरख
धरी मनमां, आव्यो हुं तारे शरण, नमी नववनम
॥ क्रोधादिक वैरी चार, दीए वहु मार, पड्या मुज
केडे, वली अर्जित पुन्य कदंवकने फफेडे ॥ मुज
दुःखवारनो अंत, लावी भगवंत, तुम सम करजी ।
किंकर० ॥ १ ॥ मुज अवगुणने जिनराज, माफ क

आज, कहुं कर जोमी, कहुं कर जोमी, नवकूपथी तार कर्मने तोमी ॥ में पूरण कर्या कुकर्म, थयों नहीं धर्म, मर्त्य नव पामी, मर्त्य नव पामी, वली अमर तणे अवतार, थयो वहु कामी ॥ हवे तुज विना जिननाथ, जोरुं नहीं हाथ, हरीने हरजी, हरीने हरजी ॥ किंकर० ॥ २ ॥ वासव सेवित नगवान, करुं गुणगान, दर्श दो जिनजी, दर्श दो जिनजी, तुज दरिसणमां जगदीश, मुज मन लीनजी ॥ तुम चरणजलजनी सेव, आपजो देव, जगत उपगारी, जगत उपगारी, पदपंकज सेवी, तुर्त वरुं शिवनारी ॥ मांणिक वंदे तुम पाय, विज्नु जिनराय, पापचय हरजी, पापचय हरजी, ॥ किंकर० ॥ ३ ॥

॥ विमलनाथनी लावणी ॥

॥ करुं में सेव जिन तेरी, अरज सुण विमलनाथ री ॥ टेक ॥ अवर सुर नवि गमे मुजकुं, याचना रत में तुजकुं ॥ रत्नकुं साव जगत सेवे, काचको रू कोण लेवे ॥ मधुकर रहे कमल घेरी ॥ अरज० १ ॥ नाथ तुज आण नहीं पाली, पारकी वामा निहाली ॥ जीव समुदाय घणा मारी, दुःखसें सह्यां

अति नारी ॥ करी चोगति विचमे फेरी ॥ अरज० ॥ २ ॥ करु अब शरण जिन तेरुं, निज मरण काप दुःख मेरुं ॥ अचल पद आप हस्त जोरुं, ठेरलो नही तुज छोरु ॥ प्रज्ञु क्युं करते हे देरी ॥ अरज० ॥ ३ ॥ जगतगुरु जिनवर जयकारी, नमे तुजकु सुर नर नारी ॥ जैनकी सजा गुण गावे, मुनि माणिक हर्ष पावे ॥ वारजो दुष्ट कर्म वेरी, अरज सुण विमलनाथ मेरी ॥ ४ ॥

॥ उपदेश विषे लावणी ॥

॥ चेतन जज ले जिनराज, प्रणत पवि पाणी,(२) सब जूठो हे संसार, दुःखकी खाणी ॥ ए आंकणी ॥ धन रमणी जगिनी मात, जनक ने ज्राता, (२) स्वारथीछे सब परिवार, कोइ नहो त्राता ॥ जेसो चपला ऊबकार, तेसी हे माया, (२) उठ चले जायगो जीव, नगी कर काया ॥ आवेगी साथ अघ पुन्य, दोय कमाणी, (२) सब० ॥ १ ॥ तु जटक्यो चोगति मांहि, अनंती वार, (२) बहु पुन्योदयथी लीयो, मनुज अवतार ॥ अब छोरु क्रोध ने मान, पापचयकारी, (२) आराधन कर जिनधर्म शर्म

दातोरी ॥ जिनवरकी कर ले सेव, भाव मनआणी, (२) सव० ॥ २ ॥ परनितंविनीशुं प्रीत, कबु नव कीजे, (२) अविरत जिन आगम, अमृत रसकुं पीजे ॥ कर सुमतिको तुं संग, कुमति निवारी, (२) भवजलधि तर ले, क्लिष्ट कर्म विदारी ॥ धर ले माणिककी शीख, चित्तमें प्राणी, (२) सव जूठो हे संसार, दुःखकी खाणी ॥ सव० ॥ ३ ॥

॥ केसरीयाजोनी लावणी ॥

॥ सुनीयो रे वाता सदाशीवजी, मत चढ जाना धुलदेवा ॥ गढपति उनका बजा हे डंका, मत ढेजो तुमे उन देवा ॥ सगतारेपत चुडावत वोले, अमही नोकर उनहीका ॥ हिंदुपतसें हाथ जोड कर, तीन भवनमे हे टिका ॥ सुनीयो रे० ॥ १ ॥ सरग मरत पाताल सुनीये, सुर नर मुनिजन धावत हे ॥ इंद्र चंद मुनि दरशन आवे, मनकी मोजां पावत हे ॥ सुनीयो रे० ॥ २ ॥ गया राज उनहीकुं आपे, निरधनीयाकुं धन देवे ॥ खाजां खीलावे सुंदर लडका, सदा सुखी रहे जे प्रभु सेवे ॥ सुनीयो रे० ॥ ३ ॥ तारे जाज समुदर मांहे, रोग निवारे भवजचका ॥

नूप भुजंगम हरि करी नदीयां, चोरन वंधन अ
दवका ॥ सुनीयो रे० ॥ ४ ॥ धुं धुं धु धुं धुसा वाजे
दसो दिशामे हे डंका ॥ जाउ तातीया युं क
बोले, मत वतलावो गढ वंका ॥ सुनीयो रे० ॥ ५ ॥
राणाजीके उमरावजीका, मानता नहीं वे वातां ।
थांकी कीधी थेहीज पावे में नहीं आवु तुम सायां ।
सुनीयो रे० ॥ ६ ॥ मुठ मरोडें चढे अभिमाने, फे
र्या हे नजरोमे ॥ रिखजदासका साहेब सच्च
देख तमासा फजरोमे ॥ सुनीयो रे० ॥ ७ ॥

॥ वसत ॥

॥ वसंत पंचमी ने नोतम क्षेत्र, लगन लीयो निर
धार ललना ॥ सज साजन मली तोरण आये
पशुडे मांड्यो पोकार ॥ वसंतर विवाह आद्यों हे
॥ १ ॥ लीला पीला वांस रंगावा, चोरी चितराव
चार ललना ॥ जावे ते देवता वेद जणे छे, मंगल
गावे सखीयां चार ॥ वसंत० ॥ २ ॥ आठ जवर्न
हु नारी तमारी, श्यो रे अमारो वांक ललना ।
नवोनवनी हुं दासी तमारी, कालो छे कामण
गारो ॥ वसत० ॥ ३ ॥ नेमजी हैयामां कोधे जराणा,

संसारमां नहीं सार ललना ॥ रथ वाली नेम गिर-
नारे चाल्या, रोती रहे राजुल नार ॥ वसंत० ॥ ४ ॥
राजुल चाल्यां संजम लेवा, जइ चड्यां गढ गिरनार
ललना ॥ कर जोडी गौतम पाये लागुं, साचो छे
दीनदयाल ॥ वसंत० ॥ ५ ॥

॥ होरीओ ॥

(१)

॥ महावीर एसे जिनचंदनकुं, हरि आवत वे कर
जोडी, वे कर जोडी, [२] महावीर एसे प्रभु वंदनकुं
हरि आवत बे कर जोडी ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ चौद
सहस ते हस्ती बनाए, पांचसें वार मुखोरी ॥ हरि
हरि० ॥ मुख मुखी अष्ट दंतुशल सोहे, वावडी
हां रे लाला वावडी आठ लहोरी ॥ महावीर० ॥ २ ॥
वाव्य वाव्य बिच अष्ट कमल हे, पांखडी लाख
लहोरी ॥ हरि हरि० ॥ पांखडी खांखडी नाटक रचना वंश-
ली हां रे लाला वंशली वेण झकोरी ॥ महावीर० ॥ ३ ॥
कमल कमल बिच इंद्रभुवन हे, आठ नंद्रासन जोरी ॥
हरि हरि० ॥ बिचमें सिंहासन इंद्र बिराजे वीर लाला
वीर नमत कर जोडी ॥ महावीर० ॥ ४ ॥ दिशारणभद्र

देखी हरि रचना, निज अभिमान तज्योरी ॥ हरि हरि० ॥ रिद्धि ठोरूके चारित्र लीनो, प्रभुके लाला प्रभुके शरणे रह्योरी ॥ महावीर० ॥ ५ ॥ प्रभुके वचन सुणी आनंद पावे, वंदन मुनिपे कर्योरी ॥ हरि हरि० ॥ विनय धरत बहु भक्ति करत हे, हरि निज हांरे लाला हरि निज स्वर्गे गयोरी ॥ महावीर० ॥ ६ ॥

(२)

॥ रंग मच्यो जिनद्वार रे, चालो खेलीए होरी ॥ पासजीके दरबार रे ॥ चालो० ॥ फागनके दिन चार रे ॥ चालो० ॥ ए आंकणी ॥ कनककचोली केसर घोली, पूजो विविध प्रकार रे ॥ चालो० ॥ १ ॥ कृष्णागरको धूप घटत हे, परिमल बहेके अपार रे ॥ चालो० ॥ २ ॥ लाल गुलाब अबील उडावत, पासजीके दरबार रे ॥ चालो० ॥ ३ ॥ भरी पीचकारी गुलालकी छीरको, वामादेवी कुमार रे ॥ चालो० ॥ ४ ॥ ताल मृदंग वेण रूफ वाजे, भेरी भुगल रणकार रे ॥ चालो० ॥ ५ ॥ सब सखीयन मीली धुंवार सुनावत, गावत मगल सार रे ॥ चालो० ॥ ६ ॥ रत्नसागर प्रभु भावना भावे, मुख बोले जयकार रे ॥ चालो खेलीए होरी ॥ ७ ॥

(३)

॥ चंद्र प्रभुजीसें लाल रे, मोरी लागी लगनवा ॥ चंद्र० ॥ लागी लगनवा छोमी न छूटे, जब लग घटसें प्राण रे ॥ मोरी० ॥ १ ॥ दान शीयल तप भावना भावे, जैनधरम प्रतिपाल रे ॥ मोरी० २ ॥ हाथ जोम कर अरज करत हे, वंदत शेठ खुशाल रे ॥ मोरी लागी लगनवा ॥ ३ ॥

(४)

॥ कौन संग खेलुं होरी रे, मेरो पीयु ब्रह्मचारी ॥ कौन० ॥ समुद्रविजय शिवादेवीको नंदन, पंच महाव्रत धारी रे ॥ मेरो० ॥ १ ॥ आप चले गिरनारे उपर, पाछल राजुल नारी रे ॥ मेरो० ॥ २ ॥ सेसावनकी कुंज गलिनमें, लीनो केवल कर्म निवारी रे ॥ मेरो० ॥ ३ ॥ कहे नेमि प्रभु नेम राजुल दोए, पाम्यां मुक्ति मोहगारी रे ॥ मेरो० ॥ ४ ॥

(५)

॥ होरी खेलो रे भावक मन थिर करके, होरी खेलो रे, सुमति सुरंग गुलाल मंगावो, अबीर उमावो झोरी भर भरके ॥ होरी० ॥ १ ॥ ध्यान ग्यान मफ

ताल बजावो गुण गावो, प्रभु हित धरके ॥ होरी॰ ॥ २ ॥ अनुभव अत्तर फुलेल मंगावो, वास दिसोदिस महमहके ॥ होरी॰ ॥ ३ ॥ क्रोध मान रज धूल उडा वो, ज्यु ते राख्या सबल थरके ॥ होरी॰ ॥ ४ ॥

(६)

॥ सैयां मेने शी कीनी चोरी, शामरेसे कहीउं मोरी, शामरेसे॰ ॥ सब जादव मिल वसंत खेले, खेल खेलत गिरधर गोरी ॥ हरि हरि लाला खेल॰ ॥ हाथे गुलाल मुठी भर भरके, अबीरकी भरी हे जोरी ॥ सैयां॰ ॥ १ ॥ ससरो हमारो समुद्र विजयजी, सासु शिवादेवी भोरी ॥ हरि हरि॰ ॥ पीयुजी हमारो नेम नगीनो, छांटु केसर घन घोरी ॥ सैयां॰ ॥ २ ॥ कहत धरमचद नेम ने राजुल, सबी करमकु छोरी ॥ हरि हरि॰ ॥ करम नाश करी शिवगत साधी, आप खीलाइ दोरी ॥ सैयां॰ ॥ ३ ॥

॥ महुलीओ ॥

(१)

॥ प्रभु मारो भोग करम क्षीण जाणी रे, प्रभु मारो परण्यो सजम राणी रे ॥ प्रभु मारो त्रीश वरस

परवास रे, प्रभु मारो संजम लेवा उल्लास रे, ॥ प्रभु
गमे विहार लेवामां धार्यो रे, प्रभु अमने गमशे नहीं
निरधार रे॥ १ ॥ प्रभु तुं तो ज्ञानादिक गुणदरियो रे,
प्रभु हुं तो निराश्रय रह्यो पडीयो रे ॥ प्रभु मारा मा-
तो पितानो नहीं जोग रे, प्रभु मारा बंधवनो न करो
वियोग रे ॥ २ ॥ प्रभु महारा तुम विना घर सुनां
डी रे, प्रभु माहारा न गमे मोहोल ने मेडी रे, ॥
प्रभु माहारा तुम आणा वहेतो उल्लास रे, प्रभु मा-
हारा बंधव विण थयो जगदास रे ॥ ३ ॥ प्रभु मारो
चोसठ इंद्रे परवरियो रे प्रभु माहारो सिद्धारथ वन
संचरीयो रे ॥ प्रभु माहारो व्रत उच्चरी एम भाखे रे,
बंधव माहारा करशुं विहार उल्लासे रे, ॥ ४ ॥ प्रभु
माहारो एम कही चाल्यो तेणी वार रे, प्रभु माहारा
नयणे आंसुनी धार रे ॥ प्रभु माहारा निज नयरी
केम जाशुं रे, प्रभु माहारा मुज मन थयो उदास रे ॥
५ ॥ प्रभु तुं तो निरागी निचिंत रे, प्रभु माहारा द-
र्शनथी करजो पवित्र रे ॥ प्रभु तुं तो करुणारसनो कुपो
, प्रभु मुने एकलडो किम मूको रे ॥ ६ ॥ प्रभु मा-
हारो मणिउद्योत पेरे दीपे रे, प्रभु माहारो असंख्य

सूरज तेज छीपे रे ॥ प्रभु माहारा वरसीदाने जस लीधो रे, प्रभु माहारा दया पाली कारज सीधो रे॥ ७।

(२)

॥ जीरे जिनवर वचन सोहंकरु, जीरे अविचल शासन वीर रे ॥ गुणवता गिरुआ, वाणी मीठी रे महावीर तणी ॥ जीरे पर्षदा वार मली तिहां, जीरे अरथ प्रकाशो गुणगंजीर रे ॥ गुणवंता गोतम, प्रश्न पूछे रे महावीर आगले ॥ १ ॥ जीरे निगोदस्वरूप मुजने कहो, जीरे केम ए जीव विचार रे ॥ गु० ॥ वा० जीरे मधुर ध्वनिए जगगुरु कहे, जीरे करवा नविक उपकार रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ २ ॥ जीरे राज चौद लोक जाणीए, जीरे असख्याता जोजन कोमाकोमी रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ जीरे जोजन एक एमां लीजीए, जीरे लीजीए एक एकनो अश रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ ३ ॥ जीरे एक निगोदे जीव अनत छे, जीरे पुद्गल परमाणुआ अनंत रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ जीरे एक प्रदेशे जाणीए, जीरे प्रदेशे वर्गणा अनंत रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ ४ ॥ जीरे असंख्य गोला संख्य छे, जीरे निगोद असख्य गोला शेष रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ जीरे परमाणुआ प्रत्ये गुण अनंत छे, जी

वरण गंध रस फरस रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ ५ ॥ जीरे लोक सकलमय इम नयों, जीरे कहे गौतम धन्य तुम ज्ञान रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ जीरे एवा गुरुनी आगल गहुंअली, जीरे फतेशिखर अमृत शिवनी श्रेणी रे ॥ गु०॥वा०॥६॥

(३)

॥ सखी सरस्वती भगवती माता रे, कांइ प्रणमीजे सुखशाता रे ॥ कांइ वचन सुधारस दाता, गुणवंता सांभलो वीर वाणी रे ॥ कांइ मोक्ष तणी निशाणी ॥ गु० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ कांइ चोवीशमां जिनराया रे, साथे चौद सहस मुनिराया रे ॥ जेह ना सेवे सुर नर पाया ॥ गु० ॥ सां० ॥ २ ॥ सखी चतुरंग फोजा साथ रे, सखी आव्या श्रेणिक नरनाथ रे ॥ प्रभु वंदीने हुआ सनाथ ॥ गु० ॥ सां० ॥ ३ ॥ वहु सखीउं संयुत राणी रे, आवी चेलणा गुणखाणी रे ॥ ए तो ज्ञामंरूलमां जजाणी ॥ गु० ॥ सां ॥ ४ ॥ करे साथीउं मोहनवेल रे, कांइ प्रभुने वधावे रंग रेल रे ॥ कांइ धोवा कर्मना मेल ॥ गु० ॥ सां ॥ ५ ॥ बारे पर्षदा निसुणे वाणी रे, कांइ अमृतरस सम जाणी रे ॥ कांइ वरवा मुक्ति पट्टराणी ॥ गु० ॥ सां० ॥ ६ ॥

॥ गावानां गीतो ॥

॥ सात वार ॥

॥ आदिते अरिहंत अम घेर आवो रे, मारा श्याम सलुणा नेम दिलमां लावो रे ॥ १ ॥ सोमे ते शुज शणगार सजीए अंगे रे, मारा जुगजीवनी साथ रमीए रंगे रे, ॥ २ ॥ मंगल शुन्न दिन आज मगल चारु रे, कांइ नव नव केरो स्नेह हुं सन्नारुं रे ॥ ३ ॥ बुध घेर आवो नाथ बुद्धिना वलीया रे, प्रन्नु एक सहस ने आठ लक्षण नरीआ रे ॥ ४ ॥ गुरु गिरवा गुणवंत शिवादेवीना रे, कांइ समुद्रविजय कुलचंद नेम नगीना रे ॥ ५ ॥ शुकर सेहेसावन चालो सजनी रे, मारे समय थयो प्रन्नात वीती रजनी रे ॥ ६ ॥ शनिशर संयम लीध प्रीत वधारी रे, दोनुं पाम्या परमानंद नेम ने नारी रे ॥ ७ ॥ मुलचद कहे एम आशा फलशे रे जे निरमल पाले शीयल न्नवजल तरशे रे ॥ ८ ॥ अमे नमीए नेमि जिणंद गढ गिरनार रे, राणी राजुल जुवे वाट साते वार रे ॥ ए ॥

॥ गरबी ॥

॥ चालो सखीओ मम साथ, निजघर जइए रे ॥

वलोकी आदिनाथ, पावन थइए रे ॥ १ ॥ मोहन
देवी नंद, जग जयकारी रे ॥ जसु वदन पूनमनो
, जाउं बलिहारी रे ॥ २ ॥ कंचनगिरि हरि जिन-
ज, जइ नवरावे रे ॥ करवाने आतम काज, शचि
रावे रे ॥ ३ ॥ विनिता नगरीनो राय, हरखुं निर-
रे ॥ पण छे सत धनुषनी काय, सोवन सरखी रे ॥
४ ॥ हम दिल वसीया ए देव, रंग रसिला रे ॥
स सुरवर सारे सेव, छेल छबीला रे ॥ ५ ॥ स्वामी
वरमणीना कंथ, कामणगारा रे ॥ सुख आपो सादि
नंत, पूरण प्यारा रे ॥ ६ ॥ प्रभु पूरण पुन्य पसाय,
मे दीठुं रे, आ हरख मनमां न माय, लागे मीठुं रे
७ ॥ रमझम करी जिन गुण रास, रमीए रंगे रे ॥
वो जिनजी आवास, सखीओ संगे रे ॥ ८ ॥ पूजो
रेहर शिरताज, केसर घोली रे ॥ अंबोमा लइए
ज, सैयर टोली रे ॥ ए ॥

॥ गरबो ॥

॥ अनोपम आज रे ओछव छे महावीर मंदिरे रे ॥
लो जोवा जइए हेते हली मली आज ॥ वाला वीर
जनम दिवस छे आजनो रे ॥ अनोपम० ॥ १ ॥

साखी त्रिशला कुखे अवतर्यो, महावीरनो अवतार ॥ धन्य धन्य दिवस ते घडी, वरत्यो जयजयकार ॥ चाल थाल जर जरी मोतीडे वधावती रे, छप्पन कुमरी सजी सो शण गार ॥ ऊभी आरस पारसमणि चोकमां रे ॥ अनोपम ॥२॥ साखी जिन मनरंजन पारणुं, हीरानो झलकाट ॥ पो ढ्या छे मांहि मणि, पूनम मुख जणाय ॥ चाल हेते हिचोळे छे कचनवरणी दोरीए रे, माता त्रिशला हरख अपार ॥ एवो दिवस उग्यो छे आनंदनो रे ॥ अनोपम० ॥ ३ ॥ साखी मोती तोरण वारणे, दीसे झाकझमाल ॥ इंद्राणी आगे नचे, रणझण झठो थाय ॥ चाल टउका करती कोयल मधुरा मेणा कंठनी रे, वली बपैया गावंता रुमाराग । एवुं आनंद आनंद वीर पारणु रे ॥ अनोपम० ॥ ४ ॥

॥ महावीरस्वामीनु हालरीयु ॥

॥ छानो मोरा छव, छानो मोरा वीर ॥ पछे तमारी दोरी ताणुं ॥ महावीर कुंवर झुले पारणीए झुले ॥ टेक ॥ हीरना छे दोर, घूमे छे मोर ॥ कोयलडी सुर नारी ॥ महावीर० ॥ १ ॥ इंद्राणी आवे, हालण हुलण लावे ॥ वीरने हेते करी हुलरावे ॥ महावीर० ॥ २ ॥ सुंदर वेहेनी आवे, आभूषण लावे ॥ खाजां रुडां लावे, मो

ीचूर लावे ॥ वीरने हेते करी जमाडे ॥ महावीर० ॥ ३ ॥ वीर म्होटा थाशे, निशाले भणवा जाशे ॥ एम त्रिशला माता हरखाशे ॥ महावीर० ॥ ४ ॥ नंदिवर्धन आवे, राणी रूडी लावे ॥ वीरने हेते करी परणावे ॥ महावीर० ॥ ५ ॥ वीर म्होटा थाशे, जगमां गवाशे ॥ एम कांतिविजय गुण गाशे ॥ महावीर० ॥ ६ ॥

॥ महावीरस्वामीनुं पारणुं ॥

॥ माता त्रिशला झुलावे पुत्र पारणे, गावे हालो हालो हालरुवानां गीत ॥ सोना रूपा ने वली रत्ने जडीयुं पारणुं, रेशम दोरी घुघरी वागे धुम धुम रीत ॥ हालो हालो हालो हालो मारा नंदने ॥ १ ॥ जिनजी पास प्रभुथी वरस अढीसें अंतरे, होशे चोवीशमो तिर्थंकर जिन परिमाण ॥ केशीस्वामी मुखथी एहवी वाणी सांभली, साची साची हुइ ते मारे अमृत वाण ॥ हालो० ॥ २ ॥ चौदे स्वप्न होवे चक्री के जिनराजजी, वीत्या बारे चक्री नहीं हवे चक्रीराज ॥ जिनजी पास प्रभुना श्री केशी गणधार, तेहने वचने जाण्या चोवीशमा जिनराज ॥ मारी कुखे आव्या त्रण भुवन शिरताज, मारी कुखे आव्या तरण तारण जिनराज ॥ हुं तो पुन्य-

पनोती इंद्राणी थइ आज ॥ हालो० ॥ ३ ॥ मुजने दोहलो उपन्यो वेसु गजअंवाभीए, सिंहासन पर वेसु चामर छत्र धराय ॥ ए सहु लक्षण मुजने नंदन तारा तेजनां, ते दिन संभारु ने आनंद अंग न माय ॥ हालो० ॥ ४ ॥ करतल पगतल लक्षण एक हजार ने आठ छे, तेहथी निश्चय जाण्या जिनवर श्री जगदीश ॥ नंदन जमणी जंघे लंछन सिंह विराजतो, मे तो पहेले स्वप्ने दीठो विशवावीश ॥ हालो० ॥ ५ ॥ नंदन नवला बंधव नंदिवर्धनना तमे, नंदन भोजाइओना देवर छो सुकुमाल, ॥ हशशे भोजाइओ कही लाडका दीयर माहरा, हसशे रमशे ने वली चुटी खणशे गाल ॥ हसशे रमशे ने वली ठुसा देशे गाल ॥ हालो० ॥ ६ ॥ नंदन नवला चेडा राजाना भाणेज छो, नंदन नवली पांचसे मामीना भाणेज छो ॥ नंदन मामलीआना भाणेजा सुकुमाल, हसशे हाथे उछाली कहीने नाना भाणेजा, आंखो आंजीने वली टबकु करशे गाल ॥ हालो० ॥ ७ ॥ नंदन मामा मामी लावशे टोपी आंगलां, रतने जडीयां झुलडो मोती कसवी कोर ॥ नीलां पीलां ने वली रातां सरवे जातनां, पहेरावशे मामी मारा नंद किशोर ॥ हालो० ॥ ८ ॥ नंदन मामा मामी सुख-

फली बहु लावशे, नंदन गजवे जरशे लाडु मोतीचूर ॥ नंदन मुखडा जोइने लेशे मामी जामणां, नंदन मामी कहेशे जीवो सुख जरपूर ॥ हालो० ॥ ए ॥ नंदन नवला चेडा मामानी साते सती, मारी जत्रीजी ने वेन तमारी नंद ॥ ते पण गुंजे जरवा लाखणसाइ लावशे, तुमने जोइ जोइ होशे अधिको परमानंद ॥ हालो० ॥ १० ॥ रमवा काजे लावशे लाख टकानो घुघरो, वली सूडा मेना पोपट ने गजराज ॥ सारस हंस कोयल तीत्तर ने वली मोरजी, मामी लावशे रमवा नंद तमारे काज ॥ हालो० ॥ ११ ॥ छप्पन कुमरी अमरी जलकलशे नवरावीआ, नंदन तमने अमने केलीघरनी मांहे ॥ फुलनी वृष्टि कीधी योजन एकने मांडले, बहु चिरं जीवो आशीष दीधी तुमने त्यांह ॥ हालो० ॥ १२ ॥ तमने मेरुगिरि पर सुरपतिए नवरावीआ, निरखी निरखी हरखी सुकृत लाज कमाय ॥ मुखडा उपर वारु कोटी कोटी चंद्रमा, वली तन पर वारु गोरी गुणसमुदाय ॥ हालो० ॥ १३ ॥ नंदन नवला जणवा निशाले पण मूकशुं, गज परे अंबाडी बेसाडी मोटे साज ॥ पसली जरशुं श्रीफल फोफल नागरवेलशुं, सुखडली लेशुं निशालीआने काज ॥ हालो०

॥ १४ ॥ नंदन नवलां मोटा थाशो ने परणावशुं , वहु वर सरखी जोडी लाव शु राजकुमार ॥ सरखां वेवाइ वेवाणो पधरावशु, वर वहु पोखी लेशु जोइ जोइने दे-दार ॥ हालो० ॥ १५ ॥ सासरुं पीयर मारां वेहु पख नं-दन उजला, मारी कुखे आव्या तात पनोता नंद ॥ मा-हारे आंगण वुठ्या अमृत दुधे मेहुला, माहारे आंग-ण फलीया सुरतरु सुखना कंद ॥ हालो० ॥ १६ ॥ ए-णी परे गायुं माता त्रिशला सुतनु पारणुं, जे कोइ गाशे लेशे पुत्र तणा सामाज ॥ वीलीमोरा नगरे वरणवु वीरनुं हालरु, जय जय मंगल होजो दीपविजय कविराज॥हालो० ॥१७॥

॥ आरतीओ ॥

(१)

॥ अप्सरा करती आरती जिन आगे, हांरे जिन आगे रे जिन आगे ॥ हांरे ए तो अविचल सुखडां मागे, हांरे नाभिनंदन पास ॥ अप्सरा करती आरती जिन आगे ॥ १ ॥ तायेइ नाटक नाचती पाय ठमके, हांरे दोय चरणे झांझर झमके ॥ हांरे सोवन घुघरडी घमके, हांरे लेती फुदडी बाल ॥ अप्सरा० ॥२॥ ताल मृदंग ने वांसली डफ वे-णा, हांरे रुडा गावंती स्वर झीणा॥हांरे मधुर सुरासुर नय-णां हांरे जोती मुखडु नीहाल ॥ अप्सरा० ॥३॥ धन्य म-

रुदेवा माताने प्रभु जाया, हांरे तोरी कंचनवरणी काया ॥ हांरे में तो पूरव पुन्ये पाया, हांरे देख्यो तोरो देदार ॥ अप्सरा० ॥ ४ ॥ प्राणजीवन परमेश्वर प्रभु प्यारो, हांरे प्रभु सेवक हुं तु तारो ॥हांरे भवोभवनां दुःखकां वारो, हांरे तुमे दीनदयाल ॥ अप्सरा० ॥ ५ ॥ सेवक जाणी आपणो चित्त धरजो, हांरे मोरी आपदा सघली हरजो ॥ हांरे मुनी माणेक सुखीओ करजो, हांरे जाणी पोतानो बाल ॥ अप्सरा० ॥ ६ ॥

(२)

॥ जे जे आरती आदि जिणंदा, नाभिराया मरुदेवीको नंदा ॥ जे जे आरती० ॥ १ ॥ पहेली आरती पूजा कीजे, नरभव पामीने लाहो लीजे ॥ जे जे आरती० ॥ २ ॥ दुसरी आरती दीनदयाला, धुलेव मंडन प्रभु जग अजवाल्या ॥ जे जे आरती० ॥ ३ ॥ तीसरी आरती त्रिभुवन देवा, सुर नर इंद्र करे तोरी सेवा ॥ जे जे आरती० ॥ ४ ॥ चोथी आरती चउगति चूरे, मनवांछित फल शिवसुख पूरे ॥ जे जे आरती० ॥ ५ ॥ पंचमी आरती पुन्य उपाया, मूलचंद रिषभ गुण गाया ॥ जे जे आरती० ॥ ६ ॥

॥ महावीरस्वामीनी आरती

॥ जय देव जय देव, जय सुखना स्वामी ॥ (प्रभु०) तुजने वंदन करीए, (२) भव भवना भामी ॥ जयदेव० ॥ १ ॥ सिद्धारथना सुत, त्रिशलाना जाया (प्रभु०) जसोदाना छो कंथजी, (२) त्रिभुवन जगराया ॥ जय देव० ॥ २ ॥ बालपणामां आप, गया रमवा काजे ॥ (प्रभु०) देवताए दीधो परूठायो, (२) बीवरावबा काजे ॥ जय देव० ॥ ३ ॥ एक वारनुं रूप, लीधुं छे नागनुं (प्रभु०) बीजी वारनु रूप, (२) लीधु बालकनुं॥ जय देव० ॥ ४ ॥ बालक बीना सघ, पोते नथी बीता (प्रभु०) देवतानुं कांइ न चाल्युं, (२) हारी जता रहेता ॥ देव० ॥ ५ ॥ एवा छे भगवान्, महावीर तमे जाणो ॥ (प्रभु०) वंदे छे सघ तेने, (२) नमे राय राणो ॥ जय देव० ॥ ६ ॥

॥ शांतिनाथनी आरती ॥

॥ जय जय आरती शांति तुमारी, तोरां चरण कमल की जाउं बलिहारी ॥ जय० ॥ १ ॥ विश्वसेन अचिराजीको नंदा, शांतिनाथ मुख पूनमचंदा ॥ जय० ॥ २॥ चालीश धनुष सोवनमय काया, मृगलंछन प्रभु चरण

सुहाया ॥ जय० ॥ ३ ॥ चक्रवर्ती प्रज्ञु पांचमा सोहे, सोलमा जिनवर जग सहु मोहे ॥ जय० ४ ॥ मंगल आरती तोरी कीजे, जन्म जन्मनो लाहो लीजे ॥ जय० ॥ ५ ॥ कर जोमी सेवक गुण गावे, सो नर नारी अमर पद पावे ॥ जय० ॥ ६ ॥

॥ मंगल दीवो ॥

॥ दीवो रे दीवो मंगलिक दीवो, आरती उतारक बहु चिरंजीवो ॥ दीवो० ॥ १ ॥ सोहमने घर पर्व दिवाली, अंबर खेले अबला बाली ॥ दीवो० ॥ २ ॥ देपाल जणे इणे घेर अजुआली, जावे जगते विघ्न निवारी ॥ दीवो० ॥ ३ ॥ देपाल जणे इणे आ कलिकाले, आरती उतारी राजा कुमारपाले ॥ दीवो० ॥ ४ ॥ अम घर मंगलिक तम घर मंगलिक, मंगलिक चतुर्विध संघ घर होजो ॥ दोवी रे दीवो० ॥ ५ ॥

॥ अथ मंगल चार ॥

॥ चारो मंगल चार, आज महारे चारो मंगल चार ॥ देख्यो दरस सरस जिनजीको, शोजा सुंदर सार ॥ आज० ॥ १ ॥ छिनुं छिनुं छिनुं मनमोहन चरचो, घसी

केशर घनसार ॥ आज० ॥ १ ॥ विविध जातिके पुष्प मंगावो, मोघर लाल गुलाल ॥ आज० ॥ ३ ॥ धूप उखेवो ने करो आरती, मुख बोलो जयकार ॥ आज० ॥ ४ ॥ हर्षे धरी आदीश्वर पूजो, चौमुख प्रतिमा चार ॥ आज० ॥ ५ ॥ हैये धरी जाव जावना जावो, जिम पामो जवपार ॥ आज० ॥ ६ ॥ सकलचंद सेवक जिनजीको आनंदघन उपगार ॥ आज म्हारे चारो मंगलचार ॥ ७ ॥



॥ नवम खंड ॥



॥ नाटकना रागनां गायनो ॥

॥ गायन १ लुं ॥

॥ नाथ केसे गजको बंध छोडायो—ए राग ॥

॥ प्रेमे प्रार्थना करीए, रिखव प्रभु प्रेमे प्रार्थना करिए ॥ टेक ॥ सरवव्यापक तुज चेतन शक्ति, वर्णन शुं तेनुं करीए शुद्ध हृदयथी जो रे आराधीए, तो भवसागर तरीए ॥ रि० ॥ १ ॥ रचना यथायोग्य आ रे जगतनी, तुज दरिशनथी ठरीए ॥ अल्प स्वीकारो अर्ज प्रभू तमे, काव्य कथन शुं करीए ॥ रि० ॥ २ ॥ अकल गति परापार पितु तारी, वाणीथी शुं रे विस्तरीए ॥ प्रथम पति पृथ्वीना थया तमे, महिमा तारो उर धरीए ॥ रि० ॥ ३ ॥ मरुदेवी जाया पाया श्री केवल, मूर्त्ति तमारीने वरीए ॥ कमलाना स्वामी कर करुणा तुं, सेवकने न विसरीए ॥ रि० ॥ ४ ॥ नाभिनंद कुमार भले तमे, जनम्या विनीता नगरीए ॥ चरणकमलनो सेवक तारो, गाय स्तवन लली लली ए ॥ रि० ॥ ५ ॥

॥ गायन २ जुं ॥

॥ वंदन करीए प्रथम प्रभुने ॥ आदिनाथ तुं सुख-

कर साहेब, तरण तारण स्वभाव ॥ दुःख हरवा, भ
तरवा, देजो ज्ञान नाव रे ॥ वंदन० ॥ टेक ॥ मरुदेवं
को हे नंद, नाभिराय कुलचंद ॥ गुण तुज कल्पवृंद
गावे इंद्र सूर्य चंद्र, आपे परम आनंद ॥ एक चित्तथ
ध्यान धरंतां, मोक्षसुख पावंता ॥ दुःख० ॥ १ ॥ तुंही तुं
ही परमेश, तुही तुही दानेश, ॥ तुंही तुंही ज्ञानेश
तुंही सकल तत्त्वेश, तुंही विमलाचलेश ॥ गावे मांगरो
जैन मंडली, संगीत साध्य करंतां ॥ दुःख० ॥ २ ॥

॥ गायन ३ जु ॥

॥ एवी रे रभा जाणी जावा केम दइए–ए राग ॥

॥ आदीश्वर स्वामी, वाल नमे शीर नामी ॥ अंतर
जामी अविचल नामी, दरिशन तुजनां करीए ॥ तु
स्वामीनां दरशिन करतां, सर्वे दुःखड़ां हरीए रे ॥ आ
दीश्वर स्वामी, वाल नमे शीर नामी ॥ १ ॥ एक अ
शरो अंतरजामी, आप तणो आधार ॥ कृपा दृष्टिए आ
प नीहालो, नहीं तो नीराधार रे ॥ आदीश्वर स्वामी
वाल नमे शीर नामी ॥ २ ॥ केशर चंदन पुष्प केतकी
जाइ जुइ तो सारी ॥ एवी रीते पूजा करतां, भव
पीडा हारी रे ॥ आदीश्वर स्वामी, वाल नमे शी

ामी ॥ ३ ॥ कूडकपटमां घणांज कुकृत्यो, कीधां में
ारी ॥ अनंत भवमां रझली रझली, आव्यो शरण त-
ारी रे ॥ आदीश्वर स्वामी, बाल नमे शीर नामी ॥
॥ जो कोइ जैनी बंधु प्रभुनी, भावे पूजा करशे ॥
न बालको उल्लासथी कहे, भवसागर तो तरशे रे
आदीश्वर स्वामी, बाल नमे शीर नामी ॥ ५ ॥

॥ गायन ४ थुं ॥

॥ नमुं पदे गिरिजापतिने—ए राग ॥

॥ नमुं पदे प्रभु सुमतीने ॥ शशी सम शोभे छे मु-
 सारुं, एकज शरण तमारुं ॥ प्रेम धरी दयानिधि
ापो कुमतिने ॥ नमुं० ॥ १ ॥ मेघरायना नंद, टालो
वोभव फंद, मति मारी छे मंद, छोजी आनंद कंद,
ोडो कर्मना बंध ॥ नृत्यकला करी जैन बालको, नमे
 सेवक संगे ॥ प्रेम० ॥ नमुं० ॥ २ ॥

॥ गायन ५ मुं ॥

॥ श्री सोहंकरा, प्रभु पार्श्व जिनवरा ॥ जैन बाल-
ानी, विनति सुणो जरा ॥ टेक० ॥ अश्वसेन वामाजी-
े नंदन, वणारसी वासी ॥ प्रभावती पीयु पास कुंव-
जी, आप छो अविनाशी ॥ श्री० ॥ १ ॥ कमठ कोप-

थी नाग युगलने, उगार्यां अटवी ॥ श्री नवकार सुन
ये पाया, धरणेन्द्र पद्‌वी ॥ श्री० ॥ २ ॥ तेम प्रभु नि
ज हस्त ग्रहीने, उतारो भवपार ॥ "जैन" बाल से
कनी संगे, वंदे वारवार ॥ श्री० ॥ ३ ॥ संवत् ओगण
पीस्तालीश वर्षे, सुंदर श्रावण मास ॥ कृष्ण चतुर्दशी
रविवारे, उपन्यो आ उल्लास ॥ श्री० ॥ ४ ॥

॥ गायन ६ ठु ॥

॥ जरके कलदर बन भन फीरके—ए राह ॥

॥ पार्श्व प्रभुजी अर्ज करुं हुं, हर्निश सेवा आपोने
भक्तवत्सल भगवंत जिनेश्वर, भवजल पार उतारोने
प्रभु तमे न तारो तो हवे कोनो छे आधार ॥ (२
कृपादृष्टि करोने, कृपालु आ वार ॥ स्वामी हवे तो कर
सेवकनी सार (प्रभु०) पार्श्व० ॥ १ ॥ जिन जाया छो वाम
ना तमे, अश्वसेन सुत ॥ (२) शाने माटे स्वामीजी, क
छो हवे धूत ॥ (२) सर्वेनी मनोकामना, करो फल
भूत ॥ (जिन०) पार्श्व ॥ २ ॥

॥ गायन ७ मु ॥

॥ अहो ईश जिन तु सदा दिलदार, अनंता दु ख
भवमांथी उगार ॥ अति हितकारी सदा सुखकार, सुख

शवपुरमां जवा मुज तार ॥ अहो ईश० ॥ १ ॥ प्रभु
वकोने तमे तारनार, अहो देव हुं तो नमुं वारंवार
भवो लख चोराशी भम्यो दुःख सार, पूरव पुन्ये
ाम्यो हुं तारो देदार ॥ सचा जैन वंदे तने कोड वार,
मे भक्त दोलत तरे भवपार ॥ अहो ईश० ॥ २ ॥

॥ गायन ८ मुं ॥

॥ जोबनना रंगमां झुले—ए राग ॥

॥ आ अरजी अर जिनवरजी ॥ (२) अम तारो
रीब निवाज, विरुद तुज राज ॥ सहायता करजी ॥
आ अरजी अर० ॥ १ ॥ चार गतिमां लाख चोराशी;
ोनि दुःखनी खाण ॥ काल अनादि भव अटवीमां,
मण कर्यु भगवान ॥ सहायता करजी ॥ आ अरजी
अर० ॥ २ ॥ काम क्रोध मद मोह मानथी, छोडावो
गनाथ ॥ पामर प्राणी करुं प्रार्थना, अहो सेवकनो
ाथ ॥ सहायता करजी ॥ आ अरजी अर० ॥ ३ ॥
अनंतबली पण अबल थयो हुं,कर्मवशे किरतार॥ कहे
ोकरसिंह मंगल मागुं, प्रभु तुज पद आधार ॥ सहा-
ता करजी ॥ आ अरजी अर० ॥ ४ ॥

॥ गायन ९ मुं ॥

॥ कयसें पाउ में पतीआ मोहनकी–ए राग ॥

॥ सखी सामली सुरतीआं मोहननी ॥ (वे वार) ने
प्रभु मम नाथ नगीना, प्यारी सुरतीआं ॥ १ ॥

॥ साखी ॥

॥ कामणगारा कंथजी, अधवच आपी छेह ॥ द्व
आवी पाछा गया, पशु पर धारी नेह ॥ राजीमती सख
श्याम सलुणा, आश रही जोवननी ॥ सखी० ॥ २ ॥

॥ साखी ॥

॥ शीयलवत वनमां गया, जीती कामविकार ॥ सुंद
शिवरमणी वर्या, पंच महाव्रत धार ॥ राजीमती प
प्रीत न छोडुं, तोडु माया त्रिभुवननी ॥ सखी० ॥ ३

॥ साखी ॥

॥ सुख आनंद अनंतता, स्वसंपत सम भाव ॥ मंग
स टोकरसिंह कहे, साधनता शुभ दाव ॥ नरभव सा
अबाधी थया प्रभु, वारी सुरतीआं मोहननी ॥ सखी० ॥ ४

॥ गायन १० मुं ॥

॥ पूनम चादनी खीली पूनम अही रे–ए राग ॥

॥ श्रीजिन वीर प्रभु परमातमा रे, वहाला राण

यशोदाना कंथ ॥ रसिया त्रसीया सैयर अम अंतरे १ ॥ सजनी रजनी सुंदर शी आजनी रे, शोभे आंगी अनोपम ठाठ ॥ रसिया० ॥ १ ॥

॥ साखी ॥

॥ मुगट रत्न हीरे जड्या, कर्ण कुंडल उर हार ॥ मणि लाल मोती तणां, विविधाभर्ण अपार ॥ जिननी मुखमुद्रा पर वारुं कोटि चंद्रमा रे, जगमग ज्योत झलकती दिनकरवत् उजाश ॥ सजनी० ॥२ ॥

॥ साखी ॥

॥ मली सुंदर बहु मानुनी, सजी सोल शणगार ॥ कर कंचन चुडी चमक, चंद्रवदनी सुकुमाल ॥ आरस भक्तिभज रंगमंडप रलीआमणा रे, हेने रमती गमतां गाती जिन गुणगान ॥ सजनी० ॥ ३ ॥

॥ साखी ॥

॥ झांझरना झणकारथी, फुद फरे सखी साथ ॥ ल-लना थइ थइ थनक करे, ताली दे सखी हाथ ॥ गौतम रचना न्याली नर नारी टोले मल्यां रे, भविजन हरखे निरखी जैनधर्म जयकार ॥ सजनी० ॥ ४ ॥

॥ साखी ॥

॥ जय जयत्रिशला नंद तुं, सुर नर नामे शीश ॥

मंगल टोकरसिंह कहे, अंतरजामी ईश॥ श्रीजिन वीर प्रभु परमात्मा रे, वहालो राणी यशोदाना कंथ ॥ र सिया वसीया सैयर अम अंतरे रे ॥ ५ ॥

॥ गायन ११ मु ॥

॥ विनति धरजो ध्यान, सज्जन सहु—ए राग ॥

॥ सांज समे जिन वंदो भविजन, सांज समे जिन वंदो ॥ मेटत भवदुख फंदो भविजन, सांज समे जिन वंदो ॥ प्रथम तीर्थंकर श्रीआदि जिनेश्वर, समरत होत आनंदो ॥ भ० ॥ सां० ॥ १ ॥ लेकर दीपक आगे ही वामें, जरत पापको फंदो ॥ भ० ॥ सां० ॥ २ ॥ प आसन करी ध्यान लगावुं, खेवत धूप सुगंधो ॥ भ० ॥ सां० ॥ ३ ॥ रत्नजडीत करुं रे आरती, बाजत ताल मृदंगो ॥ भ० ॥ सां० ४ ॥ कहे जिनदास समझ जीया अपनो, तूटत पाप निकंदो ॥ भ० ॥ सां० ॥ ५ ॥

॥ गायन १२ मु ॥

॥ गोपीचंद लडका बादल बरसे कंचन महेलमें—ए राह ॥

॥ जिन राजा ताजा मल्लि विराजे भोयणी गाम में ॥ टेक ॥ देश देशके जात्रु आवे, पूजा सरस रच वे ॥ मल्लि जिनेश्वर नाम सिमरके, मनवांछित फल

ावेजी ॥ जि० ॥ १ ॥ चातुर वरणके नर नारी मीच, ंगल गीत करावे ॥ जयजयकार पंच ध्वनि वाजे, शिर ार छत्र फिरावेजी ॥ जि० ॥ २ ॥ हिंसक जन हिंसा जी पूजे, चरणे शीश नमावे ॥ तुं ब्रह्मा तुं हरि शिव ांकर, अवर देव नहीं ावेजी ॥ जि० ॥ ३ ॥ करुणा-स ार नयन कचोले, अमृत रस वरसावे ॥ वदन चंद कोर ज्युं निरखी, तन मन अति उल्लासावेजी ॥ जि० ॥ ४ ॥ आतमराजा त्रिभुवन ताजा, चिदानंद मन ावे ॥ मल्लि जिनेश्वर मनहर स्वामी, तेरा दरस ुहावेजी ॥ जि० ॥ ५ ॥

॥ गायन १३ मुं ॥

॥ श्री श्री शांतिनाथ, जोडुं हुं बे हाथ—ए राग ॥

॥ जय जिनेश्वरा तुंज ईश्वरा, हमेशना कलेशने निवारकेश्वरा ॥ जय मंगल वर्ते तुज नामे, जपतां पाति- क जाय ॥ मंगलकारी मूर्त्ति तारी, दीठे दुरित पलाय ॥ जय० ॥ १ ॥ आदि रूप परमेष्ठी मानुं, ओंकारे आदेय ॥ शिवपद दाता योगीने तुं, एक ध्यानथी ध्येय ॥ जय० ॥ २ ॥ सर्व कार्यमां विघन निवारे, दे शांति श्रीकार ॥ अक्षय ज्ञान मांगरोल संगीत मंडलीने विस्तार ॥ जय० ॥ ३ ॥

॥ गायन १४ मु ॥

॥ विमलाचल वासी मारा वाला, सेवकने विसारो नहीं ॥ जल विना मीन दुःख अति पामे, जिणंद आप जाणो सही ॥ दुःख हरनारा भविजन प्यारा, शरणे हुं महाराज ॥ चार चोर मुज केडे पडीया, पुन्य रत्नने काज ॥ प्रभुजी पुन्य रत्नने काज (३) सेवकने० ॥ १ ॥ पापी चंडालो पकडी मुज, माल हरी लेनार ॥ प्रभुजी जो मुज वारे आवो, तो हुं उगरनार ॥ प्रभुजी तो हु उगरनार ॥ (३) सेवकने० ॥ २ ॥ जन्म मरणनां दुःख वेठ्या बहु, तोए न आव्यो पार ॥ ते दुःखने दूर करवा कारण, (२) आव्यो तुज दरबार ॥ प्रभुजी आव्यो तुज दरबार ॥ (३) सेवकने० ॥ ३ ॥ अरजी उर धारी नेह नजर करी, सेवकनी करो सार । कृपा तणा ए सिंधु तम विण, कोण उतारे पार ॥ प्रभुजी कोण उतारे पार ॥ (३) सेवकने० ॥ ४ ॥ भवभयभंजन नाथ निरंजन, करो कठण करमनो नाश ॥ पदपंकज छे प्राण मधुकर, (२) पूरो मननी आश ॥ प्रभुजी पूरो मननी आश ॥ (३) सेवकने० ॥ ५ ॥

॥ गायन १५ मुं ॥

॥ चलती—डांडीयारसनुं गायन ॥

॥ जुठे जुठुं जीवित खरुं जाण मां रे ॥ खरुं जाण मां रे, ॥ साचुं जाण मां रे ॥ जुठे जुठुं० ॥ टेक ॥ १ ॥ जुठी जननी जुठी जाया, जुठी मोह जरेली माया ॥ काच कुंपा ठे काया, ममता माण मां रे ॥ जुठे जुठुं० ॥ २ ॥ गगने जाम्यो वादल गोटो, पाणीमां प्रगट्यो पपोटो ॥ खेल बधो एम खोटो, मूरखा माण मां रे ॥ जुठे जुठुं० ॥ ३ ॥ फेल करीने फोगट जटक्यो, प्रभुने शरणे नव अटक्यो ॥ जेद विना तुं जटक्यो, चारे खाणमां रे ॥ जुठे जुठुं० ॥ ४ ॥

॥ गायन १६ मुं ॥

॥ सखीओ निज निज नीतिधरम सदा संभालीए रे—ए राग ॥

॥ सज्जनो परमातम जिन प्रभुने पाये लागीए रे ॥ साचो जगदीश्वर भविजनना तारणहार, तेनी निते प्रीते भक्ति करवी भावशुं रे ॥ अर्पे अविचल शिवसुख परम धरम दातार, एवा जैन प्रभुनां दरिशन मुखथी मागीये रे ॥ टेक ॥ १ ॥

॥ साखी ॥

॥ पाय नमो जिनरायने, आतम कार्य सिधाय ॥

भय दुःखसहु दूरे टले, मंगलकारी थाय॥ जावु जिना-लय शुद्ध वस्त्रोथी सर्वने रे, जेथी नाथ निरंजन प्रभुना गुण गवाय ॥ एवा० ॥ २ ॥

॥ साखी ॥

॥ भम्या भवादि चक्रमां, तोय न पाम्या पार ॥ माटे भविजन भव तरो, धरम करी आ वार ॥ जैन शासनना सिद्धांतो साचा जाणीए रे, जेमां भक्ति जुक्ति मुक्तिनो शुभ सार ॥ एवा० ॥ ३ ॥

॥ साखी ॥

॥ अमूल्य हीरो हाथमां, छे जिन तेज अपार ॥ माटे श्री महावीर भजो, थाय सफल अवतार ॥ एथी उत्तम गीत आ सज्जनोने सभलावीए रे, शीख सहु शुभ जाणी अंतर राखो नर नार ॥ एवा० ॥ ४ ॥

॥ गायन १७ ॥

॥ वाहाला वेगे आवो रे–ए राग ॥

॥ सिद्धाचल गावु रे, मोतीडे वधावु रे ॥ दादा, सुणो विनति होजी ॥ प्रभु मारां भवोभवना दुःख वार ॥ दादा० ॥ १ ॥

॥ साखी ॥

॥ प्रथम पति पृथ्वी तणा, पेला जिणंद मुणिंद ॥

योगींद्र श्री आदीश्वरु, मारुदेवी माता नंद ॥ हुं तो गिरिवरना गुण गाउं रे ॥ दादा० ॥ १॥ जो प्रीत पालो पूर्वनी, सन्मुख न्हालो आप ॥ पापी अधमने उद्धरो, प्रतिपालनी ए बाप ॥ दयानिधि दिलमां हुं लावुं रे ॥ दादा० ॥ २ ॥ कुरकट मटी राजा थयो, जे सूरजकुंडे चंद ॥ नगिनीजोगी उद्धर्यो, जे चंद्रशेखर नरिंद्र ॥ हुं तो मोहथी जंग मचावुं रे ॥ दादा० ॥ ३ ॥ ए ठाम सिद्ध अनंतनो, छे शाश्वतो गिरिराज ॥ सिद्धि वर्या पांडव प्रमुख, ए मुक्तिमंदिरपाज ॥ प्रभु तारुं ध्यान लगावुं रे ॥ दादा ॥ ४ ॥ तारो प्रभु जो मुजने, तो गणुं जगदाधार ॥ नथी खजाने कांइ खोट, तारे तारीयां नर नार ॥ रुडी तारी आंगीओ रचावुं रे ॥ दादा० ॥ ५ ॥ त्रिभुवन विषे नहीं तीर्थ, बीजुं कहे वीर जिणंद ॥ गिरिराजनां गुणगान गावे, सेवक सांकलचंद ॥ हुं तो आवागमन पावुं रे ॥ दादा० ॥ ६ ॥

॥ गायन १८ मुं

॥ बोलो मारा प्रेमी पोपटजी बोल बोलो—ए राग

॥ चालो प्यारा चेतन सिद्धाचल चालो, चालो चालो ऋषभ जिन वंदो ॥ व्हालो मारुदेवी माताजीनो लालो

चालो चालो पाप निकंदो ॥ प्रभु तारां दर्शनथी वलि
हारी, धारी धारी वदन जोउं धारी ॥ मूर्त्ति तारी शां
सुधारस क्यारी, न्यारी न्यारी अकल गति न्यारी ॥

॥ आंतरो ॥

॥ प्यारा प्रभुजी निशिदिन हुं संभारुं, ध्यान ध
गिरिराजजीनुं सारुं ॥ प्रथम जिणंद मुख पूनमचंद
॥ चालो० (२) चेतनजी तीरथपति नित्य ध्यावो, गि
रिवर भेटीने ल्यो भवल्हावो ॥ सोनंदा स्वामीनी छवं
सुखकारी ॥ धारी० (२) जैन सभा लघु सांकलचंदे
रूपभ जिणद गुण गाया आनंदे ॥ प्रभुना पसायथ
न रहे भवफंदा ॥ चालो० (२)

॥ गायन १९ मुं ॥

॥ तु तो नाम समर ले सीता सतीपति–ए राग ॥

॥ वाला वासुपूज्य जिनराज, वालने तारजो रे ॥ त्रि
भुवनस्वामी अंतरजामी, आतमरामी अविचलधामी।
दीनबंधु दीनवत्सल दुःख निवारजो रे ॥ वाला० ॥ १ ।

॥ साखी ॥

॥ लख चोराशी योनिमां, भटक्यो वारंवार ॥ चा
४० गतिना चोकमां, वेचाणो निरधार ॥ छेदन भेदन तारू

त्तर्जन वारजो रे ॥ वाला० ॥ २ ॥ जजव्यां जवमंरुप विषे, नाटक नव नव रंग ॥ श्राव्यो विध विध वेष-श्री, श्रो सुख हवे अत्तंग ॥ श्री मुखे सांकलचंदने क-दि संजारजो रे ॥ वाला० ॥ ३ ॥

॥ गायन २० मुं ॥

॥ मनमंदिर आवो रे, कहुं एक वातलडी—ए राग ॥

॥ सुणो सुव्रतस्वामीरे, अरज हुं उच्चरुं ॥ जवसिंधु उतारो रे, सदा तुज ध्यान धरुं ॥

॥ साखी ॥

॥ हुं पामर तुं महा प्रजु, समरथ जगदाधार ॥ तुज आणा नव शिर धरी, ए वांक अपार ॥ तरताने तारी रे, शी शावाशी धरो ॥ पण फुबतो तारो रे, तारक नाम खरो ॥ सुणो० ॥ १ ॥ जवसागरमां माहरुं, चढयुं वहाण चकरोल ॥ महा नियामक तुं मल्यो, नडे न अघ वंटोल ॥ मम सन्मुख जालो रे, सुखीयो थाउं सदा ॥ जव फेरी न फरीए रे, सांकलचंद कदा ॥ सुणो० ॥ २ ॥

गायन २१ मुं ॥

॥ मने सहाय करशे मोरारी रे—ए राग ॥

॥ जडुनाथ हो उपगारी रे, नेम पाग वलोने ॥ एक

चारी नेह निवारी, राणीने विसारी ॥ पशुआंनो पोकार उर धारी ॥ जदुनाथ ठो० ॥ १ ॥ अष्ट भवांतरनी हुं हुं नारी, नवमे भव न मूको कुंवारी जो ॥ न करमेलाप कीधो, नो प्रभु लेजो उद्धारी जदुनाथ ठो० ॥ २ ॥

॥ गायन २२ मु ॥

॥ आवो सखी आवो, माने मोतीडे वधावो–ए राग ॥

॥ गावो भवि गावो, महावीर गुण गावो० (२) वीर गुण गावो, महावीर गुणगावो ॥ गावो० (२) चिरमल टाली प्रभु अग पखाली, केशर चंदन घन घसी प्रभु ध्यावो ॥ गावो० ॥ १ ॥ आतम गध अनादिनी टाली, मालती मोयर शुभ पुष्प चढावो ॥ गावो ॥ २ ॥ अष्ट प्रकारी स्नात्रपूजा करी भावना भावी शुभ आंगी रचावो ॥ गावो० ॥ ३ ॥ भक्ति स्तुति शासनपतिनी करी, ज्ञान ध्यान एकतान लगावो ॥ गावो० ॥ ४ ॥ थेड थेड नृत्य करी फल नैवेद धरी, थाल भरी भरी मोतीडे वधावो ॥ गावो० ॥ ५ ॥ साकलचद महा वीर मंगली, आवागमन नमनथी न पावो ॥ गावो० ॥ ६ ॥

॥ गायन २३ मु ॥

॥ सुदर शामलिया, नाम जपीश नित्य नाम–ए राग ॥

॥ महावीर जिन मलीया, शासनपति शणगारा ।

ोगां नवदलियां, प्रगट्या पुण्य प्रचारा ॥ महावीर जि-
ंद मलीया ॥ चंद चकोर मोर जलधारा, मधुकर मालती
तिम मन मारा, निशदिन रटण करुं गुणतारा ॥ नयन
तारथ दर्शथी प्यारा, जगगुरु जगहितकारा ॥ महा-
ीर० ॥ १ ॥ प्रीत बनी जल मीन सम प्यारा ॥ पलक
हो नहीं नाथजी न्यारा ॥ हृदयकमल स्थापुं सुख-
ारा, सेवक सांकलचंद तमारा, वीरमंगल जयकारा ॥
हावीर० ॥ २ ॥

॥ गायन २४ मुं ॥

॥ कोइ दुध ल्यो दिलरंगी—ए राग ॥

॥ जिनराजने भज प्राणी, संसार अथिर जाणी ॥
जिनराजने भज प्राणी ॥

॥ साखी ॥

॥ क्षण क्षण आवरदा घटे, घटे दिवस ने रात ॥
आज तणुं हमणां करो, काल तणी शी वात रे ॥
जिन० ॥ १ ॥ समय विषे नहीं करी शके, अंतराये प-
ताय ॥ वात पित्त कफ वेदना, कंठद्वार रुंधाय रे ॥
जिन० ॥ २ ॥ नित्य मित्र काया कदि, करे न कोइनो
ाथ ॥ पर्वमित्र पाछा वळे, स्वजन बतावी हाथ रे ॥

जिन० ॥ ३ ॥ सत्यमित्र हुद्दार ते, स्हेज सखाइ धर्म ॥ साह्य करे परभव जतां, अंते दे शिवशर्म रे ॥ जिन० ॥ ४ ॥ ते जिनधर्म आराधतां, रहे न भवभय फंद ॥ जाचे भवोभव धर्मनुं, शरण सु सांकलचद रे ॥ जिन०॥५॥

॥ गायन २५ मु ॥

॥ धीमे धीमे चालोने मारा प्राण रे–ए राग

॥ जरी सामुं जुवोने महावीर रे ॥ चार चो लुंटाराउ लुटी जशे, वैरी केडे थशे धर्म धीर रे ॥ जरी सामुं० ॥ १ ॥

॥ साखी ॥

॥ मोह जगत जंगल विषे, भिरचे माया जाल । सपडावी जग जीवने, ठार करे तत्काल ॥ अम सर खा पतितोनी व्हारे तमे, जगनाथ कृपालुता शरणे अमे ॥ नामुं शिर रे ॥ जरी० ॥ ॥

॥ साखी ॥

॥ अर्जुनमाली उद्धर्यो, तार्यो मेघ कुमार ॥ तार्ई चदनबालिका, ए तारो उपकार ॥ भवसिधु उतारोने त्राता तमे, वीरमफली सांकलचद नमे ॥ तारो तीर रे ॥ जरी० ॥ ३ ॥

॥ गायन २६ मुं ॥

॥ वाह्लाला वेगे आवो रे—ए राग ॥

॥ दादा दुःख वारो रे, भवजल तारो रे ॥
चिंतामणि पासजी होजी ॥ प्रभुजी भिक्षा मागुं तव
दरबार ॥ चिंतामणि० ॥ १

॥ साखी ॥

॥ भमे चक्र कुंभारनुं, भम्यो तेम संसार ॥ छेदन
भेदन दुःख सह्यां, कहेतां न लहुं पार ॥ प्रभुजी मारां
भवदुःख वारो रे ॥ चिंतामणि० ॥ २ ॥ भीरु पक्षी गो-
विंदने, समर्यां जगदाधार ॥ जरा निवारी न्हवणथी,
वर्ताव्यो जयकार ॥ प्रभुजी मारी भीरु निवारो रे ॥
चिंतामणि० ॥ ३ ॥ स्मरण करे प्रभु ताहरुं, वंध्या प्र-
सूता थाय ॥ अंध नेत्र प्रगटे नवां, दीन घर श्री सो-
हाय ॥ प्रभु मारां काज सुधारो रे ॥ चिंतामणि० ॥ ४ ॥
चोर अरि जल ज्वलन ने, गय रण विषधर रोग ॥ ए
महाभय तुज ध्यानथी, टले न रहे भवशोग ॥ दयानी-
धि दासने उद्धारो रे ॥ चिंतामणि० ॥ ५ ॥ राजपुरे
प्रभु राजतो, धिंग धणी दातार ॥ चिंतामणि चिंता
हरे, भरे अखूट भंडार ॥ सेवक सांकलचंदने तारो
॥ चिंतामणि० ६ ॥

॥ गायन २७ मुं॥

॥ अहो दिलदार जरी देदार–ए राग ॥

॥ अरज जिनराज करुं एक आज, सुणो अभिनंदन स्वामी ॥ शरण तारुं सदा सारुं नथी ससारम मारुं ॥ पिता माता तमे त्राता, सुखद दाता परमनामि ॥स्वजन स्वार्थी तुं निःस्वार्थी, धरुं एक ध्यान हु तार ॥ उभय वेरी पड्या केडी, भवोदधिमां मने नाखे । मळ्या जिनराज भवोदधि क्राक, हाथ ग्रहीने उगारोने ॥ धरम धोरी जीवन दोरी, दया जिनराजजी दाखे । भजुं भावे भक्ति दावे, मने जिनराज तारोने ॥

॥ साखी ॥

॥ महा गोप महा सार्थवाह, निर्यामक भविवृंद । महा माहण करुणा करी, तारो सांकलचंद ॥ अरज जिनराज करुं ॥

॥ गायन २८ मु ॥

॥ धन्य भाग्य पधार्या भमरा–ए राग ॥

॥ सुपार्श्वनाथ मम स्वामी, जगजनना अंतरजामि ॥ तुज पदकज सेवा पामी, महाराज गरीबनिवाज ।

॥ २ संतिकर ॥

॥ संतिकरं संतिजिणं जगसरणं जयसिरीइदायारं ॥ समरामि जत्तपालग,–निव्वाणीगरुडकयसेवं ॥ १ ॥ ॐ नमो विप्पोसहि,–पत्ताणं संतिसामिपायाणं ॥ झ्रौं स्वाहामंतेणं, सव्वासिवदुरिअहरणाणं ॥ २ ॥ ॐसंतिनमुक्कारो, खेलोसहिमाइलद्धिपत्ताणं ॥ सौं ह्रीं नमो सव्वो,–सहिपत्ताणं च देइ सिरिं ॥ ३ ॥ वाणीतिहुअणसामिणि,–सिरिदेवीजक्खरायगणिपिडगा ॥ गहदिसिपालसुरिंदा, सयावि रक्खंतु जिणभत्ते ॥ ४ ॥ रक्खंतु मम रोहिणी, पन्नत्ती वज्जसिंखला य सया ॥ वज्जंकुसि चक्केसरि, नरदत्ता कालि महाकाली ॥ ५ ॥ गोरी तह गंधारी, महजाला माणवी अ वइरुट्टा ॥ अछुत्ता माणसिया, महामाणसियाउ देवीउ ॥ ६ ॥ जक्खा गोमुह महजक्ख, तिमुह जक्खेस तुंबरु कुसुमो ॥ मायंगो विजयाजिय, बंभो मणुउ सुरकुमारो ॥ ७ ॥ छम्मुह पयाल किन्नर, गरुडो गंधव्व तह य जक्खिंदो ॥ कूबर वरुणो भिउडी, गोमेहो पास मायंगो ॥ ८ ॥ देवीउ चक्केसरि, अजिया दुरिआरि काली महाकाली ॥ अच्चुअ संता जाला, सुतारयासोय सिरिवच्छा ॥ ९ ॥ चंडा विजयंकुसि प,–न्नत्ति निव्वाणि अच्चुआ धरणी ॥ वइरुट्ट छुत्त गंधा,–रि

अंव पउमावई सिद्धा ॥ १० ॥ इअ तिहुरक्खणरय
अन्नेवि सुरासुरी य चउहावि ॥ वंतरजोइणिपमुहा, कु
णतु रक्ख सया अम्हं ॥ ११ ॥ एवं सुदिठिसुरगण,-स
हिउ संघस्स मतिजिणचदो ॥ मज्झवि करेउ रक्ख
मुणिसुदरसूरिथुअमहिमा ॥ १२ ॥ इअ संतिनाह स
म्म,-द्दिठी रक्ख सरइ तिकाल जो ॥ सव्वोवद्दवरहिउ
स लहइ सुहसंपयं परमं ॥ १३ ॥ तवगच्छगयणदिण
र,-जुगवरसिरिसोमसुदरगुरूणं ॥ सुपसायलद्धगणहर,
विज्जासिद्धिं भणइ सीसो ॥ १४ ॥

॥ ४ तिजयपहुत्त ॥

॥ तिजयपहुत्तपयासय,-अठमहापाडिहेरजुत्ताण,
समयक्खित्तठिआणं, सरेमि चक्कं जिणंदाण ॥ १ ॥
पणवीसा य असीआ, पनरस पन्नास जिणवरसमूहो,
नासेउ सयलदुरिअं, भविआण भत्तिजुत्ताण ॥ २
वीसा पणयाला विय, तीसा पन्नतरी जिणमरिंदा ॥
हगहभूअरक्खसाइणि,-घोरुवसग्गं पणासंतु ॥ ३ ॥ सित्ति
पणतीसा विय, सठी पंचेव जिणगणो एसो ॥ वाहि
लजलणहरिकरि,-चोरारिमहाभय हरउ ॥ ४ ॥ पणप
य दसेव य, पन्नठी तहय चेव चालीसा ॥ रक्खंतु

सरीरं, देवासुरपणमिआ सिद्धा ॥ ५ ॥ ॐ हरहुंहः सरसुंसः, हरहुंहः तहय चेव सरसुंसः ॥ आलिहियना-गगप्पं, चक्कं किर सव्वओभद्दं ॥ ६ ॥ ॐ रोहिणि पन्नत्ती, वज्जासिंखला तहय वज्जअंकुसिआ॥ चक्केसरि नरदत्ता, कालि महाकालि तह गोरी ॥ ७ ॥ गंधारी महजाला, माणवि वइरुट्ट तहय अछुत्ता ॥ माणसि महमाणसि-आ, विज्जादेवीओ रक्खंतु ॥ ८ ॥ पंचदसकम्मभूमिसु, उप्पन्नं सत्तरिं जिणाण सयं ॥ विविहरयणाइवन्नो,-व-सोहिअं हरउ दुरिआइं ॥ ९ ॥ चउतीसअइसयजुआ, अठमहापाडिहेरकयसोहा ॥ तिच्छयरा गयमोहा, झा-एअव्वा पयत्तेणं ॥ १० ॥ ॐ वरकणयसंखविद्दुम,-मर-गयघणसन्निहं विगयमोहं ॥ सत्तरिसयं जिणाणं, सव्वा-मरपूइअं वंदे स्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ भवणवइवाणवंतर,-जोइसवासी विमाणवासी अ ॥ जे केवि दुठदेवा, ते सव्वे उवसमंतु मम ॥ स्वाहा ॥ १२ ॥ चंदनकप्पूरेणं, फलए लिहिऊण खालिअं पीअं ॥ एगंतराइगहभूअ,-साइणिमुग्गं पणासेइ ॥ १३ ॥ इअ सत्तरिसयं जंतं, सम्मं मंतं दुवारि पडिलिहिअं ॥ दुरिआरिविजयवंतं, निप्पंतं निच्चमच्चेह ॥ १४ ॥

॥ ५ अथ नमिऊण ॥

॥ नमिऊण पणयसुरगण,–चूडामणिकिरणरंजिअं मुणिणो ॥ चलणजुअलं महाभय,–पणासणं संथवं वुच्छं ॥ १ ॥ सडियकरचरणनहमुह,–निवुड्डनासा विवन्नलायन्ना ॥ कुठमहारोगानल,–फुलिंगनिद्दड्ढसव्वंगा ॥ २ ॥ ते तुह चलणाराहण,–सलिलंजलिसेयवुड्ढियच्छाया (उच्छाहा) ॥ वणदवड्ढा गिरिपा,–यवव पत्ता पुणो लच्छों ॥ ३ ॥ दुव्वायखुभिय जलनिहि, उब्भडकल्लोलभीसणारावे ॥ संभतभयविसठुल,–निज्जामयमुक्कवावारे ॥ ४ ॥ अविदलियजाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअं कूलं ॥ पासजिणचलणजुअलं, निच्चं चिअ जे नमंति नरा ॥ ५ ॥ खरपवणुद्धुअवणदव,–जालावलिमिलियसयलदुमगहणे ॥ डज्झंतमुद्धमयवहु,–भीसणरवभीसणमि वणे ॥ ६ ॥ जगगुरुणो कमजुअलं, निव्वाविअसयलतिहुअणाभोअं ॥ जे संभरति मणुआ, न कुणइ जलणो भयं तेसिं ॥ ७ ॥ विलसंतभोगभीसण,–फुरिआरुणनयणतरलजीहालं ॥ उग्गभुअंगं नव जल,–य सच्छहं भीसणायारं ॥ ८ ॥ मन्नंति कीडसरिसं, दूरपरिच्छूढविसमविसवेगा ॥ तुह नामक्खरफुडसि,–द्धमंतगुरुआ

नरा लोए ॥ ए ॥ अमवीसु चिल्लतक्कर,—पुलिंदसदूलस-
द्दभीमासु ॥ जयविहुरवुन्नकायर,—उल्लूरिअपहिअस-
त्थासु ॥ १० ॥ अविलुत्तविहवसारा, तुह नाह पणाम-
मत्तवावारा ॥ ॥ ववगयविग्घा सिग्घं, पत्ता हियइच्छियं
ठाणं ॥ ११ ॥ पज्जलिआनलनयणं, दूरवियारियमुहं
महाकायं ॥ नहकुलिसघायविअलिअ,—गइंदकुंभत्थला-
भोअं ॥ १२ ॥ पणयससंभमपत्थिव,—नहमणिमाणिक्क-
पडिअपडिमस्स ॥ तुह वयणपहरणधरा, सीहं कुद्धंपि
न गणंति ॥ १३ ॥ ससिधवलदंतमुसलं, दीहकरुल्लाल-
वुड्ढिउच्छाहं ॥ महुपिंगनयणजुअलं, ससलिलनवजलह-
रारावं ॥ १४ ॥ भीमं महागइंदं, अच्चासन्नंपि ते न वि-
गणंति ॥ जे तुम्ह चलणजुअलं, मुणिवइ तुंगं सम-
ल्लीणा ॥ १५ ॥ समरम्मि तिरकखग्गा,—भिग्घायपवि-
द्धउद्धुयकबंधे ॥ कुंतविणिभिन्नकरिकलह,—मुक्कसिक्का-
रपउरंमि ॥ १६ ॥ निज्जियदप्पुद्धररिउ,—नरिंदनिवहा
भमा जसं धवलं ॥ पावंति पावपसमिण, पासजिण
तुहप्पभावेण ॥ १७ ॥ रोगजलजलणविसहर,—चोरारि-
मइंदगयरणभयाइं ॥ पासजिणनामसंकि,—त्तणेण पस-
मंति सव्वाइं ॥ १८ ॥ एवं महाभयहरं, पासजिणिंदस्स

संथवमुआरं ॥ नवियजणाणदयरं, कल्लाणपरंपरनिहाण ॥ १ए ॥ रायनयजक्करक्कस,–कुसुमिणदुस्सजणरिक्क पीमासु ॥ सऊासु दोसु पथे, उवसग्गे तहय रयणीसु ॥ २० ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, ताणं कइणो य माण-तुंगस्स ॥ पासो पावं पसमेउ, सयलनुवणच्चिअचलणो ॥ २१ ॥ उसग्गंते कमठा,–सुरम्मि ऊाणाउं जो न संचलिउं ॥ सुरनरकिन्नरजुवइहिं, सथुउं जयउ पासजिणो ॥ २२ ॥ एअस्स मज्झयारे, अठारसअक्करेहिं जो मंतो ॥ जो जाणइ सो ऊायइ, परमपयठं फुरु पास ॥ ॥ २३ ॥ पासह समरण जो कुणइ, संतुठेहियएण ॥ अ-ठुत्तरसयवाहिनय, नासइ तस्स दूरेण ॥ २४ ॥ इति श्रीमहानयहरनामक पचम स्मरणं ॥ २५ ॥

॥ ६ श्रीअजितशांतिस्तव ॥

॥अजिअं जिअसवनयं, संतिं च पसंतसवगयपावं ॥ जयगुरु संतिगुणकरे, दोवि जिणवरे पणिवयामि ॥ १ ॥ गाहा ॥ ववगयमंगुलनावे, ते हं विउलतवनिम्मलस-हावे ॥ निरुवममहप्पनावे, थोसामि सुदिठसप्नावे ॥ २ ॥ गाहा ॥ सवदुक्कप्पसंतीण, सवपावप्पसंतिणं ॥ सया अजियसंतीण, नमो अजिअसंतिण ॥ ३ ॥ सिलोगो ॥

गुत्तिपवर, दित्ततेअवंद धेअ सव्वलोअभाविअप्पभाव
णेअ पइस मे समाहिं ॥ १४ ॥ नारायओ ॥ विमलस-
सिकलाइरेअसोमं, वितिमिरसूरकराइरेअतेअं ॥ ति-
असवइगणाइरेअरूवं, धरणिधरप्पवराइरेअसारं ॥१५॥
कुसुमलया ॥ सत्ते अ सया अजिअं, सारीरे अ बले
अजिअं ॥ तव संजमे अ अजिअं, एस थुणामि
जिणं अजिअं ॥ १६ ॥ भुअगपरिरंगिअं ॥ सोमगुणे-
हिं पावइ न तं, नवसरयससी ॥ तेअगुणेहिं पावइ
न तं, नवसरयरवी ॥ रूवगुणेहिं पावइ न तं, तिअस-
गणवई ॥ सारगुणेहिं पावइ न तं, धरणिधरवई ॥ १७ ॥
खिज्जिअयं ॥ तित्थवरपवत्तयं तमरयरहियं, धीरजण-
थुअच्चिअं चुअकलिकलुसं ॥ संतिसुहपवत्तयं तिगरण-
पयओ, संतिमहं महामुणिं सरणमुवणमे ॥ १८ ॥
ललिअयं ॥ विणओणयसिरिरइअंजलिरिसिगणसंथुअं
थिमिअं ॥ विबुहाहिवधणवइनरवइथुयमहिअच्चिअं
बहुसो ॥ अइरुग्गयसरयदिवायरसमहिअसप्पभं तवसा
। गयणंगणवियरणसमुइअचारणवंदिअं सिरसा ॥
१९ ॥ किसलयमाला ॥ असुरगरुलपरिवंदिअं, किन्न-
रोरगणमंसिअं ॥ देवकोडिसयसंथुअं, समणसंघपरिवं-

दिअं ॥ २० ॥ सुमुहं ॥ अजयं अणहं, अरयं ॥ अजिय अजिअ, पयओ पणमे ॥ २१ ॥ विज्जुविल सिय ॥ आगया वरविमाणदिव्वकणगरहतुरयपहकरस एहि हुलिअं ॥ ससंभमोअरणखुभिअलुलियचलकुंडलं गयतिरीडसोहंतमउलिमाला ॥२२॥ वेड्डओ॥ज सं सासुरसंघा, वेरविउत्ता भत्तिसुजुत्ता ॥ आयरभूसिय–संभमपिंडिअ,–सुट्ठुसुविम्हिय–सव्वबलोघा॥ उत्तमकचणरयणपरूविय,–भासुरभूसणभासुरिअंगा ॥ गायसमोणयभत्तिवसागय,–पजलिपेसियसीसपणामा ॥ २३॥ रयणमाला ॥ वंदिऊण थोऊण तो जिणं, तिगुणमेव य ... पयाहिणं पणमिऊण य जिणं सुरासुरा, पमुइआसभवणाइं तो गया ॥२४॥ खित्तय॥ तंमहामुणिमहंपि पंजल रागदोसभयमोहवज्जिय देवदाणवनरिंदवंदिअं,संतिमुत्तममहातवं नमे ॥२५॥खित्तय ॥ अंवरंतरविआरणिआहि ललिअहंसवहुगामिणिआहि ॥ पीणसोणिथणसालिणिआहिं, सकलकमल दललोअणिआहि॥ २६ ॥ दीवयपीणनिरंतरथणभरविणमिअगायलआहिं, मणिकंचणपसिढिलमेहलसोहिअसोणितडाहि ॥ वरखिंखिणिनेउरसतिलयवलयविभूसणिआहि, १२कर ... सुंदरदसणिआहिं ॥२७॥ चित्तक्खरा ॥ देवसुंदरीहि पाय

वंदिआहिं वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा ॥ अप्पणो निमालएहिं मंमणोड्डणप्पगारएहिं केहिं केहिंवि अवंगतिलयपत्तलेहनामएहिं चिल्लएहिं संगयंगयाहिं नत्तिसंनिविठवंदणागयाहिं हुंति ते वंदिआ पुणो पुणो ॥ २० ॥ नारायउं ॥ तमहं जिणचंदं, अजिअं जिअमोहं ॥ धुयसव्वकिलेसं, पयउं पणमामि ॥ २ए ॥ नंदिअयं ॥ थुअवंदिअस्सा रिसगणदेवगणेहिं, तो देववहुहिं पयउं पणमिअस्सा ॥ जस्सजगुत्तमसासणअस्सा, नत्तिवसागयापिंमिअयाहिं ॥ देववरछरसा बहुआहिं, सुरवररइगुणपंमियआहिं ॥ ३० ॥ नासुरयं ॥ वंससद्दतंतितालमेलिए तिउरकरानिरामसद्दमीसए कए अ ॥ सुइसमाणणे अ सुद्धसज्जगीयपायजालघंटिआहिं ॥ वलयमेहलाकलावनेउरानिरामहसद्दमीसए कए अ ॥ देवनट्टिआहिं हावनावविप्भमप्पगारएहिं ॥ नच्चिऊण अंगहारएहिं वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा ॥ तयं तिलोयसव्वसत्तसंतिकारयं, पसंतसव्वपावदोसमेसहं नमामि संतिमुत्तमं जिणं ॥ ३१ ॥ नारायउं ॥ छत्तचामरपमागजूअजवमंमिआ, जयवरमगरतुरयसिरिवछसुलंछणा ॥ दीवसमुद्दमंदरदि-

सागयसोल्लिया, सन्निअवसहसीहरहचक्कवरंकिया
पाठांतर सिरिवच्छसुलंछणा ॥ ३२ ॥ ललिअयं ॥ सह
वलद्धा समप्पइट्ठा, अदोसदुट्ठा गुणेहिं जिट्ठा ॥ पसा
यसिट्ठो तवेण पुट्ठा, सिरीहिं इट्ठा रिसीहिं जुट्ठा॥३३
वाणवासिआ ॥ ते तवेण धुअसव्वपावया, सव्वलोअहि
अमूलपावया ॥ संथुआ अजिअसंतिपायया, हुंतु मे
सिवसुहाण दायया ॥ ३४ ॥ अपरांतिका ॥ एवं तव
बलविउलं, थुअं मए अजिअसंतिजिणजुअलं ॥ वव
गयकम्मरयमलं, गइं गयं सासयं विउलं ॥ ३५ ॥ गाह
॥ तं बहुगुणप्पसायं, मुक्खसुहेण परमेण अविसायं
नासेउ मे विसायं, कुणउ अ परिसावि अ पसायं॥ ३
॥ गाहा ॥ तं मोएउ अ नंदिं, पावेउ अ नंदिसेणम
भिनंदिं ॥ परिसावि अ सुहनंदिं, मम य दिसउ संज
नंदिं ॥ ३७ ॥ गाहा ॥ पक्खिअ चाउम्मासे, संवच्छरि
अवस्स भणिअव्वो ॥ सोअव्वो सव्वेहिं, उवसग्गनिवारण
एसो ॥ ३८ ॥ गाहा ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, उ
भउकालंपि अजिअसंतिथयं ॥ नहु हुंति तस्स रोग
पुव्वुप्पन्ना वि नासंति ॥ ३९ ॥ गाहा ॥ जइ इच्छह प
मपयं, अहवा कीत्तिं सुविच्छडं भुवणे ॥ ता तेलुक्कुद्धरणे
जिणवयणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥ गाहा ॥ इति ॥

॥ ७ भक्तामर ॥

॥ भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणा,—मुद्योतकं दलि-
तपापतमोवितानम् ॥ सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं
युगादा,—वालंबनं भवजले पततां जनानाम् ॥ १ ॥ यः
संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा,—दुद्भूतबुद्धिपटुभिःसु-
लोकनाथैः ॥ स्तोत्रैर्जगत्त्रितयचित्तहरैरुदारैः, स्तोष्ये
केलाहमपि तं प्रथमं जिनेंद्रम् ॥ २ ॥ बुद्ध्या विनाऽपि
बुधार्चितपादपीठ, स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहम्
बालं विहाय जलसंस्थितमिंदुबिंबः,—मन्यः क इच्छति
नः सहसा ग्रहीतुम् ॥ ३ ॥ वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र
शांककांतान्, कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्ध्या ॥
ल्पांतकालपवनोद्धतनक्रचक्रं, को वा तरीतुमलमंबुनि-
ं भुजाभ्याम् ॥ ४ ॥ सोऽहं तथापि तव भक्तिवशा-
मुनीश, कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपिप्रवृत्तः ॥ प्रीत्याऽऽत्म-
र्यमविचार्य मृगो मृगेंद्रं, नाभ्येति किं निजशिशोः
रिपालनार्थम् ॥ ५ ॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम,
द्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम् ॥ यत्कोकिलः कि-
मधौ मधुरं विरौति, तच्चारुचूतकलिकानिकरैकहेतुः
६ ॥ त्वत्संस्तवेन भवसंततिसंनिबद्धं, पापं क्षणात्क्ष-

यमुपैति शरीरजाजाम् ॥ आक्रांतलोकमलिनीलमशेषमाशु, सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमंधकारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेद,–मारभ्यते तनुधियाऽपि तव प्रभावात् ॥ चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु, मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिंदुः ॥ ८ ॥ आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्तदोषं, त्वत्संकथाऽपि जगतां दुरितानि हंति ॥ दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव: पद्माकरेषु जलजानि विकाशभांजि ॥ ९ ॥ नात्यद्भुतं भुवनभूषणभूत नाथ भूतैर्गुणैर्भुवि भवंतमभिष्टुवंतः ॥ तुल्या भवति भवतो ननु तेन किं वा, भूत्याऽऽश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥ १० ॥ दृष्ट्वा भवतमनिमेषविलोकनीयं, नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः ॥ पीत्वा पयः शशिकरद्युति-दुग्धसिन्धोः, क्षारं जलं जलनिधेरशितुं क इच्छेत् ॥ ११ ॥ यैः शांतरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं, निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत ॥ तावंत एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां यत्ते समानमपरं न हि रूपमस्ति ॥ १२ ॥ वक्त्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि, निःशेषनिर्जितजगत्त्रितयोपमानम् विव कलंकमलिनं क्व निशाकरस्य, यद्वासरे भवति पांडुपलाशकल्पम् ॥ १३ ॥ संपूर्णमंडलशशांक

कलाकलाप,-शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लंघयंति ॥ ये
संश्रितास्त्रिजगदीश्वर नाथमेकं, कस्तान्निवारयति सं-
चरतो यथेष्टम् ॥ १४ ॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशां-
गनाभि,-र्नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम् ॥ कल्पां-
तकालमरुता चलिताचलेन, किं मंदराद्रिशिखरं चलितं
कदाचित् ॥ १५ ॥ निर्धूमवर्त्तिरपवर्जिततैलपूरः कृत्स्नं
जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि ॥ गम्यो न जातु मरुतां
चलिताचलानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः
॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः, स्पष्टी-
करोषि सहसा युगपज्जगंति ॥ नांभोधरोदरनिरुद्धमहा-
प्रभावः, सूर्यातिशायिमहिमाऽसि मुनींद्र लोके ॥ १७
॥ नित्योदयं दलितमोहमहांधकारं, गम्यं न राहुवनस्य
न वारिदानाम् ॥ विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकांति,-
विद्योतयज्जगदपूर्वशशांकबिंबम् ॥ १८ ॥ किं शर्वरीषु
शशिनाऽह्नि विवस्वता वा, युष्मन्मुखेंदुदलितेषु तमस्सु
नाथ ॥ निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके, कार्यं
कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः ॥ १९ ॥ ज्ञानं यथा त्वयि
विभाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु ॥
तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं, नैवं तु काचशकले

किरणाकुलेऽपि ॥ २० ॥ मन्ये वरं हरिहरादय एवा दृष्टा
दृष्टेपु येपु हृदयं त्वयि तोषमेति ॥ कीं वीक्षितेन भवता
भुवि येन नान्य., कश्चिन्मनो हरति नाथ भवांतरेऽपि
॥ २१ ॥ स्त्रीणां शतानि शतशो जनयंति पुत्रान्, नान्या
सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता ॥ सर्वा दिशो दधति भानि
सहस्त्ररश्मि, प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥२२॥
त्वामामनति मुनयः परमं पुमांस,–मादित्यवर्णममल
तमस· पुरस्तात् ॥ त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयति मृत्यु
नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र पथाः ॥ २३ ॥ त्वा
मव्ययं विभुमचिंत्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माणमीश्वरमनंत
मनंगकेतुम् ॥ योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं, ज्ञान
स्वरूपममलं प्रवदति संतः ॥२४॥ बुद्धस्त्वमेव विबुधा
र्चितबुद्धिबोधात्, त्वं शंकरोऽसि भुवनत्रयशंकरत्वात् ।
धाताऽसि धीर शिवमार्गविधेर्विधानात्, व्यक्तं त्वमेव
भगवन् पुरुपोत्तमोऽसि ॥ २५ ॥ तुभ्य नमस्त्रिभुवनार्ति
हराय नाथ, तुभ्य नम क्षितितलामलभूपणाय ।
तुभ्यं नमस्त्रिजगत परमेश्वराय, तुभ्य नमो जिन
भवोदधिशोपणाय ॥ २६ ॥ को विस्मयोऽत्र यदि नाम
 गुणैरशेषै,–स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ॥ दो

रूपात्तविविधाश्रयजातवर्गैः, स्वप्नांतरेऽपि न कदाचिद-
ोक्षितोऽसि ॥ २७ ॥ उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख,–मा-
ाति रूपममलं भवतो नितांतम् ॥ स्पष्टोल्लसत्किरणम-
ततमोवितानं, बिंबं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्ति ॥ २८ ॥
सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे, विभ्राजते तव
पुः कनकावदातम् ॥ बिंबं वियद्विलसदंशुलतावितानं,
गोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥ कुंदावदात-
लचामरचारुशोभं, विभ्राजते तव वपुः कलधौतकांतम्
उद्यच्छशांकशुचिनिर्झरवारिधार,–मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव
ातकौंभम् ॥ ३० ॥ छत्रत्रयं तव विभाति शशांककां-
,–मुच्चैः स्थितं स्थगितभानुकरप्रतापम् ॥ मुक्ताफल-
करजालविवृद्धशोभं, प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वरम्
३१ ॥ उन्निद्रहेमनवपंकजपुंजकांति,–पर्युल्लसन्नखमयूख-
शिखाऽभिरामौ ॥ पादौ पदानि यत्र जिनेंद्र धत्तः,
द्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयंति ॥ ३२ ॥ इत्थं यथा
व विभूतिरभूज्जिनेंद्र, धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य
याद्दक्प्रभा दिनकृतः प्रहतांधकारा, ताद्दक्कुतो ग्रहग-
स्य विकाशिनोऽपि ॥ ३३ ॥ श्च्योतन्मदाविलविलोलक-
ोलमूल,–मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ॥ ऐरावताभ-

मित्तमुद्धतमापत. ह्ष्ट्वा जय जवति नो जवदाश्रित
नाम् ॥ ३४ ॥ जिन्नेत्तकुत्तगलडुज्ज्वलशोणिताक्त,–मुक्त
फलप्रकरजूषितजूमिनागः ॥ बद्धक्रम· क्रमगत हरि
णाधिपोऽपि, नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥ ३५
कल्पांतकालपवनोद्धतवह्निकल्प, दावानलं ज्वलित
ज्ज्वलमुत्कुलिगम् ॥ विश्वं जिघत्सुमिव समुखमापतं
त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥ रक्तेक्ष
समदकोकिलकठनील, क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमाप
तम् आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशक,–स्त्वन्नानाग
मनी हृदि यस्य पुस· ॥ ३७ ॥ वल्गत्तुरगगजगर्जितज
मनाद,–माजौ बलं बलवतामपि जूपतीनाम् ॥ ज
द्दिवाकरमयूखशिखाऽपविद्ध, त्वत्कीर्तनात्तम इवा
जिदामुपैति ॥ ३८ ॥ कुताग्रजिन्नगजशोणितवारिव
ह,–वेगावतारतरणातुरयोधजीमे ॥ युद्धे जयविजितदु
यजेयपक्षा,–स्त्वत्पादपकजवनाश्रयिणो लजते ॥ ३९
अम्जोनिधौ क्षुजितजीपणनक्रचक्र,–पाठीनपीठजयद
ल्बणवाडवाग्ना ॥ रगत्तरंगशिखरस्थितयानपात्रा,–स्त्रा
विहाय जवत· स्मरणाद्व्रजति ॥ ४० ॥ उद्भूतजी
णजलोदरजारजुग्ना , शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजी

ताशाः ॥ त्वत्पादपंकजरजोऽमृतदिग्धदेहा, मर्त्या भवंति मकरध्वजतुल्यरूपाः ॥ ४१ ॥ आपादकंठमुरुशृंखलवेष्टितांगा, गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजंघाः ॥ त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजाः स्मरंतः, सद्यः स्वयं विगतबंधभया भवंति ॥ ४२ ॥ मत्तद्विपेंद्रमृगराजदवानलाहि,—संग्रामवारिधिमहोदरबंधनोत्थम् तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव, यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥ ४३ ॥ स्तोत्रस्रजं तव जिनेंद्र गुणैर्निबद्धां, भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् ॥ धत्ते जनो य इह कंठगतामजस्रं, तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥ इति भक्तामरनामकस्तोत्रं सप्तमस्मरणम् ॥ ७ ॥

॥ ८ श्री कल्याणमंदिर ॥

॥ कल्याणमंदिरमुदारमवद्यभेदि, भीताभयप्रदमनिंदितमंघ्रिपद्मम् ॥ संसारसागरनिमज्जदशेषजंतु,—पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥ १ ॥ यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमांबुराशेः, स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विभुर्विधातुम् ॥ तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो,—स्तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥ २ ॥ युग्मम् ॥ सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप,—मस्मादृशाः कथमधीश भवन्त्यधीशाः

॥ धृष्टोऽपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिवांधो, रूप प्ररू
यति किं किल घर्मरश्मेः ॥ ३ ॥ मोहक्षयादनुभवन्न
नाथ मर्त्यो, नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत ॥ क
ल्पांतवांतपयसः प्रकटोऽपि यस्मा,-न्मीयेत केन जलं
नैनु रत्नराशिः ॥ ४ ॥ अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ जडाशय
ऽपि, कर्तुं स्तवं लसदसंख्यगुणाकरस्य ॥ बालोऽपि किं
निजबाहुयुगं वितत्य, विस्तीर्णतां कथयति स्वधिय
बुराशेः ॥ ५ ॥ ये योगिनामपि न यांति गुणास्तवेः
वक्तु कथं भवति तेषु ममावकाशः ॥ जाता तदे
मसमीक्षितकारितेय, जल्पंति वा निजगिरा न
पक्षिणोऽपि ॥ ६ ॥ आस्तामचिंत्यमहिमा जिन सस
वस्ते, नामापि पाति भवतो भवतो जगति ॥ तीव्र
तपोपहतपांथजनान्निदाघे, प्रीणाति पद्मसरस सरसे
ऽनिलोऽपि ॥ ७ ॥ हृद्वर्त्तिनि त्वयि विभो शिथिलं
भवंनि, जंतोः क्षणेन निबिडा अपि कर्मबंधा
सद्यो भुजगममया इव मध्यभाग,-मभ्यागते व
शिखंडिनि चंदनस्य ॥ ८ ॥ मुच्यंत एव मनुजाः सहस
जिनेंद्र, रौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि ॥ गोस्वामि
नि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे, चौरैरिवाशु पशवः प्र

लाघमानैः ॥ ए ॥ त्वं तारको जिन कथं जविनां त
एव, त्वामुद्वहंति हृदयेन यदुत्तरंतः ॥ यद्वा दृतिस्तरति
यज्जलमेष नून,–मंतर्गतस्य मरुतः स किलानुजावः
॥१०॥ यस्मिन् हरप्रजृतयोऽपि हतप्रजावाः, सोऽपि त्वया
रतिपतिः क्षपितः क्षणेन ॥ विध्यापिता हुतजुजः पय-
साथ येन, पीतं न किं तदपि दुर्द्धरवाडवेन ॥ ११ ॥
स्वामिन्ननल्पगरिमाणमपि प्रपन्ना–स्त्वां जंतवः कथ-
महो हृदये दधानाः ॥ जन्मोदधिं लघु तरंत्यतिला-
घवेन, चिंत्यो न हंत महतां यदिवा प्रजावः ॥ १२ ॥
क्रोधस्त्वया यदि विज्ञो प्रथमं निरस्तो, ध्वस्तास्तदा बत
कथं किल कर्मचौराः ॥ प्लोषत्यमुत्र यदिवा शिशिरा-
ऽपि लोके, नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी
॥ १३ ॥ त्वां योगिनो जिन सदा परमात्मरूप,–मन्वेष-
यंति हृदयांबुजकोशदेशे ॥ पूतस्य निर्मलरुचेर्यदिवा
किमन्य,–दक्षस्य संजवि पदं ननु कर्णिकायाः ॥१४॥
ध्यानाज्जिनेश जवतो जविनः क्षणेन, देहं विहाय
परमात्मदशां व्रजंति ॥ तीव्रानलादुपलजावमपास्य लोके,
चामीकरत्वमचिरादिव धातुजेदाः ॥ १५ ॥ अंतः स-
दैव जिन यस्य विजाव्यसे त्वं, जव्यैः कथं तदपि ना-

शयसे शरीरम् ॥ एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्तिनो हि, यद्विग्रहं प्रशमयति महानुभावाः ॥ १६ ॥ आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेदबुद्ध्या, ध्यातो जिनेंद्र भवतीह भवत्प्रभाव ॥ पानीयमप्यमृतमित्यनुचिंत्यमानं, किं नाम नो विषविकारमपाकरोति ॥ १७ ॥ त्वामेव वीततमसं परवादिनोऽपि, नूनं विभो हरिहरादिधिया प्रपन्ना ॥ किं काचकामलिभिरीश सितोऽपि शंखो, नो गृह्यते विविधवर्णविपर्ययेण ॥ १८ ॥ धर्मोपदेशसमये सविधानुभावा,–दास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोक ॥ अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोऽपि, किं वा विबोधमुपयाति न जीवलोक ॥ १९ ॥ चित्रं विभो कथमवाङ्मुखवृंतमेव, विष्वक् पतत्यविरला सुरपुष्पवृष्टि ॥ त्वद्गोचरे सुमनसां यदिवा मुनीश, गच्छंति नूनमध एव हि बंधनानि ॥२०॥ स्थाने गभीरहृदयोदधिसंभवायाः, पीयूषतां तव गिर समुदीरयति ॥ पीत्वा यत परमसंमदसंगभाजो, भव्या व्रजंति तरसाऽप्यजरामरत्वम् ॥ २१ ॥ स्वामिन् सुदूरमवनम्य समुत्पतंतो, मन्ये वदंति शुचय सुरचामरौघाः ॥ येऽस्मै नतिं विदधते मुनिपुंगवाय, ते नूनमूर्ध्वगतय खलु शुद्धभावाः ॥ २२ ॥

ध्यामं गम्भीरगिरमुज्ज्वलहेमरत्न,–सिंहासनस्थमिह भ-
यशिखंडिनस्त्वाम् ॥ आलोकयन्ति रभसेन नदन्त-
च्चै,–श्चामीकराद्रिशिरसीव नवाम्बुवाहम् ॥ २३ ॥
द्गच्छता तव शितिद्युतिमंडलेन, लुप्तच्छदच्छविरशोक-
स्तर्बभूव ॥ सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग, नी-
रागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि ॥ २४ ॥ भो भोः
प्रमादमवधूय भजध्वमेन,–मागत्य निर्वृतिपुरिं प्रति
सार्थवाहम् ॥ एतन्निवेदयति देव जगत्त्रयाय, मन्ये
नदन्नभिनभः सुरदुंदुभिस्ते ॥ २५ ॥ उद्योतितेषु भवता
भुवनेषु नाथ, तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः ॥
मुक्ताकलापकलितोच्छ्वसितातपत्र,–व्याजात्त्रिधा धृतत-
नुर्ध्रुवमभ्युपेतः ॥ २६ ॥ स्वेन प्रपूरितजगत्त्रयपिंडितेन,
कांतिप्रतापयशसामिव संचयेन ॥ माणिक्यहेम-
रजतप्रविनिर्मितेन, सालत्रयेण भगवन्नभितो विभासि
॥ २७ ॥ दिव्यस्रजो जिन नमत्त्रिदशाधिपाना–मुत्सृज्य
रत्नरचितानपि मौलिबंधान् ॥ पादौ श्रयंति भवतो य-
दि वा परत्र, त्वत्संगमे सुमनसो न रमंत एव ॥ २८ ॥
त्वं नाथ जन्मजलधेर्विपराङ्मुखोऽपि, यत्तारयस्यसुमतो
निजपृष्ठलग्नान् ॥ युक्तं हि पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव,

चित्र विन्नो यदसि कर्मविपाकशून्यः ॥ २९ ॥ विश्वे-
श्वरोऽपि जनपालक दुर्गतस्त्वं, किं वाऽक्षरप्रकृतिरप्य-
लिपिस्त्वमीश ॥ अज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव, ज्ञानं
त्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतुः ॥ ३० ॥ प्राग्नारसं-
नृतनन्नांसि रजांसि रोपा,-दुत्थापितानि कमठेन शठेन
यानि ॥ ठायाऽपि तैस्तव न नाथ हृता हताशो, ग्रस्त-
स्त्वमीन्निरयमेव परं दुरात्मा ॥ ३१ ॥ यज्जर्ज्जदूर्जित-
घनौघमदन्नन्नीमं, भ्रश्यत्तन्मुसलमांसलघोरधारम् ॥
दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि दध्रे, तेनैव तस्य जिन
दुस्तरवारिकृत्यम् ॥ ३२ ॥ ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिम-
र्त्यमुरु,-प्रालंवनृन्नयदवक्त्रविनिर्यदग्नि ॥ प्रेतव्रज. प्रति
नवंतमपीरितो य ,सोऽस्याऽनवत्प्रतिनवं नवदु.खहेतुः
॥ ३३ ॥ धन्यास्त एव नुवनाधिप ये त्रिसंध्य,-माराध-
यति विधिवद्विधुतान्यकृत्या ॥ नक्त्योल्लसत्पुलकपक्ष्म-
लदेहदेशा , पादद्वय तव त्रिन्नो नुवि जन्मन्नाजः ॥ ३४ ॥
अस्मिन्नपारनववारिनिधौ मुनीश, मन्ये न मे श्रवण-
गोचरतां गतोऽसि ॥ आकर्णिते तु तव गोत्रपवित्रमंत्रे,
किं वा विपद्विपधरी सविधं समेति ॥ ३५ ॥ जन्मांत-
रेऽपि तव पादयुगं न देव, मन्ये मया महितमीहि-

तदानदक्षम् ॥ तेनेह जन्मनि मुनीश पराजवानां, जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम् ॥ ३६ ॥ नूनं न मोह-तिमिरावृतलोचनेन, पूर्वं विजो सकृदपि प्रविलोकितो-ऽसि ॥ मर्माविधो विधुरयंति हि मामनर्थाः, प्रोद्य-त्प्रबंधगतयः कथमन्यथैते ॥ ३७ ॥ आकर्णितोऽपि म-हितोऽपि निरीक्षितोऽपि, नूनं न चेतसि मया विधृतो-ऽसि जक्त्या ॥ जातोऽस्मि तेन जनबांधव दुःखपात्रं, यस्मात्क्रियाः प्रतिफलंति न जावशून्याः ॥ ३८ ॥ त्वं नाथ दुःखिजनवत्सल हे शरण्य, कारुण्यपुण्यवसते वशिनां वरेण्य जक्त्या नते मयि महेश दयां विधाय, दुःखांकुरोद्दलनतत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥ निःसंख्यसा-रशरणं शरणं शरण्य,—मासाद्यसादितरिपुप्रथितावदा-तम् ॥ त्वत्पादपंकजमपि प्रणिधानवंध्यो, वध्योऽस्मि चेद्भुवनपावन हा हतोऽस्मि ॥ ४० ॥ देवेंद्रवंद्य वि-दिताखिलवस्तुसार, संसारतारक विजो जुवनाधिनाथ ॥ त्रायस्व देव करूणाह्रद मां पुनीहि, सीदंतमद्य जय-दव्यसनांबुराशेः ॥ ४१ ॥ यद्यस्ति नाथ जवदंघ्रिसरोरु-हाणां, जक्तेः फलं किमपि संततिसंचितायाः ॥ तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य जूयाः, स्वामी त्वमेव जुवनेऽत्र

भवांतरेऽपि ॥ ४२ ॥ इह समाहितधियो विधिवज्जि-
नेन्द्र, सांद्रोल्लसत्पुलककंचुकितांगभागाः ॥ त्वद्बिंबनि
र्मलमुखांबुजबद्धलक्षा, ये संस्तवं तव विभो रचयंति
भव्याः ॥ ४३ ॥ जननयनकुमुदचन्द्र,–प्रभास्वराः स्वर्ग
संपदो भुक्त्वा ॥ ते विगलितमलनिचया, अचिरान्मोक्ष
प्रपद्यते ॥ युग्मम् ॥ ४४ ॥ इति श्रीकल्याणमंदिरना
मक अष्टमस्मरणम् ॥ ८ ॥

॥ ९ बृहच्छांतिस्तव ॥

॥ भो भो भव्याः शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्वमेतत्
ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हता भक्तिभाजः ॥ तेषां शां
तिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभावा,–दारोग्यश्रीधृतिमति
करी क्लेशविध्वंसहेतुः ॥ १ ॥ गद्य ॥ भो भो भव्य
लोका इह हि भरतैरावतविदेहसंभवानांसमस्ततीर्थकृतां
जन्मन्यासनप्रकंपानंतरमवधिना विज्ञाय, सौधर्माधिप
तिः सुघोषाघंटाचालनानंतरं सकलसुरासुरेंद्रैः सह स
मागत्य, सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा गत्वा कनका
द्रिशृंगे, विहितजन्माभिषेकः, शांतिमुद्घोषयति यथा,
ततोऽहं कृतानुकारमिति कृत्वा, महाजनो येन गतः स
पथा इति भव्यजनैः सह समेत्य, स्नात्रपीठे स्नात्रं वि

धाय, शांतिमुद्घोषयामि तत्पूजायात्रास्नात्रादिमहोत्सवानंतरमिति कृत्वा कर्णं दत्वा, निशम्यतां निशम्यतां स्वाहा, ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयंतां प्रीयंतां भगवंतोऽर्हंतः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनस्त्रिलोकनाथास्त्रिलोकमहितास्त्रिलोकपूज्यास्त्रिलोकेश्वरास्त्रिलोकोद्योतकराः, ॐ ऋषभ–अजित–संभव-अभिनंदन–सुमति-पद्मप्रभ– सुपार्श्व–चद्रप्रभसुविधि–शीतल–श्रेयांस–वासुपूज्य– विमल–अनंत–धर्म–शांति–कुंथु–अर–मल्लि – मुनिसुव्रत–नमि–नेमि–पार्श्व–वर्द्धमानातां जिनाः शांताः शांतिकरा भवंतु स्वाहा ॥ ॐ मुनयो मुनिप्रवरा रिपुविजयदुर्भिक्षकांतारेषु दुर्गमार्गेषु रक्षंतु वो नित्यं स्वाहा ॥ ॐ ह्रीँ श्रीं धृति–मति–कीर्त्ति–कांति–बुद्धि–लक्ष्मी–मेधा-विद्यासाधन–प्रवेश–निवेशनेषु सुगृहीतनामानो जयंतु ते जिनेंद्राः ॥ ॐ रोहिणी–प्रज्ञप्ति–वज्रशृंखला–वज्रांकुशी–अप्रतिचक्रा–पुरुषदत्ता–काली– महाकाली–गौरी–गांधारी–सर्वास्त्रामहाज्वाला–मानवी–वैरोट्या–अछुप्ता–मानसी–महामानसी षोडश विद्यादेव्यो रक्षंतु वो नित्यं स्वाहा ॥ ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्णस्य श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु तुष्टिर्भवतु

पुष्टिर्भवतु ॥ ॐ ग्रहाश्चंद्रसूर्यांगारकबुधबृहस्पतिशुः
शनैश्चरराहुकेतुसहिताः सलोकपालाः सोमयमवरुण
कुबेरवासवादित्यस्कंदविनायकोपेताः ये चान्येऽपि ग्र
मनगरक्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयंतां प्रीयंतां, अक्षीण
कोशकोष्ठागारा नरपतयश्च भवंतु स्वाहा ॥ ॐ पुत्र
मित्र–भ्रातृ– कलत्र–सुहृद्– स्वजन–संबंधि–बंधुवर्गस
हिता नित्यं चामोदप्रमोदकारिणः।अस्मिँश्च भूमण्डला
तननिवासिसाधुसाध्वीश्रावकश्राविकाणां रोगोपसर्ग
धिदुःखदुर्भिक्षदौर्मनस्योपशमनाय शांतिर्भवतु ॐ
ष्टिपुष्टिऋद्धिवृद्धिमांगल्योत्सवा सदा प्रादुर्भूतानि
पानि शाम्यतु दुरितानि ॥ शत्रवः पराङ्मुखा भवंतु स्वा
॥ श्रीमते शांतिनाथाय नमः शांतिविधायिने ॥ त्रैलो
क्यस्यामराधीश, मुकुटाभ्यर्चितांघ्रये ॥ १ ॥ शांतिः श
तिकरः श्रीमान्, शांतिं दिशतु मे गुरुः ॥ शांतिरेव स
तेषां, येषां शांतिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥ उन्मृष्टरिष्टदुष्ट,–ग्र
गतिदुःस्वप्नदुर्निमित्तादि ॥ संपादितहितसंप,–न्नाम
हणं जयति शांतेः ॥ ३ ॥ श्रीसंघजगज्जनपद, रा
धिपराजसन्निवेशानाम् ॥ गोष्ठिकपुरमुख्याणां, व्याह
णैर्व्याहरेच्छांतिम् ॥ ४ ॥ श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भ

श्रीपौरजनस्य शांतिर्भवतु, श्रीजनपदानां शांतिर्भवतु, श्रीराजाधिपानां शांतिर्भवतु, श्रीराजसन्निवेशानां शांतिर्भवतु, श्रीगोष्ठिकानां शांतिर्भवतु, श्रीपुरमुख्याणां शांतिर्भवतु, श्रीब्रह्मलोकस्य शांतिर्भवतु, ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा ॥ एषा शांतिः प्रतिष्ठायात्रास्नात्राद्यवसानेषु शांतिकलशं गृहीत्वा कुंकुमचंदनकर्पूरागुरुधूपवासकुसुमांजलिसमेतः, स्नात्रचतुष्किकायां श्रीसंघसमेतः, शुचिशुचिवपुः पुष्पवस्त्रचंदनाभरणालंकृतः, पुष्पमालां कंठे कृत्वा, शांतिमुद्घोषयित्वा शांतिपानीयं मस्तके दातव्यमिति ॥ नृत्यंति नित्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजंति गायंति च मंगलानि ॥ स्तोत्राणि गोत्राणि पठंति मंत्रान्, कल्याणभाजो हि जिनाभिषेके ॥ १ ॥ शिवमस्तु सर्वजगतः, परहितनिरता भवंतु भूतगणाः ॥ दोषाः प्रयांतु नाशं, सर्वत्र सुखी भवंतु लोकाः ॥ २ ॥ अहं तित्थयरमाया, सिवादेवी तुम्ह नयरनिवासिनी ॥ अम्ह सिवं तुम्ह सिवं, असिवोवसमं सिवं भवतु स्वाहा ॥ ३ ॥ उपसर्गाः क्षयं यांति, छिद्यंते विघ्नवल्लयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे

॥ ४ ॥ सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् ॥ प्रधा॰ सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥

अथ सामायिक लेवानी विधि

१ प्रथम ऊंचे आसने पुस्तक प्रमुख मूकवुं २ श्रावक श्राविकाए कटासणुं मुहपत्ति चरवलो लइ शुद्ध वस्त्रे जग्या पुंजी कटासणा उपर बेसवुं ३ मुहपत्ति डाबा हाथमां मुख पासे राखी जमणो हाथ थापनाजी सन्मुख राखी एक नवकार गणवो पछी पंचिंदिअनो पाठ जणवो।

॥ अथ पंचिंदिअ॥

॥ पंचिंदिअसंवरणो तह नवविहबंभचेरगुत्तिधरो। चउविहकसायमुक्को, इअ अट्ठारसगुणेहिं संजुत्तो ॥ १ ॥ पंचमहव्वयजुत्तो, पंचविहायारपालणसमत्थो ॥ पंचसमिओ तिगुत्तो, छत्तीसगुणो गुरू मज्झ ॥ २ ॥ (त्यारपछी खमासमण देवुं)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहियाए मत्थएण वंदामि ॥

(त्यारपछी इरियावहिनो पाठ जणवो.)

॥ अथ इरियावहि ॥

॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इरियावहियं पडि

मामि । इछं इछामि पमिक्कमिउं । इरियावहियाए राहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरिय-मणे उंसाउत्तिंगपणगदगमट्टीमक्कमासंताणासंकमणे । मे जीवा विराहिया । एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया उरिंदिया पंचिंदिया । अनिहया वत्तिआ लेसिया वाइया संघट्टिया परियाविया किलामिया उद्दविया णाउंठाणं संकामिया जीवियाउं ववरोविया। तस्स मछामि डुक्कडं ॥

॥ तस्स उत्तरीनो पाठ भणवो ॥

॥ अथ तस्स उत्तरी ॥

॥ तस्स उत्तरीकरणेणं पायछित्तकरणेणं विसोहीक-णेणं विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायण-ाए ठामि काउस्सग्गं ॥

॥ अथ अन्नच्छ ऊससिएणंनो पाठ भणवो ॥

॥ अन्नछ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं ठीएणं जाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं ममलीए पित्तमुछाए हुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहु-हिं दिठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अन्नग्गो विराहिउ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं

जगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणे मोणेणं जाणेणं अप्पाण वोसिरामि ॥

॥ त्यारबाद एक लोगस्सनो अथवा चार नवकार नो काउस्सग्ग करी पारी प्रगट लोगस्स कहेवो ॥

॥ अथ लोगस्स ॥

॥ लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसज्ञ मजियंच वंदे ॥ संजवमजिणंदणं च सुमइ च पउमप्पहं सुपास, जिण च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहि च पुप्फदंतं, सीयलसिज्जसवासुपुज्जं च ॥ विमलमणं च जिण, धम्मं संति च वंदामि ॥ ३ कुंथुं अ च मल्लिं वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिण च ॥ वंदामि रिठ नेमिं, पासं तह वद्धमाण च ॥ ४ ॥ एवं मए अजि थुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा ॥ चउवीसंपि जि णवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तियवंदियम हिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ॥ आरुग्गवोहिलानं समाहिवरमुत्तम दितु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइ च्चेसु अहियं पयासयरा ॥ सागरवरगंजीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥ ॥

(पछी खमासमण दइ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक मुहपत्ति पडिलेहुं? इच्छं एम कहेवुं.)

॥ पछी मुहपत्ति तथा अंगनी पडिलेहण पचास बोल कही मुहपत्ति पडिलेहवी ॥

॥ मुहपत्तिना पचीश बोल ॥

॥ सूत्र अर्थ तत्त्व करी सद्दहुं १. समकितमोहनी २ मिश्रमोहनी ३ मिथ्यात्वमोहनी परिहरुं ४. कामराग ५ स्नेहराग ६ दृष्टिराग परिहरुं ७. सुदेव ८ सुगुरु ए सुधर्म आदरुं १०. कुदेव ११ कुगुरु १२ कुधर्म परिहरुं १३. ज्ञान १४ दर्शन १५ चारित्र आदरुं १६. ज्ञानविराधना १७ दर्शनविराधना १८ चारित्रविराधना परिहरुं १ए. मनगुप्ति २० वचन गुप्ति २१ कायगुप्ति आदरुं २२. मनदंड २३ वचनदंड २४ कायदंड परिहरुं २५ ॥

॥ अंगना पचीश बोल ॥

॥ हास्य १ रति २ अरति ३ परिहरुं, डावे हाथे पडिलेहवा. भय ४ शोक ५ दुगंछा ६ परिहरुं, जमणे हाथे पडिलेहवा. कृष्णलेश्या ७ नीललेश्या ८ कापोतलेश्या ए परिहरुं, माथा उपर पडिलेहवा, रस, गारव १० ऋद्धि-गारव ११ शातागारव १२ प रुं, मोढे पडिलेहवा.

मायाशल्य १३ नियाणशल्य १४ मिथ्यात्वशल्य १५ परिहरुं, ठाती आगल पडिलेहवा क्रोध १६ मान १७ परिहरुं, पुंठे डावे खन्ने पडिलेहवा माया १८ लोभ १९ परिहरुं, जमणे खन्ने पडिलेहवा? पृथ्वीकाय २० अपकाय २१ तेउकाय २२ नी जयणा करुं, डावे ढीचणे पडिलेहवा वाउकाय २३ वनस्पतिकाय २४ त्रसकाय २५ नी रक्षा करुं, जमणे ढीचणे पडिलेहवा ते सर्वे साधु श्रावके बोल ५० कहेवा अने लेश्या ३ शल्य ३ कषाय ४ ए दश सिवाय ४० बोल साध्वी तथा श्राविकाए कहेवा. मुहपत्ति पडिलेहतां मुहपत्ति तथा अंगना पचास बोल ऊपर प्रमाणे कही पछी खमासमण दइ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक संदिसाहुं? इच्छं वली खमासमण दइ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक ठाउं? इच्छं एम कही बे हाथ जोडी एक नवकार गणी पछी इच्छकारि भगवन् पसाय करी सामायिक दंडक उच्चरावोजी ते वारे वडिल करेमि भंते कहे वडिल न होय तो जाते पाठ भणवो ॥

॥ अथ करेमि भंते ॥

॥ करेमि भंते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि

जाव नियमं पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स नंते पक्किमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

॥ पळी खमासमण दइ इछाकारेण संदिसह नगवन् बेसणे संदिसाहुं? इछं. वली खमासमण दइ इछाकारेणं संदिसह नगवन् बेसणे ठाउं? इछं एम कहेवु. पळी खमासमण दइ इछाकारेण संदिसह नगवन् सज्जाय संदिसाहुं? इछं कही खमासमण दइ इछाकारेण संदिसह नगवन् सज्जाय करुं? इछं एम कही त्रण नवकार गणवा. पळी बे घमी धर्मध्यान करवुं

॥ सामायिक पारवानी विधि ॥

॥ १ खमासमण देवुं २ इरियावहि ३ तस्स उत्तरी ४ अन्नडजससिएणं कही पळी एक लोगस्सनो अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी लोगस्स प्रगट कहेवो. खमासमण दइ इछाकारेण संदिसह नगवन् मुहपत्ति पक्लिहुं! इछं एम कही मुहपत्ति पक्लिहीं खमासमण दइ इछाकारेण संदिसह नगवन् सामायिक पारुं? यथाशक्ति. वली खमासमण दइ इछाकारेण संदिसह नगवन् सामायिक पार्युं, तहत्ति कही पळी जमणो हाथ

चरवला उपर अथवा कटासणा उपर थापी एक न
कार गणी सामाइयवयजुत्तो कहीए ॥

॥ अथ सामाइयवयजुत्तो ॥

॥ सामाइयवयजुत्तो, जाव मणे होइ नियमसजुत्तो
छिन्नइ असुहं कम्म, सामाइय जत्तिआ वारा ॥ १
सामाइयमि उ कए, समणो इव सावर्ज हवइ जम्हा
एएण कारणेण, वहुसो सामाइय कुज्जा ॥ २ ॥ साम
यिक विधि लीधुं विधिं पार्यु विधि करतां जे कोइ अवि
हुओ होय ते सवि हु मन वचन कायाए करी मिच्छा
डुक्कड ॥ दश मनना, दश वचनना, वार कायाना, ए
वत्रीश दोषमां जे कोइ दोप लाग्यो होय ते सवि हु मन
वचन, कायाए करी मिच्छामि डुक्कड ॥

॥ त्यारपछी जमणो हाथ थापना सन्मुख सवट
राखीने एक नवकार गणीए ॥

इति सामायिक विधि सपूर्ण



॥ अथ पच्चक्खाण लेवानी विधि ॥

॥ अथ नमुक्कारसहिअं ॥

॥ उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पच्चक्खाइ, चउव्विहंपि
आहारं असणं पाणं खाइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसा-
गारेणं वोसिरे (इति) ॥

॥ अथ नमुक्कारसहिअं मुठिसहिअं ॥

॥ उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं मुठिसहिअं पच्चक्खाइ
चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्न-
त्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहि-
वत्तियागारेणं वोसिरे (इति) ॥

॥ अथ पोरिसि साढपोरिसिनुं ॥

॥ उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पोरिसिं साढपोरिसिं
मुठिसहिअं पच्चक्खाइ ॥ उग्गए सूरे चउव्विहंपिआहारं
असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागा-
रेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरा-
गारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ (इति) ॥

॥ अथ पुरिमड्ढ अवड्ढनुं ॥

॥ सूरे उग्गए नमुक्कारसहिअं पुरिमड्ढ अवड्ढ मु-

ठिसहिअं पच्चक्खाइ ॥ सूरे उग्गए चउविहंपि आ
हारं असणं पाण खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेण सह
सागारेणं पच्छन्नकालेण दिसामोहेण साहुवयणेणं मह
त्तरागारेण सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे (इति)

॥ अथ निगइ निविगइनु ॥

॥ विगइओ निविगइअ पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगे
सहसागारेणं लेवालेवेण गिहत्थसंसठ्ठेणं उक्खित्तविवेगे
पडुच्चमक्खिएण पारिठ्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं स
व्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे (इति) ॥

॥ अथ बेआसणा तथा एकासणानु ॥

॥ उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पोरिसिं साढपोरिसि
सरिमड्ढ मुठिसहिअंपच्चक्खाइ ॥ उग्गए सूरे चउविहं
आहारं असण पाण खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगे
सहसागारेण पच्छन्नकालेण दिसामोहेण साहुवयणेणं
महत्तरागारेण सव्वसमाहिवत्तियागारेण एकासण बेआ
सण पच्चक्खाइ तिविहंपि आहारं असण खाइम साइ
अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेण सागारियागारेणं आउ
टणपसारेण गुरुअब्भुठाणेण पारिठ्ठावणियागारेणं मह
त्तरागारेण सव्वसमाहिवत्तियागारेण पाणस्स लेवे

णा अलेवेण वा अछेण वा बहुलेवेण वा ससित्थेण वा असित्थेण वा वोसिरे (इति) ॥

॥ अथ आयंबिलनुं ॥

॥ उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पोरिसिं साढपोरिसिं पुरिमड्ढसहिअं पच्चक्खाइ ॥ उग्गए सूरे चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नथणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं आयंबिलं पच्चक्खाइ ॥ अन्नथणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थसंसठेणं उक्खित्तविवेगेणं पारिठ्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं एगासणं पच्चक्खाइ चउविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नथणाभोगेणं सहसागारेणं सागारियागारेणं आउंटणपसारेणं गुरुअभ्भुठाणेणं पारिठ्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा अछेण वा बहुलेवेण वा ससित्थेण वा असित्थेण वा वोसिरे ॥

॥ अथ चउव्विहार उपवासनुं ॥

॥ सूरे उग्गए अभ्भत्तठं पच्चक्खाइ चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नथणाभोगेणं

सहसागारेणं पारिठ्ठावणियागारेण महत्तरागारेणं स
व्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥

॥ अथ तिविहार उपवासनु ॥

॥ सूरे उग्गए अभ्भत्तठं पच्चखाइ तिविहंपि आ
हारं असणं खाइम साइम अन्नथ्थणाभोगेणं सह
सागारेणं पारिठ्ठावणियागारेणं महत्तरागारेण सव्व
समाहिवतियागारेणं पाणहार पोरिसिं साढपोरिसिं मु
ठ्ठिसहिअ घरसहिअं पच्चखाइ ॥ उग्गए सूरे पुरि
मढ्ढ अवढ्ढ पच्चखाइ ॥ अन्नथ्थणाभोगेणं सहसागारेण
पछन्नकालेणं दिसामोहेण साहुवयणेणं महत्तरागारेण
सव्वसमाहिवत्तियागारेणं पाणस्स लेवेण वा अलेवेण व
अछेण वा बहुलेवेण वा ससिथ्थेण वा असिथ्थेण वा वोसिरे।

॥ अथ चउथ्थ छठ्ठभत्तादिकनु ॥

॥ सूरे उग्गए चउथ्थभत्त अभ्भत्तठं पच्चखाइ ॥ सूरे
उग्गए छठ्ठभत्त अभ्भपत्तठ चखाइ॥सूरे उग्गए अठमभत्त
अभ्भत्तठ पच्चखाइ॥ पाणहार पोरिसि मुठ्ठिसहिअं पच्च
खाइ अन्नथ्थणाभोगेण सहसागारेण महत्तरागारेणं स
व्वसमाहिवत्तियागारेणं पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा अ
छेण वा बहुलेवेण वा ससिथ्थेण वा असिथ्थेण वा वोसिरे

॥ अथ गंठसहिअं आदि अभिग्रहोनुं ॥

॥ गंठसहिअं वेढसहिअं दिवसहिअं थिबुगसहिअं मुठिसहिअं पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥

॥ अथ चौद नियम धारनारने देसावगासिकनुं ॥

॥ देसावगासिअं उवभोगं परिभोगं पच्चक्खाइ अ-न्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्व-समाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥

॥ अथ चौद नियम धारवानी गाथा ॥

॥ सचित्तदव्वविगई, वाणहतंबोलवत्थकुसुमेसु ॥ वाहणसयणविलेवण, बंभदिसिनाणभत्तेसु ॥

॥ सांजनां पच्चक्खाण ॥

॥ अथ पाणहार दिवसचरिमनुं ॥

॥ पाणहार दिवसचरिमं पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभो-गेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहि-वत्तियागारेणं वोसिरे ॥

॥ अथ चउविहारनुं ॥

॥ दिवसचरिमं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं मह-त्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥

अथ तिविहारनु ॥

॥ दिवसचरिमं पच्चरकाइ तिविहंपि आहारं असण
खाइम साइमं अन्नत्थणाजोगेण सहसागारेण महत्तरा
गारेण सव्वसमाहिवत्तियागारेण वोसिरे ॥

॥ अथ दुविहारनु ॥

॥ दिवसचरिम पच्चरकाइ डुविहंपि आहारं असण
खाइमं अन्नत्थणाजोगेणं सहसागारेण महत्तरागारेण
सव्वसमाहिवत्तियागारेण वोसिरे ॥

॥ अथ पच्चक्खाणना आगारनी गाथा ॥

॥ दो चेव नमुकारे, आगारा छच्चेव पोरिसिए ॥ सत्ते
व य पुरिमड्ढे, एकासणगंमि अट्ठेव ॥ १ ॥ सत्तेगठाणेस्
अ, अट्ठेव य अविलंमि आगारा ॥ पचेव य नत्तट्ठे
तप्पाणे चरिम चत्तारि ॥ २ ॥ पचचउरो अभिग्गहे
निव्वीए अठ नव आगारा ॥ अप्पाउरणे पंच चउ, ह
वति सेसेसु चत्तारि ॥ ३ ॥

॥ हवे छ प्रकारे पचक्खाण शुद्ध थाय छे ते गाथा ॥

॥ फासिअं पालिअं सोहिअं, तीरिअं किट्टिअं आरा
हिअ ॥ ज च न आराहिअं, तस्स मिच्छामि डुक्कडं ॥ १ ॥



॥ एकादश खंड ॥

॥ श्रीशांतिनाथाय नमः ॥

॥ श्रीनेमनाथ स्वामीनो शलोको प्रारंभः ॥

॥ सिद्धि बुद्धि दाता ब्रह्मानी बेटी, बालकुंवारी वेद्यानी पेटी ॥ हंसवाहनी जगमां विख्याता, अक्षर आपोने सरसती माता ॥ १ ॥ नेमजी केरो कहेशुं शलोको, एक मनथी सांभलजो लोको ॥ जंबुद्वीपना भरतमां जाणुं, नगर सौरीपुर सरग समाणुं ॥ २ ॥ चहुटां चोराशी बारे दरवाजा, राज्य करे तिहां यदुवंशी राजा ॥ समुद्रविजयघर शिवादेवी राणी, शीयले सीता ने रूपे इंद्राणी ॥ ३ ॥ तेह तणी जे कुखे अवतरीया, सहस अठोत्तर लक्षणे भरीया ॥ खारो खाटो ने मीठो जे आहार, गर्भने हेते कीधो परिहार ॥ ४ ॥ घोर घटा ने जलधर गाजे, सजल लीलांबर पुहवी बिराजे ॥ बादल दलमां वीज झबूके, क्षण क्षण अंतर मेह टहूके ॥ ५ पूरण नदीए आव्यां छे पूर, पूरण पुहवी पसर्या अंकुर ॥ रुतु मनोहर दादुर महके भर्यां सरोवर लहेरे ते लहके ॥ ६ ॥ छवी हरियांनी अजब छबीली,

नीले आजरणे धरती रंगीली ॥ राग मल्हारनी झ
जलेरी, अजुआली पांचम श्रावण केरी ॥ ॥ ७ ॥ पू
रण पसस्यो पावसकाल, पूरण पुहवी पसस्यो सुगाल
मध्यरात ने पूरण मासे, नेमजी जनम्या राज आवासे
॥ ७॥ चोसठ इंद्र ने बप्पन कुमारी, ओछव करी ने गय
निज गरी ॥ थयो परजात रात विहाइ, दासीए जइने
दीधी वधाइ ॥ ए ॥ दूर ते कीधु दासी आचरण, अ
नेक आप्यां वस्त्र आजरण ॥ सोवन थाल मांहे रूपैया
सवा लाख ते आप्या सोनैया ॥ १० ॥ अति आनंद
पाम्यो नरेश, राजसनामां कीधो प्रवेश ॥ पुत्र जन्म्यानी
नोबत वाजी, नादे ते रह्यु अंबर गाजी ॥ ११ ॥ बत्रीश
बद्ध तिहां नाटिक थाय, घेर घेर कुकुम हाथ देवाय
॥ दान याचकने दीधां अछेह, जाणे के वुठा उत्तर मेह
॥ १२ ॥ तोरण वांध्यां घर घर वार, घर घर गाये मंगल
चार ॥ वार दिवस लगे ओछव कीधो, लखमी तणो त्या
लाहोज लीधो ॥ १३ ॥ अरथ गरथना खरच्या जंमार
नाम ते बव्यु नेमकुमार ॥ दिन दिन वाधे चद्रवत्
तो, केम्हने लंके केशरी जीत्यो ॥ १४ ॥ त्रिवली देखी
ने त्रिजुवन मोहे, गंगा जमुना ने सरसती सोहे ॥ नास

निरुपम दीपशिखा शी, नयण पंकज पत्र प्रकाशी ॥ १५ ॥ मुखथी बोले अमीरस वाणी, मन मांहे हरखे शिवादेवी राणी ॥ बाललीलामां बुद्धिजंभार, देखीने मोहे सुर नर नार ॥ १६ ॥ एक दिन नेमजी बजार मांहे, नगरीना ख्याल जुवे उछाहे ॥ कृष्ण तणी जिहां आयुधशाला, तिहां कणे पोहोता दीनदयाला ॥ १७ ॥ शंख चक्र ने धनुष उदार, कोदंड ताणीने कीधो टंकार ॥ रखता सेवक इणी परे बोले, गोविंद विना ए चक्र न डोले ॥ १८ ॥ टची आंगुलीए चक्र उपाड्युं, चाक तणी परे भलुं भमाड्युं ॥ अर्चक उभा इणी परे भाखे, शंख न वाजे कृष्णजी पाखे ॥ १९ ॥ हलवेशुं लइ शंख बजायो, साते पाताले सरगे सुणायो ॥ शेष सलसलीया धरा तिहां धमकी, जरुखे बेठी कामनी झबकी ॥ २० ॥ हबक लागी ने हार तिहां त्रूट्या, कंचूक तणा बंध विछूट्या ॥ समुद्र जलहलीया चढीयाकल्लोले, कायर कंपे भे डुंगरा डोले ॥ २१ ॥ हाथी हबक्या ने झबक्या कुंजार ॥ तेजी त्राठा ने डरया दिक्पाल ॥ पवन थंभ्यो ने धरती धेराइ, कृष्णजी कहे सुणो बलभद्र भाइ ॥ २२ ॥ कोइक नवो ते वेरी अवतरीयो, महोटो बल-

वंत मझर नरीयो ॥ नादे अनहद अवर गाजे, एहवे
ते शख केणे न वाजे ॥ २३ ॥ त्रिभुवन मांहे कोइ
सुजे, चक्री वारे इंद्र अलूजे ॥ जडुनाथने थइ
जाण, वात सुणीने थया हेराण ॥ २४ ॥ धूजे नृप
चिते मन मांय, राजकाज ते मेल्यां कहेवाय ॥ सुगुण
सोनागी साहसिक शूरो, एके वाते ए नही अधूरो ॥
२५ ॥ ॥ मुजथी बलीयो महाबलधारी, महोटे सोसे
ते पड्यो मोरारी ॥ वली वली मनमां चिते वनमाली
राज्य अमारुं लेशे उलाली ॥ २६ ॥ इणे अवसरे नेम
कुमार, मलपता आव्या सन्ना मझार ॥ आघा आवीजी
आदर दीधो, सन्ना सहु कोइ परणाम कीधो ॥ २७ ॥
पाणी पसारी शारंगपाणि, मुहथी बोल्या ते एहवी वा-
णी ॥ आज परखीए बल तुमारो, नेम नमावो हाथ
अमारो ॥ २८ ॥ काची कांब जिम कणयर केरी, कमल
तणी परे वाल्यो कर फेरी ॥ नेमजी रह्या बाह पसारी
जाणे हिंमोले हिंचे गिरिधारी ॥ २९ ॥ विठल मनमां
जुवे विचारी, एह कुवारो बालब्रह्मचारी ॥ इम चिंती
ने नारी हकारी, ठांटे नेमने बांहे पसारी ॥ ३० ॥ नरी
खंमोखली केशर कुंकुमे, गोपी दीयरशु रमत रमे ॥

सत्यभामा ने रुक्मिणी राणी, कहे नेमने एहवी ते वाणी ॥ ३१ ॥ परणो राजुल रूपे रढीआली, नारी विना ते नर कहीए हाली ॥ नारीनो रस ते महोटो संसार, नारी ते छे नरनो आधार ॥ ३२ ॥ पुरुषनी पासे जो न होय नारी, वस्तु न धीरे कोइ व्यापारी ॥ नारी ते छे रतननी खाण, घरणी वडे ते घरनुं मंडाण ॥ ३३ ॥ मुसकीशुं बोले गोविंदराणी, बत्रीश सहस्स छे वडी जेठाणी ॥ पाये पडवुं ते दोहेलुं जाणी, ते माटे तमे आणो देराणी ॥ ३४ ॥ जेहशुं अपूरव प्रीत बंधाणी, आज ते हवे केम रहीए ताणी ॥ फरी उत्तर नेमे न दीधो, मान्यो मान्योजी सहु कोणे कीधो ॥ ३५ ॥ बोल बोल्या ने कीधी सगाइ, लीधां लग्न ने करी सजाइ ॥ छप्पन कुल कोडी जादव मलीया, तूरने नादे समुद्र जलहलीया ॥ ३६ ॥ चढी जान ने वाजित्र वाजे, जाणे आषाढो जलधर गाजे ॥ जुगते करीने जादव चढीआ, प्रथम घाव नगारे पडीया ॥ ३७ ॥ मयगल मातने परवत काला, लाख बेंताली सबल सुंढाला ॥ डाके डक्या ने मदे जरंता, मूके सारसी चाले मलपंता ॥ ३८ ॥ लाख बेंतालीश तेजी पाखरीया, उपर असवार

सोहे केशरीया ॥ अडी कही ने पचकल्याणा, पूंठे पोढ ने पुरुष सवाणा ॥ ३९ ॥ सम गते चाले ने चऋ रहंता चचल चपल ने चरणे नाचंता ॥ साज सोनेरी सोहे केकाण, लाख बेतालीश वाजे निशाण ॥ ४० ॥ लाख बेतालीश रथ जोतरीया, कोडी अडतालीश पाला परवरीया ॥ नेजा पचरंगी पच क्रोड जाणुं, अढी लाख ते दीवीधर वखाणुं ॥ ४१ ॥ सोहे राजेन्द्र सोल हजार एकसो एशी वली साथे सूहार ॥ साथे सेजवाला पंच लाख वारु, मांहे सुदरी बेठी देदारु ॥ ४२ ॥ शेठ सेनापति साथे परधान, चली जातगुं चाली हवे जान ॥ चंडुकनी धूमे सूर छिपायो, रजडंबरे अंबर छाये ॥ ४३ ॥ धवलमंगल गाये जानरडी, जाणे सरसतीनं वीणा रणजणी ॥ वागे केशरीए वरघोडे चढीया, काने कुंडल हीरे ते जडीया ॥ ४४ ॥ छत्र चामर मुकुट विराजे, रूप देखीने रतिपति लाजे ॥ जान लइने जादव सधाव्या, उग्रसेनने तोरणे आव्या ॥ ४५ ॥ देखी राजुल मनमां उल्लसे, चंदर देखी जेम समुद्र उधसे। घणा दिवसनी राजुल तरसी, सजी शणगार जुइ आरसी ॥ ४६ ॥ अंजन अजित आंखो अणीआली, वेणं

सरली ते सापण काली, शीश फूल ने सेंथे सिंदूर, नयण राजानुं पसरयुं ठे पूर ॥ ४७ ॥ गाले गोरी ने काल ऊबूके, मदजर मोती ने नजर न चूके ॥ नासा निर्मल अधर परवाली, केडे थोमी ने घणी सुकुमाली ॥ ४८ ॥ नूषण नूषित सुंदर रूप, मुख पूनम चंद अनूप ॥ रूमा रूपाला कुच उत्तंग, कणसे कसीने कीधा ठे तंग ॥ ४९ ॥ हैये लाखीणो नवसर हार, चरणे काँऊर रणजणकार ॥ सजी शिणगार उनी जरुखे, निरखी नेमने मन मांहे हरखे ॥ ५० ॥ महोटा मंमपनी रचना अति रूमी, गाजे वाजित्र उठले घूमी ॥ नुंगल नेरी ने वाजे नफेरी, जुए राजुल नेमने हेरी ॥ ५१ ॥ गोंखे चढीने राजुल नाखे, दिवस दोहिला गया तुम पाखे ॥ कंत तें कांइ कामण कीधु, मन माहरुं उलाली लीधुं ॥ ५२ ॥ आज फरके ठे जिमणुं रे अंग, सही ए थाशे रंगमां नंग ॥ कहे राजुल सुणो साहेली, सखे जादव जाये मुज मेली ॥ ५३ ॥ पशु पेखीने पायो वैराग, मुगतिरमणीशुं कीधो ठे राग ॥ नेमजी पूरवनी प्रीत पालीजे, एम ठटकीने ठेह न दीजे ॥ ५४ ॥ मुगतिमंदिरमां आवजो मलशुं, सदा सरवदां रमत रमशुं

॥ दान संवछरी जिनवरे दीधुं, नेम राजुले संजम लीधुं
॥ ५५ ॥ पूरवनी प्रीत अविहल पाली, पहोता मुग
तिमां करम प्रजाली ॥ वेगे विरहनी वेदना टाली
शिवमदिरमां जाजो संचाली ॥ ५६ ॥ शील पाले जे
चतुर सुजाण, नामे तेहने कोड कल्याण ॥ उदयरत्न
कवि इणी परे बोले, कोइ न आवे श्रीनेमनाथने तोले
॥ ५७ ॥ इति श्रीनेमजीनो शलोको संपूर्ण. ॥

॥ श्रीशालिभद्रशाहनो शलोको प्रारंभ ॥

॥ सरसती माता करीने पसाउ, पासजी केरा प्र
णमु हुं पाउ ॥ शालिभद्रशाहनो कहु शलोको, लोक
जाणीने सांभलजो लोको ॥ १ ॥ नगर राजगृहे श्रेणिक
राजा, मगध देशनो एक महाराजा ॥ रुडी तेहने रे
चेलणा राणी, जगमां जेहनी कीरति जाणी ॥ २
तेह नगरीमां दामे छे ताजो, शेठ गोभद्र महोटो म
लाजो ॥ भद्रा नामे छे भार्या तेहने, जोतां शीले व
जीते न जेहने ॥ ३ ॥ देइ मुनिवरने खीरनु दान, स
गम गोवालो भाग्यनिधान ॥ आवी भद्रानी कुखे अ
वतरीयो, जाणे मुक्ताफल छीपे संचरिउ ॥ ४ ॥ पूर्ण मा
प्रसव्यो ते पुत्र, सघलु शोभाव्युं घरनुं सूत्र ॥ अने

घरनां अख्याणां आवे, वारु मोतीए सहु वधावे ॥ ५ ॥
थोके थोके तिहां नाटिक थाय, माना हैयामां हरख न
माय ॥ पिता आपे तिहां लाख पसाय, याचक जननां
दारिद्र जाय ॥ ६ करी उछव शालिकुमार, जनके नाम
दियां धर्युं जयकार ॥ दिन दिन चढते वेशे ते दीपे, रूपे
जे रतिना नाथने जीपे ॥ ७ ॥ बापे परणावी बत्रीश
बाला, आपे संयम लइ उजमाला ॥ पहोतो स्वर्गमां
पुण्य पसाये, अवधि प्रयुंजी जोतां उछाहे ॥ ८ ॥ पेखी
पुत्रने प्रेमे जरायो, स्नेह पूर्वनो वध्यो न समायो ॥
मोहनो बांध्यो ते मानने मेटी, पिता पठावे तेत्रीश
पेटी ॥ ए ॥ जोइए जेह जेह जोग सजाइ, ते तो मो-
कले सुर ते सदाइ ॥ मेवा मीठाइ माणिक मोती, एक
एकथी अधिक ज्योती ॥ १० ॥ नित्य नित्य नवलो
नेह ते पूरे, हेते करीने रहे हजूरे ॥ उपे मंदिर कुंजी
केसरवाले, खिलमां कस्तुरी वहे जिहां खाले ॥ ११ ॥
भूषण निर्माल्ये जराये कूवो, युगति वैजवनी नवली
छे जूउ ॥ जोगी शालिजद्र सरिखो जूपृष्टे, नर जोतां
कुं नावे को दृष्टे ॥ १२ ॥ ताजी ठकुराइ जाणीने तेहवे,
रत्नकंबलना वेपारी एहवे ॥ श्रेणिक राजाने दरबारे

आव्या, फेरो पड्यो ने कांइ न फाव्या ॥ १३ ॥ सघटे
शहेरे ते घर घर फरीया, कंबल कोणे ते हाथे न धरीय
॥ रत्नकंबल सोले ते लीए, जद्रा वहुरोने वेचीने दीप
॥ १४ ॥ वीश लाख त्यां सोनैया वारु, दीधा गणीने
तेहने दीदारु ॥ लइ सोनैया वेपारी वलीया, मनन
मनोरथ तेहना फलीया ॥ १५ ॥ चेलणा राणीनी चित
जाणीने, तेनी व्यापारी कहे ताणीने ॥ करी सपाम
कंबल काजे, श्रेणिक राजा नरी समाजे ॥ १६ ॥ नृ
पने व्यापारी कहे शिर नामी, शाने सपामा करो ह
स्वामी ॥ कंबल मोले ते जद्राए लीधां, वेगे वीश लाख
दीनार दीधां ॥ १७ ॥ मनमां विचार्युं श्रेणिक महा
राजे, वाणीये लीधां व्यापार काजे ॥ एम चिंतीने एक
मगावे, खाले नाख्यो ते खबर पावे ॥ १८ ॥ वात मोहो
लमां तेह वंचाणी, कहे राजाने चेलणा राणी ॥ इह
तेनी ते वणिक अनूप, जोइए कहेवुं छे तेहनुं रूप
१९ ॥ तुरत महाराजा तेहने तेमावे, जेट लइने जद्र
तिहां आवे ॥ जद्रा आवीने नृपने जाखे, स्वामी सां
जलो राणीनी साखे ॥ २० ॥ घणुं सुहालो शालिकुमार
हर्म्य थाये ए कोश हजार ॥ न लहे रात दिवस नृ

किहां उगे किहां आथमे सूर ॥ २१ ॥ निपट नाजुक
ड तेह न्हानमीउं, क्यारे केहनी नजरे न पमीयो ॥
ते माटे तमो लाज वधारो, प्रजुजी अमारे मंदिर प-
धारो ॥ २२ ॥ पूरे मावित्र गेहनां लाम, स्वामी तेमां
शो पाम सपाम ॥ इम सुणीने श्रेणिक राय, प्रधान
साहमुं जोयुं ते गय ॥ २३ ॥ अजयकुमार नव कहे
एम, प्रजु तुम घरे आवशे प्रेम ॥ नद्रा नृपने पाय
लागीने, सात दिवसनी अवध मागीने ॥ २४ ॥ शीख
लइने नद्रा सधावी, रुमी मोहोलनी रचना रचावी ॥
परिकर लेइने नृप नंनसार, पहोता शालिनद्र शेठने
बार ॥ २५ ॥ वेगे आगलथी चाल्या वधाउ, खरी नाखे
चवर अगाउ ॥ जोपे जमामी हरख उपाइ, वारु तेहने
दीधी वधाइ ॥ २६ ॥ महोलनी रचना जोतां महाराय,
अचरिज पामीने मनशुं अकलाय ॥ अहो अहो हुं शुं
अमरापुर आयो, ज्रांतिए नूल्यो ने नेद न पायो ॥
२७ ॥ जिम तिम करीने वीजी नुंइ जाय, त्रीजे माले
तो दिग्मूढ थाय ॥ जोये उंचुं ते नयणने जोमी, जाणे
के उग्या सूरज कोमी ॥ २८ ॥ सहु साथने वेसामी
तहां, नद्रा जइ नाखे पुत्र ठे जिहां ॥ श्रेणिक आव्या

ठे महोल मझारी वेगे तिहां आवो तजीने नारी
२ए ॥ गेले गुमानी कहे ते गाजी, मुजने तमे शुं पूछ
ठो साजी ॥ श्रेणिक लइने वखारे जरो, लाजे लो
वली दीयोने वरो ॥ ३० ॥ तिहांरे माता कहे न ल
तुं टाणुं, सुतजी श्रेणिक नही करियाणुं ॥ मगध देशन
मोटो ठे राय, आण एहनी लोपी न जाय ॥ ३१
एहवुं सुणीने कुमार आलोचे, सांसे पड्यो ते मन मां
शोचे ॥ माहरे माथे पण जो ठे महाराजा, तजशु द
सही जोग ए ताजा ॥ ३२ ॥ एम चिंतीने मुजरो
आयो नृपने नमीने महोल सधायो ॥ जोजन करी
श्रेणिक जूप, कोडे घरेणांनो जोइने रूप ॥ ३३ ॥ मा
गालीने मंदिर गयो, शेठ सयमनो रागी ते थयो
नित्ये एकेकी परिहरी नारी, प्रेमदा सासुने जइ पे
कारी ॥ ३४ ॥ मानी महिलाना सुणी विलाप, जो
तेणे त्यां दीधो जवाप ॥ गगे रमणीने रेख न खलीये
जोजो धन्नो हवे केइ परे मलीयो ॥ ३५ ॥ नामे सु
जद्रा धन्ना घरे जाणुं, शालिजद्रनी बहिन वखाणुं ।
वेणी स्वामीनी समारे साही, तेणे अवसरे सांनरय
जाइ ॥ ३६ ॥ आंखे आंसुआं आव्यां ते सांसे, पड

वेतूटी पीठने वांसे ॥ धन्नो देखीने पूछे ते धीर, न-
ाणे वतूटां कहो केम नीर ॥ ३७ ॥ दीसे आज तुं घणुं
दिलगीर, शालिभद्र सरखो ताहरे छे वीर ॥ वनिता
प्रावमां मुजने तुं वहाली, चोफेर आंसुनी धारो किम
ाली ॥ ३८ ॥ वलती बोली ते मेहेली निसासो, तुमे
ांजलो एक तमासो ॥ आव्यो श्रेणिक तिहांथी निर-
ारी, बंधव तजे छे एकेकी नारी ॥ ३९ ॥ बत्रीश द-
ाडे बत्रीशे तजशे, पछी साधुना पंथने जजशे ॥ लोच
रशे ते सांजरी वेण, आंखो जराणी आंसुए तेण ॥
४० ॥ धन्नो बोले तब साहस धीर, ताहरे शालिभद्र
कज वीर ॥ तेणे खरखरो ए नहीं खोटो, पण तुज
ांधव कायर महोटो ॥ ४१ ॥ जेरव जाप तो खसती
ी जरवी, लेवी दीक्षा तो ढील न करवी ॥एम सुणीने
अबला ते जंपे, स्वामी कायर ते वाणीयो कंपे ॥ ४२ ॥
ण तुमे तो शूरा पूरा छो, पग रखे हवे मांजोजी पाछो ॥
ामनी तजवानो कहो छो जो छाठ, एक वारे तो तजो
आठ ॥ ४३ ॥ स्वामी संयमनी वात छे सहेली, दु-
कर आदरतां खरी छे दोहेली ॥ शीख देवाने सहु सज्झ
ाय, तुमने वंदु जो त्रीया तजाय ॥ ४४ ॥ जारे जाइनुं

ताणी ते पासुं, हलवो पारुवा कीधुं जो हांसु ॥ तं
में आठेने मेली जलाली, वचन म कहेशो कामनी वा
हाली ॥ ४५ ॥ पीउजी हसतां मे एहवुं ए नाख्युं, तुमे
हैयामां गांठीने राख्युं ॥ दिल खेंचीने ठेह न दीजे, अ
वला जातिनो अंत न लीजे ॥ ४६ ॥ तरुणी हसतां श्र
तमे तो कह्यु, पण अमे तो साचुं सद्दह्यु ॥ साची वहेन
तुं शालिजद्र केरी, फोकट वचन म कहेशो हवे फेरी
॥ ४७ ॥ संजम लेवाने ते सज्ज थइ, धन्ने शालिजद्र
वोलाव्यो जइ ॥ उठ आलसु हुं थयो आगे, महावीर पासे
जइ महाव्रत मागे ॥ ४८ ॥ धन्नो शालिजद्र संयमधारी,
थया विषयनी वासना वारी ॥ जद्रा पुत्रने वोलावी र
लीयां, वहुयर लेइने मंदिर वलीयां ॥ ४९ ॥ वीर साथे
ते देश विदेशे, विचरे वैरागी साधु सुवेषे ॥ तप करीने
दुर्वल तने, वार वरषने अंते ते वन्ने ॥ ५० ॥ आव्या
राजगृही नयरी उद्याने, मास उपवासी वधते ते वाने ॥
आहारने काजे वीर आदेशे, पहोता जद्राने तेह नि
वेशे ॥ ५१ ॥ आंगण आव्या पण उलख्या नांही, न
रक्षण पाछा वलीने उछाही ॥ वीजी वारना पहोता
वारे, तोपण केणे न उलख्या नारे ॥ ५२ ॥ पाछा वली

ाहे छे वाटे, मन्नी महीयारी माथे लइने माटे ॥ दही
ोहोरीने तेहने हाथे, मुनिवर विमासे ते मन साथे
॥ ५३ ॥ वचन वीरनुं अलिक न थाय, जो आ जगती
फरी मंफाय ॥ महारी माताने वांकणी जाणो, आज
मले छे एह उखाणो ॥ ५४ ॥ जिननी पासे जइ पूछे ते
ेहवे, वीरे आगलथी वोलाव्या तेहवे ॥ सुणो शालिनद्र
ाधु तमारी, मात पूरवनी एह महीयारी ॥ ५५ ॥
वुं सांनलतां आव्यो वैराग, अणसण लेवानो
ायो तिहां राग ॥ गिरि वैनारे गुरुने आदेशे, लइ
अणसण पाले विशेषे ॥ ५६ ॥ आवी नद्रा तिहां
आंसुडां जरती, विधविध नातिना विलाप करती ॥
ाथे लीधी छे वहुयर सघली, डुःखे टली छे तेहनी
ागली ॥ ५७ ॥ शिला उपरे देखी संथारो, नयणे वि-
ूटी नीरनी धारो ॥ नद्रा नाखे छे पुत्र हुं नूली, हैये
ूनी ने डुःखनी छुं हुंफी ॥ ५८ ॥ सुत पेटनु पापणीए
ही, आंगण आव्यो पण उलख्यो नहीं ॥ हा हा मु-
ने ए पड्यो वरांसो, सारो अवतार रहेशे ए सांसो
॥ ५९ ॥ हा हा हाथे में आहार न दीधो, आव्यो अव-
र अफलज कीधो ॥ नद्रा पुत्रने एवुं त्यां नाखे,

कांइ विसारया अवगुण पाखे ॥ ६० ॥ तुज विना तं सूना आवास, अमने थाय छे घडी छ मास ॥ हर्स बोले जो वचन विचार, अमने सही तो थाये करार ॥६१॥ माता जाणीने जुर्ड जो साहमु, पुत्र तिहारे हुं संतोष पामु ॥ शालिभद्रने धन्नो वारे छे, ए तो आपणने पा भरे छे ॥ ६२ ॥ साहमु जोशो तो अवतार करशो प डशो फंदमां पाछा जो फरशो ॥ दिलशुं माताने दिल गीर देखी, साधु धन्नानी शिख उवेखी ॥ ६३ ॥ जो शालिभद्रे आंख उघाडी, त्यारे रत्नीयात थइने मार्ग ॥ अंशुक वडे ते आंसुमां लहोती, वंदी वहुअरशु मं दिर पहोती ॥ ६४ ॥ धन्नो पाधरो मुगते गयो, एव अवतारी शालिभद्र थयो ॥ पहोतो सर्वार्थसिद्ध विमाने सेवक स्वामीपणु नथी जे थाने ॥ ६५ ॥ संवत् सत्तर सित्तेरा वरषे, मागशिर शुदि तेरशे हरषे ॥ उदयर कहे आद्रज मांहे, एह शलोको गायो उछाहे ॥ ६६ इति श्रीशालिभद्र शलोको संपूर्ण. ॥

॥ अथ श्रीभरत बाहुबलनो शलोको प्रारभः ॥

॥ प्रथम प्रणमुं माता ब्रह्माणी, तूठी आपे जे २ निरमल वाणी ॥ भरत बाहुबल भाइ सजोडे, कहीशुं इ

ोको मनने कोडे ॥ १ ॥ नाभी राजाने कुल नगीनो,
थम तीर्थंकर ऋषभ उपनो ॥ सो पुत्र तेहना समरथ
ाणुं, भरत बाहुबल भला वखाणुं ॥ २ ॥ आयुध-
ालाए चक्र उपनुं, मन ते हरखीयुं भरत भूपनुं ॥
चक्र पूजीने करी चढाइ, दीधा देरा ते जंगलमां जाइ
॥ ३ ॥ सैन्या लइने सबल दीवाजे, विविध जात तिहां
ूरतूर वाजे ॥ चक्र अतुलबल आकाशे हाले, भरत से-
न्याशुं पुंठे ते चाले ॥४॥ पूरव आदिने उत्तर अंते,
आण मनावी चक्री बलवंते ॥ साध्या षट् खंड कमल अ-
ार, वरष ते वोल्यां साठ हजार ॥ ५ ॥ गंगा सिंधुने साधी
सरिता, पछी म्लेछना देश ते जीत्या ॥ सेना लइने
भरत सधाव्या, साधी षट् खंड अयोध्याए आव्या ॥ ६ ॥
ागरीनां लोक सामां ते आवे, मोतीए थाल भरीने
धावे ॥ वाजे वाजित्र भूंगल भेरी, शेरीए फूलडां नाखे
वेरी ॥ ७ ॥ याचकजन तो कीरति बोले, कोइ न
आवे श्री भरतने तोले ॥ दिन दिन दोलत वाधे स-
ाइ, बीजानी नहीं तेवी अधिकाइ ॥ ८ ॥ अनुक्रमे कीधो
गरप्रवेश, चक्रनो उछव मांड्यो नरेश ॥ चक्र ते रह्युं
ाकाशे भमे, आयुधशालाए आवे नहीं किमे ॥ ९ ॥

सहु भलीने मनमां विमासे, शामाटे रह्यु चक्र आकाशे। सुणो साहिब कहे सेनानी, जाइ तुमारो एक गुमानी ॥ १० ॥ बाहुबल नामे महाबलधारी, तेह न माने आण तुमारी ॥ हठ मांडीने रह्यो हठीलो, छत्रपति छोगाळ छेल छबीलो ॥ ११ ॥ अबलो ने ए महा अभिमानी, सेवा कीधी छे पहेला साधुनी ॥ अजित अतुलबल तेणे बलीयो, जालम जोद्धो संग्रामे कलीउं ॥ १२ ॥ अनमे रे केहनी आण न माने, प्राक्रमे पूरो प्रजाने पाले एहवी ते सुणी वात अद्भुत, लेख लखीने मोकल्यो दूत ॥ १३ ॥ दूत तेहवे भरत आदेशे, वेगे ते पोहोत बाहुबल देशे ॥ कागल आपीने कहे कर जोडी, वे तेड्या छे चालो तेणे दोडी, ॥ १४ ॥ कागल वांचीने चड्य ते क्रोध, दूत प्रत्ये कहे वचन विरोध ॥ कुण भरत ते छे अमने, नथी ओलखता पूछु छु तमने ॥ १५ ॥ दूत क छे भाइ तुमारो, भरत चक्रवर्ती साहेब हमारो ॥ आ धशालाए चक्र न आवे, तेणे करीने तमने बोलावे ॥ १६ करी असवारी वेगे सधावो, तिहां आवीने शीश नमा ॥ नावो तो करो युद्ध सजाइ, मांहोमांहे मलो समजो भाइ ॥ १७ ॥ भरत चक्रवर्त्ती षट् खंड भोगी, अ

महुना रह्यो आरोगी ॥ ते आगल शुं गजुं तमारुं, ते माटे कह्युं मानो अमारुं ॥ १८ ॥ इम निसुणी बाहुबल जंपे, मुज आगे तो त्रिभुवन कंपे ॥ चढयो क्रोध ने तेज करडे, होठ करडे ने मूछज मरडे ॥ १९ ॥ एहवो ते कुण मूल्यो छे नारी, जेह तमोवडी करे हमारी ॥ कहे बाहुबल चढावी रीस, करुं शुरू पण न नामुं शीश ॥ २० ॥ वेगे खीजीने दूत ते वलीयो, अनुक्रमे भरतने आवी ते मलीयो ॥ भरतने जइ दूत ते भाखे, आण न माने कटकाइ पाखे ॥ २१ ॥ सुणी वातने मानी ते साची, चढाइ करवा भेरी ते वाजी ॥ हाथी घोडा ने रथ निशाण, लाख चोराशी तेहनुं परिमाण ॥ २२ ॥ रथ लइने शस्त्र ते भरीयां, धवला धोरीडा धिंग जोतरीया ॥ साथे छन्नु कोड पाला परवरीया, नेजा पचरंगी दश कोड धरीया ॥ २३ ॥ पूरा पांच लाख दीवी धरनार, महीपति मुगटाला बत्रीश हजार ॥ शेष तुरंगम क्रोड अढार, साथे व्यापारी संख न पार ॥ २४ ॥ सवा क्रोड ते साथे परधान, महोटी चालनुं तेर लाख मान ॥ साथे रसोइआ सहस बत्रीश, लश्कर लइने भरत चक्रीश ॥ २५ ॥ लश्कर लइने चक्रवर्त्ती

चढीयो, साहमो आवीने बाहुबल अबीठ ॥ तेना क
टकनो पार न जाणुं, यमरूपी ते योद्धा वखाणुं ॥ २६ ।
निशाणे घात्रा देइ परवरीयो, सैन्य लइने साहमो
उतरीओ ॥ कहे बाहुबल भरतने जइ, ताहरी तो
शुद्ध शामाटे गइ ॥ २७ ॥ सगा भाइशुं एम न कीजे
रिद्धि पामीने छेह न दीजे ॥ जाते दहाडे जोने वि
मासी, पर पोतानो न होवे सहवासी ॥ २८ ॥ अंग
विना त रुंग न वाजे, भाकुते राखी भीरु न भांजे
॥ घर नवसें पुत्र पीयारे, सुख न लहीए जूत हियारे
॥ २९ ॥ ते तो अवगण्या भाइ अठाणुं, यति थय
तजी ते आणु ॥ ताते लोजीयो तुजने विचारी, तेणे
ते लीधु संयम भारी ॥ ३० ताहरे पापे ते नासी ने
तुटा, घणुं अघटतु कीधु तें जूठा ॥ करतुक ताहर
कहेतां हु लाजुं, मुज वडे तुं पट्ट खंड गाजुं ॥ ३१
तुजने जोउ नजरे जो फेरी, वार न लागे नाखतां
॥ फूल दको लइ कोमल हाथे, वढवुं सोहेलु चू॰
साथे ॥ ३२ ॥ ए नहीं पहवा ठाकस ठोला, चाह
चित्तथी जूत म भोला ॥ हाक मारुं तो पर्वत फाटे
लोज राखु हु चक्र माटे ॥ ३३ ॥ टची आंगली

रुने तोळुं, ताहरो कटक लइ समुद्रमां बोळुं ॥ पण
खुं हुं लाज पितानी, वात वळी कहुं बालपणानी ॥
४ ॥ गगने उछाल्यो गिंडुक रीते, पाछो पडतो तुं
यो में प्रीते ॥ चरणे झालीने फेरव्यो तुजने, पवने
जेम फरे देवल ध्वजनी ॥ ३५ ॥ वली फेरव्यो पावक
नमें, जिम नल राजने जूवटे जगमें ॥ बालपणाने कर्मा
संभारी, गर्व ते करजो पछी विचारी ॥ ३६ ॥ भरत
सांभलजे साचुं हुं भाखुं, हवे केहनी लाज न राखुं ॥
बालपणानी रमत नाठी, हवे बांधी छे बाकरी काठी
३७ एम कहीने रणवट रसीयो, धनुष लइने साहमो
धसीयो ॥ उमट्यो धूमाडो प्रगटी जाल, बाहुबले
तिहां झाली करवाल ॥ ३८ ॥ बांधी हथियार साहमो
आव्यो, प्रथम तुंकारे भरत बोलाव्यो ॥ कांइ ह-
णावे सुभटनी घाटा, आपण कीजे युद्ध बे काटा ॥
३९ ॥ कोइ बीजानुं इहां नहीं काम, फोकट बीजानां
फोडो कां ठाम, ॥ चढीए आपणे अवधज राखी, सुर
नर कोडि कस्या तिहां साखी ॥ ४० ॥ बेहुने शरीरे
ह्या बेहु पासा, तिहां सुर नर जोवे तमासा ॥ भरत
बाहुबल अधिक दीवाजे, बेहुने शिर छत्र बिराजे ॥ ४१ ॥

भरत बाहुबल सामा बे भाइ, शशी रवि सरिखा रहे थिर थाइ ॥ निरखी सुर नर रहे सहु अलगा, दृष्टियुद्धमां प्रथमज वलगा ॥ ४२ ॥ नयणांशुं नयण मेलीने जूए, भरतनी आंखे आंसुं ते चूए ॥ जिम भा दरवे जलधर धारा, जाणे के त्रूटा मोतीना हारा ॥४३॥ हार्यो भरत ने बाहुबल जीत्यो, त्रिभुवन मांहे थयो वदितो ॥ बोले बाहुबल बंधव प्रीते, बीजु युद्ध कीजे शास्त्रनी रीते ॥ ४४ ॥ तरहरि नाद भरते तिहां कीधो, शब्द ते सघले थयो प्रसिद्धो ॥ रणनी भूमि लगे रह्यो ते गाजी, गयवर गहगह्या हणहण्यो वाजी ॥ ४५ गरुगरु गाजे बाहुबल वेगे, हरिनाद कीधो तिहां तेगे ॥ दशो दिश पूरी नादने ठदे, त्रिभुवन कंपे तेहने ठंदे ॥ ४६ ॥ समुद्र जलहल कल्लोले चढीया, जाणे त्रिभुवन एकठा मलीया ॥ हाथी हलहलीया हयवर हण हणीया, नाद सुणीने सुर नर रणजणीया ॥ ४७ ॥ त्रीभुवन थयु ते जिहारे, भरत विमासे मन मांहे तिहारे ॥ एह अतुलीबल महाबल पूरो, एह ससोवरु वी नहीं शूरो ॥ ४८ ॥ जाते दहाडे देशवटे देशे, रि अमारी उलाली लेशे ॥ भरतने मोढे ढली तिहां .

ोले बाहुबल सांभलो भाइ ॥ ४९ ॥ भुजायुद्ध कीजे
ुवे भारी, अमे नमावुं बांह तुमारी ॥ एम सुणीने
भरत भूनाथ, वेगे पसार्यो पोतानो हाथ ॥ ५० ॥ बाहु
ालवंतो भुजबल बांह, षट खंड पृथ्वी झाले उछाहे ॥
कमल तणी परे बाहुबल वाले, तस भुज नव वल्यो
भरत भूपाले ॥ ५१ ॥ वारु हैया मांहे मत राखो बाकी,
ोयुं मुष्टियुद्ध कीजे हवे ताकी ॥ महोकम मूठी भरते
उपाडी, बाहुबल माथे दीए पछाडी ॥ ५२ ॥ मूठीने
मारे शिथिल थयुं अंग, भरतना मनमां वाध्यो उछरंग
बाहुबल मन साथे विचारी, मूठी उपाडी हैयामां
ारी ॥ ५३ ॥ मूठीने मारे भरत लडथडीयो, भमरी
ाइने भूंये ते पडीउं ॥ चढी रीस ने मूठ चमचमे,
ाम दुहाणो विषधर धमधमे ॥ ५४ ॥ ठामे थइ भरते
ाथ उपाड्यो, मारी मूठ ने भूंये ते पाड्यो ॥ ढींचण
ागे घाल्यो धरती मांहि, जाणे आरोप्यो खीलो जग
ांहि ॥ ५५ ॥ सुरते उठ्यो आप संभाली, भरतने
ोसे मारयो दंड उलाली ॥ घाल्यो धरतीमां कंठ प्र-
ाण, कायर कंपे ने पड्युं भंगाण ॥ ५६ ॥ चक्रीनुं सैन्य
युं ते झांखुं, भरत विमासे भाग्य छे वांकुं ॥ बाहुबल

कटके वाजित्र वाजे, वीतशोका थइ सुभट विरा
॥५७॥ उठ्यो ते आप धरा धंधोली, क्रोधे ते रह्यो चक्र
तोली ॥ भरत चक्रने आगना आपी, वाहुवल मा
लावजे कापी ॥ ५८ ॥ वाहुवल मनमां एम विमासे
धिग् वोलीने पछी विमासे ॥ शुं कुखे आव्यो भरत पार्प
न्यायनी रीत नाखी उथापी ॥ ॥ ५९ ॥ मूठी तोली
रह्यो ते जेहवे, जलहल चक्र आव्युं ते तेहवे ॥ वे
वलीयो ते वांदीने पाय, गोत्रमें चक्र न चाले क्यां
॥६०॥ चक्रशुं कलंक चिंते इम चक्री, मुजथी न्हानो पा
महोटो ए चक्री ॥ भरत रह्या हवे हाथ खंखेरी, एहन
मूठीनी गत अनेरी ॥ ६१ ॥ दीन हीणो भरतने जाण
वाहुवल वोले ते एहवी वाणी ॥ भरत न मारुं भा
सलूणो, मानव माशुं कोइ म धूणो ॥ ६२ ॥ मूठीन
मनमां आणी आलोच मस्तके लइ कीधो ते लोच
वाहुवल थयो ते सोध वैरागी, सुर नर पूजे पाय ते लाग
॥६३॥ देवदुदुभि वाजे आकाशे, फूलनी वृष्टि थइ चि
हु पासे ॥ मनथी मेली विषय विकार, धन धन ज
सुर नर नार ॥ ६४ ॥ कर्म खपावी केवल पामु, ल
भाइने शीश न नामुं ॥ काउस्सग्ग करी कर्म न

ठी जइने जिनवर वंदुं ॥ ६५ ॥ इम धारी वनमां काउ-
स्सग्ग रहे, वर्षाकाले ते कर्म ने दहे ॥ कुंजर चढ्यो केवल
किम लहीए, वेननें वचने बूज्यो ते हैये ॥ ६६ ॥ पग
उपाड्यो केवल पाम्युं, जइने जिनवर मस्तक नाम्युं ॥
भाइ नवाणुं एकठा मलीया, मनना मनोरथ सघला
ते फलीया ॥ ६७ ॥ एक वर्षे काउस्सग्ग रह्या, वाचा
पालीने मुगते ते गया ॥ उदयरतन कहे वचनविलास,
बाहुबल नामे लीलविलास ॥ ६८ ॥ इति

॥ अथ श्रीशंखेश्वर पार्श्वनाथनो शलोको प्रारंभः ॥

॥ मात भुवनेश्वरी भुवनमां साची, जेहनी जगतमां
कीरति जाची ॥ देव पदमावती धरणेंद्र राणी, आपो
मुज्ज मति सेवक जाणी ॥ १ ॥ पास शंखेश्वर केरो श-
लोको, मन धरीने सांभलजो लोको ॥ देश वढीयार मांहे
जे कह्यो, कलिकाल मांहे जालम प्रगट्यो ॥ २ ॥ जरा-
संध ने जादव वढीया, बांधी मोरचा दल बेहु लडीयां
। पडे सुभट ने फाजु मरफाय, कायर केतां तिहां ना-
शीने जाय ॥ ३ ॥ राग सिंधूए सरणाइ वाजे, सुणी
सुभटने शूरातन जागे ॥ थाये जुद्ध ने कोइ न थाके,
त्यारे जरासंध छल एक ताके ॥ ४ ॥ छप्पन कुल कोडि

जादव कहीए, एक एकथी चढीयाता लहीए ॥ प्र
आपे पण पाठा न जागे, एक मारे तो एकत्रीश ज
॥ ५ ॥ वढतां एहवो अंत न आवे, करुं कपट तो राम
फावे ॥ एम चितीने म्हेली तिहां जरा, ढलीयु जा
वनुं सैन्य तिहां धरा ॥ ६ ॥ जरा लागी ने जादव ति
ढलीया नेम कृष्ण ने बलभद्र वलीया ॥ त्रण पुरुष
जरा न लागी, कहे नेमने कृष्ण पाय लागी ॥ ७
एहवो कोइ करो उपाय, जेणे जरा ते नासीने जाय
कहे कृष्णने नेमकुमार, करो अठम तप चोविहार
८ ॥ पहेलां धरणेन्द्र तमे उपासो, तेहने देरासरे दे
वे पासो ॥ तेह आराधो आपशे बिंब, सरशे आप
काम अविलंब ॥ ९ ॥ मुखथी महोटो बोल न भाख
त्रण दिवस लगे सैन्य हु राखुं ॥ जिनवरभक्तिनो प्रभा
भारी, थाशे सघलो विध मंगलकारी ॥ १० ॥ इं
सारथि मातलि नामे, मेल्यो जिनवरनी भक्तिने का
॥ आसन मांडीने देव मोरारी, अठम करीने बे
तिणे वारी ॥ ११ ॥ तूठो धरणेंद्र आपे श्रीपास, हरख
श्रीपति अति उल्लास ॥ नमण करीने छांटे तेणी
उठयुं सैन्य ने थयो जयकार ॥ १२ ॥ देखी जादव

ालस जोरो, जरासंधनो तूट्यो तिहां तोरो ॥ त्यारे
ाहने चक्र ते मेल्युं, वंदे कृष्णने आवी ते पहेलुं ॥
३ ॥ पछी कृष्णना हाथमां वेठुं, जरासंधने साल तो
ठुं ॥ कृष्णे ते मेल्युं तिहां फेरी, जरासंधने नाख्यो ते
री ॥ १४ ॥ शीश छेद्युं ने धरणी ते ढलीउं, जयजय
ाब्द ते सघले उछलीउं ॥ देवदुंदुभि आकाशे वाजे,
ापर फूलनी वृष्टि विराजे ॥ १५ ॥ तुमे वासुदेव त्रण
ांड जोक्ता, कीधा धर्मना मारग मुगता ॥ नयर शंखेश्वर
ास्युं उमंगे, थापी पाशनी प्रतिमा श्रीरंगे ॥ १६ ॥ शत्रु
ीतीने सोरठ देशे, द्वारिका नगरीमां कृष्ण नरेशे ॥
ाले राज्य ने टाली अन्याय, क्षायक समकितधारी कहे-
ाय ॥ १७ ॥ पाशशंखेश्वर प्रकट मल्ल, अवनि मांहे
ु एक अवल ॥ नाम ताहरुं जे मन मांहे धारे, तेहनां
ांकट दूर निवारे ॥ १८ ॥ देशी परदेशी संघ जे आवे,
ूजा करीने भावना भावे ॥ सोना रूपानी आंगी रचावे,
ृत्य करीने आंगी केशर चढावे ॥ १९ ॥ एक मने जे
ुमने आराधे, मनमा मनोरथ सघला ते साधे ॥ तहारा
ागतमां अवदात महोटा, खरो तुंहीज बीजा सर्वे खोटा
॥ २० ॥ प्रतिमा सुंदर शोभे पूराणी, चंद्रप्रभुने वारे

नराणी ॥ घणे सुर नरे पूज्या तुज पाय, तेहने मुग
तिना दीधा पसाय ॥ २१ ॥ ओगणसाठ ने उपर श
वरषे, वइशाख वदि छठीने दिवसे ॥ एह शलोको ह
रखे मे गायो, सुख पायो ने दुरगति पलायो ॥ २२
नित्य नित्य नवली मंगलमाला, दिन दिन दीजे दोल
रसाला ॥ उदयरत्न कहे पास पसाये, कोडि कल्याण
सन्मुख थाये ॥ २३ ॥ इति श्रीशंखेश्वर पार्श्वनाथनो
शलोको संपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीआदिनाथनो शलोको प्रारभ ॥

॥ सरसती माता द्यो मुज वाणी, समरुं जिनश
सन वरदानी वाणी ॥ नाभि राया ने मरुदेवा राण
कुखे उपन्या केवलनाणी ॥ १ ॥ चउदे सुपनमां रा
विहाणी, बीजे शास्त्रे सघली वखाणी ॥ मे तो संक्षे
कीयो छे जाणी, हवे वर दीउं माता ब्रह्माणी ॥ २
पूरे महीने बालक जायो, छप्पन कुमारी मलीने गायो
चोसठ इंद्रादिक उछव आवे, मेरु जइने नीरे न्हवरा
॥ ३ ॥ वलतो मोवित्रे उछव कीधो, नाम ऋषभ कुम
दीधो ॥ माता धवरावे नवरावे गावे, महोटेरा हु
मेवा खवरावे ॥ ४ ॥ आपणे एटलानां नाम न

हेशुं विचारी ले जल जावे॥घेबर जलेबी लाडु ला-
ीणा, पेंडा पतासां फलफलता फेणा ॥५॥ रुडां दहिं-
ारां देवगरां घाली, मांहे मरकी ने सेव सुंआली ॥
ाकरनो शीरो लापशी तरधारी, मरुदेवा माता पीरसे
शवारी ॥ ६ ॥ माताए बालकनुं मन न लाधुं, बेटो
ीसाणो थोडुंशुं खाधुं ॥ ठांमी एडुं ने अलगो जइ बेठो,
ाता मनमां संदेह पेठो ॥ ७ ॥ मीठे वचने करी माता
ुनावे, एटले आकाशे इंद्राणी आवे ॥ ऋषभ रीसाणो
ावो मनावो, आपणे नाचुं ने गुणगीत गावो ॥ ८ ॥
ादीशर आगल इंद्राणी आवे, नव रस नाटकनां
ाजां बजावे ॥ अहो आडंबर जाइ! जाइ, धन धन
ुकृत तेहनी कमाइ ॥ ९॥ नाटिके नानडीउं खुशाल
ीधो, एक इंद्राणीए उछंगे लीधो ॥ बीजी मलीने वो-
लो दीधो, त्रीजी कहे छे एम शुं कीधो ॥ १० ॥ पूछे
ुजु केम रीसाणा आइ, शाक सघलां मोडां किम लाइ
॥ ११ ॥ पीरस्यां पापड जजीआं ने ताजी, शाक बना-
यां चतुराइ झाझी ॥ काकडी कंकोडां कारेलां केलां,
ाची केरी ने करमदां भेलां ॥ १२ ॥ कोलां कालिंगां
रपटां भेलां, बाफ्यां बत्रीशे शाक शमेलां ॥ शाक पाक

ते सघलां दीधां, आपे इंद्राणीए हाथशुं कीधां ॥ १३
जुगलिया त्यारे कांइ न जाणे. सुरद्रुम पासे मागी
आणे ॥ खावे गावे ने कांउ न कमावे, ऊजुं जीवे
सद्गतिए जावे ॥ १४ ॥ एटले आदीशर उपना जाण
सौधर्म इंद्रे अवधे तव जाणी ॥ नाभि राजाने आग
जइ, जुगलिये जइ वातज कइ ॥ १५ ॥ ऋषभने ज
राजा तुमे थापो, पाये लागीने पदवी आपो ॥ जुगलि
या मलीया महोत्सव करवा, ऋषभ वेसारी गया नं
भरवा ॥ १६ ॥ एटले इंद्रे मली कामज कीधुं, छ
चामर ने सिंहासन दीधुं ॥ ऊगमग ज्योत छे पीला पं
तांबर, माला मुरकी ने थोतक खवर ॥ १७ ॥ वनित
वासीने गढ कोट कीधो, पहेलुं राज तो ऋषभने दीध
॥ वीश प्रुव लख कुअर रहीया, वलता ऋषभ राज
कहीया ॥ १८ ॥ सुमंगला साथे विवाह कीधो, सुनं
दोलो आणीने दीधो ॥ परणी पनोती युगलिये जा
भरत ब्राह्मी ने अठाणु भाइ ॥ १९ ॥ बीजी बाहुब
सुदरी वेटी, जिन जुगलिये ते रीत मेटी ॥ त्रेसठ पूर
लख राजमे वह्या, पुत्रोने देश वहेंचीने लह्या ॥ २
५ दान देइने संयम लीधो, वहुला देशमे विहार की

ोला जुगलिया भेद न जाणे, सोनुं रूपुं लइ
वाने आणे ॥ २१ ॥ तनुं अन्न पाणी कोइ न
ापे, कष्टे अंतरादिक कर्मने कापे ॥ संयमिया
ाथे फल फूल खाये, पोते गजपुरमां गोचरी जाये ॥
२ ॥ श्रेयांस जातिस्मरण पायो, तिण समे भेटण इक्षु-
ने लायो ॥ पहेलुं पारणुं तो प्रभुने कराव्युं, पसली
ांहे इक्षुरस वोराव्युं ॥ २३ ॥ प्रथम प्रभु श्रेयांसने
ठा, साढी बार कोड सोनैया वुठा ॥ त्यांथी पण चाल्या
ादेसर उठी, देशमां कहेवराव्युं श्रेयांसे उठी ॥ २४ ॥
क्षशिलाने उद्याने आया, सांभली बाहुबल त्यांथी व-
ाव्या ॥ प्रभाते बेटो वांदवाने जाय, जुए घणुं पण
रिशन न थाय ॥ २५ ॥ काने अंगुली देइ तेणे साद
ीधो, तुरके अद्यापि पंथज लीधो ॥ आदीसर पुरिम-
ालमें आया, कर्म खपावी केवल पाया ॥ २५ ॥ घो-
ख बेठा ने वाजित्र वाये, तिणे समे भरत पाट बधाये
चक्र उपनुं नव निधि पोइ, बेटो अठाणुं ल्यो दीक्षा
ाइ ॥ २७ ॥ बाहुबल टुंके तो टेक जणाइ, संयम लीधो
तिण सिद्धि पाइ ॥ पुत्रवियोगे मरुदेवी माता,
ांखे पडल ने वहे अशाता ॥ २८ ॥ भरतने कहे वं-

दण हालो, एक वार देखुं तो रुषन्न वाल्हो ॥ कटक
कोमी बे जरतनी साथे, मरुदेवा माता बेगं बे हा
॥ २७ ॥ पुरिमतालने पांखतीउंए आव्या, वाजा
शब्द काने सुणाया ॥ मरुदेवा पूछे जरत राजने, वेट
वाजां ते वाजे किहांकने ॥ ३० ॥ तमे रुषजनी रि
न जाणी, ए तो हुआ बे केवलनाणी ॥ सेवे सुर
इंद इंद्राणी, वारे परषदानी मे रिद्धि जाणी ॥ ३१
बेठक वावाने त्रण गढ थाय, रूपे सोने ने रत्ने जम
॥ काली करुखा पोल पताका, धर्म चकर फरे षट
॥ ३२ ॥ मणिमय तोरण अति घणु दीपे, कल्पवृक्ष
सुवर्णने जीपे ॥ आठ पुष्करिणी ईति निवारे, प
लागे बे परषदा वारे ॥ ३३ ॥ कांटा उंधा ने कम
रचाय, वणी सांजलतां विखवाद जाय ॥ इम सांज
मरुदेवा माता, आंख पमलने पामे बे शाता ॥ ३४
मोहनी मूकीने मन पाठो लीधो, केवल पामीने सि
वास लीधो ॥ जरत आदेसर आगल जाय, रिद्धि देख
रलियात थाय ॥ ३५ ॥ प्रजुने पूछे वनितानो वासी,
रिद्धि एणी परे रहेशे के जाशे ॥ वलता तीर्थ
त्रेवीश थाशे, चोवीशमा ते मरीचि थाशे ॥ ३६

ुम सरखा चक्रवर्त्ती बार, वासु प्रतिवासुदेव अढार
। नव बलन्नद्रने त्रेसठ हुआ, बीजे शास्त्रे संबंध
ुजुआ ॥ ३७ ॥ ५दवी त्रेसठ ने शरीर साठ, माता
ापन ने जीव ंगणसाठ ॥ बाप एकावन सहु कोइ जा-
ा, मूरख मन मांहे संदेह आणे ॥ ३८ ॥ मरीचि प्र-
ुखनो संबंध कह्यो, चक्री सांजली हेरान थयो ॥ बाप
ेटाने वंदण जाय, अहंकारे नीच गोत्र बंधाय ॥ ३९ ॥
ांदी पूजीने न्नरत जाय, संघ काढ्यानो उठरंग थाय
॥ शेत्रुंजा केरो संघ चलावुं, धर्म ऋषन्ननो बहुलो ह-
ावुं ॥ ४० ॥ ताणी तंबूने तैयार कीधा, मुहूर्त्त जोइने
ेलाणा दीधा ॥ ठए खंममां फेरी सहराइ, शेत्रुंजे यात्रा
ावो रे न्नाइ ! ॥ ४१ ॥ देशी परदेशी अति घणा म-
ीया, स्वामी सघला ए संघमां न्नलीया ॥ पुत्र पोतरा
ारु सवाई पांचसेंनी नित्य आवे वधाइ ॥ ४२ ॥ लाख
ोराशी घोमा ने हाथी, राजा बत्रीश हजारशुं साथी ॥
ाइउं आमंबर अधिक दीवाजे, वाजित्र निर्घोष सर-
ाइ वाजे ॥ ४३ ॥ आप ऐरावण असवार ठाजे, मेघा-
ार ठत्र बिराजे ॥ लाख चोराशी रथ जोतरीया, पायक
। क्रोम परवरीया ॥ ४४ ॥ पालीताणे ते संघपति

आवे, गिरि देखीने मन सुख पावे॥सोना रूपाने
लडे वधावे, डुंगर देखीने भावना भावे ॥ ४५ ॥ (ल
हणी रूपा ने सोनाने नाणे, करतो पहोतो संघ पाल
ताणे) ॥ संघ सघलोही चढीउ शेत्रुजे, 'पहेलां 'राय
तणां पगलांने पूजे॥चक्री जोइने हुकम दीधो, पग
पागथी ए प्रासाद कीधो ॥ ४६॥ रूपानी रांग नेसोना
पाया, मणिमय देवल भव्यां निपायां ॥ धवलां रतनम
बिंब भरावे, प्रतिष्ठा पुंडरीकने करावे ॥ ४७॥ प्रति
पवासण प्रवेश कीधो, खजीनो खरचीने बहु जश ली
॥पुंडरीकने पूछे भरत राजा, शेत्रुंजा उपर तीरथ ऊा
॥ ४८ ॥ नाम कहो ने विधि बतावो, प्रदक्षिणा द
संघ साथे आवो ॥ सूरजकुंडमे स्नानज कीजे, भृंग
भीम कुंडे भरीजे ॥ ४९ ॥ चेलणां तलाइए विसाम
लीजे आदीशर पोले उंचा चढीजे ॥ मरुदेवा टुक मां
आवीजे, चोखा खाणथी वे चार लीजे ॥ ५० ॥ उंच
अदबुतने पाये लागीजे, मोक्षवारीने पोले पेसीजे
केशर घसीने पूजा करीजे, सुकृतफल एम जश ली
॥ ५१ ॥ सुर नर विद्याधर चक्रवर्त्ती राणी, प्रतिमा
पूजे उलट आणी ॥ अर्चे चर्चे ने गुणगीत गाय, खे

ळीने खुशियाल थाय ॥ ५२ ॥ इणी विधि जात्रा करी
र आवो, चक्री मनमां आनंद पावो ॥ पाळीनी पा-
ली पोरवाक चावो, नामो नगो ने गाम दिमावो ॥ ५३ ॥
क्ति शांतिविमळे चरित्र दीधो, पठी श्रीपूज्ये पन्यास
ीधो ॥ धर्मना उद्यम बहुला त्यां थाय, पाप कर्म ते दूर
लाय ५४ ॥ तपगछनायक श्रीविजयप्रज्ञ सूरि, गिरुछ
छनायक, पुण्याइ पूरी ॥ कहे विनीत विमल कर
ोकी, ए ज्ञणतां आवे संपत्ति कोकी ॥ ५५ ॥

॥ श्रीशेत्रुंजयनो शलोको ॥

॥ सरसती माता हुं तुज पाय लागुं, कहेवा शलोको
रदान मागुं ॥ जेहवां शास्त्रमां सुणीयां परिमाण,
तेवां सिद्धिगिरिनां करुं वखाण ॥ १ ॥ प्रथम जिनवर
ुंकरीक आगे, निसुणी ज्ञविजन श्रुतपट जागे ॥ नहीं
कोइ इण युग शेत्रुंजा तोले, अनंत जिनवर एणी पेरे
ोले ॥ २ ॥ ग्रहगण मांहे वको जिम चंद, पर्वत मांहे
तिम एह गिरींद ॥ सुर नर दानव मल्या ठे कोक, ॥
ेवा करे ठे बे कर जोक ॥ ३ ॥ ज्ञरत सगरे उद्धार
कीधा, साधु अनंता एणे गिरि सिद्धा ॥ देश देशना
ंघ बहु आवे, माणक मोतीकां लेइने वधावे ॥ ४ ॥

आरज देशमां श्रावक सार, दर्शन करीने सफल अव
तार ॥ काग कुकनो नावे अवतार, केतो एणे मुखे क
विस्तार ॥५॥ सदा ए गिरि शाश्वतो सार, एना गुणनं
कोइ न लाभे पार ॥ एणी पेरे निसुणी श्री गुरुवाणी
श्रावक हरख्या ठे उलट आणी ॥ ६ ॥ देशमां सोहे
श्रीकछ देश, सदा परिगल लक्ष्मी निवेश ॥ दक्षिण
दिशिए समुद्रतीर, नदीउं वहुली ने खलके ठे नी
॥ ७ ॥ तेह देशमां कोठाय गाम, जाणीए अभिन
स्वर्गनुं धाम ॥ देहरां उपासरा दीसे ठे चंग, करे
श्रावक नित्य बहु रंग ॥ ८ ॥ न्याति सोहे उंशवाल
मानसमां जेम उंपे मराल ॥ शाह रायमल कुल अधिक
मठाण, उपनो करमसी शाह पचाण ॥ ९ ॥ माणक
पुजो बे दीसे वडवीर, देशल पेठो ठे साहस धीर ।
मालसी पांचो ते दीसे गुणखाण, खेतशी करमसी कीध
परिमाण ॥ १० ॥ एहवा श्रावक दीपता दक्ष, पद
मांहे जेम शुक्ल पक्ष ॥ मेली कंकोतरी मूरत लीधो
तिलक संघपतिनो पचाणने कीधो ॥ ११ ॥ संघ चाल्यो
ने कारज सिद्धो, प्रथम मेलाण मुद्रे जइ दीधो ॥
सुत अनोपम मलीयो ठे साथ, साह्य हुआ श्री

ाथ ॥ १२ ॥ वेसी जिहाजे नवीनपुर आया, देहरां
:खीने आनंद पाया ॥ देव भुवन ते रमणिक स्थान,
ाणीए अभिनव नलिन विमान ॥ १३ ॥ रायसी वर्द्ध-
ान कीधा प्रासाद, उंचा करे ठे गगनथी वाद ॥ बा-
न जिनालां देहरां सोहे, देव दानव किन्नर मोहे
१४ ॥ पेसतां वामांगे चौमुख दीपे, तेजे करीने दिण-
र दीपे ॥ सहसफणो ने श्रीशांतिनाथ, मूल गभारे
त्रिभुवननाथ ॥ १५ ॥ चाल्यो संघ हवे सोरठ देश,
ांच रतन जिहां कीधो निवेश ॥ तीरथ तटिनी तोय
ुदारा, तांबुल रिद्धि अतिही विस्तारा ॥ १६ ॥ ऊाक
ीऊना गुठज गहके, जाइ जुइने परिमल महके ॥ दा-
ीम कदली ने वृक्ष सहकार, वनस्पति शोभे ठे भार
अढार ॥ १७ ॥ रैवतगिरिने सहु शिर नामी, जिहां वेठा
ग नेमनाथ स्वामी ॥ कर्म खपावी केवलपद पाया, रा-
ुल नेमजी मुक्ति सधाया ॥ १८ ॥ तिहांथी संघ हवे
आनंद पामी, आव्या जिहां ठे श्रीशेत्रुंजा स्वामी ॥
ौगिरि देखीने हरख बहु पाया, सोना रूपाने फूलडे व-
धाया ॥ १९ ॥ धन धन दहाडो ते आजनो दीसे, सहु
हरख्या ठे विश्वावीशे ॥ आवी उतरीया पादलिप्त स्थान,

ठाकोर जनकजी दीए बहु मान ॥ २० ॥ पा
ताणु नगर ते अत्यंत दीपे, तेजे करीने अलकाने ज
॥ चहुटां चोवटां दीसे अपार, द्रव्य तणो कोइ ल
नहीं पार ॥ २१ ॥ वरण अढार वसे सदाइ, दु
दोहग नहीं कदाइ ॥ किहांकणे व्यपारी रूपैया वट
किहां तो जवहरी जवेर वटावे ॥ २२ ॥ दोशी शेठ
कदोइ सार, एहवी शोने ठे रुडी वजार ॥ गढ गढ
दिर पहोल प्राकार, लांबो पहोलो जाण विस्तार ॥ २
यात्रा करवाने श्रीसंघ चमीया, पहेला सेलर वाव्ये
मलीया ॥ पाणीमां दीसे ठे अति तरंग, निर्मल
वहे घणुं गग ॥ २४ ॥ देवनूमिका आश्रम कीधो, र
तिहांकणे विसामो लीधो ॥ गीत गान ने करता
नोद, पगलां देखीने उपनो मोद ॥ २५ ॥ शालि कु
निर्मल नीर, जेह दीगथी उपनी धीर ॥ जल पीधा
विकसे ठे नाण, अज्ञान नासीने आवे ठे ज्ञान ॥ २
हको हिंगलाज कुमार कुंक, नवजल तारण दीसे त
॥ जेना जलसंगे कर्म खपावे, मोक्षपुरीए वहेलो प
चावे ॥ २७ ॥ लुखण कुक शाह लुखणे कीधो, धन ख
५१ चीने लाहोज लीधो ॥ पासे रमणिक कुंको आराम,

नवने रमवानो ठाम ॥ २८ ॥ आगे चालतां राम पोल
ावी, वाघण पोल ते सघलाने नावी॥स्वर्गद्वारनो वांधव
से, जोतां संघनो हैयमो हीसे ॥ २९ ॥ पासे वेठा ठे
ुख यक्ष, सेवा करे ठे जेहनी दक्ष ॥ संघ सान्निध्य
श्वरी देवी, सदा तीरथ रखवाल करेवी ॥ ३० ॥
नायक श्रीरुषन्न जिणंद, तेजे जलहल कोमी दि-
॥ वंश इक्ष्वाग मरुदेवा नंद, नान्नि राया कुल
मचंद ॥ ३१ ॥ पद्मासने वेठा प्रन्नु योगध्यान, धनु-
पांचसें सोवनवान ॥ सत्तरन्नेदी तिहां पूजा न्नणावी,
वना श्रीसंघे न्नली परे न्नावी ॥ ३२ ॥ स्नात्रमहोत्सव
ति बहु रंग, न्नेर ज्ञुंगल वाजे मृदंग ॥ नोवत निशान
ऱर साद, रणजण रणके घंटना नाद ॥ ३३ ॥ अगर
ुना महके ठे धूप, ठाजे ठकुराइ त्रिन्नुवन रूप ॥
न्नामंमल अति तेज ठाजे, देवाधिदेव ते एहवा
राजे ॥ ३४ ॥ नाटक नृत्य सदा उठरंगे, न्नावना न्नावी
ने अन्नंगे ॥ एणी परे प्रन्नुजीनां दरिसण कीधां,
य खरचीने बहु जश लीधा ॥ ३५ ॥ सूर्य कुंम ते
यो ठे सूर, तिण मांहे वीची ते ठठे न्नरपूर ॥ कीधे
न वाधे घणुं नूर, कर्म थाय ठे सवि चकचूर ॥ ३६ ॥

सहस्त्रकूट ते नयणे निरखी, थै थेकार करे देव हर
॥ सारे प्रजुनी अहर्निश सेव पूजा नक्ति करे नित्य
॥ ३७ ॥ प्रथम गणधर श्रीपुंमरीक, पश्चिम श्रीगो
नही अलीक ॥ पगलां तेहना दीठे धन्य धन्य, गण
नेट्या चौदसे ने बावन्न ॥ ३८ ॥ प्रजाते ऊठी जो
मज लीजे, वंबित कारज तो सवि सीजे ॥ त्रण
जिहां कीधो निवास, एहवा गौतमजी पूरजो आ
॥ ३९ ॥ रायण तरु तले आदि जिणंद, पगलां पू
देखी नविवृंद ॥ जेहना पूजनथी सवि सिद्धि था
कर्म खपावीने मोक्ष सधाय ॥ ४० ॥ पासे रमणि
अष्टापद देहरो, बावन जिनालो शोने शिर सेहरो
रावण समकित तिहांकणे पाम्यो, ग्रंथि नेदीने मिथ्या
वाम्यो ॥४१॥ प्राची वाम्य दिशि पश्चिम उत्तर, द
चार अड दश तीर्थंकर ॥ प्रजुने पूजीने देहरां कराव्य
नरत चक्रीश्वरे बिंब नराव्यां ॥ ४२॥ अद्भुत देखं
अचरज थावे, दरिशन करीने सहु सुख पावे ॥ ध
धन्य प्रजुनो मोटो ठे गात्र, एहवा जिनजीनी कर
जात्र ॥ ४३ ॥ कुंम खोमीयार सदा जल नरीयो,
दीए ठे अनिनव दरीर्ड ॥ मीन काठव जलचर

हने सेवे ठे सर्वदा हंस ॥४४॥ द्रव्य खरच्यां ठे जे-
मां लक्ष, प्रासाद रचिया ठे दीठा प्रत्यक्ष ॥ एहमां
थी कांइ खलखंच, तेहमां थाप्या ठे पांमव पंच
४५ ॥ चठमुख शिवा सोमजीए कराव्यो, जेणे युगा-
ग नाम रचायो ॥ ठठी प्रजाते दरिसण कीजे, मुक्ति
रणीने वेगे वरीजे ॥ ४६ ॥ टुंके वेठां ठे मरुदेवा माता,
नां दरिसणथी होय सुख शाता ॥ कर्म त्रोमीने
रद्धिसोपान, चमी पाम्या ठे मुक्ति निदान ॥ ४७ ॥
फरती चोफेर देहेरा केडे, देतां प्रदक्षिणा कर्मने
डे ॥ देइ प्रदक्षिणा वाहेर आया, सर्वे संघना कार्य
ारयां ॥ ४७ ॥ वाणी सुणीने चक्रीए जराव्यां, मणिमय
ांचसें धनुष्यनी काया ॥ गुफा पश्चिम दिशिए ठे
हां, त्रिंब मणिमय जंफारयां तिहां ॥ ४ए ॥ देवता
हनी सेवाए आवे, पूजा करीने जावना जावे ॥ देव
रावे प्रजुने अंगोल, नमण आवे ते ठलखा जोल
५० ॥ चंदन तलावमी शीतल ठाया, जिणमां लोटे
ाय सुकोमल काया ॥ अशुज नामनां कर्म खपावे,
हांथी सहु संघ सिद्धवम आवे ॥ ५१ ॥ नदी शेत्रुंजी
ावाने जाय, स्नान करीने पावन थाय ॥ तीर्थङ्क-

मिको स्वहुज जाणी, प्राची वाहनी नदीय वखाए
॥ ५२ ॥ तीर्थयात्रादि धर्मनी करणी, ॥ नवजल पाथो
पार उतरणी ॥ अनुक्रमे पामे ते गुण तणी श्रेणी, मुक्ति
मंदिरनी जे ले निसरणी ॥ ५३ ॥ संघपतिए धर्म
कार्य कीधां, नाट नोजकने वहु दान दीधां ॥ धन
श्रावक दया प्रतिपाल, संघपति कंठे ठवी वरमाल॥५४
देहरां देहरीनुं पार न जाणुं, जिनपडिमा त्यां केर
वखाणुं॥ एणी परे सुजश निशान वजाइ, आव्या गिर
नारे हर्षे वधाइ ॥ ५५ ॥ जादव वंश शिवादेवी नंद
बाल ब्रह्मचारी नेम जिणंद ॥ तेहनी यात्रा कीधी व
नाव, जइने प्रणम्या माता अंबाय ॥ ५६ ॥ मृगरा
देखी गज दूर पलाय, शंखध्वनि सुणी पन्नग जाय
तेम गिरिसेवनथी पातक छूटे, अष्ट कर्मनां बंधन त्रू
॥ ५७ ॥ छहरी पालीने यात्रा जे करशे, मुक्तिरमणीन
लीला ते वरशे ॥ नाण दरिसण चरणने पावे. मो
ससक वहेलो खपावे ॥ ५८ ॥ संवत अढार चोत्री
वरषे, यात्रा कीधी ले मनने हरखे ॥ सुदि पूनम चैत्र
मास, सदा गोमीचो पूरजो आश ॥ ५९ ॥ संघ सर्वे ति
हरषे घर आवे, शीरा लापसी करीने जिमावे ॥ ६

साध्वीने दीए छे दान, गोरकी गाये छे बहु गीत गान ॥ ६० ॥ कवि संघपतिने देइ आशीष, अविचल तुम तणी होजो जगीश ॥ नहीं कोइ जैनमां इण गिरि तोले, मुनि देवचंद्र इणी परे बोले ॥ ६१ ॥ इति श्रीशत्रुंजय-गिरि वर्णननो शलोको ॥

॥ श्रीशीतल जिन स्तवन ॥

(राग—भरथरीनो)

॥ श्रीशीतल जिन जगपति, अरज करुं एक आजजी ॥ दास गणी दिलमां धरी, महेर करी महाराजजी ॥ श्रीशीतल० ॥ १ ॥ नरकादिक गति विषे, जन्म्यो वार अनंतजी ॥ दुःख घणां में त्यां सह्यां, कहेतां नावे अंतजी ॥ श्रीशीतल० ॥ २ ॥ लाख चोराशी योनिमां, वली दुःख सह्यां अपारजी ॥ मुज मुखथी हुं शुं कहुं, जाणो छो किरतारजी ॥ श्रीशीतल०॥ ॥ ३ ॥ देव दया दिलमां धरी, तारो गणी जिन दासजी ॥ आप चरणनी सेवना, अरपी पूरो आशजी ॥ श्रीशीतल० ॥ ४ ॥ सबला रिपुउ आठ जे, ते नबला तें कीधजी ॥ समेतशिखर गिरि उपरे, अविचल शिवसुख लीधजी ॥ श्रीशीतल० ॥ ५ ॥ नेक नजर करी साहिबा, दीजे

शिवसुख राजजी ॥ कहे खीहसिंह करपा करी पूरो वंछित काजजी ॥ श्रीशीतल० ॥ ६ ॥

॥ श्रीपद्मप्रभु जिन स्तवन ॥

(तीरथनी आशातना नवि करीए–ए देशी)

॥ पद्म जिणेसर प्रणमीए, नवि नावे हांरे नवि नावे रे नवि नावे ॥ हांरे दुःख सघलां दूरे जावे, हांरे धरतां जिनध्यान ॥ पद्म० ॥ १ ॥ श्रीधर नूप तणे कुले प्रनु आया, हांरे मोता सुशीलाना जाया ॥ हांरे सोहे रक्त वरण शुन काया, हांरे पाय कमललंछन ॥ पद्म० ॥ २ ॥ अंतरयामी माहरा प्रनु प्यारा, हांरे विनति जगदाधारा ॥ हांरे तारो नवोदधि तारणहारा, हांरे जाणी पोतानो वाल ॥ पद्म० ॥ ३ ॥ चोत्रीश अतिशय आपने प्रनु राजे, हांरे वली पांत्रीश वाणी गाजे ॥ हांरे जशनो डंको जग वाजे, हांरे महिमानो नहीं पार ॥ पद्म० ॥ ४ ॥ प्रेमे अंतर अरगजा हुं चढावुं, हांरे वली नावे पूजा रचावुं ॥ हांरे नित नवनवी आंगी पहेरावुं, हांरे गाउं तुज गुणतान ॥ पद्म० ॥ ५ ॥ कर जोरी खीहसिंह कहे शिर नामी, हांरे मुज कष्ट हरो जगस्वामी ॥ हांरे आपो शिवपद मुज दुःख वामी, ... जाणी निज दास ॥ पद्म० ॥ ६ ॥

॥ सिद्धाचलनुं वर्णन ॥

॥ भेख रे उतारो राजा भरथरी ॥

॥ सिद्धाचल गिरि भेटीए, पूरव पुण्य पसायजी ॥ तव भवना भय मेटीए, आतम शुद्ध थायजी ॥ सिद्धा० ॥ १ ॥ चौद क्षेत्रमां ए समो, बीजो तीरथ न कोयजी ॥ वीर जिणंद प्रकाशीउं, शासवतो गिरि सोहजी ॥ सिद्धा० ॥ २ ॥ तीर्थंकर सवि आवीआ, नेम वेना त्रेवीशजी ॥ उत्तम भूमिने फरसवा, आणी मनमां जगीशजी ॥ सिद्धा० ॥ ३ ॥ अनंत मुनिवर यहां कने, सिद्धा काल अनंतजी ॥ अनागत काले वली, अनंता सीजशे नितजी ॥ सिद्धा० ॥ ४ ॥ आदेश्वर अलवेश्वरु, मूलनायक देवजी ॥ वार नवाणुं पूरव प्रभु, समवसरया नित्यमेवजी ॥ सिद्धा० ॥ ५ ॥ नवाणुं यात्रा करीए, विधि अनुपम भावजी ॥ कर्म निकाचित उपशमे, होवे शांत स्वभावजी ॥ सिद्धा० ॥ ६ ॥ सुरासुर वली किन्नरा, विद्याधर नर देवजी ॥ समकित निरमल कारणे, करतां अहोनिश सेवजी ॥ सिद्धा० ॥७॥ धन्य दिवस धन्य ते घडी, दर्शन होवे गिरिराजजी ॥ रविचंद्र जिनवर नमी, सारे आतम काजजी ॥ सिद्धा०८॥

॥ शांति सलूणा ए–देशी ॥

॥ गिरिवर दरिसण विरला पावे, पूरव संचित क
खपावे ॥ गिरि० ॥ ऋषभ जिनेश्वरपूजा रचावे, नवे न
नामे गिरिगुण गावे ॥ गिरि० ॥ १ ॥ ए आंकणी
सहस्रकमल ने मुक्तिनिलय गिरि, सिद्धाचल शतकू
कहावे ॥ गिरि० ॥ ढक कदंबने कोमिनिवासो, लोहि
तालध्वज सुर गावे ॥ गिरि० ॥ २ ॥ ढंकादिक पंच कू
सजीवन, सुर नर मुनि मली नाम थपावे ॥ गिरि०
रयणखाण जमी बूटी गुफाई, रसकूपिका गुरु इ
बतावे ॥ गिरि० ॥ ३ ॥ पण पुण्यवंता प्राणी पावे, पुए
कारण प्रभुपूजा रचावे ॥ गिरि० ॥ दश कोटि श्रावक
जमाडे, जैन तीर्थयात्रा करी आवे ॥ गिरि० ॥ ४
तेथी एक मुनि दान दीयता, लाभ घणो सिद्धाच
थावे ॥ गिरि० ॥ चंद्रशेखर निज भगिनीभोगी, ते प
ए गिरि मोक्ष जावे ॥ गिरि० ॥ ५ ॥ चार हत्यारा न
परदारा, देव गुरुद्रव्य चोरी खावे ॥ गिरि० ॥ चै
कार्त्तिकी पूनम यात्रा, तप जप ध्यानथी पाप जला
॥ गिरि० ॥ ६ ॥ ऋषभसेन जिन आदे असंख्या, तीर्
कर मुक्तिसुख पावे ॥ गिरि० ॥ शिववहू वरवा मं
ए गिरि, श्रीशुभवीर वचनरस गावे ॥ गिरि० ॥ ७ ॥

॥ ढाल ॥ वीर कुंवरनी वातडी केने कहीए ॥ ए देशी ॥

॥ तीरथनी आशातना नवि करीए ॥ नवि करीए नवि करीए, धूप ध्यानघटा अनुसरीए, तरीए संसार तीरथ० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ आशातना करतां थका धनहाणी ॥ भूख्यां न मले अन्न पाणी, काया वली रोगे भराणी, आ नवमां एम ॥ ती० ॥ २ ॥ परनव परमाधामीने, वश पडशे ॥ वैतरणी नदीमां नलशे, अग्निने कुंडे जलशे, नहीं शरणुं कोइ ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूरव नवाणुं नाथजी, इहां आव्या ॥ साधु केइ मोक्ष सधाव्या, श्रावक पण सिद्धि सुहाव्या, जपतां गिरिनाम ॥ ती० ॥ ४ ॥ अष्टोत्तरशतकूट ए, गिरिठामे ॥ सौंदर्य यशोधर नामे, प्रीतमंडण कामुक कामे, वली सहजानंद ॥ ती० ॥ ५ ॥ महेंद्रध्वज सरवारथ, सिद्ध कहीए ॥ प्रियंकर नाम ए लहीए, गिरि शीतल छांये रहीए, नित्य करीए ध्यान ॥ ती० ॥ ६ ॥ पूजा नवाणुं प्रकारनी, एम कीजे ॥ नरनवनो लाहो लीजे, वली दान सुपात्रे दीजे, चढते परिणाम ॥ ती० ॥ ७ ॥ सेवन फल संसारमां, करे लीला ॥ रमणी धन सुंदर बाला, शुन्नवीर विनोद विशाला, मंगल शिवमाल ॥ ती० ॥ ८ ॥

॥ अथ श्रीनेमिनाथजीनो नवरसो प्रारंभः ॥

॥ ढाल पहेली ॥ गरबानी देशीमां ॥ समुद्रविजय कुलचंदलो ॥ शामलियाजी ॥ शिवादेवी मात मलार वर पातलीयाजी ॥ एक दिन रमवा नीसरया ॥ शा० आव्या आयुधशाला मांहे ॥ व० ॥ १ ॥ सारंग धनुष चढावीयुं ॥ शा० ॥ तेणे हल्या आकाशे इंद्र ॥ व० ॥ चक्र उपाडीने फेरव्युं ॥ शा० ॥ गदा लीधी कर मांहे ॥ व० ॥ २ ॥ नेमे शंख वजाडीयो ॥ शा० ॥ तेणे डोल्या महीना मेर ॥ व० ॥ शेषनाग तिहां सलसल्या ॥ शा० ॥ खलभलीया सायर सर्व ॥ व० ॥ ३ ॥ गिरिवर टुंक त्रूटी पड्यां ॥ शा० ॥ थरहर कंपे लोक ॥ व० ॥ को वैरी उपरनो ॥शा०॥ इम करता कृष्ण विचार ॥ व० ॥ ४ ॥ आव्या तिहां उतावला ॥ शा० ॥ जिहां नेम कुमार ॥ व० ॥ रूपचंद रंगे मल्या ॥ शा० ताहारुं बल जोवानी खंत ॥ व० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ बीजी कृष्णे कर लंबावीयो ॥ हसी बो लोजी ॥ तुमे वालो नेम कुमार ॥ अंतर खोलोजी कमलनाल परे वालीयो ॥ हसी० ॥ क्षण नवि लाग वार ॥ अंतर० ॥ १ ॥ नेमे कर लंबावीयो ॥ हसी० कृष्णे नवि वाल्यो जाय ॥ अंतर० ॥ हाले कृष्ण हिंच

या ॥ हसी० ॥ तिहां हरि मन झांखो थाय ॥ अं०॥२॥
री जो परणावीए ॥ ह० ॥ तो वल ठेंठरुं थाय ॥ अं०
इम विचारी कृष्णजी ॥ ह० ॥ निज अंतेउर सम-
य ॥ अं० ॥ ३ ॥ विवाह नेम मनाववा ॥ ह० ॥
झ थाउं सघली नार ॥ अं० ॥ रूपचंद रंगे मल्या ॥
॥ ताहारुं अतुली वल अरिहंत ॥ ४ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ राजाजी ने रुक्मिणी ॥ मोरा गिर-
री ॥ सत्यभामा जांबुवती नार ॥ मुकुट पर हुं वारी
चंद्रावती शणगारीए ॥ मोरा० ॥ गोपी मली बत्रीश
हार ॥ मुकुट० ॥ १ ॥ विवाह मानो नेमजी ॥ देवर
राजी ॥ मने करवाना बहु कोड ॥ ए गुण तोराजी ॥
री विनानुं आंगणुं ॥ देवर० ॥ जेम अलूणुं धान ॥
गुण० ॥ २ ॥ नारी जो घरमां वसे ॥ देवर० ॥ तो
परोणो मान ॥ ए गुण० ॥ नारी विना नर हाली
नो ॥ देवर० ॥ वली वांढा कहेशे लोक ॥ ए गुण० ॥३॥
रवाद न कीजीए ॥ देवर० ॥ तमे म करो ताणा-
॥ ए गुण० ॥ रूपचंद रंगे मल्या ॥ देवर० ॥ हवे
आपे नेम ॥ ए० ॥ ४ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ नेम कहे तमे सांभलो ॥ मोरी

चारीजी ॥ किस्यो काम विकार ॥ मे गत पामी जी ॥
नारीमोहे जे पड्या ॥ मोरी० ते रखडीया गति चा
॥ में ० ॥ १ ॥ रावण सरिखो रोळव्यो ॥ मोही० ॥
लइ गयो सीता नार ॥ मे० ॥ नारी विषनी कूपली
मोरी० ॥ मायानी मोहनवेल ॥ मे० ॥ २ ॥ छप्पन
कोडी जादव मिल्या ॥ मोरी० ॥ इम कहे ते
वारोवार ॥ मे० ॥ रूपचंद रंगे मल्या ॥ मोरी० ॥ नेम
नही परणे निरधार ॥ मे ॥ ३ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ अबला बोल न बोलीए ॥ वर
राजाजी ॥ तमे परणो नेम कुमार ॥ म करो द्वाजार्ज
॥ एकवीश तीर्थकर थया ॥ वर० ॥ ते तो सर्वे परण्य
नार ॥ म करो० ॥ १ ॥ नारी खाण रतन तणी ॥ वर० ॥
तेनु मूल्य केणे नवि थाय ॥ म करो० ॥ नारी मांहेथ
नर नीपना ॥ वर० ॥ तुम सरिखा श्रीभगवान् ॥ म
करो० ॥ २ ॥ नेम न बोले मुख थकी ॥ वर० ॥ मांड
विवानु मंगाण ॥ म करो० ॥ उग्रसेन घर बेटडी ॥ वर
॥ ते नामे राजुल नार ॥ म करो० ॥ ३ ॥ लीधुं लगन
उतावळुं ॥ वर० ॥ आप्यां लीलां श्रीफल हाथ ॥ म
करो० ॥ जमण लाडु लापसी ॥ वर० ॥ वली सेवड्य

ार ॥ म करो० ॥ ४ ॥ आढी जलेबी पातली ॥ वर० ॥
। मांहे घेवरनो जाग ॥ म करो० ॥ खारी पूरी ने
ौथरां ॥ वर० ॥ वली खाजां ने मगदल ॥ म करो०
१ ॥ लाखणसाइ रेशमी ॥ वर० ॥ मांहे मोतीचूरनो
ाद ॥ म करो० ॥ कूर रांध्यो कमोदनो ॥ वर० ॥ मांहे
ूरनी दाल ॥ सबल दीवाजाजी ॥ ६ ॥ खारेक खजूर
टोपरां ॥ वर० ॥ वली चारोली ने द्राख ॥ सबल० ॥
वंग सोपारी एलची ॥ वर० ॥ वली पाननां बीडां चार
सबल० ॥ ७ ॥ सज्जन कुटुंब संतोषीयां ॥ वर० ॥
कीधी पेरामणी सार ॥ सबल० ॥ जान लेइ यादव
ग्या ॥ वर० ॥ वली पाखरीया केकाण ॥ सबल०
८ ॥ हाथी रथ [illegible]गारीया ॥ वर० ॥ वली केश-
ा असवार ॥ सबल० ॥ [illegible] जोवाने आवीया ॥
९ ॥ इंद्राणी गावे गीत ॥ सबल० ॥ [illegible] ॥ तोरण आव्या
जी ॥ वर० ॥ तेने निरखे राजुल नार ॥ स[illegible]बल० ॥ रूप-
रंगे मल्या ॥ वर० ए जोवा सरखी जान ॥ सब[illegible] ॥ १० ॥
॥ ढाल छठी ॥ सखी कहे वर शामलो ॥ ए [illegible] दीसे-
॥ ते निरखे राजुल नार ॥ हइडुं हीसेजी ॥ [illegible] काला
१ हाथीया ॥ ए दी० ॥ वली कालो मेघ मल[illegible]ार ॥

इडरुं० ॥ १ ॥ काली अंजन आंखमी ॥ ए दीसेजं तेनु मूल केणे नवि थाय ॥ इडरुं० ॥ काली कस्त कही ए दीसेजी ॥ काला कृष्णागरु केश ॥इडरुं॥ रूपचंद रंगे मल्या ॥ ए दीसेजी ॥ सखी शामल जरतार ॥ इडरुं० ॥ २ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ पशुआ पोकार सुणी करी ॥ लीधीजी ॥ विचारे श्रीवीतराग ॥ तेणे दया कीधीजी जो परणुं तो पशु मरे ॥ शु० ॥ मूकी अनुकंपा ज तेणे० ॥ १ ॥ इम जाणी रथ वालीयो ॥ शु० ॥ फेरव दीनदयाल ॥ तेणे० ॥ पशुबंधन सर्व तोडीयां ॥ शु० ते सर्वे गयां वन मांहे ॥ तेणे० ॥ २ ॥ रूपचंद मल्या ॥ शु० ॥ प्रभु दीधु वरसीदान ॥ तेणे० ॥ ३ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ राजीमती धरणी ढल्यां ॥ मं वहालाजी ॥ अवगुण विण दीनानाथ ॥ हाथ झाल्योजी ॥ आंगण आवी पाछा वल्या ॥ मोरा क्षत्रिय कुलमां लगावी लाज ॥ हाथ० ॥ १ ॥ तमे तणी करुणा करी ॥ मोरा० ॥ नमने माणसनी म्हेर ॥ हाथ० ॥ आठ भव थया एकठां ॥ मोरा० कीधा तुमशुं रंगरोल ॥ हाथ० ॥ २ ॥ नवमे भवे

.मजी ॥ मोरा० ॥ मुजने कां मेली जाउ ॥ हाथ० ॥
ारी आशा अंबर जेवडी ॥ मोरा० ॥ तमे केम उपाडी
त ॥ हाथ० ॥ ३ ॥ में कूडां कलंक चढावीयां ॥ मोरा० ॥
ख्यां अणदीठां आल ॥ हाथ० ॥ में पंखी घाल्यां
ांजरे ॥ मोरा० ॥ वली जलमां नाखी जाल ॥ हाथ०
४ ॥ में साधुने संतापीया ॥ मोरा० ॥ में माय
ठोड्यां बाल ॥ हाथ० ॥ में कीडी दर उघाडीयां ॥
रा० ॥ वली मरमना बोल्या बोल ॥ हाथ० ॥ ५ ॥
णगल पाणी में जरयां ॥ मोरा० ॥ में गुरुने दीधी
ल ॥ हाथ० ॥ में कठिण करम कीधां हशे ॥
रा० ॥ ते आवी लागां पाप ॥ हाथ० ॥ ६ ॥ इम
तां राजुल आवीयां ॥ मोरा० ॥ श्रीनेमीश्वरनी पास
हाथ० ॥ रूपचंद रंगे मल्या ॥ मोरा० ॥ राजुल
यो संयमभार ॥ हाथ० ॥ ७ ॥
॥ ढाल नवमी ॥ श्रीनेम राजीमती एकठां ॥ साहे-
ीयां ॥ जइ चढीयां श्रीगिरनार ॥ जिनगुण वेलडीयां
ंठेथी राजुल रीजावीयां ॥ सो० ॥ संयम वती
कुमार ॥ जिन० ॥ १ ॥ आज्ञा लेइ राजुल एकली

॥ सा० ॥ गिरनार उपर गुफा मांहे ॥ जिन० ॥ वा
जातां वर्षा थयो ॥ सा० ॥ भीजाणां राजुलनां चं
॥ जिन० ॥ २ ॥ गुफा मांहे जई सूकव्यां ॥ सा०
लागुं ते काचु नीर ॥ जिन० ॥ अति सुकुमाल सोह
मणुं ॥ सा० राणी राजीमतीनुं शरीर ॥ जिन० ॥ रहने
तपस्या करे ॥ सा० ॥ देखी राजीमती निचोवे चीर
जिन० ॥ ३ ॥ प्रगट थइ ते बोलीयो ॥ सा० ॥ नार
म करो मन उदास ॥ जिन० ॥ ४ ॥ नेम गयो तो ज
थयुं ॥ सा० ॥ आपणे करशुं भोगविलास ॥ जिन०
उत्तम कुलनो उपनो ॥ सा० ॥ तु बोल विचारी बो
॥ जिन० ॥ ५ ॥ सयम रत्नने हारीया ॥ सा० ॥ व
कीधी व्रतनी घात ॥ जिन० ॥ रहनेमि तव बोलीर
॥ सा० ॥ माता राजीमती उगार ॥ जि० ॥ ६ ॥ नेम
शर कने मोकल्या ॥ सा० ॥ फरी लीधो संयमभार
जिन० ॥ नेम राजुल केवल लइ ॥ सा० ॥ पहोतां मुि
मझार ॥ जिन० ॥७॥ पीयु पहेलां मुगते गयां ॥ सा०
राजीमती तेणी वार ॥ जिन० ॥ रूपचंद रंगे मल्या
सा० ॥ प्रभु उतारो भवपार ॥ जिन० ॥ ८ ॥ इति ॥

सार शिक्षा संग्रह.

" सज्जन मुख अमृत लवे,
दुर्जन विषनी खाण. "

" नारी चित्त देखना, विकार वेदना:
जीनंद चंद देखनां, शांति पावनां. "

" जननी जणजे भक्त कां, कां दाता कां शूर,
नहि तो रहेजे वांझणी, मत गुमावे नूर. "

" ज्ञान विना व्यवहारको, कहा बनावन नाच,
रत्न कहो को काचको, अंत काच सो काच. "

" रवि दूजो तीजो नयन, अंतर भावी प्रकाश,
करो धंध सब परिहरी, एक विवेक अभ्यास. "

" क्षमासार चंदन रसे, सिचो चित्त पवित्त,
दया वेल मंरूप तळे, रहो लहो सुख मित्त. "

" मौनं सर्वार्थ साधनं " सबसे बडी चुप.

" बालादपि हितं ग्राह्यं. " एक बाळकथी पण
हीत वचन ग्रहण करवुं.

" जन मनरंजन धर्मको, मूल न एक बदाम. "

" दुःखमें सबको प्रभु भजे, सुखमें भजे न कोय,

जो सुखमे प्रभुकु भजे, तो दुःख कहांसे होय.

११ " उत्तम जनोनी प्राणांते पण प्रकृति-विकृति न थाय " यतः " न प्राणांते प्रकृति विकृति जायते चोत्तमानाम्. "

१२ " संवेग रंग तरंग झीले, मार्ग शुद्ध कहे बुधा, तेहनी सेवा कीजीये, जेम पीजीए समता सुधा

१३ " हीणा तणो जे संग न त्यजे, तेहनो गुण नवि र जयु जलधि जळमां भळ्युं गंगा नीर लुणपणुं लहे

१४ " बुरा बुरा सब कहे, बुरा न दीसे कोय, जो घट शोधुं आपणो, तो मुजसे बुरा न कोय

१५ " खाडो खोदे, सो पडे "

१६ " कोइनी पण निंदा करता ना, निंदा करा तो आपणीज करजो "

१७ " सर्व कोइनुं भलुज इच्छो, कदापि कोइनु पण बुरुं इच्छता ना "

१८ ' अवगुण पर जे गुण करे, ते विरला जग जोय

१९ " कोइने मार्मिक, कटु, के विरस भाषण क नहि, अपमान समान कोइ दुःख नथी. "

" कोइ काम सहसा करतां ना. "

" दगो कोइनो सगो नहि. "

" क्रोधी तथा कटुभाषीने चंडाल समान लेखो. "

" धर्मे जय अने पापे क्षय. "

" पर द्रव्य हरण समान एके पाप नथी. "

" शील भूषण जेवुं बीजुं एके भूषण नथी. "

" संतोष समान सुख नथी. "

" वस्तु विना नर पशु. "

" न्याय, निति, सत्य, प्रमाणिकपणुं ए प्राणीना उदयना हेतु छे. "

" दीर्घ द्रष्टि (दीर्घ दर्शीत्व—अगमचेतीपणुं) आवतां दुःखोने रोकवानुं साधन छे. "

" कुशीलता ए प्रगट दुःखनुं, अने सुशीलता ए सुखनुं मूळ छे. "

" विवेक विकल प्राणी पशुनी गणत्रीमां गणाय छे. "

" लोभनो कांइ थोभ नथी. "

" इच्छा आकाशनी माफक अनंत छे. "

" तृष्णा जेवी एके मोटी व्याधि नथी. "

" रात्रि भोजनमां महा पाप छे. "



ज्ञानना बे बोल.

सवाल	जवाब.
१ जगतमा आदरवा योग्य शु ?	सुगुरुनु वचन.
२ शीघ्र करवा योग्य शु ?	कर्मनो निग्रह.
३ मोक्षतरुनु बीज शु ?	क्रिया सहित सम्यक् ज्ञान.
४ सदा त्यागवा योग्य शु ?	अकार्य काम
५ सदा पवित्र कोण ?	जेनु अतःकरण पा' रहित होय ते.
६ सदा यौवनवती कोण ?	तृष्णा
७ शुरवीर कोण ?	स्त्रीना कटाक्षथी जे वि' नही ते.
८ महत्त्वतानु मूळ शु ?	कोइनी पासे प्रार्थना करवी ते.
९ सदा जाग्रत कोण ?	विवेकी.
१० आ दुनियामा नरक जेवु दुःख शु?	परतत्रता.
११ अस्थिर वस्तु शु ?	यौवन, लक्ष्मी अने आयु.
१२ आ जगतमा अति गहन शु.	स्त्रीचरित्र (अने तेथी वधारे पुरुपचरित्र.)
१३ चद्रमाना किरण समान श्वेत कीर्तिने धारण करनार कोण ?	सुमुनि अने सज्जन.

जेने चोर ले नहीं तेवो खजानो शुं !	विद्या, सत्य अने शीलव्रत.
जीवने सदा अनर्थ करनार कोण ?	आर्त अने रौद्र ध्यान.
अंध कोण ?	कामी अने रागी.
बधिर कोण ?	जे हितकारी वचन न सांभळे ते.
मुगो कोण	जे अवसर आगे प्रिय वचन न बोली शके ते.
शल्यनी पेठे सदा दुःख देनार शुं ?	छानुं करेलुं कुकर्म.
अविश्वासना पात्र कोण ?	युवती अने असज्जन.
सदा ध्यानमां राखवा योग्य शुं ?	संसारनी असारता.
सदा पूजनिक कोण ?	वीतराग देव, सुसाधु अने सुधर्म.
आ दिवानी दुनिया कोणे जीती ?	जेणे निःस्पृहता धारण करी तेणे.
अधमथी पण अधम कोण ?	अंगीकार करेलुं व्रत जेणे जाणीने खंडयुं ते.
चिंतामणिनी पेठे दुर्लभ शुं ?	आत्म गुणने प्रगट करनार सम्यक्त्व रत्न.

आ उपर बतावेल ज्ञानना बे बोलो वांची जेओ खजाना नाखी मूकशे तेओने तो कांइ फळ थनार नथी. जेओ अथवा बे बोलने स्मृतिमां राखी ते प्रमाणे प्रतिदिन वर्तशे ने अवर्णनीय लाभ थशे.